प्राचीन पुस्तकोद्धार फन्ड ग्रन्थाङ्कः २५

श्रीयुगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरि विरचितम्

श्रीगणधरसार्धशतकम्

मूल-संस्कृतच्छायया—गुर्जर भाषया च संवलितम् श्रीमच्चारित्रसिंहगणिभिरोधृतम्,

श्रीगणधरसार्धशतक——बृहत्व्याख्यान्तरगत

श्रीमद् पूर्वसूरीणां—चरित्रप्रकरणम्

गुर्जर भाषाया संवलितम्.

श्रीमती आर्या-सोभागश्रीः तस्याःसुशिष्ये। आर्या श्रीमती महिमाश्रीः जवेरश्रीः उपदेशात्, श्रीसुरत शहर निवासीनी सुश्राविका श्रीहीरा-कुंवरबाई तथा कच्छदेशस्थ। पत्रीग्रामनिवासीनी सु श्राविका श्रीकम्मीबाई दत्तद्रव्य सहाय्यात्.

प्रकाशकः—

श्रीमज्जिनकृपाचंद्रसूरि ज्ञानभांडागारः
इन्दौर (मालवा)

सं. १९८४	कीमत	प्रथमावृत्ति
वैशाख व. ११	१ रुपया	१०००

जैनबन्धु प्रि. प्रेस पीपलीबजार इन्दौर.

गुर्जर भाषा गणधर सार्ध शतक

अनुक्रमणिका.



गणधर सार्ध शतक.

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि	शुद्धि.
८	७	ऊम्	ओम्
१२	७	अहाहो	अहोअहो
१२	१३	अमे	अमने
२७	४	संदीपन	संदीपनं
२८	१	गंधच	गंधंच
३३	१५	हरीलेछे	हरीलेछे
४०	५	ने	ते
६०	२	अणुग्रहं	उग्गहं
६५	२	हेराजन	०
६५	१६	अमरा	अमारा
७१	१५	अनेकशियो	अनेकशिष्यो
८०	१२	एरन्तु	परन्तु
८२	११	लोकन	लोकनें
८४	५	आणाने	आणीनें
८९	१९	सत्वनो	तत्वनो
१००	७	स्वगुरु	सुगुरु
१००	१०	आलख	आलेख

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१०१।	१७	मुखे	मुख
१२३।	७	राजाए	राजाना
१२८।	१३	करीने	करियें
१३०।	१२	वल्लगणि	वल्लभगणि
१५०।	१३	गमनी	गमननी
१५६।	५	साणीने	जाणीने
१५७।	१८	दक्षिपणा	दीक्षापण
१७०।	१०	पदस्थापदस्थलोके	लोकेपदस्थापदस्थ
१७२।	६	हज्जारछे	१२हजार५०से
१७२।	१३	कुल	कुलक
१८०।	२	१२०३ सो	१२ सो ३
१८६।	१७	पुसपक	पुस्तक
१८७।	१२	सुरिजि	सूरिजी
१९०।	६	रतंभव	स्थंभन
२१२।	११	प्रतयो	प्रतपो
२१६।	१४	सथवावाडे	सथवाडे
२१९।	१९	उज्जवल	उज्वल
२३१।	१२	कृत्य २	कृतकृत्य
२३५।	११	हमन	हमनें

गणधर सार्ध शतक मूल गाथाणुक्रमाणि.

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि	शुद्धि.
२	१६	आगलोनो	आगलनी
३	९	मणुव	मणुय
१३	७	कावगुत्तं	कायगुत्तं
१५	१२	ज्ञाना	ज्ञान
१६	७	तव्विन्नजो	तव्विज्जो
१७	१०	क्खिाताओ	क्खित्ताओ
२७	७	संकया	संकया
२८	६	मसवणओ	सवणओ
३१	१४	तर्थिभर	तीर्थभर
४५	५	रक्षता	रक्षिता
४५	५	सादय	सादरं
४६	१२	इच्छते	इच्छंते
४७	५	प्राप्ता	०
५०	४	भज्जंति	नज्जंति
६०	९-१०	रजनिकरस्य	रजोनिकरस्य
६१	१९	तन्त्र्यण	तंत्र्येण
६६	१०	सुमेघइच्च	सुमेघुच्च

प्रष्ठ.	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि.
६६	१३	सुमेघुन्त्र	सुमेघइव
६७	१५	कहवुङ्क	कयवुद्धि
६९	१५	भ्रमणैरपि	भ्रमरैरपि
७०	४	मवग्रलितं	मवग्रहीतं
७७	५	श्वापदगणेन	श्रावकगणेन
७३	८	चारयति	चाढयति
५५	१२	वारवा	विचारवाला
६५	४	धर्मोर्थी	धर्मार्थी

प्रस्तावना का शुद्धि पत्र.

३	६	११९७	११९१
३	१९	भणुं	पणुं
२२	५	आसोद	आमोद
२४	३	जिल्लोमें	जिलेमे
२४	११	सालेका	सालके
२१	९	रंवती	रेवती
२८	१२	सांमराव	सांडराव
२९	७	७१	७०
३६	८	दिग	दिग्

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध.
३७	३	दिग	दिग्
७७	५	दिग	दिग्
७७	८	दिग	दिग्
४८	४	०	अत्यंत
५३	६	योगिना	योगिनीनः
६०	१३	व्यापारेण	व्यापारेण
६१	२०	११५२	१६५२
६२	७	इत्था	इत्थ
७७	८	सेर्वीप	सेर्वेपि
६२	१२	न्नावसेर	न्नवसेर



प्रस्तावना.



आ परमपवित्र श्रीगणधर सार्धशतक नामे मोटा ग्रन्थना रचनार ८४ गच्छना पितामह जगद्गुरु शृंगारहार जंगम युगप्रधान भट्टारक श्रीजिनदत्तसूरी श्री वर्धमानस्वामिना शासनमां पांचमा आरामां महा प्रभावक थया.

देव अधिष्ठित सूरि मंत्रनो ३॥ क्रोड जाप करवाथी बावन वीर नामना व्यन्तर देव विशेष तथा व्यन्तर निकायनी देवी रूप ६४ जोगणीओ गुरु भक्तिना वशथी श्रीजिनदत्तसूरिनी निरन्तर सेवा करती हती.

श्रीजिनदत्त सूरिए ४ राजाने प्रतिबोध्या.

पुनः एकलाख त्रीश हजार (१,३०,०००) घरकुटुंब युक्त मनुष्योने प्रतिबोध आपी जैनधर्ममां रक्त एवा श्रावक कर्या. श्रीसीमन्धरस्वामिना वचनथी अंबिका नामनी देवीए वृहद् दादा ए नामे

जगतमां प्रसिद्ध थयेला अने अनेक सिद्धियोना निधान रूप श्रीजिनदत्तसूरिने जंगम युगप्रधान पद्वी आपी.

तथा श्री जैनधर्मनी वृद्धि करवा माटे पांच पीरने साधवा वाळा, सुविहित (श्रेष्ट) मार्गने प्रवर्तावनार थया.

संदेह दोळावळि इत्यादि अनेक ग्रंथना रचनार अने सर्व संघना उपर मोटो उपकार करनार ते श्रीजिनदत्तसूरिनो जन्म विक्रम संवत अगीयार से बत्रीशमां (११३२ मां) थयो. अगीयारसे एकतालीश संवतमां (११४१ मां) श्रीधर्मदेव उपध्याय पासे दीक्षा अंगीकार करी, दीक्षा वखते सोमचन्द्र नाम पाडयुं, अने त्यारबाद नव अंगनी टीका रचनार श्री अभयदेवसूरिना शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरिनुं आचार्य पद चितोड नगरमां अगीयारसे उगणोत्तर (११६९) वर्षनी वैशाख वदी छट्ठने दिवसे श्रीदेवभद्र सूरिए श्रीसोमचन्द्र मुनिने (श्रीजिनदत्त सूरिनामकरीने) समर्पण कर्युं, अने बारसो अगीयार वर्षे (१२११ मां)

अषाढ शुद ११ गुरुवारे श्रीजिनदत्तसूरि स्वर्गे गया इत्यादि शास्त्रमां लखेलुं छे.

श्रीजिनदत्तसूरिनी पाटे मणि रत्नवडे शोभितछे भालस्थल जेमनुं एवा महोपकारी श्रीजिनचन्द्रसूरि थया.

एमनो अगीयारसे सताणुंमे वर्षे (११९७ जन्म वर्षे) थयो. बारसो अगीयार (१२११) वर्षे वैशाख शुदि पांचमने दिवसे श्रीजिनदत्तसूरिए तेमने पोताने हाथे आचार्यपद अर्पणकर्युं, अने बारसो त्रेवीशमें (१२२३) वर्षे स्वर्गे गया.

तेमनी पाटे श्रीजिनपति सूरि थया. तेमणे संघ पट्टकनी टीका विगेरे अनेक ग्रंथो रच्या, अने तेमना शिष्य श्रीसुमतिगणीए गणधर सार्ध शतक ग्रन्थनी बारहजार श्लोक प्रमाण मोटी टीका रची. ते टीका अति विस्तारवाळी होवाथी थोडा वखतमां लोकोने अवलोकन करवानो अशक्य थवाथी बीजा अनेक व्यवसाय होवाथी आ कालना मनुष्योने घणा कार्य सुधी निरन्तर कार्य प्रवृत्ति चालु रहेवाथी, अने संदिग्धपणुं होवाथी तेना आद्यन्त (ग्रंथोक्त विषय) परू

अमृत रसना पानमां अनेक जनोनी तृषावृद्धि (अधिक इच्छा) जाणीने सर्व जन समुदायना उपकार माटे अने जैन दर्शनना विचारनो प्रचार वधारवा माटे परम करुणावाळा अने विद्वान जनोना मनरूप मानस सरोवरने हंसतुल्य एवा श्रीसुमति गणिना शिष्य श्री चारित्रसिंह गणिए ते टीकानी अंदर थी सार सार प्रकरणादिकनो उद्धार करीने आ प्रकरण रच्युं छे. आ ग्रंथ रचनामां विशेष करीने श्रीवर्धमानसूरि श्रीजिनेश्वर सूरि श्रीजिनचन्द्रसूरी श्रीमद्अभयदेवसूरि श्री जिनवल्लभसूरि अने श्रीजिनदत्तसूरि इत्यादि अनेक आचार्योनां चरित्रो संक्षेपथी कहेलां छे.

तथा श्रीदुर्लभराजानी सभामां दुर्लभराजानी समक्ष अने बीजा पण अनेक विद्वानोनी समक्ष चैत्यवासी मुनियोनी साथे शास्त्र संवाद करी चैत्यवासी मुनियोनुं मुख मलिन करीने श्री जिनेश्वरसूरिने खरतर बिरुद एवा पदनी प्राप्ति थई. प्रकरणना वशथी बीजुं पण लख्युं. आ ग्रंथना अवलोकन मां पण हजारो जनोनी उत्कंठा जोईने लखेलां पुस्तको अल्प होवाथी

सर्व जनोने आ ग्रंथावलोकननो लाभ मलवो अशक्य विचारी हालमां श्री आचार्य महाराज श्री कृपाचन्द्र सूरिनी आज्ञाने अनुसारे श्री देव गुरु भक्तिकारक झवेरी शा. चुन्नीलाल पन्नालाल श्रेष्टिए आ ग्रंथनुं संशोधन अने मूळ गाथाओनी छाया करावीने सर्व संघना उपकार माटे आ ग्रंथ छपावी प्रसिद्ध कर्यो.

हवे श्री महावीर स्वामिना छठ्ठा कल्याणकना संबंधमां जे कहेवायोग्य छे ते कहेवाय छे ते सांभळो.

सत्यासत्यनो विचार करवारूप उद्यान विहार (बागमां विचरवुं तथी) रहित, अने अनेक शास्त्रोना विशेष विज्ञान रूप निधाननो मार्ग देखाडनार अग्रेसरी पुरुषना अभावे महा भयानक अने विकट एवी विवाद रूप वननी अटवीमां पडेला जनोने ठगनी माफक ठगता अहिं केटलाएक सुविहित परंपराने नहिं जाणता तथा जैन सिद्धान्तना रहस्य विज्ञान रूप तिलक विशेषथी शून्य ललाट वाळा, तथा विशेष विज्ञान रूप अमृत वडे परिपूर्ण एवा गुरुना मुख रूप

प्याला वडे ज्ञान अमरत पीवाथी रहित होट वाळा केवळ परनी निंदा अने पोतानी मोटाइ निरूपणा करवा वडे अत्यन्त वृद्धि पमाडेला महा पापरूप तरंगोनी पंक्तिवडे अर्पण थयेला भ्रूभंगना समूहवडे भयंकर दांत अने मुख अने दृष्टिचक्षु वाळा कहे छे के श्रीमहावीर स्वामिनुं छट्ठुं कल्याणक श्रीजिनवल्लभसूरिएज प्ररूप्युं छे इत्यादि. अने ते महावीरस्वामीना छट्ठा कल्याणकनुं विगोपन करवावडेथी तथा श्रीमहावीर स्वामीनूं छट्ठं कल्याणक आगममां कहेलुं होवाथी अने पूर्वाचार्योना व्याख्यानमां अवलोकन करवाथी हेतुनी कारणनी शोचनी दशा अनुभव करतां ते वातनी उपेक्षा करीये छीए वळीए वाबतमां कोइ शंका करे के छट्ठुं कल्याणक कया आगमम कह्युं छे ? ए प्रमाणे पोताना अज्ञान रूप व्याधिनी पीडा टालवाने अर्थे जो कोइक कहे तो इर्ष्यानो त्याग करी पोताने कल्याण रूप वचन सांभळो श्रीतपागच्छना श्रीकुलमंडनसूरि विगेरे अनेक आचार्यो ए छठुं कल्याणक निरन्तर कहेलुं छे आ प्रमाण तेओना करेली कल्पसूत्रनी अवचूरी कल्पसूत्रनो

टबो अने कल्पसूत्रनो बालावबोध इत्यादि ग्रंथोमां प्रति समय प्राप्त थाय छे. त्यां कल्पसूत्रनी अव-चूरीनो पाठ आ प्रमाणे छे.

जे काळ अने जे समयने विषे भगवान श्री ऋषभदेव स्वामि ए अने बीजा तीर्थकरोए श्री वर्धमान स्वामिनां च्यवन वगेरे ६ कल्याणकना कारण पणे कहेल छे ते कारण ने अने ते समयने कहीएछीए ते आ प्रमाणे पंच हत्थुत्तरे होत्था श्री महावीर स्वामि भगवान पांच हस्तोत्तरा नक्षत्रवाळा थया अहिं हस्तोत्तरा नक्षत्रनो अर्थ एरीते छे के हस्त नक्षत्रथी उत्तर दिशामां रहेल होवाथी जे उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ते हस्तोत्तर नक्षत्र कहेवाय छे, अथवा बीजो अर्थ ए छे के हस्त नक्षत्र जे नक्षत्रने उत्तरे छे ते नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र कहेवाय. एमां नत्त्रो नक्षत्रोने जे बहु वचन रूपे कहेलछे ते घणां कल्याणकोनी अपेक्षाए छे. चवन गर्भापहार जन्म दीक्षा ज्ञान ए ५ कल्याणकमां जे भगवाननुं हस्तोत्तरा नक्षत्र हतुं ते पंच हस्तोत्तर भगवान कहेवाय तथा निर्वाण तो स्वाति नक्षत्रमां थयुं छे.

बीजां प्रमाणो ते ते ग्रंथोमांथी देखीलेवां कारणके अहिं विस्तार थईजवाना भयथी अमोए लख्यो नथी.

वळी आ ग्रंथना शोधन वखते बे ग्रंथोज पासे हता तेथी अहिं जे मात्रा-पद-वर्ण-अर्थ-अने पाठ वगेरेनी शुद्धि न देखाती होय तथा गाथाओने अनुसरती छायामां छंदनी मात्रानो भंग थवाना भयथी च-एव-हु इत्यादि अधिक पद अथवा न्यूनपद करेल छे ते दयालु वाचक वर्ग कृपा करी क्षमा करशे गुणानुरागी सज्जन-अने पूज्य एवा आप वाचक वर्गने नमस्कार थाओ.

युक्त अने अयुक्तनो विचार करवामां अतिशय कुशळ एवो लोकमां बीजो कयो पुरुष छे! वळी शास्त्राभ्यास रूप समुद्रनां रत्न धारण करवामां जेना शिष्यो हमेशां सुशिष्य छे. जन समुदायने जेणे न्यायमार्गमां जोड्या छे, तथा स्वर्गमां जेओ यश पाम्या छे ते आ श्रीकृपाचन्द्रसूरि नामना श्रेष्टकवि हमेशां मोक्ष आपो ॥१॥

जेनुं ज्ञान अति दीर्घ वस्तुना विषयवाळुं छे, जेने जीवोपर हमेशां दया छे, सत्य-शौच-

इन्द्रिय दमन-क्षमा-अने मधुर वाणी ए गुणो जेने जन्मसिद्ध छे, वळी लोकमां मान्य, मान, रूपी धनवाळा, पंडितने प्रमाण भूत; दक्ष, शरण करवा योग्य, अने उत्तम बुद्धिवाळा एवा ते श्रीकृपाचन्द्रसूरि नामना कविने पगले चालनारा सतपुरुषो तेमने धन्य छे ॥ २ ॥

जे सद्बोध आपनार छे अने दोष जाणनार नथी, वळीजे दोषनी खाण नथी एवा तथा अंधकार ना समूहने विनाश करनार चंद्रसरखा श्रीकृपाचंद्रसूरिके जे अज्ञान रूप अंधकारनो विनाश करनार छे ते शान्तिने अर्थे हो.

गृहस्थोने बोध आपनार घणाए संत पुरुषो घेर घेर छे, पण तेवा ज्ञानी तो कोईक स्थाने कोई-कज छे के जेने अनुसरीने ज्ञान धारी आचार्यो चाले छे. आ मूल संस्कृत ग्रन्थनी प्रस्तावना छे.

अथ ग्रंथ लेखकः स्वगुरुचरित्र परिचयं संक्षिप्त मात्रम् दर्शयति.



तथा हि देश मरु राजधानी जोधपुर राजा श्रीमान् तखतसिंहजी विजयराज्ये जोधपुर जिल्ले, पश्चिम भागमे वरग्राम है, उसका नाम चतुर्मुख याने चोमुं है, पिताका नाम श्रीमेघरथ गोत्रवाँफणा वृद्ध शाखा ज्ञाति ओशवाल, मूल-वंश ऊकेश, माता का नाम श्री अमरादेवी जन्म १९१३ जन्म नाम श्रीकीर्तिचंद्रकुमारः किसी समय शहर आना हूवा, तत्र श्रीमती आर्याधर्मश्रीजीके समागमे माता सहित पुत्रको प्रतिबोध हूवा, वह साल याने वर्ष १९२६ का था, उस समे आपश्री की अवस्था करीब १३ वर्ष की थी, तिस समय आपश्री की भव-विरक्ती परीणति भइ, परन्तु पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए, अन्ना-णीकिंकाही, किंवा नाहीइ छेअ पावगं, सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ

पावगं, उभयंपि जाणइसोच्चा, जं सेयं तं समायरे ज्ञान क्रियाभ्याम् मोक्षः, सच सर्वकर्म क्षयरूपो मोक्षः सर्वकर्म क्षयश्च सम्यग्ज्ञान पूर्विकायां क्रिया या विनान भवति, तत्सम्यक्ज्ञानं कसमयात सुगुरु-समीपे अभ्यसनात् भवति इति अभ्यव-स्थनातेन कथितं, आर्यां प्रति, हे भगवती मां सुगुरुसमीपे शीघ्रं प्रेक्षयत इत्यादि

पहिलाज्ञान पीछे क्रिया संवर रूप होवे, इसतरे सर्व मुनि रहे, षटद्रव्य के ज्ञान विना मुनि न होवे, द्रव्यथकी मस्तक मुंडाकर घरवासका त्याग कर जंगल मे रहणेसें मुनि न होवे नाणेण मुणि होइ, नहु रण्णावासेणं इस वचनसें सम्यक्ज्ञान सें हि मुनि होते हैं, केवल वेष मात्र सें मुनि नहीं होवे है, किन्तु यथार्थ सत्या सत्य बोधजनक सम्यक्ज्ञानसें हि सर्वेष्ट सिद्धि होवे है, इस वास्ते कहा है कि सम्यक् ज्ञान सहित सम्यक् क्रियासें हि मोक्ष होवे है अर्थात् सर्व कर्मोसें रहित जीव होवे है, और वह मोक्ष सर्व कर्म क्षय रूप है, सर्व कर्म का क्षय तो

सम्यक्ज्ञान सहित क्रिया विना प्राये नहीं संभवे है, वह सम्यक् ज्ञान अविछिन्न परंपरामें आये हुवे, सुगुरुके पास अभ्यास करणेसें होवे, एसा विचार करते हूवे कुमारने साध्वीजीसें कहा कि हे भगवती मुजको शुद्ध प्ररूपक सुगुरुके पास विद्याभ्यास करने के लिये जलदि भेजो, साध्वी नें समजाकि यह कोई विनय सहित पूर्व भवारा-धित ज्ञान चरण शील जीव है, इस लिये इसके योग्य [सुगुरु गच्छमें कोण है, यह उपयोगदेके इसके योग्य श्रीसमुद्रसोमजीके सुशिष्य इस कुमारके] योग्य सुगुरु हैं, उन्होंके पास हि विद्या अभ्यासके लिये भेजना ठिक है, यह विचार के और माताको पूछके, अछे मूहुर्त्तमें श्रीबीकानेर रवाना करा, क्रमसें चलते हुए चैत्र सुद ३ के रोज सुगुरु के पास हाजीर हुआ, और श्रेष्ट मुहुर्तमे विद्याभ्यास कराना सरु करा, धार्मिक व्यवहारिक संस्कृत व्याकरणादिक ग्रंथ पढ लिख के हुसियार भया. तब गुरुमहाराज नें जैन सिद्धांत पढाणे योज्य जाणके, संवत् १९३६ की सालमें अषाढ सुदी १० को यति संप्रदायिक

दीक्षा दी, कारण के पात्र आनेपर अनवसरमें भि सिद्धान्त वाचना देना एसाभि सिद्धान्तसें अपवाद मार्गसें माना है, कुशिष्यादिकों वाचना देना उनोंके पाससें वाचना लेना सवथा निषेध किया है, अविनीत निरंतर विगइभक्षी उत्कृट क्रोधी दुष्ट मूर्ख व्युदग्राहित अन्यतीर्थी गृहस्थ परिव्राजकादिक, स्वतीर्थी गृहस्थ पासत्थादिक उनोको वाचना देना उनोंके पाससें वाचना लेना करेतो साधु प्रायश्चित पावे एसा छेदश्रुतमें लिखा है, इत्यादिक विचार के, वहुश्रुत गीतार्थ श्री गुरुमहाराजनें सांप्रदायिक दीक्षा देके सिद्धान्तों की वाचनादी, उस समय आपकी अवस्था करीव २३ सालकी थी. जब व्रतग्रहण किया, सर्व सिद्धान्तो की क्रमसें वाचना ग्रहण करके स्वसिद्धान्तमें अत्यंत निपुण भये, तव श्री गुरु महाराज सहित शुद्ध सिद्धान्त विध्यनुसार क्रियोद्धार करणेका परिणाम भया, तव परसिद्धान्तों का अवगाहन करते हूवे [दर्शन शुद्धचर्थ अनेक देश अनेक शहर ग्रामादिकमे जिनेश्वरका दर्शन करते हुवे,] पूर्व देशतीर्थों की जात्रा करते हूवे

अंतरिक्ष पार्श्वनाथतीर्थ कुलपाकतीर्थ केसरियाजीतीर्थ श्रीगुर्जर देशीयतीर्थ मांडवगढ सकसी सेमलीया अवंती चिवडोद नाकोडा लोद्रवा कापेडा फलोधीपार्श्वनाथतीर्थ तथा मेदनीपुर जवालीपुर करेडा अद्भुत शांतिनाथ देवलवाडा चित्रकूट राजनगर लघुमरुभूमि संबंधी अनेक तीर्थ आबु प्रभास वलेच मांगरोल जामनगर गिरनार तीर्थ ओसीयां इत्यादि अनेक जिन गणधर मुनि आदि जन्म दीक्षा ज्ञान समवसरण चतुर्विध संघ स्थापन निर्वाण आदि अनेक कल्याणक भूमियोंमे प्राचीन सातिशायितीर्थ भूमियों मे परिभ्रमण करते हुवे और भि अनेक तीर्थ पूर्वदेशीय गुर्जर बृहत्मरु लघुमरु कच्छ काठियावाड कोंकण लाट वढियार मालव छत्तीसगढ वराड मेवाड सिन्धु सौवीर पंचालादि अनेक तीर्थोंकी जात्रा करते हुवे, और अनेक शहर ग्रामादिकमे अनेक प्राचीन अर्वाचीन श्री जैन मंदिरोंके दर्शन शुद्ध भावसें करते हुवे, श्री शत्रुंजयादि तीर्थ भूमि और कल्याणकादि तीर्थ भूमियों को स्पर्शन करके आपश्रीनें अपनें शरीर और आत्माकों

पवित्र किया, यथार्थ शुद्ध सिद्धान्तका अवगाहन करके निर्वद्य भाषा के स्वीकार पूर्वक शुद्ध प्ररू- पणा करणे करके अपने वचनको पवित्र किया पंच महाव्रतकी २५ शुभ भावना तथा अनित्यादि १२ भावना मनन करके अपने मनको पवित्र किया और दान शीयल तप जप संयमादि करके त्रिकरण योगको पवित्र किया और यथार्थ परो परसिद्धान्तों का अवगाहन किया, षडदर्शनका पदार्थ यथार्थ जाणा और परमार्थ ग्रहण किया और स्वसमय परसमय का अध्ययन करके, और प्राचीन अर्वाचीन सातिशयि तीर्थ भूमियोंको और कल्याणकादि तीर्थ भूमियों को स्पर्श करके अपने समकितकों निर्मल किया, विनयादि युक्त ज्ञान ग्रहण और शुद्ध प्ररूपणा करके ज्ञानको निर्मल किया, आलोचना प्राय- श्चित शुद्ध भावसें, शुद्ध व्रतग्रहण करके अखंड पालनेसें चारित्र को निर्मल किया, वांछारहित बाह्य अभ्यंतर निरोधरूप यथाशक्ति तपकरके, अपने तपरूप आत्मगुणकों निर्मल किया, और सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तप रूप मोक्ष मार्ग

को देश कालादिकके अनुसारे यथाशक्ति आराधन करना यहि मनुष्य भवका सार है, इसी लिये आपश्री ने सम्यक्ज्ञान सहित तप संयम आराधन करनेका दृढ निश्चय किया, और आप श्रीनें अहोरात्रिक साध्वाचार विचार नित्य क्रिया कांडरूप चारित्रकी तुलना करनाभि चालु करदीया, आपश्री का आसरे ३५ वर्षका विद्याभ्यास में परिश्रम है, स्वसिद्धान्त परसिद्धान्तका हदपर्यंत कालसें ६१ की साल पर्यंत परिपूर्ण ज्ञान हासिल कर विराम किया है, और तीर्थ विद्या शास्त्र गुण कला देश सहर ग्रामादिक देशकालानुसार यथाशक्ति परिश्रमके आधार परतो आपश्रीके परिचयमे आया न हो ए सातो विरलाहि प्रायें होगा, और आपश्रीका अष्ट प्रवचन माता विषयी उपयोग स्मरण शक्ति व्याख्यान शैली प्रश्नोत्तर शक्ति हेतु दृष्टान्तयुक्ति विरोध खंडन विसंवाद समन इन्साफ युक्तायुक्त विवेचन पंक्ति उच्चारण विन अर्थशक्ति वचन लाघवादि और भीमकान्तादि अनेक गुण यथार्थपणों वर्तमान समय विद्यमान है और इस सम-

यतो एसा गुणी पुरुष हिन्दुस्थान याने आर्यावर्त-खण्डमें दूसरा कम ही होगा, और इस समय श्रीजैनधर्म उपदेशक आचार्य एकसें एक गुणाधिक है, परंतु देश कालानुसार सर्व गुणगणालंकृत एसे विरले पुरुष होतेहैं और श्रीजीकी यति सांप्रदायिक पर्यायमें वर्ष ६ रहना हुवा सो केवल स्वसिद्धांत परसिद्धांत अवगाहन निमित्त ही रहना हुवा, ४५ के साल नागपुरमें क्रिया-उद्धार किया और जिसमें भी सात वर्ष तो भाव चारित्र पर्याय तुलना ही में रहे, फक्त एक रेल का संघट्टा खुला था, उस समय आपश्री रायपुर सहरमें और नागपुर सहरमें विराजमान थे, इस लिये हि इतना बाकी रखा था, कारण कि वह देश विहार का न होनेसें तिसमें आप श्रीके श्रीगुरुमहाराज का सहवास योग था, बादमें ४१सालमे चेत सुदि १५ को आप श्रीके गुरुमहाराजका वियोग हुवा, तबहिसें जादातरसंवेग परिणाति वढतिहिरहि, बाद श्रीमान कपूरचंदजी महाराज का आशीरवाद मिला तदनंतर उनोंके पत्रसें श्री इन्दौर के श्रीसंघनें आगम श्रवण निमित्त आप

श्रीको नागपूर विनंती पत्र भेजा तब नागपूर में आप श्री पन्नवणा सूत्र वृत्ति प्रवचन सारोद्धार प्रकरण वृत्ति वाचतेथे, सो पूर्ण करके, बाद आप श्री इन्दौर पधारे वहां श्री संघके आग्रहसें पर उपगारार्थ ४५ आगमों की वाचना में कितनेक भगवती पन्नवणा आवश्यक बृहद्वृत्ति १० पइन्ना वगेरह वांचे बाद कुछ काल तक विचरते रहे, अमदावाद पालीताणा गिरनार संखेसर भोयणी तारंगाजी विवडोद सेमलीयाजी अवंतीजी मकसी जी वगेरा जात्रा करते हूवे तराणें कायथे पधारे. और वहां आपने बहुत उपगार किया, बाद आपने श्रीधुलेवाजी की जात्राके लिये उपदेश किया, वह उपदेश कायथेवालोनें मिलकर मंजूर किया, अंदाजन ४०-४५ आदमीयोंके साथ आप श्रीधुलेवा पधारे, बाद मे आप श्रीने ५२की सालका चोमासा उदेपुर किया तब २ मुनिराजथे पंच समिति तीन गुप-तियुक्त साधु मुनिराज विचरते भये, बाद यथार्थ साध्वाचार को पालते रहे, चोमासे बाद क्रमसें विहार करते हुवे, आपश्री देसुरी पधारे, और गोढवालमें उपदेश करके नाडलाइ वगेरा के

मंदिरोंका जीर्णोद्धारका उपदेश, करा बाद तपनकी सालका चोमासा दसुरी किया बाद ५४-५५-५६ ५७-५८ जोधपुरमें भगवती वांची जेसलमेर भगवती वांची फलोधि भगवती वांची बीकानेर ठाणांगवृत्ती वांची जेतारण भगवती वांची क्रमसें चोमासे किये बाद गोढवाड संबंधी मोटी छोटी पंचतीर्थीकी यात्रा करते हुवे जालोर आहोर गडे कोटरे पावटे यात्रा करते हुवे आनंदमुनि जयमुनि नामक दो साधु सहित आप श्रीसिवगंज पधारे और वहां श्री फूलचन्दजी गोलेछाका फलोधिसें संघ आया उसके साथ श्रीसिद्धाचलजी पधारे सं. १९५९ में चैत्रीपूनम की जात्रा करी बाद महूवा दाटा तलाजा वगैरेकी जात्रा करी बाद वह ५९ सालका चौमासा पालीताणे किया बाद विहार करते हुवे श्रीगिरनार वनस्थली मांगरोल वेरावल प्रभास पाटण वलेच पोरबंदर भाणवड जामनगर जात्रा करके पीछे पोरबंदर आये और ६० की सालका चौमासा पोरबंदर किया सदा पर्युषण जैसा वरतताथा चौमासा बाद विहार करते हुवे

गिरनारसें शेत्रुंजय जात्राकर नवागांव सणोसरा गरडासायला चांकानेर मोरवी होते हुवे मालिया-कारण उतरके कच्छ अंजार गये भद्रेसर तीर्थकी मेले पर जात्रा करी कच्छमुंद्रा उत्तराध्ययन कच्छ-भुज भगवती कच्छ मांडवी पन्नवणा कच्छ भिदडा भगवती वांची भाडिया कच्छ अंजार ६१-६२ ६३-६४-६५ क्रमसें यह ५ चोमासा किया सुथरी घृत कल्लोलतीर्थ जखाऊनलीया तेरा कोठारा वगेरा जात्रा करी हरसाल ५ वर्षतक उपधान तप हुवा एकंदर कच्छ देशमें साधु साधवियांकी १० आसरे दीक्षाहुई और ६५ की सालमें कच्छमांडवीका नाथाभाइ वजपालका संघ छरी पालता निकला उसके साथ श्रीसिद्धगिरिजी की यात्रा करी और ६६ की सालका चौमासा पालीताणे किया नंदीसरद्वीपकी रचना भई साधु २ साधवी३ की दीक्षा एकदर ५ भइ बाद गिरनार की जात्रा करी६७ की सालका चौमासा जामनगर किया भगवती वांची समवसरणकी रचना उच्छव पूजा प्रभावना उपधान तप दीक्षा४ वगेरा हुवे बाद ६८ का चौमासा मोरवी किया

भगवती व्याख्यानमें वांची बाद ६९ का चौमासा अहमदाबाद कोठारी पोल नवा उपासरामें किया पानसर भोयणी तारंगाजी होते हुवे वीसनगर वडनगर लादोल विजापुर माणसा पीथापुर देगांव कपडवंज खेडा श्रीसच्चादेवमातर श्री-स्तंभणा पार्श्वनाथसामी की जात्रा करी बाद ७० का चौमासा रतलामवाला सेठाणीजी सेठ श्री चांदमलजीकी धणियाणी के आग्रहसें पालीताणे किया भगवती शत्रुंजय महातम वांचा उपधान तप पूजा प्रभावना स्वामीवात्सल्य वगेरा हुवे बाद सिहोर वरतेज भावनगर घोघा तणाहो तापस तलाजा जामवाडी श्रीशेत्रुंजयकी यात्रा करके क्रमसें विहार करते हुवे वलेमें १ साध्वी की दीक्षा भइ खंभायत आये तब सुरतसें जवेरी पानाभाइ भगुभाइ वीनती करणेको आये तब उनोंकी वीनती मानकर सुरत तरफ विहार किया क्रमसें वडोदा पालेज जीनोर होते जगडियाकी जात्रा करते हुवे मार्गमें १ साधु हुवा सुरत पधारे प्रवेशउत्सव के साथ गोपीपुराके नवा उपासरामें पधारे देशनादी ७१ का सालका चौमासा

सुरतमें किया १ साधुकी दीक्षा हुई बाद विहार करके कतारगाव कठोर वगेरा फरसते हुवे तीर्थ जगडिया पधारे जात्रा करी मांडवे होके भरुच्छकी जात्रा करी बाद क्रमसें जिनोर पालेज पधारे बाद वहांसे आसोद जंबुसर होते गंधार तथा कावी तीर्थोंकी जात्रा करके क्रमसें पादरा दरापरा पधारे परंतु वहां असाताके उदयसें बुखार मुदती हुवा परंतु पंन्यास श्रीआणंदसागरजी की शास्त्रार्थके लिये आणेकी प्रतिज्ञा थी तिस कारण पौषी १५ की मुदत पूरण करने के लिये आप श्री शहर वडोदाके पास ५ कोस पर ठहरे हुवे थे आगे विहार नहिं किया प्रतिज्ञा हानिके भय सें आपश्री के जादा तकलीफ होनेपर भी आप श्रीस्वप्रतिज्ञा पर्यंत वहांहि रहे परंतु पंन्यास आणंदसागरजी स्व प्रतिज्ञा पर हाजर नहिं हुवे बाद वैद्य के आग्रह सें इलाज करानेको शहर वडोदा पधारे, वैद्यने तन मन सें इलाज किया, तीन महीनेसें तबियत कुछ विहार लायक हुई, तब मुंबई की फरसनाके प्रबलतासें वैशाख मास में वडोदासें विहारकिया, क्रमसें डभोइ जगडिया

सूरत नवसारी विल्लीमोरा वरसाड देणु अगासी भयंडर अंदेरी महीम वगेरा गामोंको फरसते हुवे श्रीजिन मंदिरो की जात्रा करतेहुवे श्री मुंबई शहर भायखलामें प्रथम पधारे. बाद प्रवेशमहोत्सव के साथ लालबाग में पधारे. वहां ही आप का चोमासा सकारण दोय ७२-७३ साल का हुवा था. उस समे आप भगवतीसूत्र वृत्ति भावना में अभयकुमार चरित्र पांडव चरित्र फरमाते थे उस वाणीको आपके मुखारविन्द सें श्रवण करते ही पूर्व सूरियोंका स्मरण हुवा तिस कारण श्री मुंबई संघने सांप्रदायिक क्रमागत महोत्सव सहित यथाविधि सूरिमंत्र पूर्वक आचार्य द्वारा आचार्य पद में स्थापित किये. पोषी १५ पुष्य नक्षत्र ८ से ११ पर्यंत समय में हुवे. मुख्य नाम श्रीमाज्जिनकीर्तिसूरिश्वरः अपर नाम श्रीमज्जिन कृपाचंदसूरीश्वरः नाम सें प्रसिद्ध भये. उस समय भगवती समाप्त्यर्थ आचार्य पद निमित्त पंचतीर्थोत्सव पंच पहाड रूप १६ दिन महोत्सव सामिवत्सल प्रभावना वगेरा बहुतसें धर्मकृत्य हूवे थे, ७३ के चोमासे बाद माघ मास में विहार

किया, क्रमसें धीरे धीरे विहार करते हुवे, अगासी देगुं वापी दमण वलसाड गणदेवी होते हुवे, सुरत जिल्लेमें पधारे मार्गमें २ साधु की दीक्षा भइ, तिस अवसर में सुरत निवासनी कमला गुलाब नामक बाईयों नें वुहारी पधारणें के लिये विनंती करी, बाद आप अटगांव सातम होते हुवे कडसालिये पधारे; वहां वुहारीसें मुख्यलोक आकर विनंती करी, तब सबकी वीनती मानकर, वुहारी पधारे वहां श्रीवासुपुज्य स्वामी का तीन मजल का देरासरमें २ बींब श्रीशीतलनाथ स्वामी वगेरे ऊपरले मजलमें प्रतिष्ठित करवाकर विराजमान बाई कमलाने किये बाद शांति स्नात्र कराइ, बाद संघने मिलकर चोमासेके लिये आग्रह किया था १ दीक्षा साधुकी वाजीपुरेमे हुइ इसलिये ७४ की सालका चोमासा वुहारी में किया २ दीक्षा साधुकी चोमासे बाद हुइ बाद फरसना साथ कडसली या सातम अटगांव नवसारी वगेरा फरसते हूवे, सुरत पधारे, और सुरत में बहुत से धार्मिक कारणोंसें ७५-७६ सालेक दोय [२] चोमासे सुरत किया ५ साधु २ साध्वीकी दीक्षाभई जिसमें जवेरी

पानाभाई मगुभाई बोथरा गोत्रीय सुश्रावकने आसरे ३६००० रुपिया खरचके प्राचीन शीतलवाडी उपासेरे का जीर्णोद्धार कराया ज्ञान मंदिर बंधाया और पेमचंद भाइ केसरीभाइ घमाभाइ मंच्छुभाइ वगेरेने उजमणा किया, बाद विहार करते हूवे, कत्तार गाम कठोर क्रमसें जगडीयातीर्थ में रिषभदेव स्वामीके जन्मोत्सव के दिन यात्रा करी सुकल तीर्थ जीनोर पाछा पुरा पालेज मियागांव वगेरा स्थलों को फरसते हुवे, क्रमसें विहार करते हुवे, आषाढ वदि १० भृगुरंवती के रोज शहर वडोदामें पधारे, और ७७सालका चोमासा शहर वडोदा में किया, भगवती वांची, चोमासे बाद विहार करते हूवे छाणी वासद आनंद नलीयाद मातर में सच्चा देव खेडा वगेरा देखते हुवे श्रीराजनगर पधारे, बाद नरोडा वगैरा होतेहुवे कपडवंज पधारे बाद गोधरा देवद क्रमसें रंभापुर रांणापुर झाबुआ पटलावद कर्मदी होते हुवे मालवदेशमें शहर रतलाम जेठ मासमें पधारे वहां ७८ सालका चोमासा किया जिसमें भगवती सूत्रकी वांचना तप उपधान तप साधु ३ साध्वी २ की

दीक्षा वगैरा बहुतसे धर्मकृत हुवे चौमासे बाद बडगांव सेमलिया सरसी जावरा रोजाणा रिंगणोद गुणदीताल आलोट पधारे, बाद पिछे रिंगणोद पधारे वै. व ७ की यात्रा करी बाद शीतामहूसें मानपुर ताल वगैरा होते हुवे महिंदपुर पधारे वहां १ दीक्षा साधवी की हुई बाद क्रमसें विहार करते हुवे उज्जेन पधारे श्रीअवंती-पार्श्वनाथजीकी यात्रा करी उज्जेनसें कायथे होते हुवे श्रीमकसीजी पधारे यात्रा करी क्रमसें देवास वगैरा होते हुवे क्रमसें आषाढ वदि १० को इन्दौरमें आपश्री पधारे वहां आपका ७६ साल का चौमासा हुवा जिसमें भगवती सूत्र वृत्तिकी वाचना करी तप उपधान हुवा चौमासेमे १ ज्ञान भंडार हुवा जिसमें बहुत पुस्तक कपाट वगैरा का संग्रह किया गया है १ साधुकी दीक्षा हुई चौमासे बाद संघ साथ तीर्थ मांडवगढ यात्रा करके धारानगरी पधारे बाद अमीझरा भोपावर में श्रीशांतिनाथस्वामी व राजगढमें श्रीमहावीर-स्वामीकी यात्रा करी बाद देशाइ कडोद वगैरा होते हुवे वखतगढ बदनावर बडनगर वगैरा होते

हुवे क्रमसें खाचरोद पधारे. १९८० में चैत्रकी ओली करी बाद खाचरोदसें विहार कर क्रमसें सेमलिया सरसी जावरा नामली पंचेड सेल्हाणा आये दरबारको उपदेश करा बाद पीपलोदासुखेडा अरुणोद वगैरा होते हुवे आपश्री प्रतापगढ पधारे बाद प्रतापगढसें क्रमसें तीर्थ वहीपार्श्वनाथ यात्रा करी वहांसें क्रमसें आपश्री दशपुर नगर याने मंदसोर पधारे, वहां आपश्रीका ८० सालका चौमासा हुवा नंदीसूत्रवृत्ति शत्रुंजयमहात्म्यकी वांचना भइ, मंदसोरसें विहार करते हुवे क्रमसें वही कनगेटी जीरण नीमच छावणी जावद केसरपुरा नीवाडा शतखंडा वगैरा होते हुवे चित्रकूटगढ पधारे, चित्तोडसें सिंगापुर कपासण तीर्थ करेडामें यात्रा करी सणवाड मावली मल्हाणो देवलवाडा नागदा एकलिंग शैवतीर्थ के पास जैन अद्भुत श्रीशांतिनाथस्वामीका स्याम मूर्तिरूप तीर्थ है इत्यादि जात्रा करते हुवे क्रमसें उदेपुर पधारना हुवा था बाद कुछ ठेरकर आपश्री कलकत्ते निवासी बाबू चंपालाल प्यारेलाल वगैरके संघ साथ श्रीकेसरियाजी पधारे थे

वहां कारणवसात मास २ ठहरना हुवा था और
वहां आपश्रीके परिश्रमसें श्रीजैनश्वेतांवरोंका हक
समर्थक १ शिलालेख प्राप्त किया था. फिर
वापिस उदेपुर पधारे श्रीसंघके आग्रहसें ८१ साल
का चतुमासक उदेपुर किया चौमासे बाद महेता
गोविंदसिंघजीकी सरायमें पधारे बाद देलवा
मंदार गोगुंदा नंदसमा ढोल कमोल सायरा भाण-
पुरा रांणकपुर पधारे और जात्रा करी बाद सादडी
घाणेराव महावीरस्वामीकी यात्रा करी बाद
देसुरी सोमेसर नाडलाइ वरकांणापार्श्वनाथस्वामी
की यात्रा करी बाद राणी इस्टेशन राणीगांम
खीमेल सांडराव दुजाणा खिमाणदी भारूंदा
कोरंटपुर वांकली तखतगढ पादरली चांदराइ
चूंडा संखवाली आहोर गोदण गढजवालिपुर
याने जालोर देवावस भमराणी रायस्थल मोक-
लसर कुशीम आओत्तरा वालोत्तरा जसोल नगर
वीरमपुर याने महेवा जसोल वालोत्तरा पंचभद्रा
वालोत्तरा बाद क्रमसें बाडहमेर आये ८२ साल
का चौमासा संभवेहै अब आपश्रीके साधु साध्वी
योंका एकंदर समुदाय करीबन ४०-५० का है

जिसमें १० या १२ आपश्रीके साथ विचरते हैं बाकी साधु अलग देशोंमें विचरते हैं एक साधु नवावास कच्छमें ६३ के साल कालधर्म प्राप्त हुवा था श्रीमती सोभागश्रीजी नामक मुख्य साध्वीजीने अहमदाबाद चौमासे के पहलां ६६ में कालधर्म प्राप्त हुई थी एक मुनि कुंजर श्रीमान् पं. आणंदमुनिजी महाराज ७१ का चैत्र वद २ शुक्रवार कों स्वर्गवास प्राप्त हुवे. आसरे ३१ के साध्वीयां आपश्रीकी विद्यमान है और आसरे २५ साधु आपश्रीके विद्यमान है और कितनेक शिष्य यति वेशमे भी विद्यमान है और आपश्रीके तीन ठिकाणे पुस्तकोंका संग्रह रूप ज्ञानभंडार विद्यमान है प्रथम बीकानेर २ सुरतबंदरमें ३ मालव शहर इन्दौरमें है और आपश्रीके चारित्र पर्यायमें एकंदर चौमासा ४६ व्यतीत हुवा है और ४७ मां चालु है और आपश्री नित्य एकल आहारी हैं और आपश्री सदा अप्रमादी है आपश्रीकी ६६ वर्षकी आसरे अवस्था है तथापि आपश्री जराभी प्रमाद नहिं करते हैं और आपश्री परिपूर्ण ज्ञान हांसिल करके पीछे सर्व अशुभ क्रिया

का त्यागरूप संवर चारित्रकी आराधना करने वाले हैं सम्यग्चारित्र या भाव चारित्र इसीको कहतें हैं इसीकों सम्यक्ज्ञानी चारित्री शास्त्रकार फरमाते हैं इसीलिये हरेक धार्मिक क्रिया ज्ञान पूर्वकहि करना चाहिये तथाहि शास्त्र संमत्ति प्रथमज्ञपरिज्ञा पश्चात प्रत्याख्यान परिज्ञा पूर्वक हि व्रतादिक करना एसा श्रीआचारांग है और प्रथम ज्ञान अने पीछे दया याने जीव रक्षादि क्रिया है एसा श्रीदशवैकालिक है ज्ञान पूर्वक त्याग सुपच्चक्खाण रूपसें श्रीभगवती है इत्यादि अनेक सिद्धांत हैं इसलिये सिद्धान्तानुसार आप श्रीकी सम्यक प्रवृत्ति है अतः सम्यक्ज्ञानी शुद्ध प्ररूपक कंचन कामिनीके परिहारक श्रेष्ठ मोक्ष-मार्गाराधक स्वपरात्मोपकारक सुगुरु हैं अतः अहो सज्जनों एसे सुगुरुवोंकी आणा पालणा, शुद्ध चित्तसें सेवा करणी विनय वैयावच्च करणी तप संयमादिक ग्रहण करणा भक्ति भावना करणें कराणें अनुमोदनेंसें इहलोक परलोक आत्मा शरीरादिक निर्मल होवे है स्वर्ग अपवर्ग की प्राप्ति होवे यह निःसंदेह है और आपश्री

वयस्थविर पर्यायस्थविर श्रुतस्थविरासि हैं अतः महान पुरुष हैं।

नमोस्तु भगवते श्रीवर्धमानाय सर्व कर्म क्षयायच। नमोनमः श्रीइन्द्रभूत्यादि एकादशगणधरेभ्यः॥ नमोस्तु अनुयोग वृद्धेभ्यःसर्व सूरीभ्यः नमोनमः। कोटिक गण वज्रशाख खरतर विरुद चान्द्रादिकुलेभ्यः॥ नमोस्तु युगप्रधान पदभृत् श्रीमज्जिनभद्रसूरये। श्रीमज्जिनकीर्तिरत्नसूरये नमो नमः॥ नमोस्तु श्रीसंघ भट्टारकाय इति श्रीकीर्तिरत्नसूरि शाखायां। तत्परम्परायांच युगप्रवरागम श्रीमज्जिनकृपाचंद्रसूरिवराणां चरित्र लेशोपदर्शित॥



श्रीमान् वर्तमान चरित्रनायक पूज्यपाद
का
पट्टक्रमन्यास इस तरह है.



१ श्री वीरवर्धमानः
२ श्री इन्द्रभूति सुधर्मा १
३ श्री जंबूस्वामी २
४ श्री प्रभवस्वामी ३
५ श्री शय्यँ भवसूरीः ४
६ श्री यशोभद्रसूरिः ५
७ श्री विजयसंभूतिसूरिः ६
८ श्री भद्रबाहूसूरिः ७
९ श्री स्थूलिभद्रसूरिः ८
१० श्री आर्यमहागिरिसूरिः ९
११ श्री आर्य सुहस्तिसूरिः १०
१२ श्री सुस्थित-सुप्रतिबद्धसूरिः ११
१३ श्री इन्द्रदिन्नसूरिः १२
१४ श्री दिन्नसूरिः १३
१५ श्री सिंहगिरिसूरिः १४

१६	श्री वज्रसूरिः	१५
१७	श्री वज्रसेनसूरिः	१६
१८	श्री चन्द्रसूरिः	१७
१९	श्री समन्तभद्रसूरिः	१८
२०	श्री देवसूरिः	१९
२१	श्री प्रद्योतनसूरिः	२०
२२	श्री मानदेवसूरिः	२१
२३	श्री मानतुंगसूरिः	२२
२४	श्री वीरसूरिः	२३
२५	श्री जयदेवसूरिः	२४
२६	श्री देवानन्दसूरिः	२५
२७	श्री विक्रमसूरिः	२६
२८	श्रीनरसिंहसूरिः	२७
२९	श्री समुद्रसूरिः	२८
३०	श्री मानदेवसूरिः	२९
३१	श्री विबुधप्रभसूरिः	३०
३२	श्री जयानन्दसूरिः	३१
३३	श्री रविप्रभसूरिः	३२
३४	श्री यशोभद्रसूरिः	३३
३५	श्री विमलचंद्रसूरिः	३४

३६	श्री देवसूरिः	३५
३७	श्री नेमिचन्द्रसूरिः	३६
३८	श्री उद्योतनसूरिः	३७
३९	श्री वर्धमानसूरिः	३८
४०	श्री जिनेश्वरसूरिः	३९
४०	श्री बुद्धिसागरसूरिः	
४१	श्री जिनचन्द्रसूरिः	४०
४२	श्री जिनाभयदेवसूरिः	४१
४३	श्री जिनवल्लभसूरिः	४२
४४	श्री जिनदत्तसूरिः	४३
४५	श्री जिनचन्द्रसूरिः	४४
४६	श्री जिनपतिसूरिः	४५
४७	श्री जिनेश्वरसूरिः	४६
४८	श्री जिनप्रबोधसूरिः	४७
४९	श्री जिनचन्द्रसूरिः	४८
५०	श्री जिनकुशलसूरिः	४९
५१	श्री जिनपद्मसूरिः	५०
५२	श्री जिनलब्धिसूरिः	५१
५३	श्री जिनचंद्रसूरिः	५२
५४	श्री जिनोदयसूरिः	५३

५५ श्री जिनराजसूरिः ५४

५६ श्री जिनवर्द्धनसूरिः ५५

६ श्री जिनभद्रसूरिः ५५

५७ श्री जिनकीर्तिरत्नसूरिः ५६

तत्संताने तत्परम्परायांच

क्रमात् वर्तमान विजयराज्ये

श्री जिनकीर्तिसूरिः अपरनाम

श्री मज्जिनकृपाचन्द्रसूरिः ५७

ऊपर के नामों में ३४-३६ अंक के नाम वाले

आचार्यों का दूसरा नाम—

श्री यशोदेवसूरिः

श्री देवचंद्रसूरिः

ऐसा नाम भी उपलब्ध होवे है इस लिये भिन्न नाम देखकर संदेह करणा नहीं.

भद्रं भूयात् ल. पा. यो.

॥ नमोस्तु वर्धमानाय भगवते ॥



अथ देवकुलपाटके श्री जिन बिंबानां किंचित्स्वरूपम्



प्रथम श्री आदिनाथ बृहत्प्रासाद श्री जिन बिम्बानांसंख्या यथा-श्री शत्रुंजयावतार प्रासादे मूलनायक श्री ऋषभदेव बिम्बम्, परिकरे २४ जिन बिम्ब सहितंच, प्रतिष्ठितम् श्रीजिनभद्रसूरिभिः संवत् १४६६ अपरमपि २५ संख्याकाः सन्ति, उत्तर दिग भागे बृहत् प्रासादे जिन बिम्ब ३ मूलनायक श्री आदिनाथ बिम्बम्, प्रतिष्ठितम् श्री जिन भद्रसूरिभिः संवत् १४६५, पुनः चतुर्विंशतिजिनपट्टिका प्रतिष्ठितम्, खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्रसूरिभिः, संवत् १४७३ वर्षे, संवत् १४६६ श्री जिन देवसूरि शिष्याणां श्री मेरुनन्दनोपाध्यायानां मूर्त्तिः प्रतिष्ठितम् श्रीजिनवर्द्धनसूरिभिः, श्री जिन राजसूरि मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री जिन वर्द्धनसूरिभिः संवत् १४६६, श्री विहरमान जिन २० पट्टिका, पुनरपि पट्टिकात्रयम्, संवत् १४६१ प्रतिष्ठितम् श्री जिन

राजसूरिः तत्शिष्य श्रीजिनभद्रसूरिभिः, तथाः श्रीजिनसागरसूरिभिश्च खरतरगच्छे २॥ उत्तर दिग भागे चतुर्मुख प्रासादे बिम्बानि ४२, प्रतिष्ठितम् श्री जिनसागरसूरिभिः वृद्धचैत्य १, पराणवतिजिनपट्टिका, प्रदक्षणायां पूर्व दिग भागे वृहत् प्रासादे श्री अजित जिनादि बिंबानि ११, संवत् १४८१, प्रतिष्ठितम् श्रीजिनवर्द्धनसूरिभिः, प्रदक्षणायां दक्षिण दिग भागे वृहत्प्रासादे श्री चंद्रप्रभुविम्बानि२प्रतिष्ठितम् श्रीजिनसागरसूरिभिः पंचतीर्थ बिम्बानि ११, पुनः जिनबिम्बम् १, पुनरेकंजिनबिम्बम्, दक्षिणाशां श्रीआदिनाथादि बिम्ब ३, संवत् १४८६ प्रतिष्ठितम् श्रीजिनभद्रसूरिभिः, २ जिनमूर्त्तिः, मूलप्रासादे बाह्यमंडपे बिम्बानि १९, चतुः पट्टिका, संवत १४६६ श्री जिनभद्रसूरिभिः प्र। श्री खरतरगच्छे" ॥ द्वितीयः श्री चिंतामणिपार्श्वनाथ प्रासादे श्रीजिनबिम्बानां स्वरूपम् यथा ३ चतुर्विंशतिपट्टिका, १ पराणवति जिनानांपट्टिका १, कायोत्सर्गस्थजिनबिम्ब १, एकत्रिंशत जिनपट्टिका १, श्रीजिनमूर्त्तिरेकश्च, पुनः जिनमूर्त्तिरेकम्, २ आचार्यमूर्त्तिः, संवत

१४८६ श्रीजिनवर्द्धनसूरीणां मूर्त्तिः कारिता पुनः श्रीद्रोणाचार्य गुरुः मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठिता खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः, श्रीजिनमूर्त्तिः ११ सिद्धशिलापट्टिका संवत १४९५ वर्षे श्री जिनवर्द्धनसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितम् खरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरि शिष्य श्रीजिनसागरसूरिभिः लिखितम्, श्रीजिनमूर्त्तिः २ संवत १४६५ श्रीजिनसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितम्, ६ श्री जिनमूर्त्तिः, १ चतुर्मुख-चरणपादुका-शत्रुंजयादि पट्टिका १ एकाचार्यमूर्त्तिः, श्रीजिनरत्नसूरिगुरुमूर्तिः, कायोत्सर्गस्थयुग्म प्रतिमासहितं श्री मूलनायकं २४ युक्तंच, संवत १४८६········ श्री जिनचंद्रसूरिभिः" अथ तृतीय श्रीगौडीपार्श्वनाथ प्रासादे बिम्बानांस्वरूपम् यथा कायोत्सर्गस्थयुग्म प्रतिमासहितं श्रीमूलनायकम् "द्विजैनाचार्य प्रतिमा संवत १३८१ श्रीजिनचन्द्रसूरि शिष्य श्रीजिनप्रबोधसूरि गुरुमूर्त्तिः प्रतिष्ठितम् श्रीजिनकुशलसूरिभिः,श्रीजिनवर्द्धनसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरीणांमूर्त्तिः, भूमिगृह संवत १४९४, खरतर सोमसुंदर सूरिभिः प्रतिष्ठितम्, श्रीजिनबिम्बानि १५,

श्रीनंदीश्वरद्वीपः प्र । तपागच्छे श्रीदेवसुंदरसूरि
शिष्य श्रीसोमसुंदर सूरिभिः, १५······श्रीसोम-
सुंदर । श्री जयचंद्रसूरिभिः ॥

श्री आदिनाथं प्रणिपत्य खड्गदेशस्य श्री धुलेवनगरस्य किंचित्स्वरूपं लिख्यते मया.



श्री मज्जिन कृपाचंद्रसूरिजीका ८० साल का चतुर्मासक श्री दशपुर (मंदसोर) नगर में हुवा. उसके बाद क्रम सें श्री वहीपार्श्वनाथ स्वामी का दर्शन करके, नीमच छावनी जावद नीवाडा चित्तोडगढ कपासण वगेरे स्थलो में होते हुवे श्री करेडापार्श्वनाथ स्वामी का दर्शन करा. बादमें कितनेक गामों में हो ते हुवे देवलवाडे आये और दर्शन किये, वहांपर ३ मंदिर बावन जिनालय है, बहुतहि मनोहर है. उसमें बहुतसी देहरीयों और प्रतिमाओं श्री खरतराचार्य प्रतिष्ठित देखी जावे है. और नागदामें एक जैन मंदिर अद्भुत श्री शांतिनाथ स्वामी का है. और यह मंदिर १४९४ सालका खरतराचार्य प्रतिष्ठित है, और वहांसें विहार करते हुवे उदय-

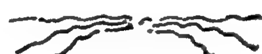
पुर आये, वहां शहरके बाहिर सामलीयाजी का मंदिर है और दादा साहिब का मंदिर है उसको दादावाडी कहते हैं. श्री ऋषभदेवजी का मंदिर है शहर में जिसको मंडीका मंदिर करके कहेतें हैं. और बजार में श्रीवासुपूज्यस्वामीका मंदिर है. और कोरपोलमें श्री सेठजी की बनाई हुई धर्मशाला भि है. रंगविजय खरतरगच्छ का भि एक मंदिर है और मैदान में धर्मशालादि करके युक्त श्री पद्मनाभ स्वामी का मंदिर है. और इस मंदिर में वडे वडे सात जिनबिंब पंच तीर्थी युक्त पाषाण मय हैं बहुतहि मनोहर प्रभु बिम्ब है. खरतराचार्य प्रतिष्ठित और निश्राकृत देखे जावे हैं और पूर्वोक्त धर्म स्थानोंमें तीन शाखा मालूम हुई जिसमें १ भट्टारकीया २ पीपलीया ३ रंगविजीया खरतर यह तीनोहि खरतर शाखा है. और भि बहुत से जिन मंदिर धर्मशाला वगेरे धर्म स्थान है. और श्री केस-रीयाजी के बारेमें श्री रोशनलालजी चतर वगेरे नें आग्रह करके कहा कि हे स्वामिन् ! आप श्री केसरीयाजी पधारते हैं परन्तु इस समय इस

तीर्थ के वारेमें और धजादंड चढाने के लिये वहुतहि डिगम्बरों का जोर सोर होरहा है. इस लिये आप श्री कुछ काल तक वहां विराजें और हमको प्रमाण लेखादिक शोध करदेवें तो वहुत लाभ होवे, उपगार है. तीर्थ रक्षा होवे श्वेताम्बर दिगम्बरों का आपसका विसंवाद मिट जावे. वादमें आचार्य श्री वोले कि अहो श्रावको! तुम चिंता मतकरो. श्री देवगुरु धर्म की कृपासें सब अच्छा होवेगा. वादमें दिल्ली-कलकत्ताके निवासी श्रावकोंनें संघ निकाल कर कहा कि आपश्री यात्रा निमित्त हमारे संघ साथ कृपाकरें. बाद आचार्य श्री ने जवाव दिया कि वहुत लाभ का कार्य है, हम तुमारे साथ में यात्रा निमित्त आवेगें. वादमें आचार्य श्री सर्व समुदाय सहित (चतुर्विध संघ सहित) फागुण सुद २ को उदयपुर सें विहार किया, और फागुण सुद ५ को श्री केसरीयाऽजी पोहोंचे, श्री ऋषभदेव स्वामी की यात्रा करी, और कृतार्थ भये, और वहांपर विराजे, वाद चैत्र वद ८ मीकी यात्रा करी और सर्व लेखादिक

का तपास किया, और जो लेख वगेरा प्रमाण मिला सो निचे देखाते हैं.

श्री केसरीयाजी के नगारखाने
का
शिला लेख.

श्री केसरियानाथजीरे नोबतखानारी प्रशस्ति लिख्यते.



शुभ संवत १८८९ रा शाके १७५४ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे मृगशिर मासे शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ रविवासरे श्री खड्गदेशे श्री धुलेवा नगरे श्री देवाधिदेव श्री ऋषभदेव महाराज के नगारखाना की प्रतिष्ठाकरी जिणरी प्रशस्ति श्री महाराजाधिराज महाराणांजी श्री श्री श्री श्री श्री जवानसिंघजी विजयराज्ये कारापितम्, श्री जेशलमेरु वासतव्य ओसवाल ज्ञातीय वृहद्शाखायां वाँफणा गोत्रे सुश्रावक पुन्य प्रभावक श्री देवगुरु भक्तिकारक जिनाज्ञा

प्रतिपालक पंचपरमेष्ठी महामंत्र स्मारक सम्यक्त्व मूलस्थूल द्वादश व्रत धारक सर्व शुभ बोल लायक संघनायक सेठजी श्री गुमानचंदजी तत्पुत्र बाहादरमलजी सवाईसिंघजी मगनीरामजी जोरावरमलजी प्रतापसिंघजी कुंवर सुलतानचंद भभूतसिंघ दानमल्ल स्यामसिंघ हिमतसिंघ जेठ-मल्ल चंदनमल्ल लघुपुत्र पूनमचंद गंभीरमल्ल दीपचंद इन्द्रचंद सरूपचंद्रादि श्री सपरिवारेण श्री धुलेवानगरे श्री ऋषभदेवजी महाराजरे नगारखानो करायो. अठाई महोत्सव पूर्वकं प्रतिष्ठितम्, बृहत्खरतरगणे वर्त्तमान भट्टारक श्रीजिनहर्षसूरिणां आदेसात् श्रीजिन कीर्तिरत्नसूरि शाखायां उ। चारित्रोदय गणि तत्शिष्य पं। ऋषभदास तत्शिष्य पं। कुशल चंद्रोपदेशात् कामदार जेठमल्लजी तत्पुत्र ऋषभदासेन लि। भद्रं भूयात् भंडारी दलीचंदजी भं। आदमजी.

श्री धजादंड के पटडीका लेखकी नकल दीजाती है.



श्री इष्ट देवायनमः शुभ संवत १८८९ रा शाके १७५४ प्रवर्त्तमाने मृगशिर मासे शुक्लपक्षे दशम्यां रविवासरे खड्गदेशे श्री धुलेव नगरे श्री देवाधिदेव श्री ऋषभदेव महाराजरे दंड चढायो. महाराजाधिराज महाराज महाराणांजी श्री श्री युवानसिंघजी विजय राज्ये श्री जेशलमेरु वास्तव्य ओशवाल ज्ञातिय वृद्ध शाखायां बाँफणा गोत्रे सेठजी श्री बाहदरमल्ल सवाईसिंघ मगनीराम जोरावरमल्ल प्रतापसिंघ कुंवर सुलतानचंद सपरीवारेण धजादंडं कारापितम्, महामहोत्सवेन प्रतिष्ठितं सर्वसूरिभिः ऋद्धिहर्पः उपदेशात् भंडारी श्री दालिचंदजी भाईचंदजी श्री रस्तु भद्रं भूयात् ॥



सावत मोहर.



स्वस्ति श्री हजूर को हुकम श्री रिषभदे-वजीरा भंडारी पंडा है अपरंच धजादंड चढाववा सारु सुलतानचंद आयो है सो काम काजमें हाजिर रेजो, और श्री भगवानरे आभूषण की रकम गेणो चढे सो अठे मालूम हूइ के पंडा भांग नांखे है सो आबात ठीक नहिं, आभूषण की रकम सावत रहे ने पंचोंकी तथा जोरामलकी निजराणी सुं अठे भंडार को वंदोवस्त रहे कोई बातरी कसर पडी है तो ओलूंबो पावोगा, संवत् १८८६ मगसर वद १४



श्री धुलेव नगर के विषय में यह प्रसिद्ध ख्याति है.

९९९ साल तक श्री केसरियाजी वागड देश वडोद नगर में विराजते थे. बाद वहां म्लेछों का उपद्रव जादा होनेपर श्री अधिष्टायक के साहाय से एक रात्रिमे खड्गदेश सघन वंश जालमें आकर रहे. धुलिया नामक एक वनेचर करके उपासित होते हुवे रहे. उस वंश जालमें कितनेक काल तक रहे. बादमें एक सेठकी गऊ उस वंश जालमें निरंतर आकर दुध झरातिहै यह बात सेठने सुणी तब उसको स्वप्न भया कि चोरासी घावों से जरजरीत शरीर वाली श्री ऋषभदेवजी की प्रतिमा वंश जालमे है उस प्रतिमाको प्रगटकर और उस प्रतिमाको ९ दिन तक सीरेमे रखना अखंड शरीर होगा, संघको समाचार देना बहुत संघ आवेगा नवीन मंदिर ३ वेर बनेगा धुलेव नगर बसाना यह प्रतिमा बहुत काल तक इहांहि रहेगा और यह सप्रभाव

बडा तीर्थ जगत में प्रसिद्ध होगा इत्यादि कहके देव अपने ठिकाने गया बाद क्रमसें सर्व व्यवस्था ऊपर प्रमाणे भइ परन्तु संघादिक के अत्यंत् जादा निबंधसें ७ दिनसे बाहिर निकाल दीये जिससें कितनीक बावरेखा मिलनी बाकी रहगई है सो अबभी देखतें हैं और वह धूलिया वनेचर प्रभुको एक रात्रि में इहां लाया और उसकी श्रद्धा भक्ति अत्यंत जादा होनेसें प्रतिमाधिष्ठायक देव उसके ऊपर बहुतहि प्रसन्नथा इस लिये उसी वनेचर के नामसें धूलेव नगर बसा और उसके वंसवाले उसकी जाति वाले श्री केसरियानाथजी के पास चारों तर्फ ५०।६० कोसकी सरहद् तकके वनेचरों में श्री प्रभुको मोटा देव के नामसें मानने पूजने का रिवाज पडगया और वह रिवाज इससमें जाति रिवाज जेसा होगया है और इस वखत में उण वनेचरों का प्रभुके ऊपर श्रद्धा विश्वास जादातर होणेसें हि चलरहाहै अन्यथा एसा रिवाज और तीर्थों में नहि देखा जावे है और मानने पूजने के विषय में बादसाहि रजवाडी पट्टा परवाना

वगैरे भी प्राचीन पहिले इनोंके पास था एसा सुनें हैं. और वह पट्टा परवाना तांबा पत्र शिला लेख वगैरे गरिब हालत में उणोनें डूंगरपुरमें किसी एक साहुकार के वहां गिरवे धर रखेथे, परंतु पंडे ले आये यह उणोकी कमनसीबी भई है और पंडों की भाग दशा जागी है.

सहस्र फणयुक्त श्रीजगवल्लभपार्श्वनाथ स्वामि का मंदिर १८०१ सालका बनाहुवा है उसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्री सुमतिचंद्रगणिना प्रतिष्ठितं इत्यादि लेख मौजद है और १८८९ के सालमें बांफणा सेठजी जोरावरमल्लजी आदि परिवार तर्फसें श्रीकेसरियानाथजी के खास मूल गुंभारेमें चांदीके पत्रे चढायेगये थे सो अभी तक भितोमे लगेहुवे हैं. तिसपत्रोंपर उपरोक्त साल देखनेमें आवे है और स्नात्रपीठ के सामने मूल मंडपमें जातां जीवणी तर्फ उंचा भींतमें जीर्णोद्धार विषयि शिलालेख है, उसमें श्री जिनलाभसूरि आदि नाम मालूम होते हैं परंतु वह लेख जीर्ण खंडित प्राय है गजारूढ मरुदेवी स्वामिनी के सामने लिखा है कि संवत १७३५

श्रीजिनरंगसूरिः प्रतिष्ठितम् एसा अक्षर देखनेमें आतेहैं यह गजारूढ मरुदेवीस्वामिनी का प्रतिष्ठाक्षर मालूम पडते हैं. संवत १४४७ में श्रीजिनभद्रसूरि श्रीजिनकीर्तिरत्नसूरि आदि संघ साथ जात्रा जीर्णोद्धारादि श्रूयते इत्यादि वहुत श्वेताम्बर लेख देखते हैं.

यह उपरोक्त प्रमाण लेखादिक श्रीजिन-कृपाचंद्रसूरिजी को मिले हैं और इन लेखोंकी नकल करके छापोंमें, देवस्थान कचेडीमें, श्री हजूर को भेजी गइथी. बादमें निश्चय हुवाकि यह केसरीयाजी तीर्थ श्वेताम्बरोंका है. दिगंबरों का झूठा झगडा है. बादमें विहार करके पीछे उदेपुर पधारे. चतुर्मासक अत्यासन्न होणेसें उदयपुरहि किया. चौमासा पूरण होनेके बादमें श्रीगोडदेश तरफ यात्रादि निमित्त विहार किया. और पाहिले यह मूर्त्ति सौधर्म नामा देवलोकमें इन्द्रादिक पूजते थे. बादमें लंकामें लंकेश मंदोदर्यादि पूजते थे. बादमें उज्जैन पधारे राम लक्ष्मण सीता श्रीपाल मयणासुंदरी वगेराने पूजी बादमें वागड देश वडोदमें पधारे.

वहां बहुत कालतक विराजमान रहे बादमें बादसाहने आकर घेरा डाला बारा वर्ष तक लडते रहे. बादमें गोवध देखके वहां से खड्ग देश पधारे सघनवंश जालमें रहे. बादमें स्वप्न देके प्रगट भये. और सर्वत्र जगत में तीर्थ तरीके प्रसिद्ध भये. विशेष अधिकार तीर्थ कल्प मध्यान्ह व्याख्या ग्रन्थोंसें तथा सांप्रदायि गुरु मुखसें जाणना. यह इक्यासी सालके चोमासे का संक्षिप्त स्वरूप कहा.

नमोस्तु भगवते श्री पार्श्वनाथाय
श्री वीरवर्धमानाय च नमो नमः



अथ ६४ योगिनां नामानि.

वाराही १ वामनी २ गरुडी ३ इंद्राणी ४ आग्नेयी ५ याम्या ६ नैऋती ७ वारुणी ८ वायव्या ९ सोम्या १० ईशानी ११ ब्राह्मी १२ वैष्णवी १३ माहेश्वरी १४ विनायकी १५ शिवा १६ शिवदूती १७ चामुंडा १८ जया १९ विजया २० अजिता २१ अपराजिता २२ हरसिद्धि २३ कालिका २४ चंडा २५ सुचंडा २६ कनकनंदा २७ सुनंदा २८ उमा २९ घंटा ३० सुघंटा ३१ मांसप्रिया ३२ आसापुरा ३३ लोहिता ३४ अंबा ३५ अस्थिभक्षी ३६ नारायणी ३७ नारसिंही ३८ कौमारी ३९ वानरता ४० अंगा ४१ वंगा ४२ दीर्घदंष्ट्रा ४३ महादंष्ट्रा ४४ प्रभा ४५ सुप्रभा ४६ लंबा ४७ लंबोष्टी ४८ भद्रा ४९ सुभद्रा ५० काली ५१ रौद्री ५२ रौद्रमुखी ५३ कराली ५४ विकराली ५५ साक्षी ५६ विकटाक्षी ५७ तारा ५८ सुतारा ५९ रजनीकरा ६० रंजना ६१ श्वेता ६२ भद्रकाली ६३ क्षमाकरी ६४ ॥ चतुःषष्टीः समाख्याता योगिन्यः कामरूपिकाः पूजिताः

प्रतिपूज्यंते भवेयुर्वरदाः सदा ॥ १ ॥ अमुं श्लोकं पठित्वा योगिनी भिरधिष्टिते चेत्रे पट्टकादिषु नामानि टिक्कानि वा विन्यस्य नामोच्चारणपूर्वं गंधाद्यैः पूजयित्वा नंदिप्रतिष्ठा दिकार्याण्याचार्यः कुर्यात् ॥

आसांयोगिनां पतयोव्यंतरदेव विशेषाः चतुषष्टीवीरा अपि भवन्ति पुलिंग निर्देशत्वेन, तथाहि-वाराह १ वामन २ गरुड ३ इंद्र ४ आग्नेय ५ याम्य ६ नैऋत ७ वारुण ८ वायव्य ९ सोम्य १० ईशान ११ ब्राह्म १२ वैष्णव १३ माहेश्वर १४ विनायक १५ शिव १६ शिवदूत १७ चामुंड १८ जय १९ विजय २० अजित २१ अपराजित २२ हरसिद्ध २३ कलिक २४ चंड २५ सुचंड २६ कनकनंद २७ सुनंद २८ उमेश २९ घंट ३० सुघंट ३१ मांसप्रिय ३२ आसापुर ३३ लोहित ३४ अग्र ३५ अस्थिभन्न ३६ नारायण ३७ नारसिंह ३८ कौमार ३९ वानरत ४० अंग ४१ वंग ४२ दीर्घदंष्ट्र ४३ महादंष्ट्र ४४ प्रभ ४५ सुप्रभ ४६ लंब ४७ लंबोष्ट ४८ भद्र ४९ सुभद्र ५० काल ५१ रौद्र ५२ रौद्रमुख ५३

कराल ५४ विकराल ५५ साक्ष ५६ त्रिकूटाक्ष ५७ तार ५८ सुतार ५९ रजनीकर ६० रंजन ६१ श्वेत ६२ भद्रकाल ६३ क्षमाकर ६४ ॥ वीराश्चापि चतुःषष्टी समाख्याता कामरूपकाः पूजितः प्रति पूज्यंते भवेयुर्वरदाः सदा ॥ १ ॥

॥ इत्यादि पूर्ववत् ज्ञेयः ॥

॥ इति विधि प्रपायाम् ॥

॥ द्विपंचाशद्वीरारित्यपि शास्त्र सम्मत्तिः ॥

अथ चौसठ्ठयोगनी नाम लिख्यते.

१ दिव्या २ महायोगिनी ३ सिद्धा ४ योगेश्वरी ५ प्रेताक्षी ६ डाकिनी ७ काली ८ कालरात्री ९ निशाचरी १० क्षींकारी ११ सिद्ध-वैत्ताली १२ हौंकारी १३ भूतडामरी १४ उर्द्ध-केशी १५ विरूपाक्षी १६ रक्ताक्षी १७ नरभोजनी १८ केकारी १९ वीरभद्रा २० धूम्राक्षी २१ कलहप्रिया २२ राक्षसी २३ घोररक्ताक्षी २४ वीररक्ताक्षी २५ भयंकरी २६ वीरी २७ कुमारी २८ चंडिका २९ वराही ३० मुंडधारणी ३१

भैरवी ३२ वज्रिणी ३३ क्रोधा ३४ दुरमुखी ३५ प्रेतवाहिनी ३६ कंटकी ३७ लंब्रोष्टी ३८ मालिनी ३९ मंत्रयोगिनी ४० कालाची ४१ मोहिनी ४२ चक्री ४३ कंकाली ४४ भुवनेश्वरी ४५ कुंडली ४६ मालिनी ४७ लक्ष्मी ४८ स्थनदुरी ४९ क्राली ५० कोशिकी ५१ भद्राणी ५२ यक्षा ५३ व्याघ्रिणी ५४ यक्षीणी ५५ कुमारी ५६ यंत्रवाहिनी ५७ विशाली ५८ कामाची ५९ विषहारिणी ६० द्विजटी ६१ विकटी ६२ घोरा ६३ क्रपाली ६४ विषलांगुली.

इति चोसठ योगिनी नामानि.

अथ बावनवीरारा नाम लिख्यते

१ चापिल २ खंजक ३ रंतलपहारी ४ नाडीतोड ५ शूलीभंजण ६ मसाणडोलण ७ गढपाडण ८ समुद्रतरण ९ समुद्रसोषण १० लोहभंजण ११ सांकलतोडण १२ विस्व-पापर १३ रुंडमाल १४ आग्निक १५ वायवीर १६ यमघंट १७ काल १८ अकाल १९ अग्नि-

कांत २० विषकांत २१ रक्तिकः २२ कोयलावीर २३ कालियावीर २४ कालवेल २५ कालघंट २६ इन्द्रवीर २७ यमवीर २८ देवरारि २९ दूतरारि ३० हरारि ३१ झापडा ३२ माणिभद्र ३३ खापडीयावीर ३४ केदारवीर ३५ नारसिंह ३६ गरुड ३७ घटवीर ३८ कातरवीर ३९ वंकवीर ४० महत्वीर ४१ संतोपवीर ४२ महा संतोषवीर ४३ भमरवीर ४४ महाभमरवीर ४५ क्षेत्रपालवीर ४६ भूतभक्षणवीर ४७ हिडंब भक्षणवीर ४८ मकभक्षणवीर ४९ साकिनी भूतणीवीर ५० खेदरुतभजणवीर ५१ राजामालवीर ५२ कपिल.

अथ द्विपंचाशत वीराणां नाम न्यासो

क्षेत्रपाल १ कपिल २ वटुक ३ नारसिंह ४ गोपाल ५ भैरव ६ गरुड ७ रक्तसुवर्ण ८ देवसेन ९ रुद्र १० वरुण ११ भद्र १२ वज्र १३ वज्रजंघ १४ स्कंद १५ कुरु १६ प्रियंकर १७ प्रियमित्र १८ वन्हि १९ कंदर्प २० हंस २१ एक

जंघ २२ घंटापथ २३ दजक २४ काल २५ महाकाल २६ मेघनाद २७ भीम २८ महाभीम २९ तुंगभद्र ३० विद्याधर ३१ वसुमित्र ३२ विश्वसेन ३३ नाग ३४ नागहस्त ३५ प्रद्युम्न३६ कपिल ३७ नकूल ३८ आल्हाद ३९ त्रिमुख ४० पिशाच ४१ भूतभैरव ४२ महापिशाच ४३ कालमुख ४४ शुनक ४५ अस्थिमुख ४६ रेतोवेध ४७ स्मशानचार ४८ कलिकल (केलिकल) ४९ भृंग ५० कंटक ५१ विभीषण ५२ पिंगल ५३ पूर्णभद्र ५४ माणिभद्र नामान्तरं भेदान्तर मेतेषां अनेकशः समुपलभ्यंते ॥ अष्टौभैरवाः भैरव १ महाभैरव २ चंडभैरव ३ रुद्रभैरव ४ कपालभैरव ५ आनन्दभैरव ६ कंकालभैरव ७ भैरवभैरव ८ एतेषां अष्टोत्तरशत भेदाः संति, ग्रामाकर नगर निगमादिषु स्थानेषु यत्र यत्र विचरंति श्रीजिन-दत्तसूरयः तत्रस्था देवा देव्यश्च सनुकूलासंत सेवां कुर्वन्ति सम्यग् दृष्टयस्तु सुतरांन मस्यांति चैवं आगमेसी भद्राःभगवंतःसुखेनमही पीठे विरहन्तिच जंभा १ जंभिनी २ स्तंभा ३ स्तंभिनी ४ मोहा ५ मोहिनी ६ इति षट्देव्यः ब्रह्माण्यैनम १

माहेश्वरी २ कौमारी ३ वैष्णवी ४ वाराही ५ इंद्राणी ६ चामुंडा ७ कालिका ८ इति अष्टदेव्यः रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ वज्रशृंखला ३ वज्रांकुशी ४ अप्रतिचक्रा ५ पुरुषदत्ता ६ कालि ७ महाकालि ८ गौरी९ गांधारी१०महाज्वाला११मानवी १२ वैरोट्या १३ अछुप्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६ इति शोडषविद्यादेव्यः

अथ चतुषष्टी योगिनी ब्रह्माण्यै नमः

१ कौमारी २ वाराही ३ शांकरी ४ इंद्राणी ५ कंकाली ६ कराली ७ काली ८ महाकाली ९ चामुंडा १० ज्वालामुखी ११ कामाख्या १२ कापालिनी १३ भद्रकाली १४ दुर्गा १५ अंबिका १६ ललिता १७ गौरी १८ सुमंगला १९ रोहिणी २० कपिला २१ शूलकटा २२ कुंड-लिनी २३ त्रिपुरा २४ कुरुकुल्ला २५ भैरवी २६ भद्रा २७ चंद्रावती २८ नारसिंही २९ निरंजना ३० हैमकांती ३१ प्रेतासनी ३२ ईश्वरी ३३माहे-श्वरी ३४ वैष्णवा ३५ वैनायकी ३६ यमघंटा३७ हरसिद्धी ३८ सरस्वती ३९ तोतला ४० चंडी ४१ शंखिनी ४२ पद्मिनी ४३ चित्रिणी ४४

शाकिनी ४५ नारायणी ४६ पलादिनी ४७ यम भगिनी ४८ सूर्यपुत्री ४९ शीतला ५० कृष्ण-पासा ५१ रक्ताक्षी ५२ कालरात्री ५३ आकाशी ५४ सृष्टिनी ५५ जया ५६ विजया ५७ धूम्र-वर्णी ५८ वेगेश्वरी ५९ कात्यायनी ६० अग्निनी होत्री ६१ चक्रेश्वरी ६२ महाअंबिका ६३ ईश्वरा ६४ इत्याचारदिनकरे ॥

॥ नमोस्तु श्रीजिनचन्द्रसूरये ॥

अथ श्रीजिनचन्द्रसूरि चरित्रे किंचित्परिशिष्टम्.

तथाहि—तत्पट्टे एकपष्टितमः श्रीजिनचंद्र सूरि स्तस्यच तिमरी नगर पार्श्वस्थ वडली ग्राम वास्तव्य रीहड गोत्रीय साह श्रीवंतः पिता सिरीयादेवी माता संवत् १५९५ जन्म संवत् १६०४ दीक्षा संवत् १६१२ भाद्रपदसुदि नवम्यां जेसलमेर नगरे राउल मालदेवकारित नंदीमहोत्सवेनसूरि पदं जातं. तदाएवरात्रौ श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः प्रादुर्भूयस्मरण पुस्तकस्थ

साधिता स्तत्रपीरपंचक माणभद्रयक्षखंजक्षेत्रपाला
द्योदेवाः साधिता स्तथा पुनरेकदा सं॰ १६६९
श्रीसलेम अपर नाम जहांगीर पतिसाहिना
गानादि कलानिपुणत्वेन स्वपार्श्वेरक्षितस्य एकस्य
तपागच्छीययते निजास्त्रियासह एकांत स्नेह वार्त्ता
करणाद्यनाचारं विलोक्य कुपितेन सता स्वसेव-
केभ्य इत्थमाज्ञादत्ता ममसर्वदेशेषु येकेपि दर्श-
निनः संति तेसर्वेपि स्त्री धारका कर्त्तव्याः नो
चेत् देशेभ्यो वहिः कार्या इति ततोभीतायतयः
केचित्समुद्र मुल्लंघ्य द्वीपांतरंगताः केचित्भूमि
गृहेषु प्रविष्टाः केचित् कोलिक काष्ठिकादीनां
स्थानेषुस्थिता स्तस्मिन्नावसरे श्रीजिनचंद्रसुरिभिः
पाटनतोविहृत्य उपद्रव वारणार्थं आगराख्ये नगरे
आजग्मे तत्रगुरुदर्शनादेव रंजितेन पतिसाहिना-
वह्वादरेण गुरव आहूता स्तदा गुरुभिर्वहु चम-
त्कारान्दर्शयित्वा प्रागदत्ताज्ञादूरी कारिता सर्वत्र
फुरमाणकेनमोचयित्वा सर्वेयतयः स्वस्थान प्रापि-
ताश्च इत्थं वहुधा जिनशासनोन्नति कृता.

पुनर्गुरूणां समयराज १ माहिमाराज २ धर्मनिधान ३ रत्ननिधान ४ ज्ञानविमल ५ एत-

त्पांडव पंचक प्रमुखाः पंचनवति (६५) शिष्याः संजाताः एवंविधाश्री जिनचंद्र सूरयः सर्वायुः पंचसप्तति [७५] वर्षाणि पालयित्वा सं. १६७० आश्विन वदि द्वितियायां वेनातटस्वर्गं प्राप्ताः तद्वारके संवत् १६२१ भावहर्षोपाध्यायात् भाव हर्षीय खरतर शाखा भिन्नाऽयं सप्तमो गच्छभेदः ॥ ६१ ॥ समाप्तश्चायं संबन्धः ॥

अथ श्री गणधर सार्धशतकाख्यस्य गुर्ज्जर भाषान्तर ग्रन्थस्य

प्रस्तावना.

अहो प्रिय सज्जनों सर्व आपलोक साव-धान होकर श्रवण करो. कि इस श्रीगणधर सार्धशतकान्तरगत चरित्रवृत्ति गुर्जर भाषांतर नामक अत्युत्तम ग्रन्थ में, सर्वत्र पृथवी मंडल में (याने) सर्व दुनियामें बहुत प्रतिष्ठा को प्राप्त करने वाले अतएव बहुत बडी है कीर्ति जिणोंकी और विद्वानों में शिरोमणि ऐसे अनेक गुणोंके भंडार श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिजी सवाई युगप्रधान के सुशिश्य श्रीमतिभद्रोपाध्यायजी के सुशिष्य रत्न श्रीचारित्रसिंह गणिजीका उद्धार किया हुवा मूल ग्रन्थ है उसका यह गुर्ज्जर भाषान्तर किया गया है और बहुतहि उपकारक होणेके सबबसें भाषान्तर कियाहै और पूर्वोक्त प्रस्तावनामें इस ग्रंथका विषय बतलाया गया है. इसलिये यहांपर विशेष विस्तार नहिं कियाहै. इस वास्ते हेगुणानुरागि

सज्जनों, आपलोक इस ग्रन्थकुं पढके याने अवलोकन करके सुसंप्रदायसें धारके निर्मल ज्ञानमयिश्रेष्ट संप्रदायको भजनेवाले होवो. और इस भाषान्तर ग्रन्थ के छपवाणेमें युग प्रवरागम श्री श्री १००८ श्रीश्रीमज्जिन कृपाचन्द्रसूरिश्वरजी की हस्तदीक्षित शिष्या आर्या श्रीमतीसोभागश्रीजी, सा सुशिष्यरत्ना श्रीमतीमहिमाश्रीजी तथा जवेरश्रीजी के सदो-पदेशसें श्रेष्टहै नाम जिसका और सद्गुणों की रागवाली श्रीजामनगर शहरमें रहेनेवाली श्री-मती सुश्राविका श्रीजडावबाई का दियाहुवा आर्थिक सहाय करके, और भी कितनीक सु-श्राविकाओंका दिया हुवा आर्थिक सहाय करके श्रीजैन प्राचीन पुस्तकोद्धार फन्डके कार्य वाह-कोंने प्रगट करके छपवाया और इस ग्रंथका महत प्रमाण होणेसें द्रव्य व्यय जादा लगणेसें किमत करके अलंकृत किया है, औरभी सुणोकि इस ग्रंथके अत्यन्त मनोहर होणेपर भी जादा कालक्षेपादिक हूवा है सो दयालु सज्जन और पाठकगण इस मेरे अपराधको क्षमाकरें, और

भी इसग्रंथमें दृष्टिदोषसें विस्मृतिदोषसें मति मोहसें छापा आदिकेदोषसें अक्षर शब्द कानो मात्रा वगैरे ओछा अधिक हूवा होय सो दीर्घ दर्शीयों को शुद्ध करणा उचित है, यह प्रार्थना युग प्रवरागम श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजी के शिष्य रत्नविद्वच्छिरोमणि जेष्ठांतवासी श्रीमान् आणंदमुनिजी सें लघुगुरुभ्राता उ. श्रीजयसागर गणिकीहै, सो श्रीमान् सज्जन वाचकवर्ग अवश्यसार्थक करेंगे, इति अभिलषामहे ॥ चिरंनन्दन्तु पाठकाः ॥ चिरंनन्दन्तु गच्छेश्वराः चिरंनन्दन्तु श्रीकोटिकगच्छेश्वराः ॥ चिरंनन्दन्तु श्रीखतरेश्वराः॥ चिरंनन्दन्तु श्रीवीरशासनेश्वराः॥ स्वस्तिश्री रस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ विक्रम संवत् १९८३ शाके १८४८ हिजरी सन् १३४४ ईसवी सन् १९२६-१९२७ नान्दिवर्द्धन संवत्सर२४९५ श्रीवीरनिर्वाणात् २४५३ माघ शुक्ल नवम्यां ता १० फरवरी मास२ गुरुवासरे श्रीइन्द्रपुरनगरे उ, श्रीजयसागगणिनाऽलेखि ॥ चिरंनन्दन्तु वर्त्तमान भट्टारकाः श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरा श्च ॥ शुभं क्षेमयोगश्चभवतु ॥

प्राचीन पुस्तकोद्धार फंड ग्रं० २५

श्रीमच्चारित्रसिंहगणिविरचितं.

श्रीगणधरसार्धशतकान्तर्गतप्रकरणस्य

गुर्जरभाषान्तरम्.

श्रीमद् योगीयोंनांइन्द्र अने युगप्रधान (पदवीधर) श्रीजिनदत्तसूरिजीयें करेल श्री गणधरसार्धशतकनामनां प्रकरणनी श्रीजिन पतिसूरिना शिष्य पंडितसुमतिगणिए रचेली बृहद् वृत्ति (मोटी टीका) ने (वांचतां) अने अहीं वाचनाचार्य श्री पूर्णदेवगणिविगेरेना वृध्ध सम्प्रदायमां अम्भोहर देशने विषे मंदिरमां निवास करनार अने ८४ देवगृहनो नायक श्रीजिन चंद्राचार्यनामेआचार्यहतातेआचार्यने व्याकरण, तर्क, छन्द अने अलंकार (विगेरे) जाणनारअनेशरदऋतुनाचन्द्रनीचांदनी सरखा मनोहर, निर्मल चित्तवालो एवो वर्ध्धमान नामे शिष्य हतो अने तेने प्रवचनसारविगेरे ग्रंथवंचावतां आ ८४ आशातनाओआवी ते आ प्रमाणे.

खेलं केलिकादि आसायणाउ,
भवभमणकारणाइअविभाविऊं, जइणो
मलिणात्ति नजिणमंदिरंमि, निवसंति
इ अ समओ. ॥ १ ॥

अर्थ=श्लेष्म अने क्रीडादि ८४ आशातनाओ ते भव भ्रमणनुं कारण जाणीने, मुनिओ मलीन थाय छे माटे मुनिओ जिन मंदिरमां न वसे.

पाना पहला नी स्फुट नोट.

१ खेलं केलिं कलिं कला कुललयं, तंबोल मुग्गालयं, गाली कंगु लिया सरीर धुवणं, केसे नहे लोहियं, भत्तोस्सं तय पित्त वंत दसणं विस्सामणं दामणं, दंत च्छी नह गंड नासिय सिरो संत्त च्छवीणंमलं ॥१॥ मंतं मीलण लिक्खयं विभजणं भंडार दुट्ठासणं, छाल कप्पड दालि पप्पड वडी विस्सारणं नासणं, अक्कंदं विकहं सरत्थघडणं तेरीच्छसंठावणं, अग्गीसेवण रंधणं परिक्खणं निस्सीहिया भंजनं ॥ २ ॥ छत्तो वाणह सत्थ चामर मणोणेगत्त मब्भंगणं, सच्चित्ताणमचाय

[56]वातमंझिए [57]दिट्ठीअनो अंजली, साडे [58]गुत्तर संग भंग [59]मंडनं [60]मोलिं [61]सिरोसेहरं, [62]हुड्डा [63]जिड्डुह [64]गिड्डियां-इरमणं [65]जोहार [66]भंडाक्कियं ॥ ३ ॥ [67]रेक्कारं [68]वरणं [69]रणं [70]वितरणं [71]वालाण पलहत्थियं, [72]वाहू [73]पायपसारणं [74]पुडुपुंडी [75]पंकं [76]रओ [77]महुणं, [78]जूया [79]जेमण [80]जुज्झ [81]विज्ज [82]वणिजं [83]सिज्जंजलं [84]मज्जणं, एवमाइय सावज्ज कज्ज मुज्जुओ वज्ज ए जिणंदालए ॥ ४ ॥

स्फुट नोट समाप्त.

ए आशातनाओ विचारतां तेना मनमां एवी भावना थई के जो ए आशातनाओनुं कोई पणरीतें रक्षणथायतोज भवरूपीअटवीनो पारपमाय, नहींतर अगाध एवाभवरूपीसमुद्र नीअंदरपडेलाएवा असोए अनंतीवार जन्म-जरा-मरण-दारिद्रदौर्भाग्य-रोग-शोकइत्यादि संतापनुं भाजन पोतेजपोताना दुरात्मपणावडे आत्मा ने (संतापनुं भाजन) करेल छे जे कारण थी कहयुं छे के आसायण मिच्छतं (आशातना

---

१ आसायण मिच्छत्तं, आसायण वज्जणाय सम्मत्तं
आसायणा निमिथं, कुव्वइ दीहं च संसारं ॥१॥

रूप मिथ्यात्व) ए प्रमाणे पोतानु शुभअध्य-वसाय ते वर्धमाननामानां मुनिए पोतानागुरु ने निवेदनकर्यो तेथी ते गुरुकर्मोजिनचंद्र नामनां तेनागुरुए विचारकर्यो के आनो आ विचार शुभ नथी तेथी एने आचार्यपदे स्थापी ने मंदर अने बाग विगेरेना प्रतिबन्ध वडे नियंत्रित (कब्जे) करूं, अने तेगुरुए तेमजकर्यु तो पण तेपुण्यात्मानुमन चैत्यग्रहनीअंदररहेवामां रतिपा-मतु नथी, अने तेयुक्त छे, कारण के—

दुर्गन्धपंककलिते शवतापरीतदु-स्त्रोटिकोटिकबकोदकुटुम्बकीर्णे, त्यक्ते सुपात्रिभिरलं धत शुभ्रपक्षाः, किंकुत्सिते सरासिपादमपिक्षिपन्ति ॥ १ ॥

अर्थः—दुर्गन्धकरदमवाला, अने शबना समूहनी चारे बाजुएदुर्गंधयुक्त अने दुष्टचांच-वाला करोडों बगलाओनां कुटुम्ब वडेव्याप्त (एवु खराब सरोवर) जेनुं बीजाउत्तमपक्षीओए संपूर्णरीते त्यागकर्यु तेवा कुत्सितसरोवरमां हंसो शुं पगपणधरेछे ?

त्यारबाद् चैत्य-मठ-बाग-बाडी विगेरे आ सर्व तारे आधीन छे माटे इच्छाप्रमाणे तेनो उपभोग कर, ने आ तारा एक प्रमाण थी (शास्त्र पाठ थी) तुं न छोड! ए प्रमाणे कोमल-वचन पूर्वकनिवारणकर्याछतांपण ते मुनि पोताना इच्छित अर्थमां (धारणामां) स्थिर ने निश्चय मनवाला थया अने विचार करवा लाग्या के "पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतिपतेत्" पाणी नीचे मुखेज वहे छे " ए न्यायथी गमेतेरीते कोई पण मोटा सुविहित गुरू ने अंगीकार करवा वडे मारे मारुं हितसाधवुं ए प्रमाणे करेली छे उग्र प्रतिज्ञा जेणे एवा ते मुनी पोताना गुरु नी आज्ञा लइने केटला एक मुनिओना परिवार सहित दिल्ली वादली विगेरे स्थानोमां (गामो मां) आव्या, ते अवसरे शुद्ध आचारवाला श्री उद्योतन नामनां आचार्य ते मुनिना पुन्यथीज जाणे प्रेरायला होय तेम प्रथमथीजविहारकरीआव्याहताते थी तेमना चरणकमलनी पासे शुद्धमार्ग रूप तत्त्वनोनिश्चयकरीनेतेश्रीवर्धमानसूरिए अति-दृढ अनेएकत्रकरेलकल्याणनीसंपदारूपउपसंपदा-

थोडोकालगयो, त्यारबाद श्री वर्द्धमानसूरिने घणो विचारथयो के आ सूरिमंत्रनो अधिष्टायक कोणछे ? ते जाणवाने माटे अट्ठमतप कर्यो तेटलामां त्रीजेउपवासे धरणेन्द्र आव्यो अने धरणेन्द्र कह्युं के सूरिमंत्रनो अधिष्टायक हुंछुं, अने सूरिमंत्रनासर्वपदोनुं देखतुं फलकहीबताव्युं तेथीसूरिमंत्रस्फूर्तिमान (फलवालामां ० ० ० ०) थयो अने तेसूरिमंत्रवडे श्रीवर्द्धमानसूरि पण स्फूर्तिवाला अने परिवारवाला थया ए अवसरमां पंडित जिनेश्वर गणिए विनंति करी के हे भगवन् ! जो क्यांय पणजइने सत्यमार्गनोप्रकाश न करीये तो आपणा जैन धर्मनुं विशेष फल शुं छे ? अने गुजरात देश घणो मोटो संभलाय छे, परंतु ते देशघणा चैत्यवासीआचार्योवडे भरायलो छे, माटे जो गुजरात देशमां जइए तो कल्याण थाय त्यार बाद श्रीवर्द्धमानसूरिए कह्युंके आपे कह्युं ते योग्य छे, परंतु शुकन अने निमित्तादिजाणवाजोवाजोइए त्यारबादशुभ शुकनादि जाण्या अने थयां पणखरां, ते थी

भामहना मोटासार्थसहित (परिवार सहित) पोतानीसाथे १ आचार्यो चाल्या अनुक्रमें पल्लीमां आव्या, त्यां वहि भूमि (स्थंडिल) गयेला पंडित जीनेश्वर गणि सहित श्री वर्द्धमान सूरिने सोमध्वज नामनो तापस मल्यो तेनी साथे वार्तालापथयो तेथीकइकगुणथशे एम जाणीने श्री वर्द्धमानसूरिए प्रश्नोत्तर कर्या, ते आ प्रमाणेः—

कादोर्गत्यविनाशिनी हरि विरिं-च्युग्रप्रवाचीचको वर्णःको व्यपनीयते च पथिकैरत्यादरेण श्रमः । चन्द्रः पृच्छति मंदिरेषु मरुतां, शोभा विधायी च को दाक्षिण्येन नयेन विश्व विदितः को भूरि विभ्राजते ॥

अर्थः—दारिद्रतानो विनाशकरनारी कोण? विष्णु अने ब्रह्माने उत्कृष्टरीतेकहेनार अक्षर कयो ? मुसाफरो वडे कयो परिश्रम अति आदर पूर्वक दूर कराय छे ? चन्द्र पूछेछेके देवोनां

मंदिरोपरशोभादेखाडनार कोण ? अने दाक्षिण्य तथा न्याय वडे जगतमां प्रख्यात एवो कयो पुरुष वणी शोभा पामेछे ।

एमां पहेलो उत्तर मा (लक्ष्मी) बीजो उत्तर ॐ, त्रीजो उत्तर अध्वज (मार्गमां चालवा थी उपजेलो) चोथो उत्तर ध्वज अने पांचमो उत्तर सोमध्वज (मा+उम्+अध्वज=सोमध्वज) छे तेथी आ विप्र तुष्ट थयो अने एने श्वेताम्बर दर्शन उपर बहुमान थयुं प्रासुक अन्नदानपण आप्यु अने तेणे लोकोनी समक्ष (आचार्यनी) गुणनी स्तुति विगेरे बोलवा रूप भक्ति करवा लाग्यो त्यार बाद तेज भामह (सार्थ पति) ना सार्थ सहित चाल्या अने अनुक्रमे अणहिल्लपुरमां उतर्या वली कोटमात्र वाली ते मांडवीमां रहेवा जेवुं स्थान नथी के जेथी स्थानादिकनी याचनाकरीशकाय जेटलामां त्यां बेठेला मुनिओने तापपण नजीकमांआव्यो तेथी पंडित जीनेश्वरगणिए कहुं के हे भगवन्! आ प्रमाणे बेसी रहेनाराओनु कोइ पण कार्य सिद्धथतु नथी त्यारे श्रीवर्द्धमान सूरिए कहुं के तो हे सुशिष्य

जीनेश्वरपंडित ! हवे केमकरवुं (जिनेश्वर पंडितकह्यु के) जो तमो कहो तो आ ऊंचुं मकान देखाय छे त्यां जाऊं श्रीवर्द्धमानसूरिए कह्युं के जाओ तेथी सुगुरुना चरणकमलने नमस्कार करी (जिनेश्वर पंडित) त्यां गया ने त्यारबाद जिनेश्वरपंडिते तेनीआगल उभारहीने आप्रमाणे कह्यु के—

श्रीसर्गस्थितिक्षयकृतो, विशेषधृष-
संस्थिताः। श्रिये वः सन्तु विप्रेन्द्र, ब्रह्म
श्रीधरशंकराः ॥ १ ॥

अर्थः—सरजवुं स्थिर राखवुं ने क्षय करवो ए त्रण विशेष धर्मोमांजोडायला एवा ब्रह्मा-विष्णु—ने महादेव ते हे श्रेष्ठ विप्र तमारी कल्याण लक्ष्मीने माटे हो

ए प्रमाणे आपेला आसिर्वाद थी प्रसन्न थयेला मन वालो ते राजपुरोहित विचारवा लाग्यो के अहो ! आ साधुकोईविचक्षण छे एटलामां मंदिरनी अंदर रहेल एकान्तपाठशा-लाना स्थानमां ॐ ऋषभ पवित्रं पुरुहूत मध्वरं यज्ञं सहेयं इत्यादि वेदवाक्य ने विपरीतरीते

गोखता सांभलीने जिनेश्वर पंडिते कह्युं के आ प्रमाणे वेदनापदोनोउच्चार नकरो त्यारे विद्यार्थीओए पूछ्युं के केवी रीते उच्चार करीये ? त्यारे जिनेश्वर पंडिते कह्युं के आरीते उच्चार करो ते सांभलीने आश्चर्य पामेल मनवाला राजपुरोहिते कोमल वाणी वडे पूछ्युंकेकोइ पण माणस भण्या विना वेद पाठने शुद्ध अथवा अशुद्ध जाणी शकतो नथी तो जातिए वेद पाठमां अनधिकारीएवाआपशुद्र आ वेदपाठनुं गोखवुं विपरीतछे एम केवी रीत जाण्युं ? त्यारे जिनेश्वरपंडिते कह्युं के हेमहाभाग्यना निधान एवा हे श्रेष्ठविप्रराज जेवीरीते तमो कहो छो तेम शुद्रो ने वेदपाठनो अधिकार नथी परन्तु अमो शुद्रनथी, त्यारे असे कोण छीए एमजो जाणवा इच्छता होयोतो कहिये छीए के अमोचारे वेदजाणेला ब्राह्मण जातिना छीए तथा.

तपसा तापसो ज्ञेयः, ब्रह्मचर्येण ब्राह्मणः पापं परिहरंश्चैव, परिव्राजोऽभिधीयते ॥ १ ॥

अर्थः—तपवडे तापसजाणवो ब्रह्मचर्यवडे ब्राह्मणजाणवो अने पापोनेपरिहारकरतो (वर्जतो) परिव्राजक कहेवाय छे. ए प्रमाणे पूर्वऋषीओए कहेला ब्रह्मचर्यना लक्षणथी अने अर्थ थी अमे ब्राह्मणज छीए त्यार आनंदसहित पुरोहित—कयादेशथी तमो अत्र आव्या छो? पं० जिनेश्वर गणि—दिल्लिकापुरीतिलकनामना नगरथी पुरोहित—ते कया पृथ्वी तलने धन्य छे के आ अमारा नगरमां परमपवित्र लक्षणयुक्त आप सरखा मुनिरूपी राजहंस ना चरण स्थापन वडे (आ भूमी) अलंकृत थई (अर्थात् आप कई जग्याए उतर्या छो?) पं० जिनेश्वर गणि-विशाल सूर्यना आतपवाली शालामां अमो उतर्या छीए पुरोहित—ए प्रमाणे त्यां शा माटे रह्या छो? पं० जिनेश्वर गणि-हे पुरोहित! सर्वस्थानो विरोधीओए रोकेलाहोवाथी पुरोहित—शान्त आत्मावाला अने कोइनो नहींकरेल अपराधवाला एवा आप सरखाना पण कोइ सत्रुओ छे शुं? पं० जिनेश्वर गणि—हे विप्रवर्य!

मुनेरपि वनस्थस्य, स्वानि कर्माणि कुर्वतः, उत्पद्यन्ते त्रयः पक्षा, मित्रोदासीनशत्रवः ॥ १ ॥

अर्थः—वनमां रहेला अने पोतानांधर्म कार्य करता एवा मुनिने पण मित्र-उदासीन-ने शत्रु ए त्रण पक्ष उत्पन्न थाय छे

पुरोहित अहाहो चंदनसरखाशीतल एवा आपसरखा ने पण केटलाएकपापीओ अहित करनारा छे! ए प्रमाणे क्षणवार विषादपामीने पुनः कहेवा लाग्यो के ते क्या दुर्विनयी छे ते मारे जाणवाजोइए

पं० जिनेश्वरगणि-हेमहात्मा तेओने कल्याणांहो तेओनी चर्चानिकदर्थनावडे अमे शुं? ए सांभली पुरोहितपोतानामनमां विचारे छे के

त एते सुकृतात्मानः, परदोष पराङ्मुखाः ॥ परोपतापनिर्मुक्ताः, कीर्त्यंते यत्र साधवः ॥ १ ॥

अर्थः—जे ओ पारकाना दोष थी विमुख छे ने पारकाने संताप आपवा थी विरक्त थयेला छे तेओज पुन्यात्मा अने साधुओ कहेवाय छे

तो आमहात्माओ पोताना प्रतिपक्षिओनुं नाम केवीरीते कहे ? वली मारे पण ते दुरात्मा-ओनुं नाम सांभलवुं अकल्याण कारी छे तेथी नाम नहीं सांभलवुं.

पण बीजुं पूछु एम विचारी प्रगट पणे पूछे छे के पुरोहित—तमो आटलाज आवेला छो! के बीजापण कोई मुनिओ आवेला छे ? पं० जिनेश्वरगणि जेमना अमो शिष्यछीए ते पोतानी बुद्धिना विशेषवडे पराजितकरेला छे बृहस्पति जेणे त्रणजगतना गुरू अने अमारा पण गुरु तथा त्याग करेल छे सर्वपरिग्रह-स्त्री-धन धान्य-स्वजन-स्नेह अने संबंध ते जेणे तथा रूडे प्रकारे ग्रहण करायेलुं छे नाम जेनुं (श्रेष्ठ नामवाला) एवा श्रीवर्द्धमानसूरि आवेला छे पुरोहित आप सर्व मली केटला छो एम विस्मय पूर्वक कयुं पं. जिनेश्वर-अठारपापस्थानोथीविरक्त थयेला एवा अमो १८ छीए.

पुरोहित-(पोताना मनमां विचारे छे) अहो !

त्यक्तदाराः सदाचारा मुक्तभोगा जितेंद्रिया गुरवो यतयो नित्यं, सर्वे जीवाऽभय प्रदाः ॥ १ ॥

अर्थः-त्यागकरेली स्त्री वाला, श्रेष्ठ आचार वाला, भोगरहित, इंद्रियोंने जीतनारा, अने नित्य सर्वजीवों ने अभय आपनारा जे यतियो ते गुरुओछे-ए प्रमाणे दसाध्यायमां कहेलछे.

तेवाज आ महात्मा सद् गुरुओ छे, माटे एओने मारे घेरलावीने पापरहित एओना चरणथी पवित्र थयेली रजवडे मारुं घरनुं आंगणुं पवित्र करूं, अने प्रगटपुन्यना राशिरूप एओने निरन्तर दर्शनवडे मारो अवसर सफल थाओ एम विचारी पुनः प्रगट रीते बोल्यो के हे महा सत्ववाला मुनिवर्यो ! चारशालावडेकरीने विशाल एवा मारा घरमां एक द्वारे प्रवेश करीने एकशालामां तिरस्करिणी (पडदोबांधीने) आपीने आप सर्वे सुख पूर्वक रहो, अने भिक्षाने अवसरे मारो माणस साथे आव्ये छते ब्राह्मणोना

घरोमां भिक्षा करवाथी पण आपने कंइ पण अडचण नहि थाय. त्यार बाद पंडित जीनेश्वर गणिए कह्युं के तमारा सरखा उचित मनोहर चित्तवाला बीजा कोण छे ? वली आ प्रमाणे कहवा लाग्या के—

मोक्षन्तेम्म न च स्नेहं, नपात्रं न दशांतरं।
सदालोकहितासक्तारत्नदीपाइ वोत्तमाः॥

अर्थः-जेम रत्नना दीवा स्नेह (तैलादि) नी अपेक्षा राखता नथी, पात्र तेमज वर्तिका (वत्ती) नी अपेक्षा राखता नथी, छतां श्रेष्ठ वा निरन्तरप्रकाशआपवारूप कल्याणमां आशक्तहोय छे तेम उत्तमपुरुषो पण स्नेह (प्रीति) पात्र (पात्रा पात्र) के अवस्था विशेष ने जोता न थी पण हमेशा लोक कल्याणमां ज आशक्त होय छे.

ए प्रमाणे कहेता २ (जिनेश्वरपंडित) पोताना गुरु पासे गया अने सर्व वृत्तान्त निवेदन कर्युं, ए ठीक छे एम विचारी ने ते प्रमाणेज

(पुरोहितना कह्या प्रमाणे) सर्व करे छे, अने ए प्रमाणे त्यां रहेला पोताना धर्म कार्यमां एक निष्ठ एवा ते मुनिओनी वार्ता नगरमां फेलाइ के उपाश्रयमां रहेनारा मुनिओ अत्र आव्या छे, पुनः साध्वाभास (साधु नहिं पण साधु सरखा) एवा चैत्यवासी मुनिओए पण तेओने आवेला सांभल्या, तेथी ते सर्व ए एकठा मलीने विचार करवा मांड्यो के अहो ! उपाश्रयवासी मुनिओ जे आगाममां आव्या ते ठीक न थयु, कारण के ए मुनिओ तो उत्तम प्रकारनी विधिवाला, अने निरन्तर सिद्धान्तमां कह्या प्रमाणे क्रियाना करवावाला तथा चैत्यवास थी दूर रहेनारा छे, अने अमे तो स्वच्छंद चारी-सिद्धान्त थी विपरीत रीते भवमां भ्रमण करावनार, देव द्रव्यनुं हरण करवावाला, सदा काल एक स्थाने रहेनारा, काम ने उन्मत्त बनावनार, तांबूलने निरन्तर खावावाला चित्र सहित विचित्र प्रकारना हिन्डो-ला-पलंग-गादी--उसीका--गालमसूरीयां इत्यादि श्रृंगारनी चेष्टाओने प्रगट करवा वडे नट विट (जार) नी पेठे महा विलास करवावाला छीए

इत्यादि बोलवा पूर्वक (ए मुनिओ) पोताने वश वृत्ति वडे लोकमां मोटा धर्मी पण ओलखा-वशे; अने आपण ने सर्व ठेकाणे अनाचारी कहीने ओलखावशे, माटे ज्यां सुधी एव्याधि कोमल छे त्यांसुधिमां तेनो विनाशकरवो जोइए. ए प्रमाणे पोताना अनाचारनी शंका-वाला तेओए घणो विचारकरीने एक उपाय सोध्यो के आपणे प्रथम राज अधिकारीना (अम-लदारोना) पुत्रोने भणावीए, अने तेथी तेओ आपणुं कहतुं करनाराथशे, ने त्यार बाद तेओनुं चित्त रंजन करीने तेओने मुखे ए मुनिओं पर आल (कलंक) चढावीने ए मुनिओनो विनाश करीए, ते कारण थी ते चैत्यवासीओ ए अधि-कारी ओना पुत्रो ने बोलाव्या, पोताना विद्यार्थी कर्या, अने खजूरद्राक्ष अने करा (बरफ विशेष) विगेरे आपीने लोभाव्या अने शिखाव्युं के तमारे लोकमां एम कहेवुं के परदेश थी आ कोइ श्वेता-म्बर साधुना वेषमा श्रीदुर्लभराजाना राज्यना छीद्र देखनारा आव्या, ते बालकोए पण लोकमा तेवीज वात फेलावी; तदनंतर ते वार्ता पाणीमां

तेलना बिन्दुनी माफक आखा नगरमां फेलाइ गइ, अने ते वार्ता राज सभामां पण आवी तेथी दुर्लभ राजा ए कहयुं के अहो ! जो एवा प्रकारना ते क्षुद्रने-कपटी एवा केटलाकश्वेतांबर मुनिओ अहि आव्या छे, तो तेओने रहेवानों आश्रय कोणे आप्यो ? त्यारे त्यां राजसभामां बेठेला कोइए कहयुं के हे राजन् आपना गुरुएज तेओने पोताने घेर राख्या छे, त्यारे दुर्लभ राजा ए कहयुं के तेमने बोलावो एटले पुरोहित ने तुर्त राजसभामां बोलाव्यो अने राजा ए कहयुं के हे पुरोहित ! श्वेतांबरमुनिनो वेषधारण करीने अहिंजे बातमीदारों-जासुसो आव्या छे तेओने तमे स्थान केम आप्यु ? त्यारे पुरोहितें कहयुं के कोणे एवुं दूषण आप्युं छे के ते जासुसो छे, वणुं शुं कहुं ! जो तेओमां दूषण होय तो पारुत्थ[१] लाखवाली आकर्पटिका नांखी छे, पुनः

१ लाख महोरनी किंमतनुं कर्पटिका ए कोई प्रकरण विशेष छे के जेने पुरोहित जामनागीरी तरीके आपे छे पण कोइ लेतुं नथी.

जो मारा घरमां रहेला मुनिओमां दूषण नी गंध मात्र पण होय तो ते दूषण कहेनार आ कर्प-टिकाने उपाडे, एम कहीने पुरोहित मौन रह्युं त्यार बाद राजसभा मां अमात्य (प्रधान विशेष) नगरसेठ विगेरे ते चैत्यवासीओना भगत वणा प्रधानपुरुषो छे, परंतु कोईपणतेकर्पटिका उपाडतुं नथी खरेखर ! कोण रांधपासेलो पारकी (कर्पटिका) ने उपाडे ! त्यारबाद राजानी आगल पुरोहिते कह्युं के हे राजन्

नविना परवादेन, रमते दुर्जनोजनः श्वेव सर्वरसान् भुक्त्वाविनाऽमेध्यं न तृप्यति ॥ १ ॥ महतांयदेवमूर्धि-तदेवनीचाश्रयाय मन्यन्ते लिंगं प्रण-मन्ति बुधाः, काकः पुनरासनी कुरुते ॥ २ ॥

अर्थः-जेम कूतरो सर्व रस खादने पण विष्टा विना तृप्त थतो नथी तेम दुर्जन पुरुष निंदा कर्या विना आनंद पामतो नथी ॥ १ ॥ मोटा

પુરુષોને જે વસ્તુ મસ્તકે ધારણ કરવા યોગ્ય છે તે વસ્તુ નીચ પુરુષોને નીચા આશ્રય માટે મનાય છે, જેમ, પંડિતો લિંગને નમસ્કાર કરે છે, ત્યારે કાગડો તેનું આસન કરી તેઊપર બેસે છે ॥ ૨ ॥

માટે હે રાજન્ મારા ઘરમાં જો કોઈ મુનિઓ રહે છે તેઓ મૂર્તિમાન ધર્મના પિંડ સરખા, ક્ષમા દમન-સરલતા-કોમલતા--તપશીલઃ—સત્ય—શૌચ-નિષ્પરિગ્રહીયપણુંવિગેરેગુણોરૂપીરત્નના કરંડિયા સરખા છે, વલી શ્વેતાંબરી મુનિઓ પણ એક કીડી સરખાજીવને પણ સંતાપઆપતા નથી, તો એવા પ્રકારનું આલોક અને પરલોક વિરુદ્ધ અકાર્ય તે ઓ કેવી રીતે કરે! માટે તેઓમાં દૂષણનો લેશ માત્ર પણ નથી, પરંતુ આદુશ્ચેષ્ટિત કોઈ પાપીઓનું છે. એ પ્રમાણે રાજાના ચિત્તમાં પણ તે વાત રુચી, ને કહ્યું કે હે પુરોહિત ! તું જેવી રીતે કહે છે તેવીજ રીતે એ સર્વ સંભવે છે, તેથી એ વાત સાંભલીને સૂરાચાર્યવિગેરે સર્વ ચૈત્યવાસીઓ એ વિચાર્યું કે પરદેશથીઆવેલા એ મુનિઓને વાદમાં જીતીને નગર વહાર કાઢીશું તેથી તેઓ એ પુરોહિતને બોલાવી કહ્યું કે તમારા

घरमां रहेला मुनिओ साथे अमो विचार करवानी इच्छा वाला छीए त्यारे पुरोहिते तेओने कह्युं के ते मुनिओने पूछीने जे स्वरूप हशे ते कहीश त्यार बाद पोताना घर जइने पुरोहिते ते मुनिओने कह्युं के आपना प्रतिपक्षीओ आपनी साथे विचार करवा इच्छे छे, तेओए कह्युं के एमां अयोग्य शुं छे? अने ए कारणेज अमो अत्रे आव्या छीए; परंतु आ कार्यमां तमारे जरा पण डरवुं नहीं; पण तेओने तमारे ए रीते कहेवुं के जो तमो तेओनी साथे वादविवाद करवानी इच्छा वाला होतो त्यां कहेजो त्यां दुर्लभ राजानी समक्ष तेओ विचार करशे, अने तेओ शुद्ध धर्म प्रगटकरवानेमाटे विगतसंकटवाला ग्राम नगरादिकोने विषे फरता फरता सर्वत्र विचरे छे; ते कारण थी तेओ राजानी समक्ष विचार करवामां अत्यन्त उत्कंठा वाला छे, त्यार बाद पुरोहिते चैत्य वासीयोनी आगल तेवी हकीकत कहवाथी पोतानी मोटाइना गर्ववाला ते सघला चैत्यवासीओए विचार कर्यो के प्रथम सर्वे राजअधिकारीओ अमारा पक्षमां छे. तो

ते परदेशीओ थी आपण ने शुं भय छे ? एम विचारीने पुरोहितने कहयुं के ते मुनिओने कहो के भले राजानी समक्ष वाद करो, त्यार बाद पुरोहिते पण तेओनुं वचन प्रमाण कर्युं. अने चैत्यवासीओएपण अमुकदिवसे पंचासरना मोटादेवमंदिर मां वाद थशे एवो निर्णय करीने सर्वनी आगल जाहेर कर्युं. पुरोहिते पण राजाने एकान्ते कहयुं के हे राजन् ! अहिं रहेला मुनिओ आवेला मुनिओनी साथे वादकरवानी इच्छावालाछे. अने तेवादन्यायपुर्वक राजानी समक्ष करेलो शोभे छे. ते कारणथी योग्य वादमां निपुण एवा आपे कृपाकरीने वाद अवसरे त्यां पधारवुं जोइए त्यारे राजा ए कहयुं के एमां शुं अयोग्य छे ! आपणे ते करवा योग्यज छे अने तेथी तेमां अनिष्ट (नहीं इछवा योग्य) शुंछे (अर्थात् त्यांजइशुं)

हवेते पंचासर चैत्यमां सिंहासन-गादी चाकडा विगेरे घणा मोटा आसननां आडंबर वडे पूर्वदेश अने दक्षिणदेश विगेर मां उत्पन्न थयेलचित्रक-त्त्रिका (गलीचा वगेरे) नर्मिका वगेरे तयारि थइ

वाद सूराचार्यविगेरे चोरासी चैत्यवासी आचार्यो सूर्योदयवखतेज त्यां आवीने पोताना हाथमां वादनास्थलनुं पुस्तकराखी ने चैत्यमां प्रवेश कर्यो, अने राज्यना प्रधान पुरुषोए बोलावेल एवा श्रीदुर्लभराजा पण मोटासुभटोना परिवार वडे आवीने त्यां बेठा. त्यार पछी राजाए कह्यूं के पुरोहितने शीघ्रबोलावो अने तेना मानेला देशांतर थी आवेला ते मुनियों ने पण बोलावो. तदनन्तर राजपुरुषोए शीघ्र पगले जई पुरोहितने कह्युं अने पुरोहिते पण श्रीवर्धमान सूरिने ए प्रमाणे विनंती करी के हेभगवन् ! पंचासर ने मंदिरे सर्वे आचार्यो परिवार सहित आवीने बेठा छे, अने श्री दुर्लभ राजा पण बेठा छे, राजाए सर्व आचार्यो ने तांबूल आपीने सत्कार कर्यो छे, अने हवे आपना पधारवानी राहजुए छे, एप्रमाणे पुरोहितना मुखथी सांभलीने श्री वर्धमानसूरी पण श्रीसुधर्मास्वामीश्रीजंबूस्वामीवगेरचौदपूर्वधरोनेअने बीजाप णयुगप्रधानोनेपोतानाहृदय कमलमां स्थापी ने (स्मरण करीने) पंडित जिनेश्वरगणिप्रमुख

केटलाकगीतार्थमुनिओं सहितपंचासरचैत्यसन्मुख-
चाल्या. कुंवारीकन्या-गाय-शंख--भेरीदहीं--फूल-
पुष्पमालादि शकुनजोईने मंगलिकरूपसरखाशु-
भशकुनों देखवाथी जाणीछे इष्टसिद्धिजेमणे एवा
श्रीवर्धमानसूरि त्यां पहोंच्या अने पंडितजिनेश्वर
गणिए आपेला आसनपर श्रीदुर्लभराजाए
दर्शावेल स्थाने बेठा. पंडितजिनेश्वरगणि पण
गुरूनी आज्ञा लई नमस्कार करी पोताना गुरूनी
पासेज बेठा. एटलामां राजा श्री वर्धमानसूरि
ने तांबूल आपवालाग्या त्यारे भगवानश्री
वर्धमानसूरिए सर्वसभा समक्ष कह्युं के हे राजन्
अमारा शास्त्रमां मुनिओने तांबूल खावुं, स्नान-
करवुं, पुष्पमाला पहेरवी सुगंधलगाववो, नख
केशने दांत विगेरे नो संस्कार करवो ए सर्व
निषेधेलु छे तदनन्तर×संजमं सुट्ठियप्पाणं (चारि-
त्रमां रूडी रीते स्थापेल छे आत्माजेणे एवाओए)
तथा लहु भूय विहारिणं (द्रव्य भावथी हलका
थइने विहारकरनार) ए प्रमाणे शास्त्रनी
गाथाओं भणीने सूरिए राजानी आगळ जे व्या-

फुट नोट.

×१ संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं ।
तेसिमेअमणाइन्नं, निग्गथाणं महेसिणं ॥ १ ॥
उद्देसिअं कीअगडं, नियागमभिहडाणि अ ।
राइभत्ते सिणाणे अ, गंधमल्ले अ वीअणे ॥ २ ॥
संनिहि गिहिमत्ते अ, रायपिंड किमिच्छिए ।
संवाहणदंत पहोयणाअ,संपुच्छणं देहपलोअणाअ॥३॥
अट्ठावए अ नालीए, छत्तस्सय धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं पाहणापाए, समारंभंच जोइणो ॥ ४ ॥
सिज्जायरपिंडच आसंदी, पलिअंकए ।
गिहिंतरानिसिज्जाअ, गायस्सुव्वट्टणाणि अ ॥ ५ ॥
गिहिणो वेयावडियं, जा अ आजीव वत्तिया ।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं. आउरस्सरणाणि अ ॥ ६ ॥
मूल ए सिंगवेरे अ, उच्छुखंडे अनिव्वुडे ।
कंदे मूले अ सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥
सोवच्चेल सिंधवेलोणे, रोमालोणे अ आमए
सामुद्दपंसुखारे अ, कालालोणेय आमए ॥ ८ ॥
धुवणेत्ति अ वमणे अ, वत्थीकम्म विरेअणे
अंजणे दंतवणे अ, गायाभंग विभूसणे ॥ ९ ॥

सव्वमेंअमणाइन्नं, निग्गंथाग महेसिणं
संजंमंमिअजुत्ताणं, लहुभूअ विहारिणं ॥ १० ॥
पंचासवपरिन्नाया, तिगुत्ता छसु संजया
पंच निग्गहणा धीरा, निग्गंथा उजुदंसिणो ॥ ११ ॥
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतसु अवाउडा
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिआ ॥१२॥
परिसहरिउदंता, धूअमोहा जिइंदिया ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ॥१३॥
दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइ सहेत्तु अ ।
के इत्थ देवलोएसु, केई सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेणय ।
सिध्धिमग्गमणुपत्ता, ताइणोपरिनिव्वुडे ॥त्तिबेमि १५
आ दश वैकालिक सूत्रनां तीजा अध्ययननी गाथा
ओमां १०मी गाथानुं अन्त्यचरणलहुभूअ विहारिणं छे.

ख्यान करवानुं हतुं ते कर्युं. राजाए कह्युं तांबूल
खावामां शुं दोष छे ? सूरिए कह्युं तांबूल ए
काम राग ने वधारनार छे ते वात जगत् प्रसिद्ध
छे तथा लोकमां पण कहेवाय छे के

तांबूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरंक्षारं कषा-
यान्वितं, वातघ्नं कफनाशनं कृमि
हरं दौर्गन्ध्यनिर्नाशनम्, वक्त्रस्याभ.
रणं विशुद्धि करणं कामाग्निसंदीपन
तांबूलस्य सखे त्रयोदशगुणाःस्वर्गेपिते
दुर्लभाः ॥ १ ॥

अर्थः-ताम्बूल ए कटु, तिक्त, उष्ण, मधुर, खारूं कषायलुं, वायुहरनार, कफनोनाशकरनार. कृमिनो नाशकरनार, दुर्गंधीनो नाशकरनार, मुखनुं आभरण, मुखने विशुद्धकरनार अने कामाग्निने प्रदीप्त करनार छे. ए प्रमाणे हे मित्र ! तांबूलना ए १३ गुण स्वर्गमा पण दुर्लभ छे.

माटे हे राजन् ! ब्रह्मचारी पुरुषोने तांबूल भक्षण कामरागनी वृद्धिनुं कारण होवाथी अत्यंत दुष्ट छे. पुनः स्मृतिमां पण कह्युं छे के—

ब्रह्मचारी यतीनांच,विधवानांचयोषितां
तांबूलभक्षणं विप्र?, गोमांसान्न विशि
ष्यते ॥१ ॥ स्नानमुद्वर्त्तनाभ्यंगं, नख

केशादिसंस्क्रियां धूपमालांच गंधच,
त्यजन्ति ब्रह्मचारिणः ॥ २ ॥

अर्थः-ब्रह्मचारी और मुनियोने अने विधवास्त्रियों ने हे विप्र! तांबूलनुं भक्षणकरवुं ते गायना मांस भक्षण सरखुं छे॥१॥ब्रह्मचारी वगेरे पुरुषो,स्नान उवटणुं, मर्दन, नखसंस्कार, केशादिकनों संस्कार धूप, माला, अने सुगंध नो त्याग करे छे ॥२॥

ए प्रमाणे श्री वर्धमानसूरिनुं वचन सांभली ने विवेकनिपुण लोकोना हृदयमां हर्षउत्पन्न थयो. अने गुरू ऊपर बहु मान थयुं.

हवे श्री वर्द्धमानसूरिए कहयुंके आचार्योंनी साथे वाद प्रारंभाये अमारो शिष्य पंडित जिनेश्वर गणिज जे उत्तर प्रत्युत्तर (प्रश्नोत्तर) करशे ते अमने प्रमाणछे. सर्वेए कयूं के एमज हो. तदनंतर चोराशी चैत्यवासी आचार्योंमां मोटा सूराचार्ये कयूं के हे महाराज अने मंत्री विगेरे! अमो कहीएछीए ते सांभळो, तेमना पक्षवाला मंत्री आदिए कयूं के आपने जे कहवुं होय ते कहो अमो अने आ लोक सर्वे सांभळवाने

सावधान कानवाला थई बेठा छीए. राजाए पुनः ते वखते चलकाटवाला उभा थया छतां सरखा करेला नमेला अने गुच्छेदार एवा माथाना केशवाला, तांबूलना रसनारंगवडे रंगायला ओष्ट अने दांतवाला अने घणुं कुतूहल देखवामां व्यग्र एवा मृगनासरखा आंजेला नेत्रवाला ऐवा ते सर्व साध्वाभास चैत्यवासी आचार्यो ने जोया प्रेरेली अत्यंत दृष्टिवडे नष्ट थयेल पुष्पयुक्त शरीरवाला, घसेला अळताना रसवडे राता करेला पग अने नखवाला, तीक्ष्णकरेला नखरूपी छीपवाला, सुगंधीदार चंपादिकनां तेलना अभ्यंगनवाला, शरीरमांथी उछलतीअत्यंतसुगंधीवाला अने पड पांदडीआदि सुगंधिद्रव्यथी धूपदीयेला वस्त्रो पहरेला एवा ते चैत्यवासी आचार्योने जोई राजा विचारकरवालाग्यो के अहो आ आचार्यो निश्चय श्रृंगार चेष्टायुक्त शरीरवाला विट पुरुषो सरखा तुच्छ कायावाला महामूढपणावडे भिन्नपडेछे वळी महाप्रभाववाला आचार्यो जुओतो स्वभावथीउच्च छतां नीचेआसनपरबेठेलामूलसहितकेशनेउखेडी

नाख्या होय एवा देखाता, विपमरीते गोठवा-
यला टुंका तीक्ष्णने कठोर मस्तकना केशवाला,
मेलना समूहवडे मलीन थयेला वस्त्र दांत देह
पग इत्यादि मलीन अवयव वाला, अने देखवा
मात्रथीज शान्ति गुणपदाथाय तेवा चिन्हयुक्त
तपमां द्रढ कायावाला छे, माटे निश्चयथाय छे
के जे कोई गुणवडे अलंकृत देहवाला अने त्रण
जगतमां पूजनीय एवा महासदाचारनुं पात्र जे
कहेवाय छे ते आ मुनिओज छे. ए प्रमाणे राजा
जेटलामां विचारकरेछे तेटलामां सूराचार्ये वादनो
पूर्वपक्षस्थाप्यो के हेउपाश्रयवासी मुनिओ! तमो
सर्वसावधानथईने सांभलो के जिनभुवनमां
निवासकरवो तेज वर्तमानकालना मुनिओने
उचित छे कारण के चैत्यवासमांज अपवाद रहित
ब्रह्मचर्यव्रत पालवानो संभव छे अने यतिओने
ब्रह्मचर्यज शुद्ध पालवुं जोइए अने शेष व्रतोनी
पेठे ब्रह्मचर्य व्रतमां कोई पण अपवाद पालवानो
छेज नहीं एम जाणवुं कारण के सिद्धांतमां सर्व
व्रतोमांथी आ व्रतनेज अपवादरहितपणे
पालवा कहेलु छे, तेनो पाठ आ प्रमाणे—

नवि किंचि अणुन्नायं, पडिसिद्धं वापि जिणवरिंदेहिं। मुत्ता मेहुणभावं, न तं विना राग दोसेण ॥ १ ॥

अर्थः-श्री जिनेश्वरोए मैथुनभावसिवाय बीजी कोई पण बाबतमां सर्वथा आज्ञा नथी आपी तेम सर्वथा निषेध पण नथी कर्यो, कारण के मैथुन ते रागद्वेषविना बनीशकतुंज नथी.

पुनः वस्तीमांरहेवाथी स्त्रीवर्गना मनोहर शब्द सांभलवादिकथी सर्वथाप्रकारे ब्रह्मचर्यनुं निर्वहनथईशकतुंनथी, कारण के मनोविकारादिप्रगटथायछे. ते आप्रमाणे--स्त्रियोना कोयलसरखाशब्दने, गीतादिशब्दने अने कामदेवना रूपनेपण तिरस्कारपमाडेल एवा सुन्दररूपने जोई भुक्तभोगी (प्रथम जेणे कामभोग अनुभव्या छे तेवा) मुनिओने पूर्वे अनुभवेला मैथुनविलासनुं स्मरणथवाथी अने अभुक्तभोगीमुनियोने ते संबंधि कुतुहलादि उत्पन्नथाय, अने मुनियोना निरन्तर कानमां अमृत वर्षावनार एवो निर्मल गंभीर अने मधुर स्वाध्याय ध्वनि सांभलीने,

अने केटलाएकमुनियोना शरीरनी अपार लावण्य शोभा जोईने मरगपामेळा पतिवाली तरुण स्त्रियोने मुनियोंसाथे क्रीडाकरवानी इच्छापण उत्पन्नथाय, अने ए प्रमाणे परस्पर निरन्तर रूप जोवुं अने गीतादि सांभलवुं थाय तेथी दुखे करीने मथीशकाय एवा कामदेवनुं दोस्थ्यपणुं (कामराग व्याप्त) थवाथी चारित्र विनाशादि अनेकदोषों पुष्टथायछे कह्युं छे के—

थीवाज्जिअं विआणह, इत्थीणं जत्थठाण रूवाणी, सद्दाय न सुच्चंति, ता पिय तेसिं न पिच्छंति ॥१॥ बंभव्वयस्स अगुत्ती, लज्जानासो अ बीई वुड्ढीअ । साहुतवोधणनासो, निवारणा तित्थ परिहाणी ॥२॥

अर्थः-स्त्रीरहितस्थानउत्तमजाणवुं, स्त्रियोनां ज्यांस्थानहोय ज्यांरूपआलेखेलांहोय अने ज्यां शब्द थतांहोय त्यां शब्दसांभलवा नहीं, ते स्थानादिने अने आलेखेलारूपादिने पण

जुएनहीं कारणके तेथी ब्रह्मचर्यनुं रक्षणथतुंनथी लज्जानोनाशथायछे, वीजा मृषावादनीवृद्धिथाय छे, अने साधुने तप रूप धननो नाश थाय छे तेम करवाथी अनुक्रमे तीर्थनोविनाश (शासननो उच्छाह) पण थाय छे. लौकिकमां पण कह्युं छे के-

श्रुणु हृदयरहस्यं यत्प्रशस्यं मुनीनां, न खलु न खलु योषित् सन्निधिः संविधेयः, हरति हि हरिणाक्षी क्षिप्तमाक्षि क्षुरप्रप्रहतशमतनुत्रं चित्तमप्युन्नतानाम् ॥ १ ॥

अर्थः- हे हृदय ! मुनिओने अतिप्रशंसनीयरहस्य सांभलके मुनिओए स्त्रीनोसंसर्गनिश्चय न करवो न करवो. कारण के हरिणसरखानेत्रवाली स्त्री नेत्ररूपीशस्त्रवडे शमतारूपीवख्तरने हणवापूर्वक महापुरुषोनाचित्तनेपण हरलेछे ॥ १ ॥

चैत्यवास करवामां तेवाप्रकारनो निरन्तर स्त्रीना संसर्गनोसंभवनथी, कारणके कदाच चैत्यवंदन माटेज क्षणवारआवीने पाछीचालीजनारी श्राविकाओविगेरेनो मुनिओसाथे तेवा

प्रकारनो असंभवथतोनथी ते कारणथी प्राणाति पातादिनी पेठे अनेक दोषवडे दूपितहोवाथी परगृहमांरहेवानुं सिद्ध नहीं थवाथी वर्तमान कालना मुनिओने चैत्यमांजवासकरवो उचित छे ते आप्रमाणे-वर्तमान कालना मुनियोंने चैत्य-वासविना कांतो वनवास (उद्यानवास) कां तो परगृहवास ऐ बेमांथी एक होई शके, ए प्रमाणे बे विकल्पउभा थाय छे, त्यां बीजो विकल्प(परगृहवास ,उत्पन्नथयोछतो (एटले जो परघरमां वास करवो ते) चाकरनी पेठे प्रथमथीज नीचपगनाप्रहारथी जर्जरित-थयेलाअंगवडे उठवाजपामतोनथी . (अर्थात् बीजो विकल्प टकीशकतोनथी), अने उद्या-नवासरूप प्रथम विकल्प तो समानपक्षवालानी पेठे अमारा पक्षमां विक्षेपकरवानी निपुणताने धारण करतो नथी, (पहेला विकल्पथी अमारा मतनुं खंडन थतुं नथी) कारण के स्त्रीनो संसर्ग विगेरे अने आधाकर्मिकादि दोपना समूह रूपी कलावडे लक्षणथतु होवाथी (स्त्रीनो संसर्गा-दिवडे प्रथम विकल्पनुं खंडन थाय छे ते आ

प्रमाणे—नवा खिलेलाआंबानाअंकुरा(म्होर) ना आस्वादन थी मनोहरकंठवालीकोयलना मधुरपंचमस्वरनाध्वनिवडे,अनेखिलेला घणाविचिकलवकुलअने मालतीनी सुंगधिवडे उद्यानमांरहेता अने समाधियुक्तचित्त वाला एवा पण मुनिओंने कामविकारनोउल्लासउत्पन्नथायछे, अने पंचमस्वरनाध्वनि आदिकमा कामविकारने उत्तेजितकरवानों विशेष स्वभाव भरतादिशास्त्रमां कहेलो छे. तथा क्रीडा करवानी इच्छा थी आवेलाकामीपुरुष अने कामीस्त्रियोवडे उद्यानसंकीर्णहोवाथी स्त्रीना संसर्गादिकनी वातज शी करवी ? अथवा निरन्तर नवा २ शास्त्रनोअभ्यास अने परावर्तन (संभारीजवा) मां तत्पर एवा मुनिओने कदाच ए कहेलादोष न उत्पन्नथाय तो पण लोकोना संचार (गमनागमन) थी रहित एवी शून्य उद्यानभूमिमां रहेनारमुनिओने चोरचरडसुभटइत्यादि लोको मुनिओना वस्त्र पात्र विगेर उठावी चोरीजाय, एवो संभव छे ने ते चौरवाथी शरीर अने संयमनीविराधनानो प्रसंगप्राप्तथाय छे. (माटे मुनिओने उद्यानमां रहेवु युक्त नथी.) हवे जो एम कहो के

समोसढा उज्जाणे भयवंतो जुगं धरायरिया तथाविओभयवं वइरसामि उज्जाणे.

इत्यादिशास्त्रपाठथीपणअनेकप्रकारे उद्यानमां रहेवुंयोग्य संभलायछे एमजो कहेता होतो तेवात सत्यछे, परंतु ते उद्यानवास द्रष्टिमां न आवे तेवी रीते गुप्त अने एकज द्वारवाला उद्यानमां रहेवा रूप हतो, अने आ कलियुगमां मोटा चोर चरड विगेरेना उपद्रव वडे प्रायः लोकने पीडाउपजवाथी तेवा प्रकारनां उद्यानो रह्या नहीं, माटे आ वर्तमान कालना मुनिओने उद्यानमां रहेवुं केवी रीते शोभे ? माटे मुनिओने आकालमां चैत्यनी अंदरवास करवो तेज ठीक शोभे छे. वली चैत्यमां वासकरवाथी आधाकर्मिक आदि दोष अने संयोगदोष पण थतो नथी माटे वर्तमान कालना मुनिओने चैत्य उपभोग करवायोग्य छे, कारण के तेवा प्रकारना आहारनी पेठे आधाकर्मादि दोष रहित छे. वली ए हेतु असिद्ध नथी (ए कारण खोटुं नथी)

कारण के श्रीजिनप्रतिमाने माटे बनावेलुं चैत्यनो उपयोग करवामां आधाकर्मादि दोषने अवकाशजनथी अने मुनिना माटे करेला वसति थी (उपाश्रय थी) आधाकर्मादि दोप प्रगट थाय छे. वली मुनिओ जो वर्तमानकाले चैत्यमा निवास नकरेतो वर्तमानकालनां चैत्योनी हानि थाय छे ते आ प्रमाणे

प्हेलां कालना प्रभावथी श्रीमन्तश्रावको चित्तनीव्यग्रताविनाना, अने देवगुरूतत्वनी अत्यंत भक्तिवडे आजपरमतत्वछे एम माननारहता अने वर्तमानकालमां तो पांचमा आरानादोपथी रातदिवसकुटुम्बनी प्रबल चिन्तानासंतापथी जर्जरिताचित्तपणे आम तेम दोडादोडकरता अने प्रायः दरिद्रीएवाश्रावकोने पोतानाघरमां ते पण दुर्लभ छे तो जिनमंदिरमां (सार संभाल करवाने) आववुं ते तो दूरजरह्युं जाणवुं, अने तेम होवाथी श्रावकोने ते चैत्य सुधारवादिकनी चिंतातो होयजक्यां थी ? वली कामदेवना मदवडे आलसवाली वारांगनाओनां कपूरने तथा चंदनना रसवडे (कादव युक्त थयेल) अने पुष्ट

एवा नवकर्णीकल्याने कहेने करवानां शुद्ध नैया-
त्मा जेवा श्रीमन्त आचार्ये श्री पंन्यासग्री-
पणी इत्यादिक श्री हरगाम गच्छनी श्रेना गृ-
नार्मोहिवधातमिग के नर्थ, तेओने जिनजिनलां-
कृतेनकरवानुं रोगनांद श्री नेना संवाद नाम-
नानी जिना श्री कृसनजी । अने ते जिनाने ञ-
थांने जिनेश्वरांनी जिनप्रतिमा आप छे. अने
जिनप्रतिमाओ श्री नंदीनी जैन आगम मां
जिनेन्द्रथाय छे, अने मुनिओने पेन्यांसकद-
रथाओ अने नेनी संवादनां ज्ञानसरत्नाशी मना
कारगुणां जिनमंदिर कर्या शके छे. अने तेम
धनाथी जनजागनकीति जिनसूत्रवंतानथी, अने जिन-
आगमनो जिनेन्द्रदर्शनथाना कारणथी ते संबं-
धमां कईक अपवाद गनवानुंपवनिहांनमां सम-
र्थन कर्युं छे (करवुं छे) ते कारण थी कर्युं
छे के—

+ जो जेण गुणेण हिउ, जेण
विणा वा न सिज्झए जंतु.

+ जो जेण तमिश तर्जा, सन्देयार्ण न गुं-
वेद ए उमराहे छे.

इत्यादि. माटे ए प्रमाणे सुक्ष्म दृष्टिए विचारनार विद्वानोने चित्तमां वर्तमानकालनामुनिओने चैत्यमां निवास करवो तेज युक्तलागशे, इत्यादि सूराचार्ये स्थापेला सर्वपूर्वपक्षने पोताना हृदयमां धारीराखीने त्यार बाद भविष्यमां (थनारा संबंधनो) पण भूत (कालमां थयेला संबंध) वत् उपचार करवो ए न्याय थी उत्कटवादीओरूपहस्तियोना गंडस्थल तटने भेदवामांतत्पर अतिकठोरहस्त भाग (पंजा) वाला अने केसरनी छटा (वाल) ना समूह बडे देदीप्यमान एवा सिंहसरखा श्री जिनेश्वरसूरि भगवंते कह्युं के हे सभासदो ! सदाकाल सर्व ठेकाणेनिर्मल हृदय वाला अने योग्यायोग्य विचारना विषय स्थापन थये बुद्धि थी परीक्षा करनारा एवा तमो सर्वसज्जनो ईर्ष्या स्पर्धादिनो त्याग करीने अने मध्यस्थपणुं धारण करीने सावधान थई सांभलो.

त्यां वर्तमानकालीन मुनियोने चैत्यमांनिवास करवो एज योग्य छे, अने तेथीजअपवाद रहित ब्रह्मचर्य व्रतनुं पालन थाय छे, अने यति-

ओने तेज पालनकरवुं योग्य छे इत्यादि थी प्रारंभीने <u>थंभवयस्स अगुत्ति</u> इत्यादि सुधीमां मुनियोने परगृहवासमां भवरूपी संताप ने हरण करवामां चंद्रना आचारवाला (चंद्रसरखा) आपे जे दूषणकह्युं ते हवे विकल्पपूर्वक विचारायछे ते आप्रमाणे—मुनिओने परगृह निवासमां आपजे दूषणआपोछो ते शुं हमेशने माटे के फक्त आवर्तमानकालमाटज जो हमेशने माटे दूषण आपता होतो उद्यानादिकमां रहेता मुनिओने कोईक वखतचोरादिकनो उपद्रवथवाथी केवी रीते प्रतिकार (निषेध) करी शकाय ? अने ते वखते कालनाप्रभावथी अति सुखवडे चोरादिकनाउपसर्गनाअभाव थी मुनिओने उद्यानमांजनिवास करवानोहतो तेम संभलातुनथी, अने ते कारण थी परगृहनिवासपण संभलातानथी, कारण के ते कालमांपण चोरादिकनोउपद्रव अनेकप्रकारे संभलायछे. तथा ते कालमां पण मुनिओने परगृहनिवास सिद्धांतमां कहेलो छे. कह्युं छे के—

बाहिरगामे पुच्छा, उज्जाणे ठाणवसहिपडिलेहा इहराउ गहियभंडा, वस-

ही वा पायउड्डाहो ॥ १ ॥ सव्वेवि अहडंता, वसहिमग्गंति जहउ समुयाणं, लध्धे संकिलि अ न वेअणं तु तत्थेव उ नियट्टे ॥ २ ॥

तथा वृषभनी कल्पनाए ग्रामादिकस्थाप्ये-छते मुनिओने वसति शोधवानी चिंतामां कह्यु छे के—

❋ नयराइएसु धिप्पइ, वसही पुव्वामुहं ठविअ वसहं

अने एवाप्रकारनीवसति ग्रामादिकमध्य-विना संभवे नहिं, अने ते कालमां मात्र उद्यान-वासजमानेलो होय तो ठाम २ पूर्वोक्त न्यायथी

❋ वाम कडीइ निविडं, दीहाकियअग्गिमिक्क पयं ॥ १ सिंगक्खोडे कलहो, ठाणे पुण नत्थिहोइ चलणेसु, अहिट्ठाणे पुट्ट रोगो, पुच्छम्मिय फेडणं जाण ॥ २ ॥ मुहमूल म्मियचारी, सिरेय कहुहेय पूयसक्कारो, खंधे पिट्ठिइ भारो, पुट्टम्मि य धाय ओ वसहो ॥ ३ ॥ ए त्रुटता पद्द कह्या छे

ग्रामादिकमध्ये वसतिनुं निरूपण सिद्धांतमां हो-
यज नहिं. अने ए प्रमाणे ते कालमां पण मुनि-
ओने परगृहमां निवासकरवो कहेलोहावाथी प्र-
थम पक्ष (मुनिओए सदाकाल उद्यानमां रहेवा
रूप प्रथम विकल्प) घटीशकतोनथी. हवे बीजो-
पक्षअंगीकारकरीए तो त्यां अमो प्रथम पूछीए
छीए के कया दोषथी वर्तमानकालमांजमुनिओ-
नेपरगृह निवास दोषित कहेवाय छे ? जो एम
कहेता हो के स्त्रीनासंसर्गादिक थी दोषितकहे-
वाय छे तो ए दोषतो ते कालमां पण हतो, ते
कालमां पण स्त्रीसंसर्गरहितवसतिनेग्रहणकरतां
अथवा तेवीवसति प्राप्त नहिंथतां कहेलीयतना-
सिवाय बीजी कोई समाधि न होती (बीजो
कोई उपाय नथी), माटे तेवो प्रकार आ काल-
मां पण अंगीकारकरो कारण के न्यायनुं समा-
नपणुंज छे. वळी तमोए कह्युं के यतना पूर्वक
वर्तनार मुनिओने पण आ कालमां स्त्रीसंसर्गवा-
ळीवसतिमां ब्रह्मचर्यनीवाड न साचवीशकाय
इत्यादि दोष दूर कर्या जाणवा. पुनः " ते का-
रणथीवर्तमानकालमां मुनिओने चैत्यमां निवास-

करवो तेज ठीकशोभे छे " त्यांथी प्रारंभीने " मुनिओने माटे ते वसतिवनाव्येछते आधा कर्मादि दोष उत्पन्न थायछे " त्यां सुधी जे आप कह्युं ते कथननुं पण अत्यंत अधिकदोष युक्त होवाथी खंडन करतां चोर चरडनो त्रास उत्पन्न थतां नाशीजता (मुनिओ) ने अत्यंत भयंकर आकारवाला अने सर्वने भक्षणकरवामां रसिक जिव्हावाला पिशाचोवडे करीने व्याप्तथयेली विकट अटवीना संकटमां पडवारूप कल्पना उभी थाय छे (अर्थात् उद्यान मांथी चोरादिकनां त्रासवडे वनमां नाशीजता मुनिओने वनमां पिशाचादिकनो तेथी पण मोटो भय उत्पन्न थाय एवी कल्पना करी शकाय छे.) ते आ प्रमाणे—

परगृहमांनिवास करतामुनिओने कदाचित आधाकर्म अने स्त्री संसर्गादि दोष देखवाथी घरनोत्यागकरी जिनचैत्यमां निवासकरता ब्रह्मचारी मुनिओने निरंतर भगवान आगल घणा उदार शृंगारवडे रंभा अने तिलोत्तमा सरखी सुंदर अने मधुर स्वरे गायन करती अने नृत्य

करती वारांगनाओना अंग भंग पूर्वक कामवि-कारसहित कटाक्षदृष्टि अने आनंददायी हस्त समूह-मुख-तथा मोगरानी कली सरखा निर्मल दांत तथा स्निग्ध अने विलेपन युक्त अतिपुष्ट एवां स्तनपट, तथा विशाल कटीतटनु देखवुं विगेरे थायछे, अनेतेथी वायुफुंकावाथी सलगे-लोअग्नि जेम तेम आकालमां तेवाप्रकारना सत्व अने विवेकरहित एवा ईर्ष्यावाला मुनिओना अ-त्यंतकाम विकाररूपी अंगारा सलगीउठे तेकार-णथी परिणाम ए आव्युं के—

यत्रोभयो समो दोषः परिहारश्च तादृशः नैकपर्यनयोज्यःस्यात्, तादृ-शार्थविचारणे ॥ १ ॥

अर्थः-ज्यां बन्ने स्थाने सरखोदोष आवतो होय तो ते दोषनोपरिहार पण तेवा प्रकारनो (सरखो) होय छे. अने तेवाअर्थनीविचारणामां एकजस्थाने दोष जोडवो योग्यनथी.

वली उलटुं अमारापक्षमांविशेष छे के स्त्री-संसर्गवाला परगृह कदाचित बसतांछतांपण पू-र्वोक्तदोषनो (आधाकर्म अने स्त्रीसंसर्ग रूप

दोषनो) असंभव छे, कारणके त्यां यतनापूर्वक-वर्तवानुं कहेलुं छे, अने तेम होवाथी एक पक्षे चैत्यनिवाससर्वथा त्यागकरवायोग्य कहेलोहोवाथीज (शास्त्रमां ते संबंधि) क्यांय पण यतना कही नथी तो तेपुष्टदोषनुं (जबरा दोषनुं) कोण निवारणकरी शके तेम छे ? वली गृहस्थीआना घर संकडाश वाला होवा थी यतनापूर्वक वर्तवा छतां पण पूर्वे कहेला (स्त्रीसंसर्गरूप) दोषनुंनिवारणथतुं नथी एम न कहेवुं. कारणके प्रायःप्रमाणयुक्तघरमांजमुनियोने रहेवानुंकहेलुं छे, अने त्यां पूर्वोक्त दोषनोपरिहार करवो सुगमछे, ए कारणथीज गृहस्थीएआखुंघरसोंपीदी धाछतांपण मुनिओने ते घरधणीना अथवा बीजानीचित्तार्त्ति (मनमां खोटुं लागवुं ते) टाल- वानेअर्थे थोडी जग्यानुंज ग्रहण शास्त्रमांकहेलुं छे कह्युं छे के—

१ एवमम्हावि जज्जोगं

---

१ एव मम्हवि जज्जोगं, तं देयं जइ भणिज्जइय भणिओ, चुल्ली खट्टीयममं, सेस मणुन्नाय तुम्भमरा। अणुजाए विसव्वम्मि, उग्गहे घरे सामिणा, तहावि सीमं छंदंति, साहू तट्ठिय कारिणो, सानाट्ठिया भायण धोवणट्ठा दुण्हट्ठया अच्छण हेउयंच मिउग्गहं चेव अहिट्ठयंति.

वली प्रमाणयुक्त परगृह प्राप्तथये तघर साकडुं होय छतां पण त्यां यतनापूर्वक रहेतां कोई दोष प्रगट तो नथी कह्युंछे के—

निच्छउ पमाण जुत्ता, खुड्डुलियाए वसंति जयणाए.

वलीचैत्यानिवासनेसाबित करवो अमनेमहा-अनर्थकारीहोवाथी ते योग्यलागतुंनथी, कारण के सिद्धांतमां मुनिओने चैत्यनीअदरनिवासकरवो ते अत्यंतआशातनानुं कारणकहेलुं छे. अने ते अल्पचैत्य निवासपण अनंतभवरूपी रोगनीवृद्धि-नुंकारणहोवाथी कुपथ्यसेववा सरखुं छे. सिद्धां-तमां कह्युं छे के—

दुब्भिगंधमल० १-जइविन आहा कम्मं०२-आसायण मिच्छतं० ३

ते कारणथी आधा कर्मदोष वाली वसतिमां पण निवासकरवो कहेलो होवाथी अने जिनचै-त्यमांनिवासकरवो अत्यंत दोष वालोहोवाथी मुनिओने वसतिमां रहेवुंएमसिद्धथयुं, अने तेनी-सिद्धिआप्रमाणे—मुनिओए परगृहमां निवास

करवो कारण के परगृह निवास ते शुद्ध उंछ (अज्ञातवृत्ति ये थोडुं थोडुं) ग्रहण करवानी पेठे निःसंगपणाने प्रगटकरनार (प्राप्त करावनार) छे. वलीजे " चैत्यवासविना " इत्यादिवाक्यथी " तीर्थनो विच्छेद न थाय ए वाक्य सुधीमां तीर्थनो विच्छेद न थाय ते माटे चैत्यमां निवास करवो एम जे तमोए स्थापन कर्युं ते पण विचारना गौरवनुं असमर्थपणुं होवाथी मात्र भोला जनों ने ठगवा रूप छे. कारणके तीर्थनो-अविच्छेद ते शुं? शुं मुनिओने चैत्यमां निवास-करवा वडे भगवानना मंदिर अने प्रतिमादिकनी अनुवृत्ति (परंपराचालवाथी) ते तीर्थनो अविच्छेद ? के अथवा तो शिष्य प्रशिष्यनी परंपराए सतत (निरंतर) प्रसरती सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्रनीप्रवृत्ति ते तीर्थनो अव्यवच्छेद कहेवाय? तेमां प्रथम पक्ष (प्रतिमादिनी अनुवृत्तिरूप पहेलो विकल्प) तो घटी शकतो नथी, कारण के चैत्य-वास विना पण भगवंतनी प्रतिमादिकनी अनुवृत्ति मात्र देखी शकाय छे ते आ प्रमाणे--पूर्व-देशमां हजीसुधी पण तेवा प्रकारना प्राकृत

(भील्लादि जातिना) लोकोए नमस्कार करेल अपेय अने अलक्ष्योनी पण अने नमस्कार कराती जिन प्रतिमाओनी पण अनेकप्रकारे उपलब्धि (हयाति) देखाय छे. अने अन्यदर्शनी ओए ग्रहणकरेलतेप्रतिमाओनी पण तेजीज रीते अनुवृत्तिनी उपलब्धि (हयाति) देखाय छे. वळी एटला मात्रथीज तमोएमानेलतीर्थनो अविच्छेद सिद्ध थतो होवाथी नाहक (निष्फल एवा) चैत्यवासना आरंभवडे तीर्थाविच्छेदनीसिद्धी शामाटे करवीजोइए ? वळी तीर्थ अविच्छेदना एटलाज कार्यवडे मोक्षादिफलनी प्राप्तिथतीनथी कारण के सिद्धांतमां मिथ्यादृष्टिए ग्रहण करेल प्रतिमा ते मोक्षमार्गनुं अंगथई शकती नथी. कह्युं छे के.

१ दुब्भिगंध मलस्सावि, तणुयेस्स अह्हाणिय । उभउवाहो चेव तेण ठांत्ति न चेइए २ जइवि न आहाकम्मं भत्तिकयं तहावि वज्जियं तेहिं भत्ति खलुहोइ इयरहा ३ आसायण मिच्छत्तं आसायण वज्जणाय सम्मत्तं आसायणा निमित्तं कुव्वइ दीहंच संसारं.

मिच्छदिट्ठिपरिग्गहियाओ पडि-
माओ भावगामो न हुंति इति वचनात्.

हवे बीजो विकल्प (ज्ञानादिनी सतत प्रवृत्तिरूप) अंगीकार करीये तो (ज्ञानादिनी सतत प्रवृत्ति (तेज तीर्थनो अविच्छेद कहेवाय एम तमारे मानवुं जोइए, कारण के तेज मोक्षमार्ग छे. तो ते मोक्ष मार्गने अनुगुणरूप (शुद्ध प्ररूपणादि प्रवृत्ति करवा) उत्सूत्र एवा चैत्यवास अंगीकार करवाथी शुं ? कहयुं छे के.

सीसो सहिमलगो

अने सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्रनी अनुवृत्ति (सेवा) विना जिन चैत्य अने जिनप्रतिमा होते छते पण तीर्थनो विच्छेदज कहेवाय छे, ए कारणथीज केटलाक तीर्थकरोना आंतराओमां जिनप्रतिमादि होते छतेपण ज्ञानादि रत्नत्रयीना अभावथीज तीर्थनो विच्छेद अंगीकार करेलो छे; अने तेथी तमोए पोते कल्पेली आ चालुविषय वाली तीर्थनी अविच्छित्ति (अविच्छेद) ते

सिद्धान्तनी साथे विरोध वाली होवाथी व्यर्थ कल्पेली छे कहयुं छे के

नय मय वियप्पेण य इत्यादि.

वली जिन चैत्यनीअनुवृत्ति मात्र थी तिर्थनो अविच्छेद भळे अंगीकार करो तो पण मुनिने चैत्यवास अने जिनचैत्यादिनी अनुवृत्ति ए वेमां श्यामत्व अने मित्र तनयत्वनी माफक प्रयोज्य अने प्रयोजक नो अभाव छे ते आप्रमाणे—

१ नय मय वियप्पेणं, जहा तहा कयमिणं फलं देइ, अवि आगमाणुवा या, रोगतिगिच्छा विहाणंव,

देवदत्त (नामनो कोई पुरुष) श्याम (कालावर्णनो) छे, कारण के मैत्र (नामना पितानो) पुत्र छे. अहिं कालाशपणामां "मैत्रनो पुत्र छे माटे" ए कारणनथी पण कालाशनु कारण तो शाक विगेरेना आहारना परिणाम रूप उपाधि छे. ए प्रमाणे जिनगृहादिनी अनुवृत्ति (रूप प्रयोज्य) मां मुनिओने चैत्यमांनिवासकरवो ए प्रयोजक (हेतुरूप) नथी, कारणके चैत्यनां अन्दर वसता मुनिओ सुख शीलीया

थायछे माटे चैत्यनी जीर्णतानो जीर्णोद्धार करवो इत्यादि चिंतानहीं करताहोवाथी ते चैत्यादिनी अनुवृत्तिथईशकती नथी, परन्तु तेनी अनुवृत्तिमां तेनी (चैत्यादिकनी) चिंता एज कारण रूप छे (पण चैत्यमां निवास करवो ते अनुवृत्तिमां कारण रूप नथी.), अने ते चिन्ता प्रथम श्रावकोजकरे तो तेनी अनुवृत्ति केम न थई शके? वळी पूर्वोक्त न्यायथी दरिद्री अने श्रीमन्त श्रावको चैत्यादिकनी चिन्ता करता नथी एम न कहेवुं. कारण के पंचमआराना प्रभाव थी केटलाकश्रावको तेवा छे तो पण शुद्धश्रद्धावडे मनोहर एवा पण केटलाएकमहात्मा श्रावको छे माटे ते चैत्यादिकनीचिंताश्रावकोथीथई शकवानो संभव छे ते आप्रमाणे--वर्तमानकालमां पण केटलाक पुण्य शाली श्रावको पोतानाकुटुंबनाभारनोआडंबर समर्थ पुत्रोने सोपी निरन्तर जिनमंदिरादिकनीसारसंभाल करवामांजगुंथायलादेखायछे, माटे श्रावकोवडेजअनुवृत्तिना कारण रूपजिनचैत्यादिकनीचिन्ता सिद्धथवा थी तमारासरखा आचार्योपण चैत्यनीसार संभालना उपदे-

शथी अनेक नहींआदरवायोग्य आरंभ समारंभ ने आरंभता(करता) व्यर्थज खेद पामो छो. वळी जोज्जेण इत्यादिवचनवडे तीर्थ विच्छेदनाकारणथी अपवादसेववावडे चैत्यवासनुं स्थापनकरोछो तेपण तमारूं सिद्धान्तनाअभिप्रायनुं अजाणपणुं सूचवे छे (अर्थात् तमो सिद्धान्तनोअभिप्राय जाणीशकता नथी) कारण के अपवादसेवनमां एतात्पर्यनथी पणबीजुंतात्पर्यछे ते आप्रमाणे— अहिं जे कोईमुनि विगेरे जे ज्ञानादि गुणवडे अधिक होय अने जेनाविना संघनु जे कोई मोटुं कार्य बीजा थी थई शके तेवुं न होय तो तेवा साधुए पोताना गुणमां वीर्य फोरववुं जोइए, ए अपवाद सेवननुं तात्पर्य छे. ए प्रमाणे होवाथी जो ज्जेण इत्यादि पूर्वार्ध श्लोक पछीनुं उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे-

२ सो तेण तम्मिकज्जे, सव्वत्थामं न हावेइ.

ते कारण थी ए जो जेण इत्यादि पाठवडे पण तमारा कथननी सिद्धि थई शकती नथी.

अने ए प्रमाणे परवादीए स्थापेल सर्व उपपत्ति ना (पूर्वपक्षना) निराकरणथी मुनिओने चैत्य वासनानिषेधनी सिद्धिमां स्वपक्ष तरफ थी साधन कहेवाय छे (अर्थात् मुनिओने चैत्य वासना निषेधनुं कारण कहेवायछे) के मुनिओने जिन-चैत्यमां निवास करवो तअयोग्य छे कारण के प्रतिमाआगळभक्तजने अर्पणकरेलबलिनाग्रहणनी पेठे उत्पन्नथता देवद्रव्यनो उपयोगथायछे. वळी ए कारण असिद्ध (असत्य) नथी, कारण के चैत्यमां निवास करता मुनिओने चैत्यमां शयन-आसन अने भोजन विगेरे करवाथी अनेक भव सुधी (रूप) भयंकर फल आपवा वाला देव द्रव्यनो उपभोगअवश्यथायछे, तेमज विरुद्ध पण नथी, कारण के ते विरुद्ध तो मुनियोग्यतानी साथे हेतुनुं व्याप्तपणुं होवाथी होयछे, ने तेम (मुनि योग्यतानी साथे हेतुनुं व्याप्त पणुं) तो छे नहिं कारण के.

१-२ एनो संपूर्ण श्लोक आ प्रमाणे छे.

जो जेण गुणेण सहिओ, जेण विणा वा ण सिज्झए जंतु, सो तेण तम्मि कज्जे, सव्वथामं न हावेइ ॥ १ ॥

अर्थः—जे मुनि जे गुणवडे (जे कार्यमां) अधिक (शक्तिमान) होय वली जेना (ते मुनि) विना जे कार्य सिद्ध न थतुं होय तो तेवा गुणमां (कार्यमां) ते मुनि पोतानुं सर्वबल स्फुरायमान करे.

देवस्स परिभोगो, अणंतजम्मेसु दारुणविवागो । जं देवभोगभूमी, वुद्धी न हु वट्टइ चरित्ते ॥ १ ॥

अर्थः—देव द्रव्यनो उपभोग ते अनंतभवसुधी भयंकरफलआपनारछे, जे कारण थी देवभूमिने भोगवतामुनिना चारित्रमां पण वृद्धि थती नथी (पण हानि थाय छे)

१ भावार्थ ए छे के साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुध्धः एटले साध्यना अभावमा व्याप्त थयेलो जे हेतु ते विरुद्ध कहेवाय माटे अहि " मुनिने चैत्यनिवास योग्य छे ,, ए साध्य होई ए (साध्य) ने समर्थन करनार हेतु होत तो " मुनिने चैत्यनिवास करवो अयोग्य छे " ए पक्ष विरुद्ध गणात पण तेम छे नहिं बल्के तेथी उलट चैत्यनिवासनी अयोग्यताने सिद्ध करनार हेतु छे ने ते हेतु देवस्स

परिभोगो इत्यादि. माटे चैत्यनिवास अयोग्यता रूप पक्ष विरुद्ध नथी.

ए प्रमाणे सिद्धान्तमां देवभूमीभोगवता मुनिने चारित्रना अभावे भयंकरफलकहेलुं छे वली सत्प्रतिपक्ष पण नथी कारण के सिद्धान्तमांज कहेलुं छे माटे तथा प्रतिपक्षीना अनुमाननुं प्रथमज खंडन करेल होवाथी बाधित विषय पण नथी. तथा प्रत्यक्षादि प्रमाणोवडे विषयापहार नहिं थवाथी प्रत्यक्ष प्रमाण वडे पण (जिनगृह-वासमां मुनिनी योग्यता) सिद्ध थती नथी. प्रश्नः-वर्तमान कालमां जिनचैत्यमां मुनिओनो निवास प्रत्यक्ष देखायछे तो तेमां निवास करवा-रूप धर्मीने मुनिअयोग्यता रूप साध्यधर्मनाहेतु-विषयनुं बाधित पणुं थवा वडे विषयनो अपहार थवाथी हेतु बाधित विषय वालो छे एम केम न कहेवुं जोइए ? उत्तर—चैत्यमांनिवासकरनारमु-निओते मुनिओ नहिं पण मुन्याभास(नकली मुनि) होवाथी त्यां चैत्यमां मुनिनिवास देखाए छते पण चैत्य निवास ते मुनिनी अयोग्यतासिद्धकर-वामां बाधित विषयवालो नथी, माटे विषय

अपहारनो अभाव होवाथी बाधित विषयपणुं नथी (एम प्रथम कहेल छे ते सत्य छे.) अने ते कारण थी आधाकर्मादि दोष रहित होवाथी चैत्य ते मुनिने उपभोग योग्य छे एवो जे तमारो हेतु ते पूर्वोक्त न्यायवडे मुनिओने चैत्यनी उपभोग्यतानुं देवद्रव्यना उपभोगादिदोषोवडे सिद्धांतमां बाधित पणुं होवाथी कालात्ययापदिष्ट (बाधित) दोषपण नथी, अने ए प्रमाणेहोवाथी भगवंतनागुणनुं गायन, वारांगनाओनु नृत्य, शंखपटहभेरी नेमृदंग विगेरे वाजित्रोनुं वगाडवुं, बकुलविचिकलमालती प्रमुखनी सुगंधिदार पुष्पमालाओ वडे समस्तजिनचैत्यनी भक्तिवडे निरन्तर पूजा रचवी इत्यादि अरिहंतनाचैत्यमां देवद्रव्यनोउपभोगथवाथी

१ यस्य साध्याभाव साधकं हेत्वं तरं विद्यतेऽसौ सत्प्रतिपक्ष एटले जेना साध्य अभावने साधनार बीजो कोई हेतु वर्तती होय ते सत्प्रतिपक्ष कहेवाय जेम के " शब्द नित्य छे कारण के श्रवणेन्द्रियनो विषय छे, अहिं शब्दनी नित्यतामां श्रवणेन्द्रिय विषयत्व रूप हेतु कहयो पण शब्दनी अनित्यता

(रूप साध्याभाव) ने साधनार कृतकत्व=कृत्रिमपणुं (शब्द अनित्य छे कारण के कृत्रिम छे ए बीजो प्रतिपक्षी हेतु) होवाथी नित्यत्व रूप साध्य सत्प्रतिपक्ष कहेवाय. तेम अहिं चैत्यनिवास ते मुनिने अयोग्य छे, ए पक्षमां अयोग्यत्व रूप साध्यना अभावमां बीजो कोई प्रतिपक्षी (एटले चैत्य निवास मुनिने योग्य छे एम सिद्ध करनार) हेतु नथी माटे चैत्य निवासनी अयोग्यता रूप पक्ष सत्प्रतिपक्ष नथी.

२ यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण बाधितः स बाधित विषयः एटले जेना साध्यनो अभाव बीजा प्रमाण वडे बाधित थतो होय ते बाधित विषय कहेवाय. अहिं चैत्य निवासनी अयोग्यता रूप साध्यनो बीजा प्रमाण वडे अभाव थतो नथी माटे चैत्य निवासनी अयोग्यतारूप पक्ष बाधित विषय वालो नथी.

३ विषयापहार एटले बीजा प्रमाणथी-हेतु थी साध्यनी सिद्धता न थई शकवी ते विषयापहार कहेवाय. अहिं बाधित विषय अने विषयापहार लगभग सरखा जेवा छे.

यदीच्छेन्नरकं गंतुं, सपुत्रपशु बांधवः देवेष्वधिकृतिं कुर्या द्गोषुच ब्राह्मणेषुच ॥ १ ॥ नरकाय मतिस्ते चेत्, पौरोहित्यं समाचार, वर्षयावत् किमन्येन, माठपत्यं दिनत्रयं ॥ २ ॥

अर्थः—पुत्रपशुअनेबंधुवर्गसहित जे नरके जवानेइच्छतोहोय तो देवोनुं, गौनुं,अने ब्राह्मणों-नुंअधिकारीपणुंकरवुं ॥ १ ॥

वली तारीबुद्धि जो नरकमांजवानेथईहोय तो बीजी वात वडे करीने शुं ? पण १ वर्ष सुधी पुरोहित पणुं अने ३ दिवस मठनुंअधिपति पणुं अंगीकार कर.

इत्यादि प्रकारे मठाधिपतिपणुं आलोक अने परलोकमां (अथवा लौकिकमांने लोकोत्त-रमां) निंदनीयहोवाथी दीर्घ संसारवृद्धिकरनार-आशातनाओनाभयथी कंपता एवा जैनमत निपुण साधुओ कोई पण रीते (चैत्यमां) निवास करता नथी परन्तु.

१ ताहे सामी वासावासे उवागए

इत्यादि आवश्यकचूर्णि विगेरे ग्रंथोमां घणीवार देखवाथी साक्षात् तीर्थंकर गणधरोए अंगीकार करेल.

२ संविग्ग सन्नि भद्द इत्यादि.

ए प्रमाणे विस्तार सहित तीर्थंकरादि के अनेक प्रकारे प्रतिपादन करेली तथा.

धन्या अमी महात्मानो, निःसं-
गा मुनि पुंगवाः अपि क्वापि स्वकं
नास्ति, येषां तृणकुटीरकं ॥ १ ॥

अर्थः—निःसंग (संगरहित) एवा आ श्रेष्ठ मुनि महात्माओ धन्य छे के जेओने पोतानी एक घासनी झूंपडी पण कोई स्थाने नथी.

इत्यादि वचन समूह वडे लोकने प्रशंसवा-योग्य धन-सुवर्ण-पुत्र-स्त्री-स्वजन-अने परिजनना त्याग रूप अपरिग्रहता मुख्यस्थानरूपथयेछते तथा.

१ ताहे सामी वासावासे उवागए तंचेव दुइज्जंतगामं एइ तत्थेगाम्मि उडए वासा वासं संठिओ ॥

तथा ताहे सामी रायगिहं गओ तत्थ बाहिरियाए तंतुवायसालाए एगदेसिं अहापडिरूवं अणुग्गहं अणुणवित्ता चिट्ठइ ॥ तथा अन्नया आयरिया मज्झन्हे साहुसु भिक्खं निग्गएसु सन्ना भूमिं निग्गया वइरसामिविपडिहत्थय वालोत्ति ॥

२ सिज्जायरोपहूवा इत्यादि आगल स्फुट नोटमां लखाशे ते गाथानुं आएक चरण छे.

१ सिज्जायरुत्ति भन्नइ, आलय सामित्ति (एटले घरनो जे स्वामि ते शय्यातर कहेवाय) तथा

२ सिज्जायरो पहूवा पहुसंविट्ठो व होइ कायव्वो

३ तथा मुत्तुण गेहं इत्यादि

इत्यादि अनेक प्रकारे सिद्धान्तनाअक्षरो देखवा थी उत्पन्नथयेलाछे तात्विकज्ञान जेने एवा पंडितजनोनो बहुमतहोवाथी वसतिमांज सत्यनामवाला अने अनगारनामवाला साधुओ रहेवानुं कहे छे. परन्तु अत्यंत अपवाद होते छते पण जिनचैत्यमांरहेवानुं कहेतानथी एम सिद्ध- थयुं. आप्रमाणे उपन्यासना प्रबंधवडे (विस्तार

पूर्वक पूर्वपक्षनुं खंडन कर्यं छते) उत्तर रूप करेल शून्यदिशासमूहने सुन्दररीते चपलतापूर्वक देखवावालाएवा सूराचार्य ने करीने (अर्थात् सूराचार्य ने दिग्मूढ बनावीने) भुजादंडऊंचो-करी मलिनअंधकारने नाशकरवामांसूर्यसरखा श्रीजिनेश्वरसूरिभगवाने कहयुं के—

एवं सिद्धान्तवाक्यैर्बहुविधघटना हेतुदृष्टांतयुक्तैरुक्तैरस्माभिरेतै रवितथसुयथोद्भासनोष्णांशुकल्पैः कुग्राहग्रस्तचेताः परगृहवसतिं द्वेष्टि योऽसौ निकृष्टोदुर्भाषी वद्धवैरः कथमपि न सतां स्यान्मतोनष्टकर्णः ॥

१ द्वादशविध संभोगश्चायं पंचकल्ये—उवहि १ सुय २ भत्तपाणे ३ अंजली पग्गहे ४ वायणा ५ यणिकाल अ ६ अब्भुट्ठाणे ७ किइकम्मकरणे- ८ वेयावच्चकरणे य ९ समोसरणे सन्निसेज्जा १० कहाए अ ११ निमंतणे १२ ॥

२ सिज्जायरो पहूवा, पहुसंदिट्ठोय होइ कायव्वो, संविग्गसन्नि भद्दगसुन्ने नीयाइ मुत्त अहा छंद्दे, पच्चंतासीएसुं वसहि मग्गणा होइ—इत्यादि.

३ सुत्तूगं गेहं तु सपुत्तदारो, वणिज्जमाईहिं उ कारणेहिं सयं च चइज्ज देसं, सिज्जायरो तत्थ स एव होई ॥ १ ॥ जो देइ उवस्सयं मुणिवराण, तव नियम बंभजुत्ताण, तेणं दिन्ना वत्थन्नपाण सयणासणविगप्पा ॥ २ ॥

अर्थः- ए प्रमाणे अमोए कहेला आ अत्यन्तयथार्थतत्वने प्रगटकरवामां सूर्यसमान अने अनेकप्रकारनी घटना हेतु तथा दृष्टांतवडेयुक्त एवा सिद्धांतनावचनोवडे, कदाग्रहे करीने ग्रस्तचित्तवालो तुच्छदुर्भाषी अने नष्टकर्णवालो (निष्फल कानवालो) जे कोइ परगृहनिवास प्रत्ये द्वेष करेछे ते कोईपण रीते सज्जनोने मान्यथतो नथी.

ए प्रमाणे तर्कवाली सभा समुदायने आनंद पमाडी राजादि लोकने विश्वास-खात्रीपमाडवा माटे श्रीजिनेश्वरसूरिए पुनः पण कह्युं के हे राजन् ! लोकमां तमारी राजनीति शुं पूर्वपुरुषों ए दर्शावेली चाले छे के हमणांना पुरुषोएदर्शा-

वेली नवी नीति चाले छे ? राजाए कह्युं के अमारासमस्तदेशमां पण अमारा पूर्वज वनराजराजानी राजनीति प्रवर्तेछे, पण वीजी नहीं. त्यारे श्रीजिनेश्वरसूरिए कह्युं के हे महाराज ! अमारा धर्ममांपण गणधरोए अने चौदपूर्वधरोए जे मार्गदर्शाव्यो छे तेज मार्ग प्रमाणभूतकरायछे, पण बीजो नवोमार्गप्रमाणभूतगणातो नथी. राजाए कह्युं के ए प्रमाणे आ पूर्वपुरुषोए स्थापेला मार्गोजसर्वत्रप्रमाणभूतगणाय छे. श्रीजिनेश्वरसूरिए कह्युं के हे राजन् ! अमो दूरदेशथी आवेलाछीए माटे पूर्वपुरुषोएरचेलासिद्धांतपुस्तकनो समूह कइंपण लाव्या नथी तेथी हे राजन् ! एमना मठमांथी आप पूर्वपुरुष रचितासिद्धांतपुस्तकनो समूहमंगावो के जेथी करीने सत्य मार्गने निश्चयकरवावालाअक्षरो आपने साक्षात बतावीए, त्यारे राजाएकह्युं के हे श्वेतांबराचार्यो ! तमारामांथी एक श्वेतांबरमुनिने पुस्तकदेखवामाटे मोकलो जेथी मारा पुरुषो पुस्तकअहिं लावे, तेथी ते पुस्तकोमां एमनो (वसतिवासी मुनियोंनो) मतपणहशे एम निश्चय करता अने श्री-

जिनेश्वरसूरिना वचन वडे अंदर थी शल्यभृत थयेल हृदयवालानी माफक ए (चैत्यवासी) सर्वे आचार्यो मौन थई गया. त्यारे राजपुरुषोए जाइने जे पुस्तक प्रथमजहाथमां चडयुं (आव्युं) तेज पुस्तकआण्युं. अने लावता मात्रमां शिघ्र ने पुस्तक बंडलक छोडयुं, त्यां श्री देवगुरूना प्रसादथी चौदपूर्वधररचित श्रीदशवैकालिकसूत्र निकल्युं. अने तेमा प्हेलोज आ श्लोक निकल्योके-

अन्नट्ठं पगडं लेणं इत्यादि

श्रीजिनेश्वरसूरिए कहयुं के आप्रमाणे मुनिओ परगृहमां निवासकरे पण देवमंदिरमां न रहे. श्रीदुर्लभ राजानामनमां ते वात ठीकबैठी अने कहयुं के अहो जेवी रीते आ परदेशीमुनिओ कहे छे तेवीज रीते छे ते वात सर्व अधिकारिओए जाणी अथवा अमारा गुरुओ सर्वथा निरुत्तरथया

नोटः-अन्नट्ठं पगडं लयणं भइज्ज सयणासणं, उच्चार भूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जिअं ॥ ८ ॥ ५२ ॥
१ अन्नट्ठं पगडं लयणं, इत्थिओ वा वि संकणं । कुसीलवड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥ १ ॥

तेथी सर्वे श्रीकरणिकविगेरे अधिकारिओए प्रत्ये-
के कह्युं के हे राजन् ! आ सर्वे आपणागुरुओ
छे जे कारणे राजा आपना कारण थी आपणा
गुरुने पण बहुमान आपे छे, हवे राजा न्याय-
वादीछे ते जेटलामां कंईपणबोल्या नहीं तेटलामां
ते अवसरे विचक्षणशिरोमणि अेवा श्रीजिनेश्वर-
सूरिए कह्युं के हे राजन् ! कोईक गुरु, कोईक
श्रीकरण विगेरे अधिकारी, कोई जकात खातानो-
अधिकारी, कोई प्रधान, ने कोईक शेठथयो तो
हे महाराज ? ते अधिकारीपणुं कोना संबंधी छे ?
त्यारे राजाएकह्युं के मारा संबंधि छे त्यारे
श्रीजिनेश्वरसूरिए कह्युं के तो हे महाराज! कोई
कोईनो पण संबंधि थयेलोहोय छे ने अमे कोईना
संबंधि नहीं ? त्यारे राजाए तेओने पोताना गुरू-
कर्या अने त्यार बाद राजाए कह्युं के सर्वगुरुओने
रत्नपटीनी बनेली सात२ गादीओ छे, तो अमरा
गुरु एवा तमारे नीचे बेसवानुं शुं कारण ? त्यारे
सूरिएकह्युं के अमारे गादीउपर बेसवुं न कल्पे.
राजाए कह्युं शा माटे ? त्यारे श्रीजिनेश्वरसूरिए
कह्युं हेमहाराज सांभलो एम कही—

चारणे वसतिनिवासधर्म ने प्रगटकरनांरो यशनी-पताकासरखां अने दुर्जन पुरुषनां कानमां शूल सरखां एवा काव्यो बोलते छते प्राप्त करेल छे खरतरविरुद्जेणे एवा श्रीजिनेश्वरसूरि भगवाने वसतिमां प्रवेश कर्यो.

ए प्रमाणे गुजरात देशमां प्रथम श्री-जिनेश्वरसूरिए वक्रजनोनामस्तकपरपगधरीने (वक्र जनोने जीतीने) वसतिनिवासमार्गनी स्थापनाकरी. हवे बीजे दिवसे प्रतिपक्षीओए विचारकर्यो के आ बीजो उपाय तो निरर्थक थयो माटे हवे तेमनेकाढवानो त्रीजोजउपाय करीए. कोईके सलाहआपी के राजा पटराणीनी साथे अत्यंत प्रीति वालो छे, कारण के पटराणी जे कहे छे ते करे छे, माटे ते पटराणी द्वारा ए मुनिओने काढीए ए प्रमाणे मारो अभिप्राय छे, त्यारे तेओए तेनीसलाहअंगीकार करी पोताना राज्यआधिकारी श्रावको ने निवेदन कर्युं, तेथी तेओ केरी-केला अने द्राक्षादि फलना पात्र तथा श्रेष्ठवस्त्र अने आभरणनुं भेटणुं लइने राणीपासे गया, ने ते राणीआगल भगवाननीप्रतिमावत्

बलि रचना करी तेथी राणी संतोषपामी ने तेनुं कारण पूछवातत्परथई, एटलामां राजाने राणी-पासे कंईक प्रयोजनप्राप्त थतां राजाए राणीनी पासे दिल्लिका देशना पुरुषनो आज्ञाकारी कोई-कपुरुषमोकल्यो ने कहेवराव्युं के राणीने आप्र-योजनजणावो. त्यारे ते पुरुष हे राजन् ! हमणां-जजणावुं छुं एमकही शिघ्र राणीपासे आव्यो ने राणीने ते राजानुं प्रयोजनजणाव्युं. घणा अधि-कारीओने अने अनेकप्रकारनाभेटणां अर्पणक-रेलां जोई तेणे विचार्युं के जे आचार्यो परदेश थी आवेलाछे, तेओने काढवानोज आ उपायसं-भवे छे, परन्तु मारे पण राजानीआगल ते आ-चार्योनापक्षनीपुष्टि तरीके कंईककहेवुं जोइए. एम-विचारी राजा पासे आव्यो ने कह्युं के हे राजन्! आपनुं प्रयोजन तो राणी ने जणाव्युं पण त्यां गयेला में एकमोटुंकौतुकदेख्यूं राजाए पूछ्युं केवुंकौतुक देख्युं ? ते भद्रपुरुषे कह्युं के हे राजन् ! राणी जिनेश्वरनीप्रतिमावत् बलिपूजा-वालीथई एटले जेम अरिहंतनी आगल बलिर-चनाकराय छे तेम राणीनीआगलपण केटलाको-

एकर्युंछे. राजाए विचारकर्यो के मेंजे न्यायवादि-ओने गुरुपणे अंगीकार कर्या तेओनीपूठइर्जा पण ते पापीओछोडतानथी. त्यार बाद राजाए तेज-पुरुषने कह्यु के शीघ्र राणीपासे जइने कह के राजा एम कहेवडावेछे के तारी आगल केटला-एके ज कई अर्पणकरेलुं छ तेमांथी एक पण सोपारी जो ग्रहण कर्युं तो तार तारूं स्थानवि-चारवुं (तारी बात तुं जाणीश) त्यार बाद ते पुरुषे तेमकहयेछते भयपामेली राणीए ते अधि-कारीओनेकहयुं के हेअधिकारीओ ! जेणे जे वस्तु आणी छे तेणे ते वस्तु पोतानेघेर लई जवी, मारे एकपण सोपारीनुं कामनथी. ए प्रमाणे आ उपाय पण निष्फल गयो.

त्यार बाद ते चैत्यवासीओए चोथो उपाय चिंतव्यो ते आ प्रमाणे-जो राजा परदेशथी आ-वेला मुनिओने बहुमान आपशे तो सर्व देव मंदिरोंनो त्याग करी परदेशमां चाल्या जइशुं ए प्रमाणे उद्घोपणाकरी. कोईके ते वात राजाने जणावी. राजाए कहयुं घणुंसारूं, ज्यां रुचे त्यां भले जाय. राजाए देवमंदिरोमां पूजाकरवामाटे

ब्राह्मणो राख्या ने तमारे आ प्रतिमाओनीपूजा-
करवी, परन्तु तेचैत्यवासीयो थी मंदिर विना वहार
नहिं रहिशकाय तथी कोई चैत्यवासी कईक वहानुं
करीने अने कोई कंई वहानुं करीने चैत्यघर आव्या.
विशेष शुं कहेवुं! सर्वे लिंगी आव्या अने पोताना देव
घरमांरहयाथीवर्धमानसूरि पण राजाना सन्मानवडे
अस्खलितप्रचारवाला सर्व देशमां विहार करे छे,
परन्तु कोई पण कोई मुनिने कंई कहीशकतो नथी.
त्यार बाद श्री वर्द्धमानसूरियें श्री जिनेश्वर पंडित
ने शुभमुहूर्ते बीजा पण तेमनाभाई बुद्धिसागर
ने पोताने पट्टस्थापी आचार्यपदवीआपी, अने ते
बन्ने भाईनी कल्याणमतीबेनने महत्तरास्थापी,
त्यार बाद अनुक्रमे विहारकरता श्रीजिनेश्वरसूरि
ए जिनचन्द्र-अभयदेव-धनेश्वर-हरिभद्र-प्रसन्नचन्द्र-
धर्मदेव-सहदेव ने सुमति विगेरे अनेकशिष्यो
कर्या. त्यार बाद श्रीवर्धमानसूरि सिद्धांतनी
विधियुक्त समाधि वडे देवलोकनी लक्ष्मी (काल-
धर्म) पाम्या, त्यार बाद श्रीजिनेश्वरसूरिए आ
बे गुणपात्र छे एम जाणी श्रीजिनचंद्रने अने
श्रीअभयदेवने आचार्य पदे स्थाप्या, अनुक्रमे

ते बन्ने युगप्रधानथया. वली बीजा पण बे आचार्यस्थाप्या तेमा एकतो श्रीधनेश्वरने जिनभद्रसूरि नामथी अने बीजा श्रीहरिभद्राचार्य. तथा धर्मदेव–सुमति अने विमल नामना त्रण शिष्योने उपाध्यायपदेस्थाप्या. एमा धर्मदेव उपाध्याय अने सहदेव गणी ए बे भाईहता. तेमां धर्मदेव उपाध्याये हरिसिंह अने सर्वदेवगणी ए बे भाईने अने सोमचंद्रपंडितने पोताना शिष्यकर्या. अने सहदेवगणिए अशोकचंद्र नामनो शिष्यकर्यो. ते अत्यंत प्रिय हतो. तेने श्री जिनचंद्रसूरिए विशेष भणावीने आचार्यपदेस्थाप्यो, तेणे पोतानेपट्टे हरिसिंहनामनाआचार्य कर्या. बीजा प्रसन्नचंद्र अने देवभद्र नामना बे आचार्य तथा सुमति उपाध्यायनो शिष्य देवभद्र अने प्रसन्नचंद्र आचार्य विगेरे चारने श्रीअभयदेवसूरिए तर्कादिशास्त्र भणाव्या ते कारणथीज श्रीचीतोडसंबंधि प्रशस्तिमां श्रीजिनवल्लभसूरिए लख्युं छे के—

सत्तर्क न्यायचर्चार्चितचतुरागिरः
श्री प्रसन्नेंदुसूरिः, सूरिश्रीवर्धमानो

यतिपतिहरिभद्रोमुनीन्द्रदेवभद्रः, इ-
त्याद्याः सर्वविद्यार्णवकलशभुवः संच-
रिष्णूरूकीर्ति,स्तंभायंतेऽधुनाऽपि श्रु-
तचरणरमाराजिनो यस्य शिष्याः॥१॥

अर्थः-श्रेष्ठ तर्क अने न्यायनी चर्चावडे अर्चित एवी चतुर वाणी वाला श्री प्रसन्नचंद्रसूरि श्री वर्धमानसूरि श्री हरिभद्रसूरि अने श्री देवभद्र-सूरि इत्यादि आचार्यो सर्व विद्यारूपी समुद्रनुं पान करवामां अगस्त्य ऋषि सरखा हता के जेना ज्ञान अने चारित्र रूप लक्ष्मीनी श्रेणिवाला एवा शिष्यो वर्तमान काले पण चालता विशाल कीर्तिना स्तंभ सरखा छे.

श्री जिनेश्वरसूरिए आशापल्लीमां विहार कर्यो त्यां व्याख्यानमां घणा विचक्षण श्रोताओ बेसे छे तेथी श्रीजिनेश्वरसूरि विदग्ध (डहापण-युक्त) मन रूपी कमलने चंद्रिकासरखी संवेग-वैराग्यने वधारनारी एवी लीलावती नामनी कथा करी तथा डिंडियाणक गाममां आवेला

आचार्ये व्याख्यान करवा माटे चैत्यवासीआ-
चार्योपासे पुस्तकमाग्युं, पण कलुषित (मलिन)
हृदयवाला तेओए न आप्यु, तेथी पाछला त्रे
पहरमां कथा कोशनीरचना थाय अने प्रभातमां
तेनुं व्याख्यान थाय ए प्रमाणे तेज गाममां चौ-
मासामां कथाकोष तैयार कर्यो तथा मरूदवी-
नामनी मुख्यसाध्वीहती तेणे अणसण ग्रहण कर्युं
ने ४० दिवस रही. श्रीजिनेश्वरसूरिए समाधि
करावी अने ते साध्वीने कह्युं के तुं ज्यां उत्पन्न
थाय त्यांनुं स्थान जणाववुं, तेणीए पण हे
भगवन् ! हुं एमज करीश ए प्रमाणे अंगीकार
कर्यु. त्यार बाद पंच परमेष्ठिनुं स्मरण करती ते
स्वर्गमां गई अने महर्द्धिक देव थयो.

१ आ कथा विक्रम संवत १०९२ मां करी
एम छापेली प्रतनी टिप्पणीमां लख्युं छे.

हवे अहिं एकश्रावक युगप्रधाननो निर्णय-
करवा माटे श्री गिरनार पर्वत पर जईने अधि-
ष्टायक वालुंजे सिद्धि क्षेत्र तेनी अंदर अंबिकादि
कोई पण देव जो मने युगप्रधाननो निर्णय कहेशे
तोज हुं भोजनकरीश नहिंतरनहिं ए प्रमाणे धैर्य

पूर्वक प्रतिज्ञाकरीनेबेठोछतो उपवासकरवालाग्यो
ए अवसरमां महाविदेहक्षेत्रमां विचरता श्रीतीर्थं-
करने वंदनाकरवा माटे गयेला ब्रह्मशांतिनामना
देवनी साथे ते साध्वीना जीव देवे संदेशो मोक-
ल्यो के तारे श्रीजिनेश्वरसूरिनी आगल आ वात
निवेदनकरवी ते आ प्रमाणे—

मरुदेवी नाम अज्जा, गणणी-
जा आसि तुम्ह गच्छंमि, सग्गंमि गया
पढमे, जाओ देवो महड्ढीओ ॥ १ ॥
टक्कलयंमि विमाणे, दुसागराऊ सुरो
समुप्पन्नो समणेसरस्स जिणेसर-सूरिस्स
इमं कहिज्जासि ॥ २ ॥

अर्थः—मरुदेवी नामनीसाध्वी तमारा गच्छमां हती ते प्रथमस्वर्गमांगइ छे, ने महार्धिकदेव थइछे ॥ १ ॥ टक्कलक नामना विमानमां बे सागरोपमना आयुष्यवालो देव उत्पन्न थयो छे ए प्रमाणे मुनियोंमां ईश्वर समान श्री जिनेश्वरसूरिने कहेजे. तथा—

टक्कउरे जिणवंदण-निमित्त मेवा गएण संदिट्ठं, चरणंमि उ नमो मे, काय्व्वो किंच सेसेहिं ॥ ३ ॥

अर्थः-टक्कपुरमां जिन वंदनने अर्थे गयेला में संदेशो मोकल्यो छे वली हेजिनेश्वरसूरि ! चारित्रमां विशेषउद्यमकरवो. ते ब्रह्मशांतिदेवे पण आ संदेशो पोते आचार्यनी आगल जईने न कह्यो परन्तु युगप्रधाननो निर्णय करवा माटे आरंभेला उपवासवालाश्रावकने उठाडयां ने त्यार बाद तेना वस्त्रमां म-स-ट-स-ट-च एटला अक्षरो लखीने कह्युं के नगरमां जा, अने आ अक्षरो जे आचार्यना हाथे धोवाया छता जता रहेशे तेज वर्तमानकाले भरतक्षेत्रमां युगप्रधान जाणवो. त्यार बाद ते श्रावक पण श्री नेमिजिनेश्वरने वंदना करी, पारणुं करी नगरमां आवीने सर्व उपाश्रयोमां जईने ते अक्षरोदेखाडया, परन्तु कोईने तेनो अर्थ मालूम न पड्यो. अने ज्यारे श्रीजिनेश्वरसूरिने उपाश्रये जई अक्षरोदेखाड्या त्यारे आ त्रण गाथाओ छे ए प्रमाणेउत्पन्नथ-

येली बुद्धिवाला श्रीजिनेश्वरसूरिए विशेष विचार करीने (तेनो अर्थ विचारीने) ते अक्षरो धोया त्यार बाद ते श्रावके विचार्यु के निश्चय आ सूरिज युगप्रधान छे, ते कारणथी ते श्रावके विशेपतः गुरुपणे अंगीकार कर्या. ए प्रमाणे श्री महावीरभगवाने दर्शावेलाधर्मनीप्रभावना करी श्री जिनेश्वरसूरि देवलोकने (कालधर्मने) प्राप्त थया.

त्यार बाद श्री जिनचन्द्र आचार्य रहयाके जेने १८ नाममालाओ सूत्र अने अर्थथी कंठाग्रहती. वली जे शास्त्रविशारद भव्यप्राणीयोने मोक्षम्हेलनामार्ग (नीसीढी) रूप १८००० श्लोक प्रमाणनी संवेगरंगशाला (नामनो ग्रंथ) रच्यो. अने विहारकरीने जावाली नगरमां गयेल जेमने श्रावकोनी आगल चियवंदण मावस्सय इत्यादि गाथाओनुं व्याख्यान करतां जे सिद्धांतना संवाद कहया ते सर्व तेमना सुशिष्ये लखी लीधा के जे ३०० श्लोक प्रमाणनो श्रावकोने उपकारी एवो

---

१ छापेल प्रतनी टिप्पणीमां लख्युं छे के ए ग्रंथ छत्रावलिस नगरीमां विक्रम संवत ११२५ मां रच्यो.

दिनचर्या नामनो ग्रंथ बन्यो. ते श्रीजिनचन्द्र सूरि पण यथार्थपणे श्रीवीरधर्मने प्रकाशकरी स्वर्गेगया.

तदनंतर नवअंगनीवृत्तिकरनार एवा युगप्रधान श्रीअभयदेवसूरि थया. तेमणे नवअंगनीटीकाकरवामां केवीरीते कुशलताप्रगटकरी तेनु स्वरूपलेशमात्रकेहवायछे ते आप्रमाणे.

चारित्रसंबंधी श्रेष्टसमाचारीनी चतुराईमां मुख्य एवा श्रीमद्अभयदेवसूरिभगवंत अखीणग्राम नगर आकरादिकमां विहारकरवावडे पृथ्वीमंडलने पवित्र करता एक वखते विहारना अनुक्रम स्वरूपवडे निश्चय त्यां शंभाणकनामना गाममां आव्या. त्यां कंईक शरीरमां व्याधिनु कारणउत्पन्नथयुं,जेमजेम औषधादिनो उपाय थाय तेमतेम ते दुष्ट व्याधिवधवा लाग्यो. जरापणशान्ति थती नथी, त्यांथी जूदा गाममां रहेला सूरिवर्यना भक्तश्रावको ज्यारे ज्यारे चतुर्दशीने दिवसेपाक्षिकप्रतिक्रमणथाय त्यारे त्यारे चारयोजन प्रमाण दूरक्षेत्रथी आवीने त्यां सूरिवर्यनी-साथे प्रतिक्रमणकरेछे. श्रीमद्अभयदेवसूरिभग-

वान पण पोतानुं शरीरअत्यंत रोगव्याप्त जाणीने हवे पोतानुं कार्य साधवुं जोइए एम विचारि मिथ्यादुष्कृतआपवा माटे तमारे चतुर्दशीने दिवसे सर्वे ए पण विशेष करीने जाणवुं (अर्थात् आजे तमारे सर्वेए मारो मिच्छामिदुक्कडं विशेषथी जाणवो) एम जणाववापूर्वक ते श्रावको ने बोलाव्या. त्यारबाद त्रयोदशीनी रात्रिमां मध्यरात्रिसमये शासनदेवी आवी अने देवीए कह्युं के उंघो छो के जागो छो ? त्यारे सूरिश्रीए मन्द स्वरे कह्युं हे देवि ! जागुं छुं. देवीकहे हे प्रभु ! शिघ्र उठो, अने आ नव सूत्रनीकोकडियोउकेलो सूरिएकह्युं मारामां शक्ति नथी. देवीए कह्युं केमशक्ति नथी ? हजी घणोलांबो काल जीवशो अने नव अंगनीटीकाकरशो. सूरिए कह्युं आवा अशक्त शरीरे हुं केवीरीते करीश ? त्यारे देविए उपदेश आप्यो के स्तंभनकनगरमां सेढिकानदीने किनारे खंखरक पलाश मध्ये स्वयंभू (स्वतः प्रगट थयेली) एवी पार्श्वनाथनी प्रतिमां छे. तेनी आगल आपवंदनाकरो के जेथी स्वस्थ शरीरवालाथाओ ए प्रमाणे कहीने देवीअंतर्ध्यानथई.

प्रभातसमये गुरु मिच्छामि दुक्कडं आपशे एवा अभिप्रायथी आववानी इच्छा वाला पोताने स्थाने रहेला सर्वे श्रावको एकठा थईने आव्या, अने तेओए सूरिश्रीने नमस्कारकर्यो. सूरिएकहयुं के स्तंभनक नगरमां मारे श्रीपार्श्वनाथभगवानने वंदनाकरवी छे, तेथी सर्वश्रावकोए जाण्युं के अहो निश्चयथी सूरिश्रीने कोईये उपदेशआप्यो छे, ते कारणथी आप्रमाणे जणावे छे, त्यार बाद श्रावकोए कहयुं के अमोपणआवीशुं, त्यार बाद गुरुने माटे वाहन (डोली विशेष) कर्यु ने गुरु तेपर बेठा, गुरुने क्षुधा तो प्रथमथीजनाशपामीहती परन्तु खंभातप्रत्ये चालतां पहेले प्रयाणेज रससंबंधि (आहारनो) अभिलाष थयो, अनुक्रमे धोलकासुधी आवी प्होंचेल गुरुना शरीरे स्वस्थपणुं थयुं.त्यार बाद पगविहारथीज स्तंभनकनगरे पहोच्या. श्रावको श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिमा देखवा लाग्या पण कोई स्थाने न देखी तेथी गुरुनेपूछयुं त्यारे गुरुए कहयुं के खंखर पलाश मध्ये देखो त्यार बाद त्यां प्रतिमा जोई अने अति देदीप्यमानदेखी, अने त्यां दररोज एकगायस्नात्र माटे

दुध झरे छे, तेथी तुष्टथयेला श्रावकोए आवी गुरुनी आगल कह्युं के हे भगवन्! आपे कहेला स्थाने प्रतिमा देखी छे, तेथी ते गुरू भक्तिपूर्वक वंदना करवा माटेचाल्या, त्यां प्रतिमा जोई अने उभाछताजमस्तकवडे वन्दनाकरी देव प्रभावथी ते वखतेज जयतिहुअणवरकप्परुक्ख इत्यादि नमस्कार बत्रीशीनी (३२ गाथा प्रमाण स्तोत्र) रचना करी, तदनंतर छेला बे नमस्कार (छेल्ली बे गाथा) देवने आकर्षण करवामां अत्यंततत्परता वाली जाणीने देवे कह्युं के हे भगवन्! त्रीश नमस्कार वडे पण अमे स्मरण करनार सर्वने सुख करीशुं, परन्तु समग्रस्तोत्र भणनारने अमारे प्रत्यक्षथवुं बहुकष्टकारीछे, माटे आबे नमस्कारकाढीनांखवा जोइए, तेथी दाक्षि-

---

१ परमेसर सिरिपासनाह, धरणिंदपयट्ठिय। पउमावई वइरुट्टदेव. जय विजया लंकिय। तिहुअणमंत तिकोण विज्ज, सिरि हरि माहिमंडिअ तियवेढिय महविज्जदेव थंभणयपुरट्ठिअ ॥ ३१ ॥ सत्तमवन्न जगद्धवन्न, सर अट्ठ विभूसिय। वंजण वन्न दसध्धवन्न, सिरि मंडलपूरिय। चिरं सिर किति सुबुद्धि लच्छी. किरमंत सुसायर थंभग पासजिणंदसिद्ध, महवंछियपूरण ॥ ३२ ॥ ए बे गाथाओ काढी नाखेली छे.

ण्यताना समुद्र ते आचार्ये देवताआग्रहथी ते बे गाथाओ काढी नाखी, अने समस्त संघनी साथे चैत्यवंदनकर्युं, अने श्रावकसमुदाये स्नात्रविलेपन-मुकुटने कुंडलादि आभरण अने सुगंधि पुष्पो वडे विस्तारथी पूजा करी स्नात्रजललगाववाथीआचार्यश्रीने रोगसांतिसवथइ श्रीमद् अभयदेवसूरिए स्थापना करी, अने श्रावकोए त्रिशालशाला अने त्रणशिखरवडेशोभित अने ऊंचादरवाजा वालुं देहरुंबंधाव्युं. अने श्रीअभयदेवसूरिए तेमां श्रीस्तंभनक पार्श्वनाथनी प्रतिमानी स्थापना करी, तेथी समस्त लोकन वांछित पूरवावडे तीर्थतरीके सर्वत्र प्रसिद्ध थई. श्रीअभयदेवसूरिपण ते स्थानथी विहारकरी अणाहिल्लपुर आव्या. अने त्यां श्रीजिनेश्वरसूरिएस्थापेली अने अधिष्टितएवी करणिहट्टिका वसतिमां रह्या. त्यां रहीने स्थानांग-समवायांग-ने भगवती प्रमुख नवअंगनीटीकाओ करवानोप्रारंभकर्यो, ते टीकाओ करतां जे कोई स्थाने संदेह उपजे ते स्थानना-स्मरणने अवसरे जया-विजया-जयंति-ने अपराजिता नामनी देवीयों स्मरण कराई छती अने सू-

रिएकहीछती महाविदेह क्षेत्रमां श्री तीर्थंकर पासे जई पूछीनिःसंदेहथई श्रीअभयदेवसूरिने केह. ते अवसरे त्यां चैत्यानिवासीद्रोणाचार्यनामना आचार्य छे, तेमने पण सिद्धांतनुं व्याख्यान प्रारंभ्युं हतुं; सर्वे आचार्यो कवलिका ग्रहणकरीने सांभलवा आवे छे, तेम श्री अभयदेवसूरिपण त्यां जाय छे. कह्युं छे के—

स्वयं विदन्तोऽपि हि सम्यगर्थं, सिद्धांत तर्कादिक शास्त्रवाचां, शृण्वंतिगत्वा लघुतोऽन्यतोऽपि, निर्मत्सरा एव गुणेषु सन्तः ॥ १ ॥

अर्थः-पोते सिद्धांत अने तर्कादिशास्त्र वचनोना अर्थने सम्यक् प्रकारे जाणता छतां पण लघुताथी वीजे स्थाने जईने सांभळे छे, खरेखर सन्तपुरुषो गुणीजन उपर मत्सर भाव रहित होय छे. तेथी द्रोणाचार्य पण सूरीश्वरनी गुणरूप सुगंधिथी आकर्षाया छता सूरीश्वरने पोतानी पासेबेसाडताहता. त्यां व्याख्यान करतां द्रोणाचार्यने ज्यां संशयउत्पन्नथाय त्यां एवी रीते धीमा

अवाजथी अर्थकहीआपे के जथी बीजा कोई न सांभळीशके. ए प्रमाणे निरन्तर व्याख्यान करता द्रोणाचार्य पासे ज सिद्धांत नु व्याख्यानचालतुं हतुं तेज सिद्धांतनी (पोतानी बनावेली) टीका-आणाने सूरीश्वरे द्रोणाचार्यनेहाथमांआपी. ते टीकादेखीने अत्यंतविस्मयपामेळाचित्तवाला द्रो-णाचार्ये विचार्यु के अहो ! शुं आ साक्षात् गण-धरे रची छे ? के अभयदेवसूरिए रची छे ! ए प्रमाणे विचारीने कह्यु के आ टीका तमोए बना-वेली छे? त्यारे सूरीश्वरे कंई पण उत्तर न आप्यो तेथी द्रोणाचार्ये जाण्युं के निश्चय आटीकाएमणे जबनावी छे, कारण के जवात नो निषेध न कराय ते वातअनुमतथयेलीगणाय (मानी कहे-वाय) वली पण.

स्वगुणान् परदोषांश्च, वक्तुं प्रार्थ-यितुं परानार्थिनश्च निराकर्त्तुं, सतामा-स्यं जडायते ॥ १ ॥

अर्थः—पोतानागुण अने पारकानादोष कहे-वाने बीजाओनीप्रार्थना करवाने अने याचकने ना कहेवामाटे सज्जनोनुंमुख जड सरखुं थईजाय छे.

तेथी एवो कारणहोय के जे रत्नग्रहणकरवामां मंद आदरवालो थाय, एम विचारी द्रोणाचार्य सूरीश्वरना गुणबोलवा लाग्या. अने बहुमान करवालाग्या, तेमज सूरीश्वर आवे त्यारे उभाथईने सन्मुखजवालाग्या, पश्चात् सुविहितआचार्यनो तेवा प्रकारनोआदर थतोजोई बीजा चैत्यवासी-आचार्यो रोषशामीने उठीगयाछता पोत पोताना-मठमांचाल्या गया, अने वणो बोलवालाग्या के अहो ! कया गुणवडे आ आपणाथी अधिक छे, जे कारणथी आपणा मुख्य एवा द्रोणाचार्य पण एमने आवाप्रकारनोआदर सत्कारदर्शावे छे! तो पछी अमो केवा होईशुं? (के जेथी अमने आदर न आपे !) इत्यादि बोलवा लाग्या. तथी विशेषज्ञ अने गुणनापक्षपाती एवा द्रोणाचार्ये ते ओनांवचनसांभली श्रेष्ठ नवो श्लोकवनावी ते श्लोक सर्व चैत्यवासी आचार्योनामठमांमोकल्यो. श्लोक आ प्रमाणे.

आचार्याः प्रतिसद्म सन्ति महिमा येषामपि प्राकृतै, र्मातुं नाध्यवसी-

यते सुचरितैस्तेषां पवित्रं जगत्, एके-
नाऽपि गुणेन किंतु जगति प्रज्ञाधनाः
सांप्रतं, यो धत्ताऽभयदेवसूरिसमतां,
सोऽस्माकमावेद्यताम् ॥ १ ॥

अर्थः-जेओनो महिमा प्राकृत (अल्प बुद्धि वाला) जनोथीमापी न शकाय तेवा आचार्यो प्रत्येकस्थानेछे, अने तेओना सुचरित्र (सदाचरण) वडे आजगतपवित्रछे. परन्तु वर्तमान कालमां जे बुद्धिरूपधनवाला (बुद्धिमान) आचार्यो जगतमांछे, तेओमांथी कोई पण एवो आचार्यछे के जे एक पण गुणवडे श्री अभयदेवसूरि सरखो होय ! अने तेवो कोई होय तो मने जणावशो ॥ १ ॥

त्यारबाद सर्वे चैत्यवासीयो शान्तथया. श्रीअभयदेवसूरि आगळ द्रोणाचार्ये कह्युं के सिद्धांतादिकनी जे जे वृत्तितमोकरो ते सर्वमारे शोधवी अने लखवी. तथा त्यां रहेला सूरिश्रीए कोई मोटा बे श्रेष्टिने प्रतिबोध आपी सम्यक्त्वसहित बारव्रत धारी कर्या हता, अने ते समाधि-

सहित श्रावक पणुं पाळीने स्वर्गे गया, अने देवलोकमांथी श्रीतीर्थंकरने वंदनाकरवामाटे महाविदेहमांगया, त्यां श्रीसीमंधरस्वामि अने श्री युगमंधर स्वामिने नमस्कार कर्यो, त्यां देशना सांभल्या बाद पूछयूं के हे भगवन्! अमारा गुरु श्रीअभयदेवसूरि केटलाभवे मोक्षजशे ? त्यारे बन्ने भगवान कहयुं के त्रीजेभवे मोक्षजशे, ते सांभळी हर्षवडेरोमांचितशरीरवाला ते बन्ने देव पोताना गुरुपासे आवी श्रीतीर्थंकरनी वातकही संभलावी, अने वंदनाकरीने जताएवा ते बन्नेदेवोए **भणियं तीत्थयरेहिं** इत्यादि ए गाथा कही, अने ते गाथा स्वाध्याय करती सूरीश्वरनी एकसाध्वीए सांभळी, तेणीएआवी ते गाथा गुरु आगळनिवेदनकरी, सूरीश्वरेकहयुं ए वात में प्रथमथीजाणी छे.

एक वार श्रीअभयदेवसूरि विहारकरी पल्हादोदय गाममां पधार्या, त्यां सूरिश्रीना संब-

१ भणियं तित्थयरेहिं, महाविदेह भवंमि तइयंमि, तुम्हाण चेव गुरुणो, मुक्खे सिग्घं गमिस्संति ॥ १ ॥

धवाला भक्त श्रावको रहे छे, तेओनां वाहण समुद्रमां चाले छे, ते वाहणो कोईक स्थाने मोकलेलां छे, पण एवीवातथई के किरियाणांभरेलां ते वाहणो। डूबीगयां, तेथी ते श्रावको तेवीवात सांभळी अत्यंतउदास थया, अने तेओ श्री अभयदेवसूरिनुं स्मरण करी वंदन अवसर विनाज (वंदन अवसर व्यतीत थये) उपाश्रयमां गया अने तेओए सूरीश्वरने वंदना करी, सूरिश्रीए तेओने पूछ्युं के हेधर्मशील श्रावको ! आजे वंदनानोअवसर केम उल्लंघनथयो ? ते श्रावकोए कह्युं के हे भगवन्! कारणसर वेलाव्यतीतथई छे. सूरिए पूछ्युं शुं कारणथी ? श्रावकोए कह्युं भगवन्! समुद्रमां वाहण डूब्यां एम सांभलवाथी अमो दुःखीथया छीए, तेथीअवायुंनहिं, तदनंतर सूरिश्रीए क्षणवार मनमां ध्यानधरीने कह्युं के गमे तेम होय पण तमारे ए संबंधमां दुःख न राखवुं, ए प्रमाणे सत्पुरुषो निश्चय श्रेष्ठवचन कहेवा वालाहोय छे, जेटलामां बीजे दिवसे माणस आव्यो तेणे कह्युं के तमारा वाहण कुशलतापूर्वकसमुद्र उतर्यां छे, त्यार बाद ते वात सांभली

नें उत्पन्नथयेलछे सत्य अने पवित्र गुरुनाउपर-विश्वासजेओने एवा ते श्रावकोए सर्वएकट्ठाथई आवीने गुरुने कह्युं के हे भगवन् ! किरियाणां वडे जो नफो मळशे तेना अर्धनफावडे अमे सिद्धांत पुस्तकोनुं लेखनकरावशुं (अर्थात् सिद्धांतनां पुस्तको लखावीशुं) त्यारे गुरुए प्रशंसाकरीके अहो तमनेधन्य छे के जेओने मुक्तिस्त्रीनाकंठने आलिंगनकरवामांकारण रूप आवा प्रकारनोअध्य-वसाय उत्पन्नथयो कह्युं छे के.

इह किल कलिकाले, चंडपाखंडकीर्णे, व्यपगतजिनचन्द्रे, केवलज्ञानहीने, कथमिव तनुभाजां, संभवेद्वस्तु तत्वा-वगम इह यदिस्यान्नागमः श्रीजिनानाम् ॥ १ ॥

अर्थः-प्रचंड पाखंडिओथी व्याप्त आ कलियुगमां निश्चय सर्वज्ञरूपीचन्द्र अस्तपाम्ये छते अने केवलज्ञानविच्छेदपाम्ये छते अहिं जे श्री तीर्थंकरप्रणितसिद्धांतो न हत तो मनुष्योने वस्तु सत्वनो बोध केवी रीते थात ?

जिनपतविषयाणां, पुस्तकानां स्ववित्तै रतिशयरुचिराणां, लेखनं कारयेद्यः, प्रथयति महिमानं, वस्त्रपूजादिरम्यं, सुगुरुसमयभक्तिर्मानवो माननीयः ॥ २ ॥

अर्थः-जे पुरुष अत्यंतमनोहर एवां जैनधर्म संबन्धीपुस्तकोनुंलेखनपोताना धनवडे करावे छे अने वस्त्रपूजादिवडे मनोहर एवो महिमाविस्तारे छे ते सद्गुरु अने सिद्धांतनी भक्तिवालो मनुष्य ज जगतमां मानवा योग्य होय छे.

सकलभरतनाथा यद्भवंतीह केचित्, त्रिदशपतिपदं यद्दुर्लभं मानयंति यदपिच गुरुदुर्गग्रंथगर्भं विदन्ति, स्फुरितमखिलमेतत्तत्कृताराधनस्य ॥ ३ ॥

अर्थः—अहिं जे कोइ समस्तभरतक्षेत्रना राजा (चक्रवर्तियो) थायछे, ने जे केटलाएक देवाधिपतिनुं (इन्द्रनुं) स्थान पामे छे, अने जे

केटलाक मोटादुर्गम्य ग्रंथोनुंतत्वपण जाणे छे ए सर्वसिद्धांतनुंआराधन करनार मनुष्यने थाय छे

इत्यादि उपदेशवडे अति उत्साहवाला थयेला ते श्रावकोए श्री अभयदेवसूरिरचित अनेक प्रकारना सिद्धांतनी वृत्तिना घणा पुस्तको लखाव्या, पुनः पण ते स्थानथी विहारकरी श्रीअभयदेवसूरि पाटण नगरमां पधार्या, अने तेओ कुशाग्र सरखी तीक्ष्ण मतिवाला, समस्त सिद्धांतना अर्थने पार पामेला, सुविहित मुनियोमां चक्रवर्ती सरखा, युगप्रधान, संवेगी मुनियोना समुदायमां अग्रसरी, अने पुन्यपात्र इत्यादि प्रसिद्धि सर्व पृथ्वीमंडलमां पाम्या.

हवे अहिं ते अवसरे आसिका नामे दुर्गमां (किल्लामां) रहेनारा चैत्यवासी कूर्चपुरीय जिनेश्वराचार्य हता त्यां जे श्रावकना पुत्रो ते सर्व तेना मठमां भणे छे, त्यां जिनवल्लभनामनो एक श्रावकपुत्र छे, तेनो पिता स्वर्गेगयोछे, ने तेनी मा तेनुं पालनकरे छे, तेणीए आभणवायोग्य छे एम जाणी तेनामठमांभणवामाटेमुक्यो, त्यां सर्व विद्यार्थीओ करतां आजिनवल्लभने अधिकपाठ-

आवडे छे, हवे कोई कारणसर ते वहारगयेला जिनवल्लभने एक टीपणीनुं पानुं प्राप्त थयुं तेमा सर्प बोलाववानी अने सर्प ने विसर्जन करवानी ए बे विद्याओ लखीहती, तदनन्तर ते बे विद्या-ओ कंठाग्रकरीने तेनी खात्री करवा जेटलामां प्हेली विद्यानो पाठ कर्यो तेटलामां फणोना आ-डंबरवडे करीने भयंकर, फुंकार करता, चंचल अने लपलपायमान थती बे जीभवाला देदीप्य-मान रक्त लोचनवाला एवामहासर्पो विद्याना प्रभाववडे सर्व दिशाओ मांथी आकर्षाईने आवता देख्या, ते वखते निर्भय चित्तवाला तेणे विचार कर्यो के निश्चयथी आविद्या सत्य (खात्रीवाली) छे, त्यारबाद बीजी विद्यानो पाठ कर्यो तेना-प्रभाववडे ते सर्पो पुनः पाछुंमुखकरी चाल्यागया. आतेनुं स्वरूप जिनेश्वराचार्ये सांभल्युं ने जाण्युं के निश्चय आविद्यार्थी सत्यवान अधिक पुण्य वान अनेगुणपात्र छ ते कारणथी आपणे आधीन करवो ठीक छे. त्यारबाद ते जिनवल्लभने द्राक्ष खजूर--अखरोट--मीठामांडामीठामोदक---इत्यादि आपवा पूर्वक वशकरी तेनीमाताने मधुर वचने

उपदेशआप्यों के आतारोपुत्र अतिशयबुद्धिशाली छे, तेमज स्फूर्तिवालो अने पराक्रमी छे, विशेष शुं कहुं ए पुत्र आचार्य पदवी योग्य छे माटे ए पुत्र अमने आप. आ तारी धर्मदेवकुलिका (आ तारुंज धर्म मंदिर) छे. एथी तारो अने बीजानो निस्तारथशे माटे आ कार्यमां बीजुं कंइ बोलवा योग्य नथी. ए प्रमाण कही तेना हाथमां ५०० सोनैया आपीने शीघ्र दीक्षाआपी अने जिनवल्लभने भणाव्यो. जिनवल्लभे पण सर्व लक्षणशास्त्र-छंद-शास्त्र-अलंकारशास्त्र-नाटक शास्त्र अने ग्रहगणित (ज्योतिष शास्त्र) विगेरे निरवद्य विद्याओ भण्यो. एक वखते ते आचार्यने कंईक कारणसर परगाम जवानी जरूर पडी तेथी परगाम जता सूरिश्वरे जिनवल्लभने कयुं के हवे हुं कार्यकरीने आवुं त्यां सुधी (मठ विगेरेनी) सर्व चिंता त्हारे करवी. विनय वडे मस्तकथी नमस्कार करी जिनवल्लभे कयुंके आपनी जेवीआज्ञाछे तेम हुं करीश. परन्तु आप कार्यकरी शिघ्र पधारवुं. त्यारबाद आचार्य परगाम पधार्या, बीजे दिवसे जिनवल्लभे विचार कर्योंके भंडारमां पुस्तकनी भरेली पेटी देखाय

छे तो ते पुस्तकोमां शुं छे ते जोउं, कारण के सर्व जिनवल्लभने आधीन थयुं छे तेथी एक पुस्तक छोडयुं, अने ते सिद्धांत संबंधि छे. तेमां लखेलुं वांचे छे तो.

" मुनिए ४२ दोषवडे विशुद्ध एवा अने गृहस्थोने त्यांथी मधुकरवृत्तिए ग्रहणकरेला आहार वडे संयम निर्वाह माटे देह धारणकरवी, मुनिओने सचित्त पुष्प फल विगेरेने हाथथी स्पर्श करवो पण न घटे तो तेनो आहार करवानी तो वातजशी ? मुनिने एकस्थानेरहेवुंयुक्तनथी.

इत्यादि विचारो लखेला देखी मनमां विस्मयपामी विचारवा लाग्यो अहो जैनावडे मोक्षमां जवायछे ते व्रताचार तो कोई बीजोजछे, अने अमारो आ विपरीत आचार प्रगटछे, माटे आ आचार वडे दुर्गतिमां पडता प्राणियोने आ कोईपण आधार नथी ए प्रमाणे गंभीरता थी मनमां विचार करीने पुस्तकादिकने जेम हतुं तेम बांधी समेटीने गुरुए कहेली मर्यादा प्रमाणे रहयो. केटलाक दिवस बाद कार्यसमाप्त थये गुरु ते गामथीआव्या ने बधुं संभाले छे तो कोई पण

स्थान हीन थयेलुं देख्युं नहीं (अर्थात् प्रथम जेम हतुं तेमज सर्व देख्युं.) मठ-वाडी-चैत्य-धन समूह-अनेकोठार विगेरे सर्व सैकडों पदार्थमांथी कोईपण स्थान पदार्थहीन थयेलो देख्यो नहीं, तेथी आ जिनवल्लभने जेवो योग्यधार्योहतो तेवोज निश्चय थशे, परन्तु सिद्धांतसिवायनी तर्क अलंकारादि सर्वविद्याओ आ भण्यो छे, अने वर्तमान कालनी अपेक्षाए संपूर्ण अने यथार्थ-सिद्धांतहालमां श्रीअभयदेवसूरि पासे संभलायछे. तेथी सिद्धांतनीवाचनाग्रहणकरवामाटे (जिनवल्लभने तेमनीपासेमोकलुं, अने सिद्धांतनी वाचना-ग्रहणकर्याथी सर्वविद्यारूपी स्त्रीनेवल्लभ एवा जिनवल्लभने मारे पदेस्थापीश. ए प्रमाणे विचारी वाचनाचार्य करी, निश्चितपणे भोजनादिकनी-सगवडकरीने वैयावृत्यकरनार जिनशेखर नामना बीजा शिष्य सहित जिनवल्लभने श्रीअभयदेवसूरी पासे मोकल्यो. मरूकोटथईने अणहिल्लपुर (पाटण) जतांरात्रे त्यां मरूकोटमां मान श्रावके करावेला चैत्यनी प्रतिष्ठाकरी, त्यारबाद पाटण नगरे पहोंची त्यां अभयदेवसूरिनो उपाश्रय पूछी

उपाश्रयमां प्रवेश कर्यो त्यां विशिष्ट सिद्धांतनी वाचनाना अर्थी एवाघणाआचार्य जेमनीपासे बेठा छे एवा; तथा पोतानी वाणीना वैभववडे बृहस्पतिने पण दूर करेलएवातीर्थंकर सरखा श्रीअभयदेवसूरिने देख्या अने भक्तिनावशथी उल्लास पामेल एवा घणांरोमांचरूपीकांचलीयुक्तकाय रूपीलतावाला श्रीजिनवल्लभ वंदना करी तेथी गुरुए देखतामात्रमांज आ कोई विशुद्धआत्मा रूप आदर्शसरखो कोई योग्यमुनिजणाय छे एम विचारी मधुर वाणीए पूछ्युं के तमो क्यांथी-आव्या? अने आववानो प्रयोजन शुं छे? तेथी जोडेल छे हस्तकमलजेणे एवा, तथा सूरिश्वरना-दर्शनथी उत्पन्नथयेलअत्यंत बहुमानरूपजलना समूहवडे धोवाईगयेलछे अभ्यंतर मेलजेनो एवा, अने वचनरूप वारिए मान्य करेल अमृत ना बनेला चन्द्र सरखा जिनवल्लभ गणिए कह्युं के हे भगवन् पोतानी अखंड लक्ष्मीना प्रकर्षवडे (घणी लक्ष्मीवडे) स्वर्गपुरी नें पणजेणे दासी बनावी छे एवी श्रीआसिका नगरीथी हुं आव्यो छुं. मारा गुरुश्री जिनेश्वरसूरिए मोकलेल, अने

युगप्रधान

श्रीमज्जिनवल्लभसूरीश्वरजी महाराज.



जन्म संवत १०९७. आचार्य पद वैशाख कृष्ण १२ संवत ११६७. स्वर्ग कार्तिक कृष्ण १२ संवत ११६७.

आपना मुखकमलमां झरता सिद्धांतरसने पीवानी इच्छावाला, भ्रमरनी पेठे भ्रमण करता एवा मारी मति सर्वजनोनी मनो कामना पूरवामां कल्पवृक्ष सरखा एवा आपनी पासे सिद्धांतनी वाचना ग्रहण करवाने (मारीमति) प्रेरणा करे छे, तेथी।

कालंमि आगए विऊ अपत्तंच न वाइज्जा पत्तंच नावमाणए।

काल प्राप्त थये पण विद्वानो नहीं आवेलानी (वाचना माटे) राह जोता नथी अने आवेलानुं अपमान करता नथी. पात्रने वाचना-आपे अपात्रने नहि आपे।

ए प्रमाणे विचारीने कह्युं के अहिं सिद्धांतनी वाचना ग्रहणकरवाना विचारथी तमो जे आव्या छो ते ठीक कर्युं छे, त्यारबाद श्रेष्ट दिवसे वाचना आपवानो प्रारंभ कर्यो. जेम जेम सूरीश्वर जैन सिद्धांतनी वाचना आपे छे, तेमतेम हर्षित चित्तवालो सुशिष्य अमृतवत् तेनुं पानकरेछे, हर्षवडे प्रफुल्लितकमलसरखा तेवा प्रकारना ते शिष्यने

जोईने सूरीश्वर पण संतोषनीपुष्टिवडे सिद्धांतनी-वाचना आपवामां बमणाउत्साहवाला थया. घणुं कहेवाथी शु? सूरीश्वर तेने एवीसमजणआपवा पूर्वक वाचनादेवालाग्या के जेथी थोडाजकालमां सिद्धांतनी वाचना समाप्तथई. तथा सूरीश्वरनो एक ज्योतिषी हतो तेणे प्रथम गुरूने कह्युंहतुं के कदाच तमारो कोई योग्यशिष्यहोयतो तमने सोंपवो जेथी हुं तेने मारूं समग्रज्योतिषभणावीश तेथी सूरीश्वरे जिनवल्लभगणिने सोंप्या, तेणे पण जिनवल्लभने सर्व ज्योतिषसमजण पूर्वक भणाव्युं ए प्रमाणे ग्रहणकरेलीसिद्धांतनीवाचना वाला, सिद्धांतमां केहेली क्रियाने सम्यकप्रकारे करवामां वृद्धिपामेलचित्तवाला, अने सम्यक्प्रकारे प्राप्त-करेलछे स्फूर्तिवालुं ज्योतिषज्ञान जेमणे ए जिन-वल्लभगणिए पोताना गुरूपासे जवामाटे उत्कंठित-वचनेपूछ्युं त्यारे सूरीश्वरे कह्युं के हे वत्स ! सिद्धांतमां कहेलो साधुनोरूडोआचार ते सर्वजा-ण्यो, माटे ते अनुसारेक्रियाउद्धारकरवामां जेम-प्रवृत्तिथाय तेमकरवी. श्रीजिनवल्लभगणिए पगमां पडीने कह्युं के जेम आपआज्ञा आपोछो

तेमज हुं करीश. उत्तमादिवसे त्यांथी विहारकर्यो अने. जे मार्गे आव्याहता ते मार्गेजतां पुनः मरु-कोटमांआव्या अने त्यांथी निकलती वखते जिन-चैत्यमां सिद्धांतने अनुसार विधि लखी के जे विधिवडे अविधिचैत्य पण मोक्षमां साधनरूप-एवुंविधि चैत्यथाय ते अहिं उत्सूत्रजन क्रम (उत्सूत्र भाषी जन नो अनुक्रमएटले उत्सूत्र भाषण) जाणवुं.

नचनच स्नात्रं रजन्यां सदा साधूनांममताश्रयो, नच नच स्त्रीणां प्रवेशो निशि जाति ज्ञाति कदाग्रहो, नच नच श्राद्धेषु तांबूलमित्याज्ञात्रेयम-निश्रिते विधिकृते श्रीजैनचैत्यालये ॥१॥

अर्थः—हमेशा रात्रे स्नान न होय, साधु ओने ममत्वनो आश्रय न होय, स्त्रीयोनो रात्रे प्रवेश न होय, नातजातनो कदाग्रह न होय, श्रावकोने तांबूलादि न होय. न होय. ए प्रमाणे अहिं विधिपूर्वक करेला अनिश्रित जैन चैत्यमां एवी आज्ञाछे.

इत्यादि विधिकरवी जेथी चैत्य वंदनादि सर्व अनुष्ठान मोक्षनेआपनारथईशके. त्यारबाद श्रीजिनवल्लभगणि पोताना गुरुपासे जवानेप्रवृत्तथया, अने विहारकरताआसिकादुर्गथीअर्वाक (पहेलां) ३ गाउ दूर माइयड गामे आवी रह्या. गुरुने मलवामाटे एक माणसनेमोकल्यो ने तेना हाथमां लेखआप्यो के "आपनी कृपाथी स्वगुरु पासे वाचना ग्रहण करी हुं माइयड गामेआव्यो छुं, माटे आपे कृपाकरी मने मलवामाटे अहिंज आववुं" आ लेख वांची गुरुए विचार्युं के जिनवल्लभे आवी आज्ञा केमकरी? अने अहिंपण आव्यो नहिं! त्यारबाद बीजेदिवसे सर्वलोकसहित आचार्य सामाआव्या. जिनवल्लभे गुरुने नमस्कारकर्यो, गुरुएकुशल समाचारपूछया. अने जिनवल्लभे सर्व वातयथार्थकही, पुनः ब्राह्मणपासेथी ग्रहणकरेलनिमित्त तथा केटलाएक मेघादिकना स्वरूप, ज्योतिषनावलवडेकह्या जेथी गुरुनेपणआश्चर्य पमाडनार थया "भूतपूर्वक (प्रथम बनेली वात) तेना सरखो उपचार" ए न्यायथी गुरूने ए प्रमाणे कह्युं. त्यारबाद गुरूएपूछयुं के

तुं गाममां केम न आव्यो ? जिनवल्लभ गणिए कह्युं हे भगवन्! सद्गुरूना मुखथी जिनेश्वरना वचनरूपअमृतनुंपानकरीने हवे दुर्गतिरूप केदखानामां आत्माने जडेली वेडीसरखो अने झेरना वृक्षसरखो चैत्यवास केमअंगीकारकरूं? त्यारे गुरुए कह्युं हे जिनवल्लभ! में एवो विचार कर्यो हतो के तने मारूंपद (स्थान) आपीने तारापर मारागच्छमंदिरने श्रावकादिकनी चिंता (संभाल करवानुं) स्थापीने त्यारबाद हुं पोते सद्गुरूपासे-वसति धर्मअंगीकार करीश, त्यारे प्रफुल्लित मुखे कमलवडे जिनवल्लभगणिएकह्युं के हे भगवन् ! ए घणुंजठीक छे, विवेकनुं निश्चय एज फलछे के त्याग करवायोग्यवस्तुने त्याग करवी अने आदरवायोग्यवस्तुनेआदरवी, तो हवे आपणे बन्नेसाथेज सद्गुरुपासे जइए. गुरुए कंईक निसासो नाखी कह्युं के हे वत्स! जो के मारामां-एटली बधी निःस्पृहता नथी के जे निस्पृहता वडे संभाल करनार समर्थपुरुषविनामारो गच्छ मंदिर अने वाडी विगेरेनी संभालछोडी दई सद्गुरुपासे वसतिधर्म अंगीकार करूं! माटे तारे

अवश्यवसतिधर्म अंगीकार करवो. श्रीजिनवल्लभगणिए कह्युं हे भगवन्! एमजहो. तेथी गुरु पाछा वली आसिकादुर्गमां आव्या अने जिनवल्लभ गणिए पण गुरुनी सम्मति (अनुमति पूर्वक) पाटण आववा विहार कर्यो. पाटण आवी श्रीअभयदेव सूरिश्वरने बहुआदर पूर्वक वंदनाकरी, सूरीश्वरने पण अत्यंत हर्षथयो अने विचार्युं के जेनी परीक्षाकरीहती तेवोज आ शिष्य छे. तेथी मनमां जाणतां छतां पण कोई ने ते वात न कही के आ शिष्यज मारास्थानने (आचार्य पदवी ने) योग्य छे, कारण के चैत्यवासीनोशिष्य छे माटे गच्छने ए वात सम्मतनहिं थाय. तेथी गच्छनाआधारभूत श्रीवर्धमानसूरीने पोतानापदेस्थाप्या, अने जिनवल्लभगणिनेपोतानी उपसंपत्आपी के आजथी मांडीने अमारीआज्ञा मां सर्वेए प्रवर्तवुं, पुनः प्रसन्नचंद्रा चार्यने एकान्तमां कह्युं के मारे पदेसारा मुहूर्तमां जिनवल्लभ गणिने स्थापवा. ए प्रमाणे मोक्ष नगरमांपहोचवाने दीपिकासरखी नव अंगनीवृत्तिभव्यजनोने प्रतिपादन करीने सिद्धांतोक्त विधिए समाधि पूर्वक श्रीअभयदेवसूरि स्वर्गेगया.

हवे प्रसन्नचंद्राचार्यने पण जिनवल्लभगणिने श्रीअभयदेवसूरिनी पाटे स्थापवानो अवसर प्राप्त न थयो तेथी तेमणे पण पोताना आयुष्यना अन्त्य समये श्रीदेवभद्राचार्यने जणाव्युं के श्रीअभयदेवसूरिनो उपदेश माराथी तो सफल न थई शक्यो पण तमारे तो अवश्यसफल करवो. तेथी तेओए पण अंगीकार कर्युं के प्रायः हुं तेमज करीश, अने तमारे समाधिमां रहेवुं.

हवे वाचनाचार्य श्रीजिनवल्लभगणि पण केटलाकदिवस सुधी पाटण देशमां विहारकरीने विचार कर्यो के आ गुजरात देशमां तेवाप्रकारनोविशेषबोधकोईने पण करी शकातो नथी के जेथी मनेसुखउपजे ! ए प्रमाणे विचारी पोते त्रीजा एहवा (बे साधुसहित) आगमनी विधिए शुभशकुनसहित भव्य जनोनामनरूपक्षेत्र भूमिओमां भगवंत प्रणितविधिधर्मनुंबीजरोपवानेमाटे श्रीमेवाड आदिदेशोमांविहारकरवालाग्या, अने ते देशो प्रायः चैत्यवासीआचार्योवडे व्याप्तछे, अने सर्व लोक पण ते आचार्योनाधर्मवालाछे. विशेष शुं कहेवुं ! तेवा प्रकारना देशांतरमांरहेला

अनेक गाम अने नगरादिमां विहार करता चित्र-कूटाचल दुर्ग गामे आव्या जो के त्यांना लोक त्यां रहेला क्षुद्रजनों वडे वासित छे, छतां श्री-जिनवल्लभगणिने कंईपण अयोग्य (विपरीत) करीशकता नथी, कारण के पाटणमां गुरुनी घणी प्रसिद्धि सांभलेली छे. त्यार बाद श्रीजिनवल्ल-भगणिए स्थाननी याचना करी. त्यारे त्यांना श्रावकोए गणिने कहयुं के अहिं चंडिकामठछे जो त्यां रहेवुं होय तो रहो. तेथी श्रीजिनवल्लभ गणिए जाण्युके आ श्रावको दुष्टअभिप्राय थी आम कहे छे छतां त्यां रहेला एवा मनेपण श्री देवगुरुना प्रसादथी सुख थशे. एम विचारी ते श्रावकोने कहयुं के तमो जो त्यां रहवा माटेबहु-मान आपो (सम्मति आपो) तो त्यांज रहिये त्यारे श्रावकोए कहयुं के अमने अति सम्मत छे के आप त्यां रहो. तेथी देवगुरुने नमस्कार करी अने (चंडिका) देवीनी आज्ञा लई त्यां (चंडि-कामठमां) रहया, अने गणिना ज्ञान ध्यान तथा श्रेष्ठअनुष्ठानवडे तुष्टथयेली अने तेमना प्रयोगमां (सारसंभालमां) दीधेल ध्यान वाली चंडिका-

देवी तेमना तरफ थता अशुभनुं रक्षण करेछे.

श्री जिनवल्लभगणि वाचनाचार्य समस्त विद्याओना निधान (भंडार) केवी रीते ? ते आ प्रमाणे—सूत्रथी अने अर्थथी सर्व सिद्धांतना जाणकार, पाणिनि आदि आठ व्याकरण जेने कंठाग्र छे एवा तथा मेघदूतादिमहाकाव्य विगेरे सर्व काव्योमां, रुद्रट उद्भट दंडि वामन भामह इत्यादि अलंकारोमां, चोराशी नाटकोमां, समग्र ज्योतिष शास्त्रोमां, जयदेवादि सर्व छंद ग्रंथोमां जिनेन्द्रमत स्थापनार अभयदेवकृत सम्मतिटीका अनेकांतजयपताकादि तर्क कंदली किरणावलि इत्यादि न्यायना ग्रंथोमां अने शंकर नंदन कमलशील आदि अन्य दर्शनीना तर्कशास्त्रोमां अति प्रवीण छे माटे ते ज्ञानरूपसुगंधवडे करीने श्रीचीतोडमांअत्यन्त प्रख्यात थया. सर्वब्राह्मणादि परदर्शनीलोको आववा लाग्या, जेने जेने जे जे शास्त्रसंबन्धी शंकाउत्पन्नथाय ते सर्व जन ते ते संशयपूछे छे. सूर्यना किरणोनी पेठे विस्तारपामनारा एवा श्रीजिनवल्लभगणि पण सर्वसंशयरूप अंधकारनो विनाश करे छे. श्रावकोपण धीरे

धीरे आवे छे, तेथी, सिद्धांतनावचनो सांभलीने अने ते अनुसारे क्रिया पण देखीने साधारण सुद्दक-सुमति-पल्हक-वीरक मानदेव धंध-सोमिलक-अने वीरदेव इत्यादि श्रावकोए सुखपूर्वक श्रीजिवल्लभगणिने गुरुपणेअंगीकार कर्या. श्रीजिनवल्लभगणिने गुरुना उपदेशवडे भूतकाल अने भविष्यत् कालादिकना ज्ञानवालुं ज्योतिषज्ञान अतिशय हतुं तेथी साधारण श्रावक परिग्रह प्रमाण व्रतअंगीकार करवाने उत्कंठितथयो त्यारे गणिए कह्युं के सर्व संग्रह-सर्व परिग्रह केटलो राखीश ? साधारणे कह्युं हे भगवन्! मारे वीसहजार (२००00) ना परिग्रहवडे वसछे. त्यारे निर्मलज्ञानदृष्टिवाला श्रीजिनवल्लभ गुरुए कह्युं के हे श्रावक! एथी विशेष परिग्रह राख त्यारे साधारणे तीश हजार धार्या त्यारे पुनः पण गणिएकह्युं के हे महानुभाव एथी पण वधारेधारीले साधारणे कह्युं के हे प्रभु! मारा आखा घरनां सारी किंमत गणतापण संपूर्ण ५०० नहिं थाय, तो मने एटला बधा घणा द्रव्यनी प्राप्ति शी रीते थाय? गणिए पुनः

पण हुंकारो करीने कहयुं के सर्व साधारण श्रावकोमां पण साधारण एवा हे साधारण धार्मिक श्रावक! पुण्यनासमूहवालाने असाध्य शुं छे ? माटे संख्या प्रमाण न कर, चणा मात्र वेचनारा पुरुषो पण घणा लाखद्रव्यना अधिपति लक्षाधिपति (लाखोगमे द्रव्यना मालिक) थाय छे. अभिप्रायवालुं गुरूनुं वचन सांभली विचार्युं के कईक ने कईक मने धन प्राप्त्यादि सुखथशे एम विचारी कईक मुख मलकावीने साधारणे कहयुं के हे भगवन्! जो एम छे तो मारे सर्व परिग्रह १ लाखनो थाओ, ते प्रमाणे गुरुए आपेला परिग्रहप्रमाणव्रतने ग्रहणकरेलएवो अने गुरूना चरणनीभक्तिवडेविनाशपमाडेल छे अशु-भअंतराय कर्म जेणे एवो साधारणश्रावक दिवसे दिवसे लक्ष्मीवडे वृद्धि पामतो संपदावालो अने गुरूनीआज्ञामांविशेषप्रवर्तनारो तथा समस्तसंघने साधारण (समस्त संघनेमान्य) थयो. सुहकादि श्रावको पण साधारणश्रावकनी पेठे सर्व वातमां श्रीजिनवल्लभगणिनी आज्ञाएप्रवर्तवा लाग्या. हवे त्यां करेलछे चातुर्मासिककल्प जेणे एवा श्री

जिनवल्लभवाचनाचार्यने आसोमासनीवदि १३ सने दिवसे श्रीमहावीरदेवनुं गर्भापहारकल्याणक आव्युं. तेथी श्रीजिनवल्लभगणिए श्रावकोनी-आगलकह्युं के हे श्रावको! आज श्रीमहावीर-स्वामीनुं बीजुं गर्भापहार कल्याणक छे, कारणके

पंच हत्थुत्तरे होत्था साइणा परिनिव्वुडे।

एटले हस्तोत्तरानक्षत्रमां (उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां) पांच अने स्वातिनक्षत्रमां निर्वाण एप्रमाणे स्पष्टअक्षरों सिद्धांतमांकेहलछे. वली बीजी वात आछे के तेवाप्रकारनुं कोई पण विधि चैत्यनथी, तेथी अहींज चैत्यवासीओनाचैत्यमां जईने जो देववंदनाथायतो ठीक, ए प्रमाणे गुरुनामुख कमलथी निकलेला वचनने आराधवा-वालाश्रावकोए कह्युं के हे भगवन्! जेम आपने योग्य लागे तेमकरो. त्यारबाद अत्यंतनिर्मलशरी-रवाला अत्यंतनिर्मलवस्त्रवाला अने ग्रहणकरेल-निर्मलपूजानीसामग्री वाला एवा सर्व पोसहवाला श्रावकोगुरुनीसाथे देवमंदिरे जवाने तत्पर थया.

त्यारबाद ते देवमंदिरमारहेली साध्वीए मोटा श्रावकनासमुदायसहितआवता गुरुने जोई पूछयुं के आजे शुं विशेषछे? त्यारे कोई श्रावकेकहयुं के आसर्व वीरस्वामिना गर्भापहार नामना छट्टा कल्याणकनी आराधना करवामाटेआवेछे, साध्वीए विचार्युं के ए कल्याणक पहेला कोईए कर्युं न थी अने हालमां आ सर्व करशे ते ठीक नथी. एमविचारीसाध्वी देव मंदिरना द्वार वच्चे पडी,

१ आ स्थाने छापेली प्रतमां टिप्पणी आपी छे तेनो भावार्थ ए छे के "कोईए एटले नथी जाणेल जैन सिद्धांतनुं रहस्य जेणे एवा कोईए कर्युं नथी एटले प्रकाशित कर्युं नथी, कारण के विशेषे करीने जाणेल छे सिद्धांतनुं रहस्य जेणे एवाओए तो अनेक प्रकारे विस्तार पूर्वक निरूपण कर्युं छे, ते संबंधि बृहद् वृत्तिमां (आ ग्रंथनी मोटी टीकामां) एवो पाठ छे के-जे बीजा आचार्योनी एटले जैन सिद्धांतना रहस्य थी अजाण आचार्योनी दृष्टिमां अने सांभलवामां पण जे आवेल नथी ते पुन:भग-वंत वचनने जाणनाराओए आचारांग अने स्थानांग विगेरेमां कहयुं छे, एम जाणवुं.

अने द्वारेआवेला गुरुने जोई आ दुष्ट चित्तवाली साध्वी ए कह्युं के मनेमारीनेप्रवेशकरवोहोयतो करो. श्रीजिनवल्लभ गणिए तेवा प्रकारनीअप्रीतिनुं (कलेशनुं) कारणजाणी पाछावलीने पोतानेस्थाने आव्या. श्रावकोए कह्युं हे भगवन्! अमारे घणांघर छे तो एकगृह उपर (घेर) चोविशीनो पट्टस्थापीने सर्व धर्मकार्य करीए अने बीजुं कल्याणकआराधीए गुरुए कह्युं एमां अयोग्य शुं छे? त्यारबाद ते प्रमाणे पट्टबांधी विस्तार पूर्वक बीजुंकल्याणकआराध्युं, अने सर्वसमाधान थयुं.

हवे श्रावकोएविचारकर्यो के अविधिमां प्रवर्तता एवा प्रतिपक्षिओना कारणथी जिनेश्वरे कहेलो विधि करीशकातो नथी तेथी गुरुनी जो अनुमतिहोयतो तले अने उपर बे देवमंदिरकरीये एवाप्रकारनो पोतानोविचारगुरुने निवेदनकर्यो त्यारे गुरुएकह्युं के.

जिनभवनं जिनबिंबं, जिनपूजां जिनमतंच यः कूर्यात्, तस्य नरामरशिवसुख-फलानि करपल्लवस्थानि॥१॥

अर्थः—जिनमंदिर-जिनप्रतिमा-जिनपूजा-अने जैन धर्म जे करे तेने मनुष्य देव अने मोक्ष संबंधि सुखरूपफलहथेलीमां रहयां छे.

ए उपदेशवडे श्रेष्ठश्रद्धावाला श्रावकोए जाण्यु के आसलाह गुरुनी अनुमतिवाली छे, ए वात लोकमांपण फेलाई के आश्रावको बे देव मंदिर करावशे. एवार्ता सांभलीने घणा प्रहलादन वाला बहुदेव श्रेष्ठिए (अभिमानमां) कहयुं के आ अष्ट कापालिको (आठकवडीवाला) बे मंदिर करावशे अने राजमान्यथशे, ए वात श्रीजिनवल्लभगणिए सांभली. कोईक दिवस बहार जतांते बहुदेवश्रावक गुरुने रस्तामां मल्यो, त्यारे ज्ञानमां सूर्यसमान एवा श्रीजिनवल्लभ-गणिए आक्षेप पूर्वक कहयुं के "हे भद्रबहुदेव! गर्व न करवो आ श्रावकोमांथी कोई एवोपण थशेजे तने पण बांधेला ने छोडावशे," अने ते तेमज थयुं. गुरुकृपाथी साधारणश्रावकपण अधिक राजमान्यथयो. एक वखते नरवर्मराजाए कोई अपराधथतां रोषपामीने दुष्टमुखवालाते बहुदेवने ऊंटनी साथे बांध्यो अने ऊंटनी पेठे

आरटतो (चीसो पाडतो) तेने धारानगरीमां लई जायछे, त्यां कोईक कारणसर साधारण-श्रावकगयेलो हतो, त्यां सर्वजगतने साधारण एवा, तथा करेलछे निसेधनादिनुं निवारण जेणे एवा तथा अंगीकारकरेलछे शुभचेष्टाओ (आचार) जेणे एवा साधारण श्रावके प्रयोजननहि तो पण राजानेविनंती करी ते रांकनेछोडाव्यो.

हवे उत्साह वाला श्रावकोए ये देवमंदिर बांधवानो पण प्रारंभ कर्यो, अने देवगुरूनी कृपाथी बन्ने मंदिर संपूर्ण थया, त्यां ऊपर श्री-पार्श्वनाथनुं मंदिर अने नीचे भव्य जनोनां नेत्रने मनोहर एवुं तथा ऊंचा शिखर-तोरण-सुवर्णमय-दंडअने कलशनी श्रेणिनी कान्तिना समूहे करी विनाशपामेल प्रचंडअंधकारवालुं एवुं श्री-महावीरजिनेश्वरनुं चैत्यबंधाव्युं. श्रीजिनवल्लभ गणिवाचनाचार्यें विस्तारथी सर्वविधिपूर्वक-मोटी प्रतिष्ठा करी, अने सर्वठेकाणे प्रसिद्धिथई के अहो गुरूतो आजकहेवाय.

एक समये लोकमां "आवा प्रकारना सर्व शास्त्र जाणनारा श्वेताम्बरो आव्या छे"

एवी मोटीप्रशंसासांभलीने पोताने पंडित मान नारो एक ज्योतिषी ब्राह्मण श्री जिनवल्लभगणि पासे आव्यो, श्रावकोए बेसवाने आसन आप्युं, गुरुए पूछ्युं हे भद्र! तमो क्यां रहो छो? कयाशास्त्रनोअभ्यास छे? ब्राह्मणे कह्युं निवासतो अहिंज छे, अने अभ्याससर्व व्याकरणकाव्य नाटक ने अलंकारादिकनो छे गुरुए कह्युं भले एम हो पण विशेषपणे क्याशास्त्रमांगति छे? ब्राह्मणेकह्युं ज्योतिषशास्त्रमां, गुरुए कह्युं चन्द्रलग्न अने सूर्यलग्न सारी रीते जाणो छो? ब्राह्मणे गर्व सहित कह्युं ए गणितमां ते शुं छे? एक वे अथवा त्रण लग्नो ने कहीशकुं छुं, तेथी गुरुए गर्ववालुं वचनसांभलीकह्युं के ज्ञानतो ठीक भण्याछो. पुनः विप्रे पूछ्युं के आपने पण लग्नसंबंधिज्ञान छे? गुरुएकह्युं कंईकहशे. ब्राह्मणे आक्षेपपूर्वककह्युं के जो ज्ञानहोयतो आपकहो.

गुरुए पण हर्षितचित्त वालानीमाफककह्युं के हे विप्र! कहो केटलांकलग्नकहुं? दश कहुं के वीश कहुं? ए प्रमाणे सांभली विप्रने अतिआश्चर्य थयुं, तेटलामां तेटली संख्यावालांलग्न

शिष्यकहीने गुरुए पुनः पूछयुं हे विप्र! आका-शमां बे बे हाथ प्रमाणनामेघनाखंड देखो छो? विप्रेकह्युं देखुंछुं. गुरुएपूछयुं कहो केटलुं जल वरसावशे? अजाण एवा शून्यदृष्टिवाला विप्रे दिशाओ तरफदेखवामांडयुं (दिग्मूढ बनी गयो) त्यारे गुरुए कह्युं हे विप्र! सांभल बे घडी बाद ते बादलुं बे हाथ प्रमाण छे तो पण हमणांज-आखाआकाशमांछवाई जई एटली वर्षावृष्टिकरशे के जेवडे बे पात्रसंपूर्णभराशे, त्यार बाद उर्ध्व दृष्टिए त्यांज बेठेला विप्रनीआगलसर्व तेमज बन्युं. विप्रे मस्तकेहाथजोडीकह्युं अहो ज्ञान! अहो ज्ञान! ए प्रमाणे मस्तकधुणावतो गुरुना पगमांपडयो, ने कहेवालाग्यो के ज्यां सुधी हुं अहिं रहिश त्यां सुधी आपनाचरणकमलवांदीनेज भोजनकरीश. मानवडे विटंबणापामेला में आप आवाप्रकारनाछो एम न जाणयुं. सर्वत्रप्रसिद्धि थई के अहो! ज्ञानी तो श्वेताम्बरोजहोयछे.

एक वखते मुनिचंद्राचार्ये सिद्धांत वाचना माटे श्री जिनवल्लभगणिपासे बे शिष्यमोकल्या, गुरुए पण तेओने वांचनादेवामांडी. ते बन्नेए

विचारकर्योंके जिनवल्लभगणिना श्रावकोने ठगीए एवी बुद्धिथी श्रावकोनेरंजनकरता बन्ने शिष्योए पोताना गुरुपासे मोकलवानो एकछानो लेख लख्यो, ते लेख वाचनानीकवलिमांनाखी वाचना लेवा माटे ते बन्नेशिष्य वसतिमां गणिपासे गया (उपाश्रये गया), त्यां वंदनाकरीबेठा अने जेटलामां कवलिछोडी तेटलामां गणिए नवोलेखदेखीने ग्रहणकर्यो,ते शिष्यो गणिना हाथमांथी लेख लईशक्यानहिं, त्यारबाद लेख वांच्यो तेमां लख्युं हतुं के " जिनवल्लभगणिना केटलाक-श्रावकोने वशकर्या छे, अने धीरे २ सर्वने वश करीशुं एवीमनोवृत्तिछे, आ अर्थ (कार्य) विरुद्ध होवाथी जो के शास्त्रनासंबंधनेयोग्यनथी (लेख ने अने शास्त्र ने कंई संबंध नथी) तो पण आचार ना आग्रहथी कह्युं छे " त्यार बाद श्री-जिनवल्लभगणिए बे प्रकारे (बे अर्थमां) करीने-कह्युं के—

आसीज्जनः कृतघ्नः, क्रियमाण-घ्नस्तु सांप्रतं जातः, इति मे मनसि

वितर्को, भविता लोकः कथं भविता ॥ १ ॥

अर्थः—लोक पहेलां पण करेलाकामनेउपघात पहोंचाडनारहतो अने वर्तमान कालमां पण कराता कामने उपघातकरनारथयो ए कारणथी मारामनमांविचारथायछे के एवा लोकनुं शुंथशे?

एप्रमाणेकहीने कह्युं के अहो! आवा प्रकारना अशुभपरिणामवाला तमने बन्नेने वाचनाआपवाथी सर्युं (अर्थात् हवे वाचना नहिं मले) ते थी बन्ने शिष्यो झांखामुखवाला थयाछता पोताने स्थाने चाल्यागया, अने पुनः देखाया पण नहिं.

एक वखते बाहेर भूमि (स्थंडिल) जतां श्री जिनवल्लभगणिनी पंडिताईनी प्रसिद्धि सांभली कोईक विचक्षण मल्यो, तेणे कोईक राजाना वर्णननी अपेक्षाए एक समस्या पद फेक्युं ते आप्रमाणे. " कुरंगः किं भृंगो मरकतमणिः किं किमशनिः " तेथी श्रीजिनवल्लभगणिए स्हेज विचारी ने तेज वखते शमस्या पूर्ण करी तेनी आगलकही संभलावी के.

चिरं चित्रोद्याने चरसि च सुखाब्जं पिबसिच, क्षणादेणाक्षीणां विरहविषमोहं हरसिच, नृप? त्वं मानाद्रिं दलयसि च किं कौतुककरः, कुरंगः किं भृंगोमरकतमणिः किं किमशनिः ॥ १ ॥

अर्थ--दीर्घ काल सुधी हे राजा! तु आश्चर्य कारी उद्यानमां विचरेछे, अने स्त्रियोना मुख कमलने पीए (चुंबन करेछे) तेथी (स्त्रीयोना अने पोताना) विरहरूप विषथी थयेलाउन्मादने विनाश पमाडे छे. वली हे राजन्! तूं मान पर्वतने दलीनाखे छे माटे तुं शुं कौतुक कारी एवो हरण छे के भ्रमरछे के मरकत मणिछे? के शुं वज्रछे? ए प्रमाणे शमस्या संपूर्णकरेली सांभलीने अत्यंत हर्षित थई ते विचक्षण कहेवा लाग्यो के अहो निश्चय छे के लोकप्रसिद्धि निर्मूल नथी, आपने जेवा सांभल्या हता तेवाज छो ए रीते गुण स्तुति करी पगे पडीने गयो.

एकठा थया. अने नजीकमां [illegible] प्रतिपक्षिओ पण एकठा थया ते सर्वेए विचार कर्यो के आपणे एमनी साथे वाद करीने एमने निस्तेज करीशुं. हवे तेओनुं तेवा प्रकारनुं स्वरूप जाणीने श्रीजिनवल्लभगणिना मनमां भय न उत्पन्न थयो ने कंई बोल्या पण नहीं, कारण के उत्कट एवा हस्तिना गंडस्थल तटने फाडी नाखवामां तत्पर अने निष्ठुर पंजावाला सिंहना पोताना सिंहनाद ना प्रतिध्वनी (पडघा) वडे व्हेरा थयेला वनना कोईक वखते पवनथी हालता वृक्षनी टोचपरथी पडेलां पांदडां मात्र थी अत्यंत नाशीजतां जेना शरीर थाकी गयां छे तेवा हरणीयाओथी शुं एक रोम पण द्वेष पामे? पुनः गुरुए विचार्युं के आ संबंधमां (यह वचन टीका कारका है प्रसंग सै लिखा है) मारा गुरु श्रीजिनपतिसूरिनी एक गाथा छे ते आ प्रमाणे.

खरनखशरकोटिस्फोटिताग्रेभकुंभ स्थलविगलितमुक्ताराजि विभ्राजिता जिः, हरि रधि गरिमा किं तर्ज्जितो

तर्ज्जितोवाऽनिलच्चलद्लपातत्वंगदंगैः कुरंगैः ॥ १ ॥

अर्थ--तीक्ष्ण नखरूपी बाणोनी अणियोवडे फाडी नाखेल छे महा हस्तिना कुंभस्थलमांथी पडता मोतियोनी श्रेणि वडे विशेष शोभित करेल छे संग्राम जेणे एवो सिंह पवनथी चलायमान थयेलां पांदडाना पडवाथी नाशजता शरीरवाला हरणोवडे तर्जना पामेलो अथवा तर्जना नहीं पामेलो होय तो पण तेथी शुं तेनी मोटाई छे? (अर्थात हरणोनी तर्जना सहन करवाथी सिंहनी शुं विशेष मोटाई कहेवाय?) त्यार बाद श्री जिनवल्लभगणिए.

मर्यादाभंगभीतेरमृतरसभवा धैर्यगांभीर्ययोगान्न क्षुभ्यंते च तावन्नियमितसलिलाः सर्वदैते समुद्राः हा हा क्षोभं व्रजेयुः क्वचिदपि समये दैवयोगात्तदानीं, न क्षोणिर्नाद्रिचक्रं नच रविशशिनौ सर्वमेकार्णवस्यात् ॥ १ ॥

साधारण साधु ! आ संज्ञा (समस्या) तमारा गुरु पासे थी सारीरीते पुराई ने शीघ्र आवे तेम करवुं, बीजुं कंई कार्य नथी. ए प्रमाणे ते लेख ते उंटवालाओए संध्या समये साधारण साधुना हाथमां आप्यो, अने प्रतिक्रमण अवसरे साधारणे ते राज लेख गुरुनी आगल आवी वांच्यो अने गुरुए तेनो अर्थ जाण्यो, त्यारबाद प्रतिक्रमण कर्याबाद शीघ्रते शमस्या पूरी के.

रे रे नृपाः श्रीनरवर्म भूप प्रसाद-
नाय क्रियतां नतांगैः, कंठेकुठारः कमठे
ठकारश्चक्रेयदश्वोग्रखुराग्रघातैः ॥१॥

अर्थः—हे राजाओ ! जेना अश्वोना उग्र खुरोना अग्रभागना आघातथी कमठमां (पात्र विशेष) ठकारो थाय छे ते नरवर्म राजाने प्रसन्न करवा माटे नमेली देहवाला तमारे कंठे कुहाडो धारण करो.

तेज वखते शमस्या पूर्ति लखीने साधारण साधुना हाथमां आपी तेणे पण उंटवालाओना हाथमां पोतानी विनंतिना लेख सहित

ते समस्या मोकली. तेओपण लेख गृहण करीने रात्रेज शीघ्र धारा नगरीमां आव्या, अने राजाए ते बे विद्वानोनी आगल ते शमस्या वांची, तेओनुं मन अति राजी थयुं अने तमणे कह्युं के आ सभामां एवो कोई विद्वान नथी के आ शमस्या जणे पूरी होय, तो बीजा कोईनी वातज शुं! ए प्रमाणे ते बन्ने प्रशंसा करता पंडितोने राजाए वस्त्रदानादि सत्कार करीने पोताने स्थाने मोकल्या, विहारमां उजमांण अने परम ब्रह्मचारी श्रीजिनवल्लभगणि ए पण केटलेक दिवसे चित्रकूटाचल दुर्गथी विहार कर्यो, ने धारा नगरीमां आव्या. कोई ए राजानी आगल कह्युं के हे राजन्! शमस्या पूरनार श्वतांबर मुनि आव्या छे, तेथी अतिशय विद्वत्ताना गुणवडे आकर्षायेला हृदयवाला राजाए कह्युं के शीघ्र अहिं बोलावो, विनय पूर्वक राजपुरुषो तेमने राजसभामां बोलावी लाव्या, ने गुरु आव्या, राजाए आदर सहित नमस्कार कर्यो. त्यारबाद प्राप्तकरेल आशीर्वाद वाला राजाए हाथ जोडीने कह्युं के हे विद्वान पुरुषोमां मुकुट

समान! मारा मनना संतोष माटे ३ लाख द्रव्य अथवा ३ ग्राम ग्रहण करो, त्यारे श्रीजिनवल्लभगणि वाचनाचार्ये कह्युं हे राजन्! अमारा शास्त्रमां मुनिओने धनसंग्रह करवो विशेषतः निषेध करेल छे. सिद्धांतमां कह्युं छे के दोस सय मूलजालं इत्यादि. माटे अमो धनने हाथ थी स्पर्श करता नथी. राजाए पगे पडीने कह्युं, हे निस्पृह शिरोमणि महाराज! तो पण ३ लाख द्रव्य ग्रहण कर्या विना मारुं मन संतोष पामतुं नथी, तेथी कोई पण रीते द्रव्य ग्रहण करी मारा मनने संतोष पमाडो त्यारे गुरुए कह्युं के जो आ संबंधमां राजानो आटलो बधो आग्रह छे तो चित्तोडमां श्रावको ए बे देव मंदिर बंधाव्या छे, त्यां पूजाने माटे पोतानी मंडपिका (दाण) ग्रहण पूर्वक बे लाख द्रव्य आपवो. तेथी राजा तुष्ट थयो अने आ दान शाश्वतुं थशे एम विचारी तेमज कर्युं, अने धार्मिकपणावडे करीने श्री

---

१ संवच्छर मुसभजिणो, छम्मासे वध्धमाण जिणचंदो । इहविहरिया निरसणा जए जए ओवमाणेणं ॥ १ ॥

जिनवल्लभगणिनी सर्वत्र प्रसिद्धि थई. त्यारबाद श्रीनागपुरनगरमां श्रावकोए देवमन्दिरने नेमिनाथ देवनी प्रतिमां नवी बनावेली छे तेओनो एवो अभिप्राय थयो के जो आपणे महा चारित्री श्रीजिनवल्लभगणिने गुरुपणे अंगीकार करी तेम ने हाथे बन्नेनी (चैत्यनीने प्रतिमानी) प्रतिष्ठा करावीए एम विचारी सर्वनी सम्मति पूर्वक मोटा आदरथी अने घणा बहुमानथी श्री जिनवल्लभगणिने बोलाव्या. त्यारबाद गणिए शुभ मुहूर्तमां चैत्यनी अने नेमिनाथनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी. तेना हस्त कमलना प्रभावथी ते श्रावको लक्षाधिपति थया, अने नेमिनाथ भगवाननी प्रतिमाने रत्नमय मुगट--तिलक--कुंडल-बाजुबंध--श्रीवत्स--कंठमणिमाला इत्यादि आभरणो कराव्यां.

तथा नरवर्म राजानी नगरीना श्रावकोनो पणएवो अभिप्राय थयो के अमोपण श्री जिनवल्लभगणिने गुरूपणे अंगीकार करी मन्दिर अने प्रतिमानी प्रतिष्ठा करावीए, एप्रमाणे विचारी तेमजकर्युं, अने बन्ने मंदिरने विषे रात्रे बलि अर्पण

करवी रात्रे स्त्रीनो प्रवेश करवो अने रात्रे प्रतिष्ठा करवी इत्यादि निषेधरूप मोक्ष साधक विधि लख्यो. त्यार बाद मरुकोटना श्रावकोए श्रीजिनवल्लभगणि वाचनाचार्यने विहार करवाने अवसरे बोलाव्या, गुरुपण विक्रमपुरनगरमां थईने मरुकोटमां पधार्या त्यां श्रद्धावाला श्रावकोए गुप्तिस्थानादि सहित उपाश्रय रहेवा आप्यो. त्यां गुरू रह्या. श्रावकोए कह्युं हे भगवान्! आपना मुख कमलथी जिनवचन रूप रसनुं आस्वादन करवा (अर्थात् आपनुं व्याख्यान सांभलवा) इच्छीए छीये. गुरुए कह्युं श्रावको ने ए योग्य छे, तो उपदेशमाला वांचवानो प्रारंभ करीने तेओए कह्युं अमोए उपदेशमाला तो प्रथमसांभली छे, गुरूए कह्युं फरीथी पण सांभलो, त्यारबाद शुभ दिवसे उपदेश माला वांचवानो प्रारंभ कर्यो, त्यां संवच्छर मुसभजिणो ए एकज गाथानां व्याख्यानमां ६ मास जेटलो काल लाग्यो. तो पण अनेक सिद्धांतना उदाहरणोवडे श्रावकोने तृप्ति न थई ने कहेवा लाग्याके श्रीतीर्थंकर भगवानोज आवावचनामृत वडे

कान ने सुख उपजाववामां समर्थ छे, माटे आप तीर्थंकरनुं रूप छो नहिंतर आवी अमृत झरनारी वाणी अने आवा प्रकारनी व्याख्यानशक्ति क्यांथी? ए प्रमाणे देशनाअंडे श्रावको अत्यंत संतोष पाम्या.

एक वखते कोईक जिन मंदिरमां व्याख्यान करीने श्रावको सहित उपाश्रये आवे छे ते अवसरमां अश्वऊपर बेठेलो घणा परिवार सहित एक पुरुषने परणवा जतां देख्यो, तेथीं संवेगीमा शिरोमणि अने ज्ञानमां सूर्य समान श्रीजिनवल्लभगणि वाचनाचार्ये खेदपूर्वक कहयुं, अहो देखो संसारनुं क्षण भंगुर पणुं केवुंछे! जेथी आ ज स्त्रीओ विकश्वर मुखकमलवाली थई छती गीत गाती जायछे तेज स्त्रीओ छाती कूटती ने महा विलाप करती आ रस्ताथींज पाछी वलशे. त्यारबाद गुरु उपाश्रये आव्या, अने त्यां ते परणनार पुरुष त्यां गयो अने सीढीपर चढवा लाग्यो चढतां२ पग खसीजवाथी ते घंटी ऊपर पड्यो, अने घंटीना खीलावडे तेनुं उदर चीराई बे भाग थई गयुं. अने मरण पाम्यो, तेथी ते स्त्रीयो

तेवा प्रकारे रडती कूटती तेज मार्गे आवती सर्व श्रावकना समुदाये जोई, अने सर्व श्रावक लोको अहो! गुरुनुं विज्ञान! एम कहेवा लाग्या.

ए प्रमाणे श्रावकोने धर्म पमाडी पुनः श्री जिनवल्लभगणि वाचनाचार्ये नागपुर तरफ विहार कर्यो, एटलामां अनुक्रमे विहार करता श्री देवभद्राचार्य श्री अणहिल्लपुर पाटणमां पधार्या. त्यां आवेला श्री देवभद्राचार्ये विचार्युं के श्री प्रसन्नचंद्राचार्ये पोताना अन्तसमये मारीआगल निवेदन कर्युं हतुं के तमारे श्रीजिनवल्लभगणिने श्री अभयदेवसूरीने पदे स्थापवा अने ते अवसर हालमां छे, तेथी श्रीदेवभद्राचार्ये श्रीजिनवल्लगणि पर एक लेखलखीने नागपुरमां मोकल्यो के तमारे समुदाय सहित शीघ्र चितोड तरफ विहार करवो जेथी अमो त्यां आवीने अमारा मनमां धारेली धारणा पारपमाडिए, तेथी श्रीजिनवल्लभगणि वाचनाचार्य चित्तोडमां पधार्या तथा श्रीदेवभद्राचार्य पण परिवार सहित चितोड पधार्या अने पंडित सोमचन्द्रने पण बोलाव्या परन्तु तेओ आवी शक्या नहीं. त्यार

बाद मोटा आडंबर पूर्वक श्रीदेवभद्राचार्ये श्री-अभयदेवसूरिने पदे श्रीजिनवल्लभगणिने स्थाप्या अनेकभव्यजनो श्रीअभयदेवसूरिना चरण भक्त श्रीजिनवल्लभसूरिने जोई मोक्षमार्गमां प्रवृत्त थया, देवभद्राचार्य विगेरे पदस्थापना करी पोताना आत्माने कृतार्थ मानता श्रीअण-हिल्लपुर पाटणादि स्थानोमां विहार करवा लाग्या. श्रीजिनवल्लभसूरिए पोताना आयुष्यनो प्रमाण गण्युं त्यारे हजी ६ वर्ष आयुष्य बाकी रहेलुं जाण्युं, तेथी विचार कर्यो के एटला कालमां तोहुं घणा लोकोने प्रतिबोध करीश. ए प्रमाणे स्वस्थथयेला श्रीजिनवल्लभसूरिने ६ मास बीत्या बाद अन्ते अकस्मात् शरीर पीडित थयुं! आशुं थयुं, एम विचारी जेटलामां पुनः आयुष्य नी गणत्री गणे छे तेटलामां तेटलोज अंक (६ मास नोज अंक) बाकी रहेलो जणाय छे, तेथी जाण्यु के प्हेलां आयुष्यनी जेगणत्री गणी हती तेमां भूलथी ६ मास ने बदले ६ वर्ष गणाई गयां हतां तेथी आटलुं ६ मासनुंज आयुष्य छे एम निर्णय करी ते सूरिश्रीए समस्त

संघनी साथे मिच्छामीदुक्कडं आपी चार शरणअंगीकार करी सर्व जीवोने खमावी ३ दिवसनुं अनशन करी ११६७ नी शालमां कार्तिक वदि १२ नी रात्रिना छेल्ले प्रहरे पांच परमेष्ठिनुं स्मरण करता श्रीजिनवल्लभ सूरि महात्मा चौथे स्वर्गे गया. परन्तु हजी सुधी मनोहर सदाचारना निधान एवा अने मरुकोटमां ७ वर्ष सुधी रहीने सर्व शास्त्रोने सारी रीते भणेला एवा जे आचार्यनी सर्व गच्छोए आदरेल सुक्ष्मार्थ सिद्धांत विचारसार-षडशिति-ने सार्धशतक नामना कर्मग्रंथ तथा पिंडवि-शुद्धि--पोषधविधि---प्रतिक्रमणसमाचारी---संघ पट्टक--धर्मशिक्षा-द्वादशकुलकरूपप्रकरणो तथा प्रश्नोत्तरशतक--शृंगारशतक--इत्यादि विचित्र प्रकारना अनेक सैंकडो उत्तम काव्यो स्तुतियो स्तोत्र. इत्यादिरूप कीर्तिध्वजा सर्वपृथ्वी मंडलने शोभावती विद्वानजनोनां मनने हर्ष पमाडे छे. ॥ इति श्री जिनवल्लभ सूरि.

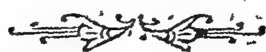
युगप्रधान

श्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज.



जन्म सं०	दीक्षा सं०	आचार्यपद सं०	स्वर्ग सं०
११३२	११४१	११६९	१२११

॥ श्री जिनदत्तसूरि चरित्रम् ॥



पूर्वे श्रीजिनेश्वरसूरिना श्रीधर्मदेवउपाध्यायनीगीतार्थी साध्वीएधोलकानगरमां चोमासुं कीधुं हतुं त्यां क्षपणकसाधुनाभक्त हुंबड गोत्रीयवांछिग नामना मंत्री श्रावकनी वाहड देवी नामनो स्त्री पुत्रसहित तेसाध्वीनीपासे धर्म सांभलवाजायछे, तेसाध्वीपण तेने विशेषतः धर्मकथादिकहेछे, ते साधवी गुरुना उपदेशथी पुरुषना शुभाशुभ लक्षणजाणेछे, तेथी तेणीना पुत्रनांलक्षणोघणांश्रेष्ठदेख्यां, तेथी ते पुत्रनी प्राप्तिमाटे तेनी मातानें बहुप्रकारे आकर्षणकरेछे, विशेष शुं कहेवुं! साध्वीए तेणीने तेवी रीते आकर्षी लीधीके जेथी ते जे कहे तेज करे एवीथई. तेथी साध्वीए कह्युं के हे धर्मशील! आ तारो पुत्र श्रेष्ठ युगप्रधानना लक्षणने धारण करनारो छे, माटे आपुत्र अमारा गुरुने आपे तो तने महाधर्म थाय. वळी आपुत्र सर्वजगतना मुकुटनोमणिथशे, तेणीए पण

तेवचन अंगीकार कर्युं. त्यारबाद चौमासोपूर्ण थये श्रीधर्मदेवउपाध्यायने साध्वीए ते सरूप जाणाव्युं के अमने एक रत्न प्राप्त थयुंछे. जेरत्न तमारी शोभामां वधारो करशे. तेथी गुरु शीघ्र आव्या. ते पुत्रने देख्यो ने जाण्युं के निश्चय आ कोई सामान्यपुरुषनथी, आपुत्रएवो छे के ते कोई मोटा पदने योग्य थशे. तेनी माताने पूछ्युं के तारी जो सम्मति होय तो एने दीक्षाआपीए, त्यारे ते पुण्य पात्रीए कहयुं के हेभगवन् कृपा करी एमजकरो जेथी मारोपणानिस्तारथाय. पुनः श्रीधर्मदेव उपाध्याये पूछ्युंके आपुत्र केटला वर्षनो छे? तेणीए कहयुं अग्यारसेबत्रीश(११३२) नी शालमां जन्मथयो छे, तेथी उपाध्याय इग्यारसै इकतालीश। (११४१) नी शालमां शुभ मुहूर्ते तेने दीक्षा आपी अने सोमचन्द्रनाम पाड्युं. श्रीधर्मदेव उपाध्याये श्रीसर्वदेवगणिने कहयुं के तमारे आ शिष्यनुं परिपालनकरवुं, बहिर्भूमिए लईजवादि सर्व कार्य अनेसर्वक्रिया कलाप तमारे शीखववो. सूत्रादि पाठतो तेणे प्रथम घेर रहयां छतां कर्योज हतो, ने करेमिभंते

सामाइयं इत्यादि भणाव्युं. व्रतने पहेलेज दिवसे सर्वदेवगणि आसोमचंद्र मुनिने बहिर्भूमि लईगया त्यां अज्ञान पणाथी उगेलाक्षेत्रमां पानडा तेणे तोड्यां तेथी शिक्षा माटे सर्वदेव गणिए रजोहरण अने मुखवस्त्रिका लईलीधी अने कह्युं के व्रत ग्रहण कर्युं तोपण क्षेत्र केमतोडेछे जोएमहोय तो घेरजा त्यारबाद तेजवखते उत्पन्नथयेल बुद्धिवाला तेणे कह्युं के आपे ठीक कर्युं पण मारी चोटली (बाल) ते पहेलां हतीते पाछी आपोतो हुं मारे घेर जाउं. ए प्रमाणे, कहेवाथी सर्वदेव गणिने मोटुं आश्चर्यथयुं अहो! आ लघुछतां पण केवो उत्तर आप्यो। हवे शुं जवाब आपवो आवात श्रीधर्मदेवउपाध्यायपासे गई, त्यारे श्रीधर्मदेव उपाध्याये विचार्युं के आ अतियोग्य थशे. विहारकरीने पाटन आए नगरमां भ्रमण करीने आ सोमचन्द्र लक्षणपंजीकादिशास्त्रो भण्यो अने ए प्रमाणे एक वखत भावडाचार्यनी धर्मशालामां पंजिकाभणवामाटे जता सोमचन्द्रने कोईक उद्धते कह्युं के अहो! श्वेतांबरिओ कंबलिकाओ शामाटे राखे छे? सोमचंद्र कह्युं

के तारुं सुखभोगवाने माटे अने अमारुं मुख शोभाववाने माटे आ उत्तरसांभली निरुत्तर थयेलो ते कंइ पण कही शक्योनहीं अने स्व-स्थाने चाल्योगयो अने सोमचन्द्र पण धर्म-शालाए आव्यो, त्यां अनेक अधिकारीना पुत्रो पंजिका भणे छे. एक वखते परीक्षा करवा माटे पंजिका भणावनार आचार्ये सोमचंद्र मुनिने पूछयुं के हे सोमचंद्र! वकार जेमाजणातो नथी ते नवकार कहेवाय, ए नवकारनुं यथार्थ नाम छे. बुद्धिशाली सोमचन्द्रे शीघ्र कहयुं के हे आ-चार्य! एम न कहो, एनो अर्थ एम थाय छे के नव एटले ९ करण वालो ते नवकार एवी व्यु-त्पत्ति करवी. आचार्ये जाण्युं अहो आणे ठीक उत्तर आप्यो. आनी साथे बोलीशकाय नहीं.

एक दिवस लोच कराव्यो ते दिवसे सोम-चन्द्र मुनि व्याख्यान भणवाने न गया, अने व्याख्याननी व्यवस्था एवी हती के जो एकपण शिष्य न आवे तो आचार्य व्याख्यान न वांचे, तेथी आचार्ये व्याख्यान नहीं वांच्ये छते गर्व-वाला अधिकारीपुत्रोए आचार्यने कहयुं के

सोमचन्द्रने बदले तेने स्थाने आ एक पत्थर धर्यो, माटे हवे तमो व्याख्यान वांचो; तेथी ते अधिकारी पुत्रोना आग्रहथी आचार्ये व्याख्यान वांच्युं, बीजे दिवसे सोमचन्द्र मुनि आव्याने अधिकारी पुत्रोने कहयुं के गई काले मारा विना तमोए व्याख्यान केम कराव्युं? अधिकारी पुत्रोए कहयुं त्हारे स्थाने एक पत्थर मूक्यो हतो। सोमचन्द्रे कहयुं पत्थर कोण छे अने कोण नथी ते हमणांज जणाशे, माटे हे गुरु! जेटली पंजिका भणी गयाछे तेटली पंजिका आसर्वे न पूछो अने मने पूछो तेमां जेने सारी न आवडे तेज पत्थर जाणवो.

आचार्ये कहयुं हे सोमचन्द्र! बुद्धि विगेरेनी सुगंधि गुणवाली कस्तूरी सरखो हुं तने जाणुं छुं परन्तु आमुखीओनी प्रेरणाथी में व्याख्यान वाच्युं हतुं माटे तारे क्षमाकरवी. ए प्रमाणे ते सोमचन्द्र मुनि पंजिका भण्या.

अशोकचंद्राचार्ये सोमचंद्रने वडी दीक्षा आपी, अने हरिसिंहाचार्ये सर्वसिद्धांतनी वाचना तथा मंत्रनुं पुस्तक आप्युं. पुनः जे कवलिकावडे

सिद्धांतवाचना पोते ग्रहण करी हती ते कवलिका तुष्ट थयेला गुरुए सोमचंद्रने आपी. तथा श्रीदेवभद्राचार्ये तुष्ट थईने काष्टोत्कीर्ण आप्युं के जेनावडे श्रीमहावीरचरित्र श्रीपार्श्वनाथचरित्र इत्यादि चार कथा शास्त्रो पाटी उपर लख्यां ए प्रमाणे ज्ञानी ध्यानी सैद्धांतिक सर्व जनने मनोहर अने श्रावकोना मनने हर्षपमाडनार श्री सोमचंद्र मुनि साधुना आचार सहित एक गाम थी बीजे गाम विहार करे छे, हवे अहिं श्रीदेवभद्राचार्ये श्रीजिनवल्लभ सूरिनुं स्वर्ग गमन (कालधर्म) सांभल्यो, तेथी चिंताउत्पन्नथई अने मनमां एवा प्रकारनो संतापउत्पन्नथयो के अहो! सद्गुरुनुं पद प्रकाशित कर्युं पण विनाश पाम्युं. पाछलथी श्रीदेवभद्राचार्यना चित्तमां एवो विचार थयो के श्रीजिनवल्लभसूरिनुं युगःप्रधान पदनो योग्यशिष्य स्थापीने आदर न करीये तो भक्ति शुं कहेवाय! तेथी आचार्ये विचार्युं के वांछिकनो पुत्र सोमचन्द्र मुनि ते पदने योग्य छे, एम विचारतां चित्तमां सोमचंद्र मुनिज रुच्या ने विचार्युं के निश्चय एज

योग्य छे. पुनः श्रावकोने पण ज्ञानध्यानमां तत्पर होवाथी आनंदकारी छे, त्यारबाद सर्वनी सम्मति पूर्वक पंडित सोमचन्द्र ऊपर लेख लखी मोकल्यो के चित्तोड तरफ शीघ्र विहार करवो. जेथी श्रीजिनवल्लभसूरिने पदे कोईने स्थापन करवाना छे, कोने स्थापवा ते निश्चय जणातु- नथी. श्रीजिनवल्लभसूरिनी पद प्रतिष्ठा वखते जो तमो न आवशो तो तेमने पदे बेसवाने माटे लांबा कानवाला-गौर वर्णवाला-कमलपत्र सरखा नेत्र वाला अने साक्षात कामदेव सरखा गुजरात ना घणा साधुओ तत्पर थया छे, परन्तु योग्यता गुरुज जाणे छे विशेष शुं कहेवुं! हवे श्रीदेव- भद्राचार्य पंडित सोमचन्द्र अने बीजापण घणा साधुओ चितोडमां आव्या. सर्वलोक सामान्य पणे एम जाणे छे के श्री जिनवल्लभसूरिने पदे कोई मुनिने स्थापवाना छे पण तेमने पदे कयां मुनि बेशसे ते कोई जाणतुं नथी. श्रीजिनवल्लभ सूरिए प्रतिष्ठा करेल साधारण साधु नामे श्रावके बंधावेला श्रीमहावीरस्वामिनाचैत्यमां पद स्था- पना थशे एम पण सर्व लोक जाणे छे.

हवे पोताना विचारेला मुहूर्तना आगले दिवसे श्रीदेवभद्राचार्ये पंडित सोमचन्द्रमुनिने एकान्तमां कह्युंके अमुक दिवसे श्रीजिनवल्लभ सूरिने पदे तमने स्थापवा एम अमे निर्णय कर्यो छे. पंडित सोमचन्द्र गणिए कह्युं के जे आपने रुचे ते युक्त छे. परन्तु जो ए मुहूर्तमां स्थापशो तो मारूं दीर्घ आयुष्य नहीं रहे माटे ६ दिवस बाद शनिवारने दिवसे जे मुहूर्तआवे छे ते मुहूर्तमां स्थापशो मने चारे दिशाए विहार करतां श्रीजिनवल्लभ सूरिना वचनथी चतुर्विध संघ घणो वृद्धि पामशे, अने मारूं आयुष्य दीर्घ थशे. श्रीदेवभद्राचार्ये कह्युं के अमो पण एवात ठीकज मानीए छीए, अने ते मुहूर्त बहुदूर पण नथी. तेथी तेजदिवसे श्रीजिनवल्लभसूरि ने पदे घणां आडंबर पूर्वक संध्यासमये शुभ मुहूर्तमां श्रीजिनदत्तसूरि नाम आपी युगप्रधान स्थापना करी. त्यारबाद वाजतां वाजिंत्रों सहित उपाश्रये आव्या. प्रतिक्रमण कर्याबाद वांदणा दईने श्री-देवभद्रसूरिए कह्युं के देशना आपो, तेथी सिद्धांत मां कहेला उदाहरणने अनुसारे मनोहर

श्रेष्ट अमृतरसनाझरणासरखी संस्कृतवाणीना प्रबंध पूर्वक पूज्य श्रीजिनदत्तसूरिए एवी देशना आपी के जेथी " ठुंका शरीरवालो अने श्याम वर्णवालो आ मुनि शुं अहिं बेसवाने योग्य छे? शुं गच्छमा गौर वर्णवाला-दीर्घकानवाला-अने विशाल लोचनवाला बीजा साधुओ नहिं होय" इत्यादि कलुषता (अपवाद) दूर करीने सर्व प्रजा राजी थई छती बोले छे के अहो! सिंहने स्थाने सिंहज बेठेलो शोभे छे. धन्य छे श्रीदेवभद्राचार्यने के जेणे आवा उत्तम पात्रनी परीक्षा करी. अमारा सरखा स्थूलबुद्धिवाला पात्र अपात्रना लक्षण शुं जाणे!

एक दिवसे श्रीदेवभद्राचार्ये श्रीजिनदत्तसूरिने विनंति करीके केटलाक दिवसबाद थोडा दिवस सुधी पाटन देशथी बाहर विहार करवो. श्रीजिनदत्तसूरिए कह्युं तेमज करीशुं. एक दिवस जिनशेखर मुनिए साधुना संबंधमां कंईक क्लेश विगेरे अयोग्य आचरण कर्युं, तेथी श्रीदेवभद्राचार्यें गलुं पकडी बाहर काढयो तेथी जे स्थाने श्रीजिनदत्तसूरि बाहरभूमिजायछे त्यां जईने

बेठो, त्यां आवेला श्रीजिनदत्तसूरिने पगे पडी दीन वाणीए कह्युं के प्रभू ! मारो आ अन्याय-एकवार क्षमाकरवो जोइए, आवोअपराध पुनः नहिं करूं तेथी कृपासमुद्र श्रीजिनदत्तसूरिए तेने पोताना उपाश्रयमां आववादीधो. त्यारबाद श्रीदेवभद्राचार्यें कह्युं के तमोए आ ठीक न कर्युं आ पापी तमने सुखआपनारनहिंथाय. खसना रोगवाला ऊंटनी पेठे आने बाहर काढवो तेज कल्याण कारी छे. श्रीजिनदत्तसूरिए कह्युं श्रीजिनवल्लभसूरिना पृष्ट लागेला आ शिष्यने ज्यां सुधी सारीरीतेवर्तावाशे त्यांसुधी वर्तावीशुं.

हवे श्रीदेवभद्राचार्यआदि मुनिमंडले अन्यत्र विहार कर्यो अने कालकरीने स्वर्गस्थान पाम्या. पाटणथी विहार करवानी इच्छावाला श्रीजिनदत्तसूरिए पण श्रीदेवगुरुना (पोताना गुरुना) स्मरण माटे ३ उपवास कर्या तेथी देव-लोकमांथी श्रीहरिसिंहाचार्य आव्या अने कह्युं के मारु स्मरण शामाटे कर्युं छे ? श्रीजिनदत्त सूरिए कह्युं के मारे क्यां विहार करवो ? (ते पूछवाना कारणथी में आपनुं स्मरणकर्युं छे)

तेथी मारवाडविगेरे देशोमां विहारकरवो ए प्रमाणे उपदेशआपीने श्रीहरिसिंहआचार्य अंतर्धान थईगया. मरुस्थलादिमां विहार करवा संबंधि प्राप्त करेली आज्ञा वाला श्रीजिनदत्तसूरि हजी त्यां पाटणमांज रहयाछे मरुदेशनिवासी वेहर मासर वासल-अने भगत विगेरे श्रावको व्यापारने अर्थे पाटणमां आवेला छे, त्यां श्रीजिनदत्तसूरिगुरुने देखी अने तेमनु वचन सांभली अति संतोष पामवाथी श्रीजिनदत्तसूरिने पोताना गुरुपणे अंगीकार कर्या.भरत श्रावक सुगुरु पासे वाचकपणे वाचनालेवा रह्यो अने बीजा मेहर भावर विगेरे श्रावको पोताने स्थाने गया. तेओ श्रीजिनदत्तसूरि आवा प्रकारना शुद्ध चारित्रवाला छे इत्यादि वर्णन पोताना कुटुंब आगल करे छे, ए प्रमाणे ते देशमां श्रीजिनदत्तसूरिजीनो प्रवेश थयो, त्यारबाद नागपुरनगरतरफ विहार कर्यो त्यां श्रावक धनदेव श्रेष्ठि गुरुनी भक्ति करे छे. त्यां आयतन अने अनायतन कोने कहेवुं? ते संबंधि विचार सांभली ने धनदेव श्रेष्ठिए कह्युं हे गुरुजी! जो आप मारा कहेवा

प्रमाणे करो तो सर्व श्रावकनो समुदाय आपनी पाछललागेलापरिवारसरखो थई रहे, त्यारे जाणे न जाणता होय तेम सूरिश्रीए कह्युं के हे धनदेवश्रेष्ठि! एवुं शुं छे धनदेवे कह्युं सर्व देशमां पण (अथवा सर्व बातमां पण) आयतन अने अनायतन तथा विधि अने अविधि जो न कहो तो आखी पृथ्वी आपनी पाछल लागीरहे. ते सांभलीने श्रीजिनदत्तसूरिश्रीए कह्युं हे धनदेव!

तावकीनं वचनं कुर्मोउत नु तीर्थकृतां, यदनायतनं सूत्रे, भणितं तद्ब्रूमहे नियतं, ॥ १ ॥ उत्सूत्रभाषणात् पुनरनन्तसंसार कारणात् बहुशः, किं लोके न त्वग्रोगिणोभवेत् प्रचुर माक्षिका संगः ॥ २ ॥

अर्थ—हुं तारुं वचन अंगीकार करुं के श्री तीर्थंकरनुं वचन अंगीकार करूं? अनायतन नो जे अर्थ सूत्रमां कह्यो छे तेज अर्थ निश्चय कहीश.

उत्सूत्र भाषणथी अनेकवार अनंतसंसार परिभ्रमणथायछे. लोकमां शुं त्वचागरमीना (खस विगेरेना) रोगवालाजनने घणीमाखीओः नथी वळगती ? (अर्थात् घणीमाखीयोरूप घणो संसार वधे.)

मैवं मंस्थाःबहुपारिकरोजनो जगति पूज्यतांयाति, येन बहु तनययुक्ताऽपि, शूकरी गूथमश्नाति ॥ १ ॥

अर्थ—एम न मानोशके घणा परिवार वालो मनुष्य जगतमां पूजनिक पणुं पामे छे, कारण के घणां बच्चांवाली भुंडणी विष्टाज खाय छे.

धनदेवने ए वचन कानने अति कडवुं अने दुःखदाई लाग्युं. तो पण विचार्युं के भले तेम थाओ पण गुरुए तो सत्यज कहेवुं जोईए कह्युं छे के.

रूसउ वा परोमा वा, विसंवा परियत्तउ भासिअव्वा हियाभासा, सपक्खगुणकारिया ॥ १ ॥

अर्थ—बीजा कोई रोषपामो अथवा न पामो अथवा विषरूपथाओ तो पण अबाधितभाषा बोलवी ते स्वपक्षेपोताने तो गुणकारीज छे.

ए प्रमाणे सिद्धान्तनुं वचनहोवाथी ते वचन केटलाक विवेकी श्रावकोने रुचिकर थयुं. त्यांथी नागपुर (नागोर) अने अजमेर विहार कर्यो, त्यां आशधर साधारण ने रासल विगेरे श्रावको रहे छे. श्रीजिनदत्तसूरि देववंदन माटे बाहडना देवमंदिरे जायछे. एक वखते त्यांना आचार्यआव्या ते दीक्षापर्यायमां लघुछे तो पण चैत्यमां देववंदन माटे गयेला श्रीजिनदत्त-सूरिनो व्यवहार साचवतानथी, तेथी ठक्कुर अने आशधर विगेरे श्रावकोए कह्युं, जो योग्य व्यवहार न सचवाय तो अहिं आवता गुरुने शुं फल? तेथी वंदनादि व्यवहारनो विच्छेद थाय. त्यारबाद श्रावकोए अर्ण राजाने विनंती करी के हे राजन्! अमारा गुरु श्री जिनदत्तसूरि आवेला छे, राजाए कह्युं ठीक छे जो आव्याहोयतो कार्य कहो. श्रावकोए कह्युं हे राजन्! एक एवी जग्यानी जरूरछे के ज्यां मंदिर विगेरे धर्मस्थान

थाय अने श्रावकोने पोताना कुटुंबना घर पण बांधी शकाय. पछी अर्णराजाए कह्युं. दक्षिण दिशाना भागमां जे पर्वत छे ते स्थले देवमंदिरादि जे रुचे ते निशंक पणे करो. अने तमारा गुरु मने देखाडवा. श्रावकोए ए स्वरुप गुरुनी आगल कह्युं. प्रभुए विचारीने कह्युंके. हे श्रावको! जे ए प्रमाणे राजा मारादर्शनने माटे उत्कंठित छे तो तेने बोलाव्याथी गुणज छे, तेथी गुरुना वचनने अनुसरता श्रावकोए शुभदिवसे बोलावेल अर्णराजा आव्यो ने शीघ्र श्रीजिनदत्त सूरिने नमस्कार कर्यो, अने गुरुए आपेला आशिर्वाद वडे बहु खुशी थयो. ते आशिर्वाद आ प्रमाणे—

विश्वविश्वविनिम्र्माणस्थिति प्रलयहेतवः, संतु राजेन्द्र भूत्यै ते, ब्रह्म श्रीपतिशंकराः ॥ १ ॥

अर्थः--सर्व जगत ने बनाववुं--रक्षणकरवुं- अने विनाश करवो ए त्रण कार्यमां कारण रूप

एवा ब्रह्मा-विष्णु-ने महादेव हे राजेन्द्र तारा सुखने माटे थाओ.

नीतिश्चित्ते वसतिनितराम्,लब्ध-विश्रान्तिरुच्चैः, श्रीरस्यांगे भुजयुग-लकमप्याश्रिता विक्रमश्रीः, एषो-ऽत्यर्थं क्षिपति बहुभिर्लोकवाक्यैः प्रियोमामित्यर्णोराड् भ्रमति भुवनं की-र्तिरस्ताश्रयाते ॥ २ ॥

अर्थः--हे अर्ण राजा! तमारा चित्तमां निति रहे छे, अत्यंत प्राप्त थयेलछे विश्रान्ति जेने एवी लक्ष्मी तमारा शरीरमां रहेछे. वली बे भुजामां पराक्रम रूप लक्ष्मीए निवास कर्योछे, अने आ प्रिय राजा मने घणा लोक वाक्योवडे दूर फेंके छे एम विचारीने तारी कीर्ति क्यांपण स्थिरता पाम्या विना त्रणे भुवनमां रखड्या करे छे. (अर्थात ताराशरीरनासर्वअंग नीतिआदिके भरेलां होवाथी कीर्तिने तारा शरीरमां रहेवानी जग्या नमली माटे तारी कीर्ति त्रणेभूवनमां रखडे

छे, तात्पर्य एजके तारी कीर्ति त्रणे लोकमां फेलायेली छे.)

इत्यादि सदगुरुना मुखथी निकलेली वाणी सांभलीने संतुष्ट थयेला राजाए कह्युं हे सदगुरु! हवे निरन्तर अहिंज रहेवुं, गुरुए कह्युं तमोए कह्यो ते ठीक छे पण अमारे एवी मर्यादा छे के लोकना उपकार माटे सर्वठेकाणे विहार, करवो, अहिं पुनः आवीस्युं जेथी तमारा चित्तने शांति थशे तम करीशुं त्यार बाद तेवुं समाधान थवाथी राजा उठ्यो, तदनंतर श्रीजिनदत्तसूरिए ठक्कुर अने आशाधर विगेरे श्रावकोने कह्युं के.

इदमन्तरमुपकृतये, प्रकृति चला यावदास्ति संपदियं, विपदि नियतोदयायां, पुनरुपकर्तुं कुतोऽवसरः ॥ १ ॥

अर्थः--स्वभावथी चपल एवी आ लक्ष्मी ज्यांसुधी विद्यमान छे त्यां सुधी उपकार करवानो आ अवसर छे, ने निश्चय प्राप्त थनारी विपत्ति

आव्ये छते पुनः उपकार करवानो अवसर क्यांथी होवे?

माटे खंभातमां श्रीपार्श्वनाथ शेत्रंजापर श्री ऋषदेव अने गिरनार ऊपर श्रीनेमिनाथ भगवान नी प्रतिमा वालां स्थानो उपकारने माटे विचारवा योग्य छे. गिरनार ऊपर अंबिका देवीनी देहरी अने नीचे गणधरादिकनां स्थान पण उपकार माटे विचारवां योग्य छे. एम कहीने श्रीजिनदत्तसूरिए शुभ शकुन पूर्वक वागड देशमां विहार कर्यो. त्यांना लोको श्रीजिनवल्लभसूरि ऊपर प्रथमथीज आस्थावालाहता, अने तेमनुं नाम देतापण नमस्कारकरनारा हता तेमनां स्वर्गगमनी वातसांभली तेओने पदे स्थापेला जे ज्ञानध्यान गुण युक्त एवा, अने श्रीमहावीर स्वामिना मुख कमलथी निकलेली अर्थ श्रेणिवडे श्रीसुधर्मास्वामिगणधरे रचेला सिद्धान्तने जाणनारा एवा श्रीजिनदत्तसूरि नामना तीर्थंकर सरखा युगप्रधानगुरु अहिं अमारा देशमां विहार करी पधार्या छे एम सांभलीने हर्ष पामेला अने दर्शन करवानी उत्कंठावाला एवा श्रावको

तेमना चरण कमलनी वंदना करवा माटे आव्या त्यारबाद श्रीजिनदत्तसूरिजीनी देशना सांभलीने अने दर्शन करीने अत्यंत आनन्द पामेला तेओ अति सुखपाम्या. तेश्रावको जे जे वात पूछे ते ते वात श्रीजिनदत्तसूरि केवलिनी माफक कहे छे, अने तेओना मननुं समाधान करेछे. तुष्ट अने संतुष्ट थयेला एवा ते श्रावकोमांना कोईक सम्यक्त्व ग्रहण करे छे, कोई देशविरति ग्रहण करेछे अने कोई सर्व विरतिपण ग्रहण करेछे. ए प्रमाणे श्रीजिनदत्तसूरिए त्यां घणां साधु अने साध्वीयो करी, ते अवसरे बावन साधु साध्वीयो करी एम संभलायछे. तेज अवसरे श्रीजिनशेखर मुनिने उपाध्याय पदवी आपीने केटलाक साधु सहित विहारना अनुक्रम प्रमाणे रुद्रपल्ली गामे मोकल्या. ते उपाध्याय त्यां तप करे छे, अने तेमनी सारसंभाल माटे तेमना संबंधिओ आवेलाछे. तथा पोताने स्थाने रहेला श्रीजयदेव आचार्य ए स्वरूप सांभल्युं, के श्रीजिनवल्लभ सूरिने पदे बेठेला श्रीजिनदत्तसूरि सर्वगुण युक्त अने प्रतिष्ठित एवा अत्रे विहार करी पधार्या छे. त्यारबाद तेओए

विचार्युं के ए ठीक थयुं. श्रीजिनवल्लभ त्याग पूर्वक श्रीअभयदेवसूरि पासे वसतिनिवास अंगीकार करेल सांभलीने प्रथमज अमने वसति निवासनी इच्छा उत्पन्न थईहती; माटे हमणा जईने सद्गुरुने देखीए, त्यारबाद तेओ परिवार सहित वंदना करवा माटे आव्या, विनय पूर्वक श्रीजिनदत्तसूरिने नमस्कार कर्यो तेमज श्रीजिन-दत्तसूरिए पण तेमने सिद्धांतना मधुर वचन पूर्वक एवीरीते बोलाव्याके जेथी श्रीजयदेवसूरिना चित्तमां एवो विचार उत्पन्न थयोके आ आचार्यज भवो भवमां अमारा गुरु हजो. त्यारबाद शुभ मुहूर्ते उपसंपत् (नवी दीक्षा) ग्रहण करीने श्रीजयदेवाचार्ये सनत् कुमार चक्रीवत् (पोताना बाग बगीचादि ऋद्धि तरफ) पाछल जोयुं पण नहीं ।

तथा श्रीजिनप्रभाचार्य निमित्त शास्त्रना ज्ञान वडे गर्व जनमां प्रसिद्ध छे. तेओ तुरुष्क भूमिमां (यवन देशमां) गया त्यां कोई यवनाधिपतिए ज्ञानी जाणीने पूछ्युं के मारा हाथमां शुं छे? आचार्ये गणत्री गणीने कह्युं हे यवन-

पति! खडीनो खंड अनेवाल छे, ते यवनाधिपने खवर नथी के मारा हाथमां वाल पण छे तेथी विस्मित थयेला तेणे हाथ देख्यो तो वालपण खडीना खंड साथे लागेलो छे. आथी यवनाधिप तुष्ट थयो अने आचार्यनो हाथ ग्रहण करी चुंबन कीधुं तथा चंगा चंगा एम कह्युं. आचार्ये जाणयुं के आ अधिप मने पोतानी साथे लई जशे अने आ सर्वदुष्ट अभिप्रायवालो छे तेथी कदाचित् मने कोईक अनर्थ पण उपजावशे. तेथी श्रीजिनप्रभाचार्य रात्रे नाशीने पोताने देश आव्या. त्यां वसतिमार्गने अंगीकार करनार जयदेवाचार्यने श्रीजिनदत्तसूरि पासे आवेला जोई अने सांभलीने तेमने पण एवो विचार उत्पन्न थयो के हुं पण चैत्यवासनुं त्यागकरुं परन्तु आ मुनिओनो मार्ग अति कठिन संभलायछे, माटे जे कोई कोमल धर्म मार्ग होयतो ठीक एम शकुन परिज्ञान वडे विचारे छे, एटलामां प्हेली वखते श्रीजिनदत्तसूरि ए नाम आव्युं, तेथी चिंतव्युंके कदाचित् कोई रीते गणितमां फेरफार तो नहीं थयो होय! माटे बीजीवार गणे छे

तेटलामां बीजीवार पण श्रीजिनदत्तसूरि ए नाम आव्युं; पुनः निश्चय करवाने जेटलामां त्रीजीवार गणे छे तेटलामां आकाशथी अग्निना पुंज पड्यो आकाशमां वाणी थई जो ताहरे शुद्ध मार्गथी प्रयोजन छे तो वारंवार स्युंगणे छे, एज आचार्य संसारथी तारनार अने शुद्ध मार्गना प्ररूपनार सुगुरुछे त्यारबाद आ जिन प्रभाचार्य संदेह रहित थईने श्रीजिनदत्तसूरि पासे आव्या; तेथी ज्ञानरूप सूर्य सरखा श्रीजिनदत्तसूरिए कह्युं के मारी आगल तारूं चूडामणि निमित्त ज्ञान प्रकाश करवाना उपयोगमां नहीं आवे. श्रीजिनप्रभाचार्यें कह्युं भले उपयोगमां न आवो पण मारे तो विधि मार्ग साथेज प्रयोजन छे. ए प्रमाणे कहेवाथी श्रीजिनदत्तसूरिए श्रीजिनप्रभाचार्यने पुनर्दीक्षा आपी त्यारबाद सुगुरुनी आज्ञाथी विहार कर्यो तथा त्यांज रहेला अने अतिशय ज्ञानवाला एवा श्रीजिनदत्तसूरि पासे विमलचन्द्र गणि नामना चैत्यवासी मुनिए जयदेवाचार्य अने जिनप्रभाचार्यने वसति वास अंगीकार करेला सांभलीने पोतेपण वसतिवास अंगीकार

कर्यो, तथा तेजअवसरे जिनरक्षित अने शालीभद्रे पोतानी माता सहित दीक्षा अंगीकार करी. तथा स्थिरचंद्र अने वरदत्त नामना बे भाइओए दीक्षा अंगीकारकरी. तथा जयदत्त नामना मुनि मंत्रवादी हता, तेमना पूर्वजो मंत्रशक्तिवाला हता ते अविधिए साधेली दुष्ट देवीए तेओनो सर्वनो विनाश कर्यो अने आ जयदत्त तो नाशीने श्रीजिनदत्तसूरि पासे आव्यो, अने व्रत ग्रहण कर्युं. तेथी शक्तिना भंडार अने करुणाना भंडाड श्रीजिनदत्तसूरिए दीक्षा आपी. आ गुणचन्द्र प्रथम श्रावक हतो ते वखते यवनोए एना हाथनां लक्षण देखवाथी जाण्युं के आ मोटो भंडारी थशे एमजाणीने नाशी नजाय एवा भय थी सांकलवडे मजबूतरीते बांध्यो, बंधायला हाथवाला गुणचंद्रे भावपूर्वक लाखनवकार गण्या तेना प्रभावथी सांकल स्वतः त्रुटी गई तेथी रात्रे पाछले पहरे छानो निकली जईने कोईक वृद्धाना घरमां पेठो, तेणीये दयावडे कोठीमां नाख्यो, यवनोए शोध्या छतांपण न मल्यो ने त्यारबाद

रात्रे कोठीमांथी निकलीने स्वदेश आव्यो ए प्रमाणे तेने वैराग्य उत्पन्न थवाथी श्रीजिनदत्तसूरि पासे दीक्षा लीधी. तथा रामचन्द्र गणिए पोताना पुत्र जीवानंद सहित बीजा गच्छ करतां आगच्छनो धर्म सारो जाणीने श्रीजिनदत्तसूरिनी आज्ञा अंगीकार करी. तथा ब्रह्मचन्द्रगणिए दीक्षा अंगीकार करी ए सर्व साधुओमांथी जिनरक्षित-शीलभद्र-स्थिरचन्द्र अने वरदत्त विगेरे साधुओने अने श्रीमती जिनमति-अने पूर्ण श्री विगेरे साध्वीओने वृत्ति पंजिका टीका विगेरे लक्षण शास्त्र भणवाने धारानगरीमां मोकली, तेओए ते सर्व अभ्यास कर्यो. पोताना महर्धिक भक्तिवाला श्रावकोनी सहायवडे श्रीजिनदत्तसूरि ए रुद्रपल्लीमां विहार कर्यो. त्यां रस्तामां जतां एक गामने विषे एक श्रावक निरन्तर प्रचण्ड व्यन्तरवडे पीडा पामे छे, ते श्रावकना पुण्यथी श्रीजिनदत्तसूरि तेज गाममां उतर्या. अने ते श्रावके पोताना शरीरनुं स्वरूप जणाव्युं. श्रीजिनदत्तसूरिए जाण्युं के आ व्यन्तर मंत्र तंत्रथी साध्यथाय एवोनथी तथी गणधर सप्ततिका

करीने टीपणामां लखीं ते व्यन्तरेग्रहणकरेला श्रावकना हाथे टीपणुं आप्युं अने कह्युं के आ टिप्पण पर दृष्टि स्थापवी. ते श्रावके तेमज कर्युं तेटलामां ते व्यन्तर अत्यन्तपीडाथी खाटलासुधी आव्यो पण हृदयमां स्थापेली गणधर सप्ततिका ने देखवाना प्रभावथी शरीरमां न पेठो. बीजे दिवसे ते व्यंतर द्वारसुधी आव्यो अने त्रीजे दिवसेतो आव्योज नहिं, ने श्रावकपण निरोगी थयो. विशेष शुं कहेवुं! श्रीजिनदत्तसूरि रुद्रपल्लीमां आव्या अने त्यां प्रथम आवेला श्रीजिनशेखर उपाध्याय श्रावको सहित सामे आव्या अने १२० श्रावक कुटुम्बना आडम्बर सहित गाममां प्रवेशकर्यो त्यां श्रीजिनवल्लभसूरिना वचनने अनुसारे करावेला श्री ऋषभदेव अने पार्श्वनाथनां बे चैत्यनी प्रतिष्ठा करी. केटलाक श्रावको सम्यक्त्वधारी थया. अने केटलाक श्रावको देशविरतिवंत थया. अने देवपाल विगेरे केटलाक श्रावकोए दीक्षापण अंगीकार करी. ए प्रमाणे घणा श्रावकोना मन संतुष्ट करी अहिं श्रीजयदेवसूरिने मोकलीशुं एम कही पुनः पाश्च-

मदेश तरफ विहारकर्यो. त्यार वाद वागूजड देशे व्याघ्रपुरमां आव्या. त्यां रहेला श्रीजिनदत्त सूरिए श्रीजयदेवसूरिने शिक्षा आपी रुद्रपल्लीमां मोकल्या. त्यां रहेला श्रीजिनदत्तसूरिए श्रीजिन-वल्लभसूरिए प्ररूपेल श्री चैत्यगृहनी विधिरूप जे चरचरी नामनो ग्रंथ ते टीप्पनकमां लखीने मेहरवासल विगेरे श्रावकोने ज्ञानथवामाटे विक्र-मपुर नगरमां मोकली. त्यां देवधरना सान्हिय नामना पिताना घरपासे पोषधशाला छे, ते पोषधशालामां वेसीने श्रीजिनदत्तसूरिना भक्त श्रावकोए ते चर्चरीग्रंथनुं टीप्पणो छोड्युं, एट-लामां मदोन्मत्त देवधरे आवीने आ चर्चरीनुं टिप्पणछे एम कही झुंटावीलइ ते चर्चरीनुं टिप्प-ण फाडीनाख्युं. ते देवधरने कोई कही शकतु नथी. कारणके ते घणो उन्मत्त छे, तथी तेवात तेना पिता आगल कही, पिताए कह्युं आ अत्यं-त उद्धत छे, तोपण हुं एने निवारीश. श्रावके पुनः श्रीजिनदत्तसूरिने विनंती लखी अने तेमां टिप्पण फाडवानुं स्वरूप लखी जणाव्युं. सूरिए पण लेखनो भावार्थ विचारी पुनः वीजुं चर्चरी

नुं टिप्पण लखी मोकल्युं अने एक लेख मोकल्यो तेमां ए प्रमाणे लख्युं के देवधरनी उपर कोईए विपरीत न चिंतववुं, देवगुरुनी कृपाथी ए वणो श्रेष्ठ थशे. ते प्राप्त थयेला बीजा टिप्पणने नमस्कार करी श्रावकोए छोडयुं अने मननुं समाधान थयुं. पुनः देवधरे विचार्युं के जो में टिप्पण फाडीनाख्युं तो आचार्ये बीजुं टिप्पणपण मोकल्युं. तेथी एमा बीजुं कंई पण कारण होवुं जोइए, माटे एकान्ते छानो उभोरही तेमां शुं लख्युंछे ते जाणुं. तेथी श्रावको पोषधशालामां थापनाचार्यना आलामां टिप्पण मूकी द्वारबंद करी सर्व पोत पोताने घेर गया त्यारे पोताना घर उपरवाडामांथी प्रवेश करी बहारना कमाड बंध हता तो पण टिप्पण लई वांचवा लाग्यो, त्यारबाद जेम जेम—

जंहि उस्सुत्त जणक्कमु ४

१ जहिं उस्सुत्त जणक्कमु कुवि किर लोयणेहिं, किरंतउनविदीसइ सुविहिय लोयणीहिं, निसि नन्हाणु न पठन साहुसाहुणीहिं, निसि जुवइहिं ण पवेसु न नट्टु विलासणीहिं ॥ १ ॥

वलि आत्थिमियइ दिणयरि जहिं नवि जिणपुर ओ; दीसइ धरिउं न जुत्तइ जहिं जाणि तूरउ, जहिं रयणिहिं रह भमणु कयाइन कारियइ, लवुडारसुह जहिं पुरि सुविहित पमुहाइ ॥ २ ॥

जहिं सावय तंवोलु नभक्खइ हिलिंति नय, जहिंपाणहिय धरिंति न सावय सुद्धनय, जहिं भोय-णु नवि भक्खइ न अणुचिय भणओ, सहुपहराणि न पवेसु न पुट्ठओचुल्लुणओ ॥ ३ ॥

जहिं न हासु नवि हुट्टु न खिट्टु न रूस-णओ, कित्तिनिमित्तु न दिज्जइ जाहि धणु अप्पणओ किरहि जाहिंवहुआसायण जाहिंति नाम लियति, मिलिय केलिं कारिंति समाणु महिलियेहिं ॥ ४ ॥

इत्यादि पदोनो अर्थ विचार वांचेछ तेम तेम मनमां हर्ष उत्पन्न थायछे. अहो जिन चैत्यनो आविधि घणो श्रेष्ठ छे ! आने अनुसारे स्थालीपुलाक न्याये बीजुंपण सर्व श्रेष्ठ हशे एम संभवे छे. माटे आ मार्गनो मारे पण स्वीकार करवो पण ' केवल प्रतिमा ते अनायतन छे. अने स्त्री पूजा न करे ए वे सन्देह पूछवाना छे, एम विचारी टिप्पण तेवीज रीते मूकी श्रेष्ठ मार्ग

मां स्थापेल चित्तवालो देवधर पोताने घेर आव्यो. हवे अहिं वागड देशमां रहेला श्रीजिनदत्त सूरिए धारा नगरीमां जे साधु साधवीयोने पंजिका सिद्धांतलक्षण भणवासारु मोकल्यां हतां ते सर्व ने पाछा बोलाव्यां अने जैनशास्त्र संभलाव्यां (भणाव्या) त्यारबाद श्रीजीवदेव मुनिने आचार्य पदे स्थाप्या, तथा पंडित जिनरक्षित-पंडित शीलभद्र गणि-पंडित स्थिरचंद्र गणि-पंडित ब्रह्मचंद्रगणि-विमलचंद्रगणि-वरदत्तगणि-भुवनचं-द्रगणि-चरणागमगणि-रामचंद्रगणि-अने माणिभद्र गणिए १० मुनिने वाचनाचार्य पदवी आपी. तथा पांच साध्वीयों ने महत्तरा स्थापी तेनां नाम-श्रीमती महत्तरा-जिनमति महत्तरा-पूर्णश्री महत्तरा-जिनश्री महत्तरा-अने ज्ञानश्री महत्तरा. तथा हरिसिंहाचार्यना शिष्य मुनिचंद्र नामना उपाध्याय हता तेमणे श्रीजिनदत्त सूरिने प्रार्थना करी हती के कोईक मारो योग्य शिष्य आपनी पासे आवेतो तेने आचार्य पद आपवुं श्रीजिनदत्त सूरिए एवात अंगीकार करी. तेथीते मुनिचन्द्र उपाध्यायनो शिष्य जयसिंह नामे हतो तेने

आचार्य पद आप्युं. अने तेमना पण जयचन्द्र नामना शिष्यने पाटणमां समवसरणनी रचना वखते आचार्य पद आप्युं ए बन्नेने प्रथमथीज कह्युं हतुंके हवेथी तमारे अमारा कह्या प्रमाणे वर्तवुं. ए प्रमाणे पद स्थापना करी तेओने उपदेश आपी सर्वने विहार करवाना स्थान दर्शावी सूरिश्रीए पोते अजमेर तरफ विहार कर्यो. सूरिश्रीए त्यां उपदेशकर्यो श्रावकोयें२ चैत्यग्रह अने अंबिका देवीनुं स्थान ए चार तैयार कराव्यां. त्यारबाद श्रीजिनदत्त सूरिए श्रेष्ठ मुहूर्तमां जिन मंदिरोमां मूलनिवेशने विषे वासक्षेप नाख्यो, त्यारबाद श्रावकोए शिखरादिक स्थाप्यां. हवे अहिं विक्रमपुर नगरमां श्रीजिनदत्त सूरिए मोकलेल चर्चरी टिप्पणने देखवाथी सम्यक् दर्शन प्राप्त करावनार एवा विधि बोधवाला संखीयापुत्र देवधरे पोताना १५ कुटुम्बनो श्रावक समुदाय करीने पोताना पिता अने आसदेव विगेरे ने कह्युं के हे श्रावको! मारे श्री जिनदत्त सूरीने विहार करावी अहिं लाववा छे, अने तेमनी आगल कोई कंई पण बोली शकतुं नथी. ए प्रमाणे श्रावकना समुदाय

सहित निकलेलो देवधर नागपुर नगरमां आव्यो, ते वखते त्यां देवाचार्य विशेष प्रसिद्ध छे, अने विक्रमपुरथी आवेलो देवधर पण अति प्रसिद्धछे. तेणेते वात सांभली. त्यारबाद देवमंदिरमां व्याख्यान अवसरे श्री देवाचार्य बेठाछे, देवधर पण पगधोवादि पवित्रता करीने देवमंदिरे आव्यो, अने देववंदनादि करी देवाचार्यने नमस्कार कर्यो. देवाचार्ये पण कुशलवार्ता पूछी. त्यारबाद प्रथम देवधरेज देवाचार्यने पूछ्युं के हे भगवान् । रात्रे मंदिरमां स्त्रीप्रवेश-प्रतिष्ठा-बलिविधि अने नंदी विगेरे युक्त छे के नहीं. । ते सांभली देवाचार्य विचारे छे के कोई पण रीते श्रीजिनदत्त आचार्यनो मंत्र आ देवधरना कानमां प्रविष्ट थयो छे. ए हेतुथी तेना धर्मसंस्कार वालो होय तेम जणाय छे. एम विचारी कह्युं हे श्रावक ! रात्रे स्त्री प्रवेशादि युक्त नथी. देवधरे कह्युं तो निवारण केम करता नथी ? देवाचार्ये कह्युं लाखो-गमे लोकमां कोने निषेध करी शकीए ! देवधरे कह्युं हे भगवन् । जे देवमंदिरमां जिनेश्वरनी आज्ञा प्रवर्तती नथी अर्थात् कहेवानुं

तात्पर्य ए छे के लोक समुदाय जे मंदिरमां जिनाज्ञा रहित पणे पोतानी इच्छा माफक वर्ते छे ते जिनग्रह अथवा जनगृह कहेवाय एम आप प्रतिपादन करो. आचार्ये कह्युं जेमंदिरमा जिनेश्वर भगवान साक्षात बेठेला देखाय छे ते जनगृह केम कहेवाय? देवधरे कह्युं हे आचार्य! अमेतो प्रथम मूर्ख छीए। परन्तु एटलुंतो अमो पण जाणीए छीए के जे स्थाने जेनी आज्ञा न वर्ते ते स्थान तेनुं न कहेवाय एप्रमाणे पाषाण रूप जिनेश्वरनी प्रतिमा मात्रना स्थापन वडे अने भगवन्तनी आज्ञा रहित स्वेच्छाए प्रवर्ततांते जिनमंदिर केम कहेवाय परन्तु ए प्रमाणे जाणवा छतांपण आप प्रवाह मार्गने रोकी शकता नथी. परन्तु उलटा प्रवाह मार्गनुं पोषण करोछो तेथी (आटली वात कहवामाटे) में आपने वंदना करी अने एटली वात जणावी अने ज्यां श्रीतीर्थंकर भगवाननी आज्ञा प्रवर्त्ते छे तेज मार्ग मारे अंगीकार करवो छे. एम कही देवधर त्यांथी उठयो. साथे लावेला पोताना कुटुंबी श्रावकोने पण विधि संबंधी मार्गमां स्थिरता थई. देवधर

श्रावको सहित अजमेर पहोच्यो. अने श्रीजिनदत्तसूरिने उत्तम भावथी वंदना करी. श्रीजिनदत्त सूरिए पण तेनो अभिप्राय जाणवा पूर्वक देशना आपी तेथी देवधर संदेहरहित थयो. आचार्य ने श्रीविक्रमपुर नगरतरफ विहार करवानी विनंती करी, तेथी त्यां मंदिर-प्रतिमा अंबिका अने गणधरादिकनी प्रतीष्ठा मोटा आडंबर पूर्वककरी देवधरनी साथे श्रीविक्रमपुर नगरे पधार्या. त्यां घणा लोकने प्रतिबोध कर्यो, अने श्रीमहावीर स्वामिनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी त्यां उच्चामां जतां ने अन्तराय करनारा शत्रुओ हता तेओने पण प्रतिबोध कर्यो, तो पछी उच्चामां रहेला लोक ने प्रतिबोध थाय तेमां शुंनवाई! त्यारबाद नरवदातीरे विहार कर्यो त्यारबाद त्रिभुवन गिरिमां विहार कर्यो त्यां कुमारपाल नामना राजाने प्रतिबोधकर्यो अने त्यां घणा मुनिओनो विहारकराव्यो अने भगवान श्रीशान्तिनाथ देवनी प्रतिष्ठाकरी तथा उज्जयनी नगरीमां विहार करवाथी श्रीजिनदत्त सूरिए सर्व योगिनीओने प्रतिबोध कर्यो.

२. आम्बाने छापेली प्रतमां लखेली संस्कृत स्फुट नोट नो भावार्थ आ प्रमाणे छे—

एकवार श्रीजिनदत्तसूरि अनुक्रमे विहार करता चित्रोडमां पधार्या त्यां श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथ स्वामिना (मंदिरना) स्थंभमांथी पोतानी विद्याना विनाशकनुं विद्याओ सांचवानुं पुस्तक प्रगट कर्युं; त्यांथी विहारकरी उज्जयिनीमां गया, त्यां पण श्रीमहाकाल मंदिरना स्तंभमांथी श्रीसिद्धसेन दिवाकरनुं विद्यासाधननुं पुस्तक ग्रहण कर्युं, अने ह्रींकार मंत्रनो ३॥ क्रोड जापकर्यो, तथा ग्यारगामनां ६४ जोगणी ओने वशकरी, ते जोगणीओए ७ वरदान आप्यां. एक वखते वटनगर जईने एक गाय मरण पामी हती तेने व्यंतरना प्रयोग वडे संजीवन करी. पुनः भरुयच्छतीर्थ (भरूच) प्रवेश महोत्सव साथे कोईक मुगल पुत्र मरण पाम्यो, तेने व्यन्तर प्रयोग वडे सजीवन करी कह्युं के ज्यां सुधीआ पुत्र अभक्ष्य चीज न खाय त्यां सुधी एनुं आयुष्य छे. तथा अंबड श्रावके अंबिकानुं आराधन कर्युं ते अंबिका ज्यारे तुष्ट थई त्यारे अंबड श्रावके कह्युं हे देवी ! आकालमां युगप्रधान कोणछे ? ते

कह्यो ते देवीए एक श्लोक लखी मुक्यो ने कह्युं के जे आ श्लोक वांचे ते युगप्रधानजाणवो. तथा श्रीजिनदत्त सूरिनी आज्ञावडे शिष्य ते वात कही. विशेष शुं कहेवु ! जेने सर्व देवो सेवक छे, अने जेना चरण कमलमां आलोटे छे तेमरूदेशमां कल्प-वृक्ष समान श्रीजिनदत्तसूरि जयवंत वर्तो.

मंगलाचरण.



॥ श्रेयोमार्गस्य वक्तारं, छेत्तारं कर्म शत्रुणां ॥ वेत्तारं विश्वतत्वानां, वन्देवीरं जगत्प्रभुम् ॥१॥ ते संतु संतु संतुः, संततम-तयोऽपरात्महित निरताः ॥ विमली कुरुते कुवलय, मुदित श्रीर्यद्यशस्तोमः ॥ २ ॥ केचित्परात्मसंवि, द्विकला विकलाः कलौ खलायंते ॥ तेभ्यो नकापि भीतिः संतः संतोषभाजश्चेत् ॥ ३ ॥ नमः ज्ञानादि-चतुष्केभ्यः, नमः पदस्थापदस्थलोकेसर्व-मुनिवरेभ्यः । नमोस्तु श्रीसंघाय तीर्थ-रूपाय, नमोस्तु भगवते श्रीपार्श्वनाथाय, नमः वर्त्तमान भट्टारक धर्माचार्येभ्यः । दुर्लभबोधिदायकेभ्यः नमोसुयस्स नमो बंभीए लिबीए, नमोस्तु द्रव्यभावादि भेद-भिन्नाय सर्वश्रुताय, ॐ नमो सुयदेवयाए भगवईए, नाणावरणीयकम्मसंघायं, तेसिं-खवेउ अ सययं, जेसिंसुयसायरे भत्ति॥४॥

॥ संपूर्ण जगतनेविषे प्रसिद्ध थयेला अने वडा दादासाहेब ना नामथी ओलखावता एहवा अने ५२ जातिना क्षेत्रपाल,१०८जातिना भैरव, ६४ योगिनी जाति अनेक है, अने ५२ वीर, धरणेन्द्रादि ६० सूरिमंत्राधिष्ठायक, ५ वीर खोडीया क्षेत्रपाल काला गोरादि भैरव, असूरादि देवजाति अनेक है, अनेक माणिभद्रादि यक्षजाति, विमलेश्वरदेव । ४ महावीर, इत्यादि ४ निकायके विषे रहेनारा १० जातिना अनेक देव देवीयोंयेकरी सेवित अनेक विद्यासिद्धओना भंडार अनेक प्रकारथी जैन कोमनी वृद्धि करनार, अने अनेक प्रकारथी भव्योंना मनोरथ पूर्ण करनार, अनेक प्रकारथी श्रीवीरशासनोन्नति करणहार रागद्वेष जीतनार श्रुतज्ञानना सागर त्रणजगतने पूजनीक त्रणजगतना गुरु मोक्षना आपनार अने युगप्रधान पदकरी विभूषित, एकावतारी एहवा महान् समर्थ पुरुष श्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वरजी नो रचेलो १५० गाथानो गणधरसार्धशतक नामनो महान प्रभावशाली प्रकरणछे, तेहनी बे वृत्तियो छे,

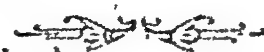
तेमां लघुवृत्ति सत्यराजगणिनी रचेली छे, अने वृहद्वृत्ति स्याद्वादमार्तंड. वादी कौशिकादित्य श्रीमज्जिनचंद्रसूरिपट्टालंकार षडत्रिंशत् (३६) वादियोने जीतनारा श्रीजिनपतिसूरिजी ना शिष्य प्रवर श्रीसुमतिगणिजीये रची छे, आवृत्तिनो प्रमाण १२०५० हज्जार छे। अने षटस्थानक प्रकरण सटीक, पंचलिंगी प्रकरण सटीक, संघपटक प्रकरण सटीक, संवेगरंगशाला प्रकरण, आ प्रकरण नो प्रमाण १८००० हज्जार कहेवाय छे. हमणां, उपलब्धतो १०००० प्रमाण थाय छे, संदेह दोलावली प्रकरण बृहत् वृत्ति, तथा लघुवृत्ति. चैत्यवंदन कुळकवृत्ति, षष्टि शतकवृत्ति, धर्मव्यवस्था प्रकरण उत्सूत्र पदोदघट्टनकुलवृत्ति, चैत्यवंदन कुलक वृत्ति, षष्टिशतकवृत्ति, धर्मव्यवस्था प्रकरण, उत्सूत्रपदोद्घट्टनकुलकवृत्ति विधिप्रपा, आचार दिनकरादिक ग्रंथोविधिवादनाछे, एग्रंथो नो विशेष पठन पाठन साम्नाय गुरुमुखे करी होवाथीज विशेषलाभ थाय एमछे, त्यारेज मुनियो विधि वाद शास्त्रना अधिकारी कहेवाय छे, माटेज विधिवाद शास्त्रना अधिकारी श्रीचा-

रित्र सिंहगणिजी गणधर शतक बृहत्वृत्तिथकी उद्धरित चरित्र प्रकरणमां श्रीमान् जिनचंद्रसूरि- जी ना चरित्रनी सूचना आपी छे ते आ प्रमाणे तथा पोताना ज्ञान बलवडे पोताना पदनो उद्धार करनार रासल श्रावक नो पुत्र छे पृथ्वी मंडल ना दाम जानेल छे जेणे, आलखाणथी रासल अने देल्हण देवीना पुत्र अने मणिमंडितभाल- स्थलवाला अने दादासाहेब नामथी प्रसिद्ध थानार श्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वरना पट्टालंकार श्री मज्जिनचंद्रसूरिश्वर नामना बीजा दादा साहेब नो लेश मात्र संक्षिप्त चरित्र कहीस.



मणिमंडित भालस्थल श्रीमज्जिनचंद्रसूरिजी

बीजा दादा साहेबनुं चरित्र.



आज जंबुद्वीपने विषे भरत नामनो प्रधान क्षेत्रछे अने ते भरतना बेखंड छे, एकतो दक्षणार्ध भरत अने बीजो उत्तरार्ध भरत एम बे खंड थाय छे, तेमां दक्षणार्ध भरतखंड ना मध्य भागने विषे प्रधान मरु नामनो देश छे, ते देशने विषे सर्वनगरना गुणोकरी युक्त, विक्रमपुर नामे प्रधान नगर छे, तेने विषे सर्व लोकमान्य अने राजमान्य श्रावक ना गुणो ए करी युक्त अने निरंतर श्रावक संबंधि षट्कर्म करवावालो उभयकाल आवश्यक विधि साचनार अने सामायक पौषधादिक धर्म कृत्य करवामां तत्पर षट् पर्व तिथ्यादिक यथाशक्ति साचवनार एवो महा भाग्यशाली, शाह श्री रासल नामनो शुद्ध श्रावक वसतो हतो, ते रासल साहने पूर्वोक्त श्रावकना गुणोंयेकरी युक्त, रुप सौभाग्यादिक

युगप्रधान

मणिमंडित भालस्थल श्रीमज्जिनचंद्रसूरीश्वरजी महाराज.



जन्म संवंतं-११९१. दीक्षा संवत १२०६. आचार्यपद
सवत १२११. स्वर्ग संवत १२२३.

सर्व प्रधान स्त्रियोंना गुणोंयेकरी अलंकृत, अने पतिव्रता शीलगुणे करी विराजमान एवी देल्हण देवी नाम नी प्रधान स्त्री हती, ए बनेजण विचक्षण अने अवसरज्ञ छे, माटे यथाअवसर आलोक संबंधि परलोक संबंधि कृत्योने करता समाधि पूर्वक सुखथी पोताना काल गमावेछे ते अवसवर मां देल्हण देवीए कांइसुती कांइ जागति आधी रातने समे १४ स्वप्नोंने अंदर नो एक महास्वप्नो जोइने जागी त्यार पछी ते स्वप्न पोताना पतिने कह्यो त्यारे ते रासल सहु हर्षित थइने केहवालाग्यो के हे प्रिये अ महास्वप्न छे महाफल नो देनार छे माटे आ स्वप्नने प्रभावथी महाप्रभावशाली सुभलक्षणोंयेकरी युक्त एवो ताहेरे पुत्र थसे अने ते बालक विज्ञान सर्व कलामां निपुणथसे अने १४ विद्यानो पारंगामी थसे आपणा कुलनी सोभाकारी थसे, पोताना आत्मानो पण निस्तारणकरसे, आलोकने परलोकने विषे यशपामसे, एवो गुणवान पुत्ररत्न थसे, माटे एहताहरो स्वप्न बहुज कल्याणकारी श्रेष्ट छे, आ प्रमाणे फल श्रवण करी बहुज

करी आचार्य श्रीनी देशनानी प्रशंसा करी यथा-शक्ति व्रतादिक ग्रहण करी ते महोटी परषदा जे दिशाथी आवी हती ते दिशा तरफ पाछीगई त्यार पछी ते कुमार ना माता पिता ते देशना सांभली विशेष प्रकारे प्रसन्न थई ने प्रदक्षणा करी वंदना नमस्कार करी आचार्यश्रीनी धर्म देशना शक्तिनो महिमा वर्णन करे छे ते अवसरे आचार्य श्री कुमर नो अभिप्राय जाणी ते कुमर ना माता पिता प्रति आप्रमाणे कह्यो के हे धर्म-श्रद्धालुओ विशेष धर्ममा प्रवृत्ति करवामां कोइनें पण अंतराय आपवी नहिं एहवां श्रीगुरुना वचन सांभली तहत्तकही नियमलीधो त्यार पछी श्री गुरुनी धर्म देशना सांभली प्रतिबोधपामी परम वैराग्य भावने प्राप्त थयो, अने आचार्य श्री पण ते कुमर नें जोइ विचार करेछे के, अहो एकुमर विशेष पुण्य प्रकृतिवालो देखाय छे, जे नो ललाटभाग नरमणिए मंडित छे, अने चंद्रनी पेरे सोम्याकार वालो छे, लक्षणो अने तेजकरी सूर्य समान छे, अने बीजापण घणा शुभ चिह्नो एना शरीरमां जोवायछे माटे एकुमर कोइ पण

प्रकारे चारित्र ने ग्रहण करे तो शासननी उन्नति करवा वालो एहवो आ आचार्य थाय अने उत्कृष्ट कल्याणनो भागी थाय आम आचार्य श्रीचिंतवे, आटलामां तो ते चंद्रकुमार परम वैराग्य भावनाये युक्त संसारिकसुखांने दुख-रूप मानतो धनादिक परिग्रहने तृणपाषाण सम गणतो संसारने असार संध्यारंग सम जाणतो आरंभने नरकनो कारण मानतो कायाने काचा कुंभ समान गणतो इंद्रियोंना विषयने दुख रूप मानतो धर्म सिवाय सर्व पदार्थोंने विषे निष्पृह एवो शीघ्र उठीने त्रण प्रदक्षणा करी वंदना नमस्कार करी आचार्यश्रीनी धर्मदेशनानी प्रशंसा करी माता पिताने नमस्कार करी रजा मेलवी आचार्यश्री प्रति आप्रमाणे कह्यो के हे भगवन् आपसाहेबनी पासे म्हारी दिक्षा लेवानी इच्छा छे आप साहेब कृपाकरी आ संसारथी महारो उद्धार करो त्यारपछी विवेकी तत्वज्ञ तेना मातापिता ये पण भावी भाव जाणी धर्मांतरायना भयने लीधे सत्व अवलंबन करी चित्तथिर करी कुमर अवस्थामां रहेलो पोतानो पुत्र श्रीचंद्रकुमार

तेहने आचार्यश्रीने दीक्षा, लेवानी, रजा आपी महा महोत्सव पूर्वक संवत् १२०३ सो मां सुभ मुहूर्त्ते श्रीचंद्रकुमारने आचार्यश्रीये विधि पूर्वक दीक्षा आपी कृतार्थ करयो त्यार पछी ते श्री चंद्रमुनिः पांच समिति तीन गुप्तिये करी युक्त मुनि थयो त्यार पछी तेना मातापिता आचार्य श्रीने तथा श्रीचंद्रमुनिने वंदना नमस्कार करी पोताने घेर गया त्यार पछी केटलोक काल त्यांरही विक्रमपुरथी आचार्यश्रीये विहारकरयो अने ते श्रीचंद्रमुनिये पण श्रीगुरुने साथ विहार करयो अने ते श्रीचंद्रमुनि आचार्यश्री ने साथ विहार करतां सर्व साध्वाचार सामायकादि ११ अंग १२ उपांग १० पयन्ना ६ छेद ४ मूलनंदी अनुयोग द्वारादि आगमो अने अनेक विधिवाद विषायि प्रकरण वगेरे शास्त्रो गुरु प्रतापे अने पोतानी बुद्धिवडे भणी गीतार्थ पणो पाम्यो अने क्रमथी गणी आदिपदो पण पाम्या, त्यार पछी फरी १२११ नी सालमा विहार करतां युगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वरजी विक्रमपुरमां पधारया श्रीसंघे महा महोत्सवपूर्वक नगरमां



जन्म संवत ११९१ दीक्षा संवत १२०६. आचार्यपद संवत १२११. स्वर्ग संवत १२२३.

प्रवेश कराव्यो अने ते समये श्रीसंघ घणो हर्ष पाम्यो हतो तेथी श्रीसंघे श्रीचंद्रगणि ने आचार्य पदे स्थापवा भणी आग्रहकरयो अने श्रीचंद्रगणि ना पिता रासल साहये आचार्य पदोत्सव अने नंदीमहोत्सव करवानो आग्रह करयो त्यारपछी श्रीसंघादिकनो अत्यंत आग्रह अने आचार्यपद स्थापवानो अवसर जाणी श्रीचंद्रगणिने आचार्य पद आपवानो नकी करयो ते पछी संवत् १२११ ना वेशाख सुद ५ ना दिवसे विक्रमपुर ने विषे श्रीरासलसाहकृत नंदीमहोत्सव सहित युगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरिजीये खास पोताने हाथेकरी श्रीचंद्रगणिजीने आचार्य पदमां स्थापन करया आवा श्रीमज्जिनचंद्रसूरीश्वर नरमणि मंडित भालस्थल अने खोडीया क्षेत्रपालादिक करी सेवित थया अथ अन्यदा श्रीगुरुमहाराज गुर्जरदेश प्रति जाताहतां आसमये श्रीमाल गोत्रीय मदनपाल श्रीचंद्रादि सद्‌गृहस्थोंना विशेष आग्रह करवाथी लाभजाणी श्रीगुरुमहाराज दिल्ली नगर पधारया अने त्यां बादशाह ने अनेक चमत्कार देखाडीने पोतानो भक्तिवंत

कर्यो अने आचार्यश्री कहे तेम बादशाह करतो हतो आथी शत्रुंजयादि तीर्थोना अनेक पट्टा परवाना तांम्रपत्रादिक करी आप्या हता अने अनेक बीजापण धर्मना उद्योतकारी धर्मकृत्यो आचार्यश्रीनी आज्ञाथी बादशाहे प्रसन्नपणाथी कर्या हता, पछी अेकदा श्रीगुरुमहाराज पोतानी अंत अवस्था जाणीने मदनपालने कह्युंके महारे मस्तकमां मणिछे, तेहने अग्निसंस्कार समयमां दूधथी भरेलो पात्र राखीने तमे ग्रहण करजो, मार्गमां विश्राम लेवामाटे सिढीने राखसो नहीं, मुहपत्ति अने रजोहरणने जलावसो नहीं, एम कहीने महाराज सर्वायु २६ वर्षनो पालीने संवत १२२३ ना भादवा वद १४ चतुर्दशीने दिवसे अणशण करीने स्वर्ग थया, त्यारे सर्व श्रावक मलीने अग्निसंस्कार करवाने माटे जातां ते वखते शहर बजारमां माणकचोक सुधी आव्या आटलामां कोई कारण सर पहिली कहेला श्री गुरुना वचन भुलीने विश्रामने माटे सिढीने हेठलराखीने विश्रामो लीधो, अने मणि ग्रहण करवाने माटे दुग्धपात्र पण राख्यो नहीं, परन्तु

त्यां एक विद्यावान योगी मणि ग्रहण करवानी इच्छा थी दुग्धपात्र भरीने एकांते बेसी रह्यो. पछी फरी घणा यत्न करीने सिढीने उठाववा लाग्या तोपण ते वैकुंठी ऊठी नहीं, त्यारे सर्व नगरने विषे आ वात फेलाणी अनुक्रमथी बादशाहे पण एवात सांभली त्यारे त्यां खुद बादशाह आव्यो । अने घणा उठाववाना ऊपाय कर्‌या, परन्तु ते सिढी त्यांथी जरापण सरकी नहीं. त्यारे बादशाह बोल्यो के, सत्य है यह देव, यह जैन का सेवडा जीता भी चमत्कारी था; और मराहुवा भी पीर हुवा है, इसका स्थान इहांहिज होवो, त्यारे श्रावकोंयें त्यांज अग्नि संस्कार कर्‌या, ते अवसरे श्रीगुरुनें मस्तक थी मणि फडाक शब्द करीने योगीनों राखेलो जे दुग्धपात्र तेमां पडी, योगी ते मणिने लइ पोताने ठकाणें गयो, त्यारे मदनपाले कह्युंके श्रीगुरूमाहाराज मने प्रथम कह्यो हतुं परन्तु हु जलदीना सबबथी भूलीगयो त्यारे सर्व साधु श्रावकोंये तेहने उलंभोदीयो अनेते अग्निसंस्कार स्थानके बीजा दादासाहेब श्रीमज्जिनचन्द्रसूरी-

श्ररनी छतरी बंधाई बादशाह प्रमुख सर्व लोकों नें बहुत बहुमान करा, त्यारपछी सर्व लोको त्यां जात देवालाग्या अने ते स्थानके हजी सुधी यात्रियों थी पूजा थाय छे, अने ते स्थानकने हिन्दु लोको दादासाहेब ना नामथी पूजे छे। अने मुसलमान लोको दादावीर करीने माने पूजे छे। हमणा पण त्यां एवी स्थिति वर्त्ते छे आवा प्रभावीक श्रीगुरूमहाराज बीजा दा= दासाहेब ना नामथी जगत ने विषे प्रसिद्ध थया, आ:थी चोथा पाटना विषे अतिशयवंत श्रीमाज्जिनचंद्रसुरी एवो नाम तमारी पाट परंपरामां आपवो आप्रमाणे आचार्यश्रीने पद्मावतीए प्रसन्न थइने वर आप्यो हतो तेथीज हालमा पण चालती परम्परामां अपाय छे" आमहा प्रभाविक आचार्यसूरिपद प्राप्त थइने १२ वर्ष सुधी सुहस्तिपणें विहारकरी श्रीवीरशासननी अस्ख- लितपणें प्रभावना करीहती अेमना प्रथम थयेला श्रीमज्जिनचंद्रसूरिजीये, अने आ नरम- णिमंडित भालस्थल श्रीमाज्जिनचंद्रसूरिजीये (५००००) पचास हजार संख्या प्रमाणे नवीन

प्रतिबोधिने श्रीमाल संज्ञक जैन कोमने उत्पन्न करी हती" आवा अनेक उपगार करनारा शासनोन्नतिकारक श्रीजिनचंद्रसूरि थया' आ आचार्य नें समयमां नागेन्द्रगच्छमां यशोभद्रसूरि 'जिनदत्तसूरि ' प्रद्युम्नसूरि ' श्रीदेवचंसूरिना शिष्य श्री हेमचंद्रसूरि थया अने आ आचार्य ३॥ क्रोड ग्रंथ कर्त्ता अने कलिकाल सर्वज्ञ विरुदधारक पाटणना कुमारपाल राजाने प्रतिबोधनार अेज आचर्य छे आमने सूरिपद संवत् ११६६ संवत् १२२९ स्वर्ग अेमनो विशेष अधिकार कुमारपाल चरित्र थकी जाणवो ग्रंथ गौरवना भय थी लख्यो नथी " श्रीहेमचंद्रसूरिजी ने कुमारपाल राजायें पोतानों संवत् प्रवर्त्तावया माटे घणी विनंती करीहती त्यारे श्रीहेमचंद्रसूरिजी यें कह्यो के हे राजन् श्रीउद्योतनसूरिजीना जेष्ठांतेवासी अने चोरासी गछोमां मुख्य पट्ट परम्परा ने धारनार आवुतीर्थ प्रगट करनार पणमास आंबिल करनार अने विमलशाह मंत्रीना प्रतिबोधक अने विमल वसहीना प्रतिष्ठा करनार अने धरणेन्द्र द्वारा श्रीसूरिमन्त्रनें शुद्ध कराव-

नार श्रीवर्द्धमानसूरि थया हता तमना बे शिष्यो हता एकतो युगप्रधानपद अने खरतर बिरुदने धारण करनार श्रीमज्जिनेश्वराचार्य अने बीजा पंडित शिरोमाणि श्रीमद्बुद्धिसागराचार्य थया तेमनी संतान परंपरामां युगप्रधानपद धारक अने अनेक देव समूहे करी सेवित श्रीमज्जिनदत्तसूरि थया तेमने पासे आम्नाय विद्यापुस्तक हती अने सिद्धसेनदिवाकर हस्तगत विद्या आम्नाय पुस्तक पण तेमनी पासे हती, ते विद्या आम्नाय पुस्तक मां स्वर्णसिद्धि आदि अनेक विद्याओ छे, ते पुस्तक खरतर संघ पासे छे; जो ते पुस्तक मलेतो हे राजन आतमारो मनोरथ थाय अन्यथा नहिं, अे सांभली श्रीकुमारपाल महाराजे व्यापार निमित्ते पोतानी राजधानी विषे आवेला श्रीखरतर संघना मुख्य २ आगेवान श्रावकोंने बेसाडी मूक्या, अने कहयुं के तमारी पासे विद्याम्नाय पुस्पक छे, ते पुस्तक तमे मने लावी आपसो त्यारे तमने मूकसुं अने ज्यांसुधि मने तेपुस्तक नहिं मले त्यां सुधि तमने आंइथी जावादेसुं नहिं अेम सांभली श्रावकों ये आपसमा विचारकरी,

श्रीखरतर श्रावक संघे युगप्रधान अने श्रीमज्जि-नदत्तसूरीश्वरना पौत्र श्रीमज्जिनपतिसूरिजी महा-राज साहेबने वीनापूर्वक पत्र लखी मोकल्यो त्यारे ते पत्र वाची संघनो कार्य जाणी, युगप्र-धान पदभृत् श्रीमज्जिनपतिसूरीश्वरे ते विद्याम्नाय पुस्तक पाटन श्रीसंघने मोकली, श्रीसंघे पण ते पुस्तक श्रीकुमारपाल माहाराज ने हाथमां आपी त्यार पछी ते खरतर श्रावकोने छोडी मूक्या, अने हर्षयुक्त ते पुस्तक लइने श्रीकुमारपाल माहाराज श्रीहेमचंद्रसूरिजीने पासेगया, अने ते पुस्तक श्रीहेमचंद्रसूरिजीना हाथमां आपी त्यारे श्रीहेमचंद्रसूरीजी ते पुस्तकने पोताना हाथ-मांलइ अने जोवालागया अने ते पुस्तक जोतां ते पुस्तकने ऊपर लखेला अक्षर दीठामां आव्या, नखोलीअव्वा नवाचिअव्वा आपुस्तक खोलवी पण नहिं, अने वाचवी पण नहिं, पुस्तकने उपर आवा अक्षरो जोइने. श्रीमान् हेमचंद्रसूरि-जी बोल्या के आवा प्रतिष्टित आचार्यना हाथना लखेला अक्षरो छे अने खोलवानी अने वाच-वानी ना लखी छे माटे महाराथीतो आचार्यना

वचन उलंघन करी खोलाय तेम नथी, एम कही ते पुस्तक राखी दीधी, त्यारे श्रीहेमचंद्रसूरिजी नी बेन साध्वी हेमश्री नामनी त्यांबेठेली हती, ते बोली के आ आचार्य तो खरतर गच्छमां थयेला छे माटे आपण ने शुं हरकत छे, लावो मने आपो हूं खोलीस, एम कही ते पुस्तक खोलवा मांडी तेटलामांतो साध्वीना बे नेत्र नीकली पड्या छे, आ अनर्थ थयेलो जोइने श्रीकुमारपाल महाराजे ते पुस्तक लइने पोताना सरस्वती भंडार मां मूक्यो त्यार पछी तेजरात्रिये, भंडारमां अग्निलागो भंडार बल्यो पुस्तक पोताने स्थानके गयो, जांथी आव्यो त्यांगयो, भाग्यं फलति सर्वत्र नच विद्या नच पौरुषं समुद्र मथनाल्लेभे हरे लक्ष्मीः हरस्य विषम्.

श्रीकुमारपाल महाराजे पोतानो संवत् प्रवर्त्तावबामाटे साहस कर्यो परन्तु गुरुदत्ताम्नाय वगर कांइ पण थयो नहीं, प्रत्युतः केवलकष्ट उठाववो पड्यो, ते आप्रमाणे साध्वीनी आंखो नाशपामी अने सरस्वती भांडागार नाशपाम्यो, कार्य थयो नहीं अने गुरु अने राजाने कुलमां

बालचंद्र अजयपाल कुलांगर थया तेथी नरम-
णिमंडित भालस्थल अने महाप्रभावक समर्थ
श्रीहेमचंद्रसूरिजी नो तथा राजा कुमारपालनो
खास संतति पाट परम्परा रूप वंश तथा धर्म
अने कीर्तिना सर्व आडठाणो प्रायेंकरी नाश-
पाम्याहतां, आ हकीगत श्रीजिनहर्षगणि कृत रास
थी विस्तारे जाणी लेवी अने तेज समयमां युग-
प्रधानपदालंकृत श्रीमज्जिनपतिसूरिजी विचरता
हतां अने उपरनी कथामां पण श्रीम-
ज्जिनपतिसूरिश्वरनो नाम ग्रहण करेलो छे माटे
ते श्रीनो पण आइ संक्षिप्त वृत्तान्त आपुं छुं ते
आ प्रमाणे नरमणि मंडित भालस्थल श्रीमज्जि-
नचंद्रसूरीश्वरने ४६ पाटे श्रीमज्जिनपतिसूरी-
श्वर थया ते मालूगोत्रीय साह यशोवर्धन पिता
सूहवदेवी माता, संवत् १२०५ चैत्रवद ८ ने
दिवश मूल नक्षत्रे जन्म हूवा. संवत् १२१८
फागुण वद ८ ने दिवस दिल्ली नगरने विषे
दिक्षा, संवत् १२२३ मां कार्तिक सुदि १३ ने
दिवस श्रीजयदेवाचार्यजीयें आचार्यपदमां
स्थापन कर्या, पछी विहार करता श्रीमज्जिन-

पतिसूरीश्वर एकदा वब्बेर नामना पत्तन ने विषे पधार्या, त्यां ३६ वादीयोने जीतीने घणी जिन शासननी प्रभावना करी हती, तथा फरी एकदा आसापुरमां श्रीमालीज्ञातीय हाजीसाहनें देरासर बनाव्यो तेहनी प्रतिष्ठाने अवसरमां मणिग्रहण करनारे योगीये जिनप्रतिमाने स्तंभन करी हती, त्यारे चिंतासहित श्रीजिनपतिसूरीश्वरें पोताना गुरु महाराजनो आराधन कर्यो त्यारे श्रीजिनचंद्रसूरीश्वर महाराज अर्थात् बीजादादासाहेब महाराजे प्रगट थइने, वासचूर्ण आप्यो पछी प्रभात समय श्रीमज्जिनपतिसूरीश्वर महाराजें ते जिनप्रतिमा उपर वासचूर्ण करयो, त्यारे ते जिनप्रतिमा शीघ्र उठी त्यारे ते योगीये मणि पाछी आपी त्यारे श्रीमज्जिनपतिसूरीश्वर महाराजनो घणो घणो महिमा थयो, तथा फरी एकदा श्री गुरुमहाराज अजमेर नगरमां चोमासि रह्या त्यारे त्यां रहवावाला रामदेवादिक श्रावकों ने आगल खेडागामवासी छाजेड गोत्रीय मंत्री उद्धरण साहनी प्रशंसा करे, एकदा रामदेव श्रावक मंत्रीउधरण थी जइने मल्या, त्यारे ते

मंत्रीये रामदेव श्रावक प्रते घणा आदर सहित पोताने घरे लावीने विधि थी भोजन करावीनें भक्तिकरी, ते अवसरमां मंत्रीनी स्त्री देवमंदिर मां देववंदना करवाने माटे चाली, त्यारे साडा कंचूकी वगेरे अनेक वस्त्र थी भरी छाबडीयां साथमां लीधां त्यारे रामदेव श्रावकें पुछयुं के ए एटला वस्त्रों साथमां श्यां माटे लीधाछे, त्यारे नोकर बोल्यो के आ वस्त्रो साधर्मियोनी स्त्रीयोनें देवाने माटे दररोज लेजाय छे, त्यारे रामदेव श्रावक कहेवा लाग्युं के, हे मन्त्रिन् श्री-जिनपतिसूरीश्वर महाराज जे तमारी प्रशंसा करी हती, ते प्रशंसाने योग्य ज तमे छो अने आचार्य श्री प्रशंसाकरे छे ते सत्य छे, के जेने घरमां एवा हमेशा धर्मकार्यो थाय छे, हवे एकदा ऊधरण मंत्रीये नागपुरमां देवघर याने देरासर करायो, त्यारे बिंबप्रतिष्ठा निमित्त मंत्रीयें पोताना कुलगुरुनें बुलाव्याहता, परन्तु ते कुलगुरु कोई कारणेंने लीधे महूर्त्त उपर नहिं आवीशकया ऊध-रणानी स्त्री श्रीखरतरगच्छना श्रावकनी पुत्री हती तिणे मंत्री प्रति कह्युं के तमारा कुलगुरु सिथि-

लाचारी छे एमनी परीक्षा करवी जोइये एमसांभली मंत्रीये परीक्षाकरी हीनाचारी जाणी, त्यार बाद शुद्ध संवेग रंगधारी सुविहित परम्परायात शुद्ध क्रियाना करवावाला श्रीमज्जिनपतिसूरिजी महाराज साहेबने तेडाव्या, अने ते आचार्य श्री महूर्त्त उपरत्यां आव्या, त्यारे तेमनीपासे प्रतिष्ठा कराई, ऊधरण मंत्री कुटुंब सहित खरतर गच्छीय श्रावक थयो. ते मंत्रीने कुलधर नामनो पुत्र थयो, जेणे वाहडमेर नगरमां उंचो तोरण सहित मंदिर बंधाव्यो हतो, तथा फरी मरोटनगरमां रहेवावाला श्री नेमिचंद्र भंडारीयें परीक्षा करीने शुद्ध संवेगवंत श्रीगुरुनें जाणीनें चारित्रनी इच्छा करतो एवो अंबड नामनो पोतानो पुत्र श्रीगुरू महाराजने भेट करयो आवी रीते अनेक भव्योने धर्ममां स्थापीने श्रीजिनपतिसूरीश्वर युगप्रधान महाराज सर्वायु ७२ वर्षनो पालीनें संवत् १२७७ पाल्हणपुर नगरमां स्वर्ग पधारया ॥ ४६ ॥ एमने पाटे ४७ मा श्रीजिनेश्वरसूरि थया ॥ इति ॥

युगप्रधान

श्रीमज्जिनकुशलसूरीश्वरजी महाराज.



जन्म सं० १३३०. दीक्षा सं० १३४७. आचार्यपद सं० १३७७. स्वर्ग संवत १३८९.

हवे त्रीजा दादा साहेब श्रीजिनकुशलसूरीश्वर महाराजनो संक्षिप्त चरित्र

राजे थुंभ ठोर ठोर ऐसो देव नाहिं ओर
दादो दादो नामतें जगत्र जश गायो है,
आपणें हीं भाव आय पूजे लक्ख लोक-
पाय प्यासनकुं रणमांहि पाणी आनपायो
है, वाट घाट शत्रुदाट हाट पुर पाटणमें
देह गेह नेहसुं कुशल वरतायो है, धर्म-
सिंह ध्यानधरे सेवकां कुशल करे साचो
श्रीजिनकुशलसूरि नाम युं कहायो है.

आ श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज श्रीवीर-भगवाननें ५० मा पाटे थइ गयेला छे अने ते समियाणा ग्रामना रहेवासी हता, छाजेड गोत्रीय मंत्री जिल्हागर पिता, जयतश्री माता हती, संवत् १३३० जन्म संवत् १३४७ नी दीक्षा संवत् १३७७ जेठ वद ११ दिवस श्रीराजेंद्राचार्यें सूरिमंत्र आप्यो त्यारे पाटन शहरना नि-

वासी साह तेजपाले नंदीमहोत्सव कर्यो २४०० साधु--साध्वीयोंने तथा ७०० वेशधारी जति मत्थेरणादि जैन पंडितोंने वस्त्रादिक आप्या हता तथा ते अवसरमां दिल्ली नगर निवासी महती-यांण गोत्रीय विजयसिंह श्रावक त्यां जइने बहु द्रव्य खरच करीने नंदी महोत्सव कर्यो तथा संवत १३८० साह तेजपालनें निकालेला संघने साथ श्रीशत्रुंजयतीर्थनी यात्रा निमित्त विशेष आग्रह करवाथी पधारेला हता त्यां श्री गुरुमहा-राज मानतुंग नामा खरतर वसहिना मंदिरमां २७ अंगुल प्रमाण श्रीआदिनाथ बिंबनी प्रतिष्ठा करी हती तथा भीम पल्हिनगरमां भुवनपाले बनावेला ७२ जिनालय मंडित श्रीवीरस्वामीने मंदिरनी प्रतिष्ठा करी हती तथा फरी जेसलमेर नगरमां जसधवलें मंदिर बंधायो हतो तेमां श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ बिंबनी प्रतिष्ठा करी हती तथा फरी जालोर नगरमां श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिष्ठा करी तथा आगरा नगरना निवासी श्रीसंघने आग्रहथी शेत्रुंजयनी यात्रा करीने आषाढ वद ७ सप्तमी दिवस पाटण नगरमां पधार्या हता तथा श्री

गुरु महाराजने समुदायमां १२०० साधु अने १०५ साध्वीयों हती सर्व मली १३०५ प्रमाणे साधु साधवीयोंनो समुदाय हतो तथा श्रीगुरु-महाराज विनयप्रभादिक पोताना शिष्योंने उपाध्याय पद आप्यो हतो जे विनयप्रभउपाध्यायें निर्धन थयेला पोताना भाइयोंने माटे मंत्र-गर्भित गौतमरास बणावीने आप्यो हतो जेथी सर्व तेमना भाइयों धनवान थया हता आप्रमाणे वीरशासनी प्रभावना करता अनेक श्रावक प्रति-बोधिने श्रीजिनशासनोन्नति करी हती अने परम जिनधर्मप्रभावक चैत्यवंदनकुलकवृत्तिआदि अनेक ग्रंथोंना कर्त्ता एहवा श्रीजिनकुशलसूरीजी संवत् १३८९ फागुण वदि अमावसने दिवसे देराउर नगरमां ८ दिवस सुधि अणशन करीने स्वर्ग पधार्या हता अने ते दिवसथी लइने आज दिन पर्यन्त दादोजी आनामथी सर्वत्र आ जगतमां प्रसिद्धिने पाम्या छे अने सर्वत्र जगतमां पूजाय छे अने दरेक नगरमां श्रीगुरुमहाराजनां चरण कमल पूजाय छे फागण सुदी सोमवती पूनमनें प्रथम श्रीसंघनें दर्शन आप्या हता ते कारण

सोमवार पूनमनें विशेष पूजा प्रभावना भक्ति स्मरण ध्यान दर्शनादि विशेष थाय छे अने आ आचार्य महाराज युग प्रधानवत् श्रीवीरशासननी प्रभावना करनार थया छे, अने हमणांपण कालनें अनुमानमां शासननी प्रभावना अने भक्तोंना मनोरथ पूर्ण करीरह्या छे ते क्यांसुधी कही सकाय परन्तु दिग्दर्शन मात्र करीयें छीए ते आ प्रमाणे, सेवामें बावन वीर खडा जोगणियां चोसठ हुकमधरा गुरु जगमें केइ उपगार करा, गु० ॥ ९० ॥ बोथर गूजरमल श्रावक की दादा कुशल तिरावे सु. सुखसूरी गुरु समयसुंदर की जहाज अलोप दिखावेरे सु. ४ निर्धनको लखमी वगसावत पुत्र विना जाके पुत्र करीरे ॥ २ ॥ जो जो परतिख परचा देख्या सुनो भविक दिल बीच धरीरे ध. ॥ फतेमल भडगतिया श्रावक पहली शंका जोर करीरे ध. ॥ ३ ॥ परतिख देखूं तब मैं जाणुं ततखिण प्रगट्या तरण तरीरे ध. । पुष्पमाल शिर केशर टीको अधर श्वेत पोशाक करीरे ध. मांग मांग वर बोले वाणी फरक बतावो गुरु मेघ लरीरे ध. । फरक उगायो

दोय लाखपर तेरी महिमा नित्त हरीरे ध. ॥ ५ ॥ गेनचंद गोलेछाकों तैं, परतिखदीना दर्श फरीरे ध विक्रमपुरमें थुंभतुमारा चित्र करावत सुरंसु दरीरे ध. ॥ ६ ॥ थानमल लूण्या पर किरपा, लखमी लिला सहज वरीरे, लखमीपति दूगडकी साहेब हुंडीकी भुंगताण करीरे ध. ॥ ७ ॥ इत्यादि अनेक परचा पूरे हैं और पूर रहे हैं अने आ आचार्य प्रथम ज्यारे आंइ विद्य-मान हता त्यारे युगप्रधानवत् शासन प्रभावक हता अने देवलोक थया पछी अनेक परचा देखाड्या छे अनेक लोकोना मनोरथ पूरण करे छे आथी श्रीजिनकुशलसूरीजी महाराज सर्वत्र त्रीजा दादाजी नामथी पूजाय छे आमनो स्वर्ग स्थान सिंधुदेश देराउर नगरमां छे कहयुं छे के कुशलसूरि गुरु देराउरनगरे भुवनपति सुर थाव फागण वदि अमावस सिद्धा पूनम दर्श दिखावे श्रीभगवती सूत्रमां देवलोक ४ प्रकारना कह्या छे भुवनपति देवलोक १ व्यंतर देवलोक २ जोतिष देवलोक ३ वैमानिक देवलोक ४ आ ४ प्रकारना देवलोकोंमां असंख्याता सम्यगदृष्टि देवो छे अने

अनेक देवो आसन्न भव्य छे मोक्षगामी एकावतारी पण अनेक देवो छे ए महर्द्धिक देवो जाणवा आथी श्रीभद्रगुप्तसूरि तथा हेमचन्द्रसूरि आदि अनेक शासनप्रभावक आचार्यो भुवनपति देव थया छे अने अनन्तर तिहांथी निकली मोक्ष जसे आप्रमाणे श्रीजिनकुशलसूरिजी पण भुवनपति देवलोकनी बीजी निकायमां अर्थात् नागकुमार निकायमां महर्द्धिक देवपणे उत्पन्न थया छे अने आज प्रमाणे श्रीजिनचन्द्रसूरिजी शासनप्रभावक अने दादाजी आ नामथी सर्वत्र जगतमां ओलखाय छे तेपण व्यंतर देवलोकमां महर्द्धिक पणे देव थया छे अने मनुष्य भवादि सामग्री प्राप्त करी मुक्ति जसे अने बीजा दादाजी मणिवाला श्रीजिनचंद्रसूरिजी आ नामथी प्रसिद्ध छे अने चौथा दादाजी श्रीजिनचन्द्रसूरिजी आ नामथी सर्वत्र प्रसिद्ध छे आ ४ दादाजीमां आ नामक्रमथी मोटा नान्हा पहिला पछी थवानो क्रम आ प्रमाणे जाणवो १ युगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरिजी छे २ मणियाला श्रीजिनचंदसूरिजी छे ३ श्रीजिनकुशलसूरिजी छे ४ श्रीजिनचन्द्रसूरिजी

छे आ उपर जणावेला ४ दादाजी युगप्रधान अने युगप्रधानवत् समर्थ शासन प्रभावक थइ गएला आ आचार्य महाराजो छे अने पूर्वे जणावेला आचार्य महाराजो एकावतारी आसन्न भव्य अने मुक्तिगामी जाणवा आ आचार्य महाराजो क्या क्या संवतमां थया अने क्या क्या आचार्य महाराज ने पाटऊपर थया अने स्वर्गस्थ थयां पहिलां अने पछी शुं शुं सासन सेवाना कार्यो कर्या अने चमत्कारो देखाड्या अने शासननी रक्षाकरी अने केटलां केटला नवीन श्रावक समुहो ने प्रतिबोधीने श्री श्वेताम्बर जैन कोमनी वृद्धिकरी हती अर्थात् ओसवाल श्रीमाल पोरवाड वगेरा जैन कोमो आपूर्वोक्त महापुरुषोयें प्रतिबोधिने पीछे आविषे विशेष जोवां होयतो श्री खरतर संस्कृत अने भाषा पट्टावली गणधर सार्धशतक वृत्ति श्रीदादा साहेब बृहत्चारित्रादिक जाणवा थी अधिक अने श्रीजिनदत्त सूरिजी ना चरण पासे पासे होवानुं अने विशेष होवानुं कारण शुं हसे, आनो कारण आछे के श्रीजिनदत्तसूरिजी नो हुकम श्रीजिकुशल सूरिजी ऊपर

आ प्रकार नो थयो छे के तमो नागकुमार भुवनपति देवलोकमां होवाथी मनुष्यलोक तमारे नजदीक छे, अने हुं सौधर्म देवलोकमां छुं माटे महारे आ मनुष्य लोक दूरपडे छे अने तमो नजदीक छो माटे हवेथी माहारा अने तमारा स्मरण करनारांनो मनोरथ पूर्त्ति तमारेज करवी आ प्रमाणे आपसमां संकेत होवाथी हमणां विशेष परचा श्रीजिनकुशलसूरिजी पूर्ण करे छे क्यारे क्यारे श्रीजिनदत्तसूरिजी पण पूरे छे माटे आ बे दादाजीना चरण स्थापना वधारे विशेष करी जोवाय छे अने बन्ने चरणों प्रायें करी पास २ मां होय छे अने सर्व जगतमां विशेष करी पूजाय छे बाकीना बे दादाजीना चरण स्थापना थोडा स्थलोंमां छे सर्वत्र नथी अने आ बे दादाजीना स्मरण ध्यान करनारा भक्तो कम जोवाय छे अने केटलाक स्थलोंमां एम पण छे के ४ ना चरण स्थापना साथमां पण जोवाय छे परंतु आ ४ दादाजी परचा पूरक समर्थ पुरुषों छे अने मोक्षगामी जीवो छे.

—X—

युगप्रधान

श्रीमज्जिनचंद्रसूरीश्वरजी महाराज (चोथा).



जन्म सं० १५९५. दीक्षा सं० १६०४. आचार्यपद सं० १६१२. स्वर्ग संवत १६७०.

अथ चतुर्थ दादा साहेब
अकब्बर असुर त्राण प्रतिबोधक श्रीयुगप्रधान
बहुशः नूतन श्रावक प्रतिबोधकृत्
श्रीमज्जिनचंद्रसूरीश्वर सद्गुरुभ्योनमः

॥ अथ श्रीमज्जिनसूरीणां निर्वाणम् ॥ लिख्यते



श्रीसुय देवयाए नमः
राग आसाउरी.

॥ दोहा ॥

गुणनिधान गुरुपाय नमी वागवाणी आधारी । युगप्रधान निरवाणनी महिमा कहिस विचारी ॥ १ ॥ युगप्रधान जंगमजति, गिरूआ गुणेगंभीर । श्रीजिनचंदसूरींदवर धुरि धोरी धर्म धीर ॥ २ ॥ संवतपनरपचाणूये, रीहडकुलअवतार । श्रीवंत सिरिदे धरचो, सुतसुरताण कुंमार ॥३॥ संवतसोलवेदोत्तरे, श्रीजिनमाणिक्यसूरि । मेंहत्थ मंयमआदरचो, मोटे महंत पंडूर ॥ ४ ॥

महिपति जेशलमेरुनें, थाप्या, राउल माल, संवत सोल बारोत्तरे, शत्रुतणोंशिरसाल ॥ ५ ॥ ढाल जयतासिरी ॥ करजोडि आगलरही, एहनी । आजवधावो संघमें, दिन दिन वधतेवानेरे, पूज्य प्रताप वाधे घणो दुसमनकीधाकानेरे ॥ ६ ॥ आज० ॥ सुविहितपद उजवालियो, पूज्य परिहरे मायारे, उग्रविहारे विहरता, पूज्य गुज्जरखंड आयारे ॥ आज० ॥ ७ ॥ ऋषिमतियांसुंतिहां थयो, अतिभूठो मोथीवादोरे, वखतबलकुमतियां परगट गाल्योनादोरे ॥ आज० । ८॥ पुज्यतणी, महिमा सुणी, सनमान्या अकब्बर साहिरे, युग प्रधान पदआपीयो, सिरिलाहोरपुर उछाहिरे ॥ आज० ॥ ९ ॥ कोडिसवा धनखरचीयो, मंत्री कर्मचंद भूपालेरे, आचारिजपद तिहां थयो, संवत सोलअडतालेरे ॥ आज० ॥ १० ॥ राजा राँणां मंडलीक, आइनमें निजभावरे, श्रीजिनचंद्र सूरीश्वरू पूज्य सुशब्द नितपावेरे ॥११॥ आ०॥ संवत सोलबावन्न, पूज्य पंचनदीसाधीरे, जित कासी जयपामीयो, ज्युं गौतमसिद्धिवाधीरे ॥ आज० ॥ १२ ॥ सैंहत्थकरि जेदीखिया, पूज्य

सीसतणा परिवारोरे, आगम निगम अर्थभर्यो मोटीपदवीधर सुविचारोरे, ॥ आज० ॥ १३ ॥ जगि सवासोमजी समा पूज्य कीधा संघवी साचारे, एअवदात सुगुरुतणा, जाणेहीरा माणिक जाचारे ॥ आज० ॥ १४ ॥ दूहा सोरठी महा मुनीसर मुगट मणि, दरसणीयां दीवाण, च्यार असी गछसेहरो, सासणनो सुलतान ॥ १५ ॥ अतिसय आगर आदिलगि, झूठकहूंतो नेम, जिन अकब्बर सनमानीयो, तिमवलीसाहिसलेम ॥ १६ ॥ ढाल ॥ २ ॥ पतिसाहि सलेम सटोप कीयो दरसणीयां सु कोप, एकामण गाराकामी, दरबारथी दूरहरामी ॥ १७ ॥ एकनकुं पाग बंधावो, एकनकुं नास अणावो, एकनकुं देशवटो जंगलदीजे, एकनकुं पखाली कीजे ॥ १८ ॥ एसाहिहुकम सांभलीया, तसुकोपथकी खलभलीया, जजमान मिली संयतना, दरहाल करे गुरु जतना ॥ १९ ॥ केई नासि हिंदू पूठि पडिया, केईमइयासैं जइ चढीया, केई जंगल जाई बेठा, केई दोडि गुफा जाइ पइठा ॥ २० ॥ जे नासंत जवनेंडाल्या, ते आणि भाखसी घाल्या

पाणीनें अन्नजल पाल्या, वयरीडा वयरसुं साल्या ॥ २१ ॥ इम सांभली सासनहीला, जिनचंदसुरीश सुसीला, गुज्जरात धराथी पधारे, जिनशासन वानवधारे ॥ २२ ॥ पूज्य देखि दीदारे मिलीया, पतिसाह तणा कोपलगीया, गुज्जरात धराथी क्युं आए, पतिसाहि गुरूवतलाए ॥ २३ ॥ अति आसति वलिचाली, असुरां भय दूरे पाली, उग्रसेनपुर पावधारे, पूज्य साहित पंदरवारे ॥ २४ ॥ पतिसाहिकुं देणआसीस, हम आए साहिजगीस, काहे पायादुःखसरीर, जाओ जोखकरो गुरुपीर ॥ २५ ॥ इक हुकमपावां, वंदीयडा बंदिछोडावां, पतिसाहि खयराति करीजे दरसणीयां दूओदीजे ॥ २६ ॥ पतिसाह हूतो, भूठो, पूज्य भाग्यवले तूठो, जाओ विचरो देस हमारे, तुम्ह फिरतां कोइ नवारे ॥ २७ ॥ धन धन खरतर गच्छराया, दरसणीयां बंदि छुडाया, पूज्य सुजसकारी जगि छाया, फिरि सहूरी मतें आया ॥ २८ ॥ धन्यासिरी, दूहा. श्रावक श्राविका वहु परिइं, भगतिकरे सुविशेष, आणवहे गुरुराजनी, गोतमसमवडदेख ॥ २९ ॥ धर्मा

चारिज धर्मगुरु, धर्मतणो आधार, हिव चोमासो जिहांकरे तिनिसुणो सुविचार ॥ ३० ॥ धवल धन्यासिरी ॥ ढाल ॥ ३ ॥ चिंतामणि पास पूजिये एदेशी ॥ देशमंडोवरदीपतो ,तिहां बीलाड नामोरे, नगर वसे विवहारिया, सुखसंपद अभिरामोरे, देश० ॥ ३० ॥ धोरी धवल जिहां तिहां, खरतर संघ प्रधानोरे, कुलदीपक कटारीया जिहां घरिवहु धन धानोरे ॥ ३१ ॥ देश० ॥ पंचमिली आलोचिया, इहां पूज्य करे चोमासोरे जनम जीवित सफलो हुवे, सयणांनीपूरे आसोरे ॥ ३२ ॥ देश० ॥ महिमा वधारे मेडते, पूज्य वंदी संभारोरे सुनिजर करीने साहिवा पधारो चोमासेर ॥ ३३ ॥ देश० ॥ इम सुणी पूज्य पधारीया, बीलाडे रंग रोलरे, संघ महोत्सव मांडीयो, दीजे तुरत तंबोलरे ॥ ३४ ॥ देश० ॥ दूहा–पूज्य चोमासो आवीया, श्रीसंघ हरख उछाह विविध करे परभावना, लेलखमी नोलाह ॥ ३५ ॥ पूज्यदीये नितदेशना, श्रीसंघ सुणे वखाण, पोपहिता जीमे घणा धन जीवित सुख-माण ॥ ३६ ॥ विधिसुतप सिद्धान्तना, साधुवहे

उपधान, पूज्य पजूसण पडिक्कमे जंगम युग प्रधान, ॥ ३७ ॥ संवत सोलेसित्तरे, आसूमास उदार, सुरसंपद सुहगुरुलही, ते कहीसुं अधिकार ॥ ३८ ॥ ढाल भावनारी ॥ नाणें निहाले हो पूज्यजी आऊखोरे, ते संघ प्रधान, जुगवर आपे हो रूडीसीखडीरे, सुणज्यो पुण्यप्रधान ॥२९॥ ॥ नाणें० ॥ गुरुकुलवासेहो वसिज्यो चलकारे, मतलोपो कार, सा॰ अनेंवलि संयम पालज्योरे, सूधो साधु आचार ॥ ४० ॥ नाणें० ॥ संघमहुने धर्मलाभ कागलेरे, लिखिदेस विदेस, गच्छधुरा जिनसिंह निरवाहिसोरे, करिज्योतसु आदेस ॥ ४१ ॥ नाणें० ॥ स.धुभणी इमसीखद्ये पूज्य जीरे अरिहन्त सिद्धसुसाखि, संमुख अणसण पूज्यजी उच्चेरे, आसूपहिले पक्खी ॥४२॥ना० जीव चउरासी लख खमाविनरे, कम्मादाणकृण समनिंद, ममतानें वलि मायामोसोपरिहरीरे, इम निजपाप निकंद ॥ ४३ ॥ नाणें० ॥ वयर कुंमार जिम अणसण कर्योरे, पालि पहुरच्यार, सुखनें समाधेरे, धर्मनेंप्रभावेरे, पहुचे सरग मझार ॥४४॥नाणें० इन्द्रतणी तिहां अपछरओघणीरे,

सेवकरे सुरवृंद. साधुतणुं धर्म सूधो पालियोरे.
तिण फलियाते आणंद ॥ ४५ ॥ नाणं० ॥
मोडी दूहा, गंगोदक पावनजले, पूज्य पखाली
अंग चोवाचंदन अगरजा, संघ लगावेरंग ॥४६॥
वाजा वाजे जन मिलें, पारविहूणापात्र, सुरनर
आवे देखवा, पूज्यतणो सुभगात्र ॥ ४७ ॥ वेस-
वणावी साधुनो, धूपि सयल सरीर, वेसाडी
पालखीये, ऊपरिबहुत अबीर ॥४८॥ रागगोडी
श्रेणिकमन अचरिज थयो, एदेशी ॥ हाहाकार
जगत हूओ, मोटो पुरुष समाणोरे, चड वखती
विश्रामीयो, दीवेज्युं वुझाणोरे ॥ ४९ ॥
पूज्य पूज्य मुखे ऊचरे, नयणे नीर नविमायरे,
सुहगुरुसील सांभरे, हीयडुं तिलतिल थायरे
॥५०॥ पूज्य संघ साधु सहुविलविलेरे, हाखरतर
गच्छ चंदोरे, हाजिण सासण सामीयारे. हा
परताप दिणंदोरे ॥ ५१ ॥ पूज्य० ॥ हा सुंदर
सुखसागरु,हा महिमा भंडार हा रीहड कुल सेहरा,
हागिरुआ गणधाररे ॥५२॥ पूज्य०॥ हा मरजाद
महोदधि, हा सरणागत पालरे, हा धरणी धर
धीरिमा, हा नरपति समभाल ॥ ५३ ॥ पूज्य०॥

दूहा, बहुवन सोहे बाणगंगानें तीर, अगर किसणा, बाजे सुरभि समीर ॥ ५४ ॥ बावन्ना चंदनठवी, सुरहातेंलनीधार, घृते वैश्वानर तरपिनें, कीधोतनु संस्कार ॥५५॥ वैश्वानर केहनो सगो, पण अतिशय संयोगरे, नाविदाभी पूज्य मूहपत्ति, देखे सगला लोकरे ॥ ५६ ॥ पुरुष रतन विरहकरी. साथिन मरवो थोवेर, सांतिनाथ समरण करी, संघ सहुघर आवेरे ॥ ५७ ॥ राग धन्यासिरी ॥ सुविचारी हो पूज्यजी तुम्ह विन घडीरे छमास, दरसण दिखाडो आपणो हो सेवक पूरो आस ॥ ५८ ॥ सुवि० ॥ एकवार पात्रधारीये हो, दीजे दरस रसाल संघ उमा हो अतिघणो, वंदण चरण त्रिकाल ॥५९॥ सुवि० वाल्हेसररलीयामणो हो, जे जगिसाचामीत, तिणथी पांगरे पूज्यजीरे, मोमन एपरतीत ॥ ६० ॥ सुवि० ॥ हे गिरूआ गणधाररे, इण भव भवन्तरे हो, तुंसाहिब सिरताज, मात पिता तुं देवता हो तुं गिरूओ गच्छराज ॥६१॥ सुवि० पूज्य चरण नित चरचतां हो, वंदत वंछित जोइ, अलिय विघन अलगा टलें हों, पग

पग संपद होइ ॥सुवि०॥६२॥ तुंसाहिब सिरताज श्री शान्तिनाथ सुपसावले हों, जिनदत्त कुशल सूरिंद, तिम जुगवर गुरु सांनिधें हो, संघ सयल आणंद ॥ ६३ ॥ सुवि० ॥ गच्छपति तुं साहिब सिरताज, मीठागुण श्रीपूज्यना हो, जेहवी साकरनें द्राख, रंजक कूडनहीं हो, चंदा सूरिज साख ॥ सुवि० ॥६४॥ तासपाट महिमा गिरूओ हो सोहग सुरतरुकंद, सूरजेम चढति कलाहो, श्रीजिनसिंहसूरिंद ॥ सुवि० ॥ होगि० ॥ ६५ ॥ जुगवर नाम जपें जय जयकार वंस वधावे चौपडा हो दिन दिन अधिकोवांन पाटोधर पृथवी तिलो हो चिरनंदो श्रीमान् ॥ सुवि ॥६६॥ सुखकारी हो युगवर नामे जय जयकार युगवरना गुण गावतां हो नव नव रंग विनोद एहनुं समरणकरे तेहनी आसा फलेहो जपे समय प्रमोद ॥सुवि.॥ ॥ ६७ ॥ सुखकारीहो युगवर नामें जय जयकार

इति श्री चतुर्थ दादा साहिब अकब्बर तथा साहसलेमा असुरत्राण प्रतिबोधक श्रीजिनचन्द्र-सूरिजी निर्वाणम् समाप्तम्

—*—

इस निर्वाणका रहस्यार्थ संप्रदायी विद्वानों के मुखसे जाण लेना चाहिये यहां पर ग्रंथ गौरवके भयसे नहिं लिखा है और इस पडते कालमें भी मंत्राधीन देवता देखणें में आते हैं इससें सावित अनुमान होता है कि श्रीजिनदत्त-सूरिजी मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरिजी श्रीजिनकुशलसूरिजी यह दादा गुरुदेव संवत इग्यारेंसे संवत् तेरेंसे तक भये तद पीछे संवत् सोलसेमें जंगम युगप्रधान भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरिजी गुरुदेव महाराज भस्मरासी ग्रहके उतरतेही अवतारी प्रगटे जिनोंके ज्ञान क्रियाकी अदभुत वछावत मंत्री करमचन्दके मुखसे सुणके बादसाह अकब्बर खास निज कलम फुरमान वीनती लाहोर नगर पंजावमें लिखी और अपणे खास मरजीदान उमरावोंको गुरुकों वुलाणें भेजे उस वखत महाराजके ८ प्रशिष्योंमें मुख्य श्रीसकल-चंद्रजी उपाध्यायजीके शिष्य श्रीयुत् समयसुंदरजी उपाध्यायजी भी विहारमें साथमें थे, उनोनें गुरु गुण छंद अष्टक वनाया है, सो लिख दिखाता हूं संतनकी मुखवाण सुणी जिनचंद मुणिंद महंत

जती, तपजप्पकरे गुरु गुज्जरमें प्रतिबोधत है, भविकुसुमती, तबहीं चितचाहन चूंप भई समय सुंदर के गुरु गच्छपती, भेजे पतसाह अजबकी छाप बोलाये गुरु गजराजगती ॥ १ ॥ एजी गुज्जर तें गुरुराज चले बिचमें चोमास जालोर रहे, मेदनी तटमें मंडाण कियो गुरु नागोर आदर मानलहे, मारवाड रिणी गुरु वंदनको तरसें सरसे बिचवेग वहै, हरख्यो संघ लाहोर आये गुरु पतसाह अकब्बर पांवगहै ॥ २ ॥ एजी साह अकब्बर बब्बर के गुरु सूरतदेखतही हरखे, हम जोगीजती सिद्ध साधब्रती सबही षट् दर्शनको निरखे, टोपी बसऽमावस चंदउदय अजतीन बताय कलापरखे, तपजप्प दयाधर्म जग कोई नहीं इनके सरखे ॥ ३ ॥ गुरु अमृत वांण सुणी सुलतान एसा पतसाह हुकम्म किया सब आलम मांहि अमार पलाय बोलाय गुरु फुरमाण दिया, जगजीव दयाधर्म दाखणतें जिन शासनमें जु सोभागलिया, समय सुंदर कहे गुणवंत गुरु दग देखत हरखत भव्य हिया । ४। एजी श्रीजी गुरु धर्मध्यान मिले सुलतान सलेम

हाजरा हजूर देव हैं, और इहांपर संका समाधान प्रसंगानुप्रसंग बहुत माविवेचनीय विषय है, सो यथा अवसर लिखेंगे, और उपरोक्त तसवीर के नकल रूपमें नवीन तसवीर खिंचवाकर श्रीविद्या-विजयजी वगैरा समुदाय की प्रेरणा से प्रगट हुई है, लखनउ नगरसे उठी है, यह तसवीर असली रूपसें श्रीविजयहीरसूरीजीकीनहिंहै, किंतु श्रीजिनचन्द्रसूरिजी की है, मूल नामादिकसूरी संम्राटादिक का वदलकर प्रगट की गई है. और वाचक वर्ग के ध्यान में रहे की यह खास असली तसवीर धर्म प्रभावक श्रीमान् विजयहीर सूरिजी कीनहीं है, किन्तु नकली है, और श्रीविजयदान सूरिजी श्रीविजयहीरसूरीजी श्रीविजयसेन सूरिजी श्रीविजयतिलकसूरिजी का मंतव्य गच्छ व्यवस्था प्ररूपणा वगैरा व्यवहार परगच्छोंके साथ कैसा रखते थे सो हाल यथा अवसर लिख दिखावेंगे, इहां पर ग्रन्थ गौरव के भयसे नहीं लिखा है, अब प्रकरणोद्धार कर्त्ता श्री चारित्र सिंहगणि प्रकरणकी समाप्ति करते हूवे अपणी गुरु परंपरा दिखाते हैं, संवतसोलछत्ती-

सए, श्रीमिमलनाथ सुरसाल, दिक्षा कल्याणक दिनें, गुंथी श्रीमुनिमाल ॥ ३३ ॥ माह० ॥ रिणीपुर रलीया मणो, श्रीशीतलजिणचंद, सूरी विजै राजै सदा, संघ अधिक आणंद ॥ ३४ ॥ माह०॥ श्री मतिभद्रसुगुरुतणो, सुपसाये सुखकार, चारित्र सिंहवखाणियें, सदा सदा जयकार ॥३५॥ महामुनिसर नितनमूजी उपरोक्त प्रकरणोद्धार कर्ता के गुरुवर्य श्रीमतिभद्रोपाध्यायजी श्री जंगम युगप्रधान भट्टारक श्रीमज्जिनचंद्र सूरिजी के एक सुशिष्यथे, इस लिये साठमें पाटके वृत्तान्तसहित चतुर्थ दादा साहेब श्रीमज्जिनचन्द्र सूरिश्वरजी का संक्षिप्त वृत्तान्त इहांपर लिखतेंहैं, तथाहितत्पट्टे ६० मा श्रीजिनमाणिक्य सूरिजी भए, तिकेंकूकड चोपडा गोत्रीय साहश्री जीवराज पिता, पद्मादेवी माता, संवत १५४९ जन्म संवत १५६० दीक्षा संवत १५८२ भाद्रवा वदि ९ नवमी के दिन साह देवराजनें नंदी महोछव किया, श्रीजिनहंस सूरियें अपणें हाथ करके पदस्थापना करी फेर गुर्जर देशसिंधु देशादिक में विहार कारक पंचनदी साधक श्रीजिन

माणिक्य सूरिजी कितनेक वर्षतक जेशलमेर गढमें रहे, तिहां मुनिसर्व सिथलाचारी होगए. प्रतिमा उत्थापकमत उत्पन्न होकर बहुत फेला, तब बीकानेर के वासी बछावत मंत्री संग्रामसिंह नें गच्छस्थिति रखणे वास्ते, श्रीगुरुमहाराज को बुलवाया, तब भावसे क्रिया उद्धार करके, श्री गुरुमहाराज नें विचारा कि पहले देराउर नगर में श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज की यात्रा करके, पीछे सर्वपरिग्रह त्यागके विहार करूंगा, इस वास्ते गुरु महाराज यात्रा के वास्ते देराउर पधारे, वहांपर गुरु दर्शन करके जशलमेर पीछा आते वखत में गुरु महाराज को मार्गमें जलके अभाव सें तृषा परिशह बहुत उत्पन्न भया, जल रातको गधवावाडे के मनुष्यों को मिला, तब अपवाद पदसें आचार्य संरक्षक समुदाय नें प्राण अपहारिणी तृषाको शान्त करने के लिये बहुत हि आग्रह किया परंतु आचार्य श्रीने नाहिं कबुल करा, और ऐसा श्रीगुरु महाराज नें अपने दिलमें विचार कराकि, मेंनें इतनें वर्षोंतक रात्रिका चोविहार पच्चक्खाण करा, जिसको

एक रात्रिके लिये कैसे खंडन करूं, इत्यादि धर्मका तात्विक स्वरूप विचारते हुवे, और शुभ भावना भावते हुवे श्रीगुरु महाराज उसी रात्रिमें तिहां हीज संवत १६१२ आषाढ सुदि पंचमी दिन अणशणादि विधि पूर्वक काल धर्मकों प्राप्त होके स्वर्ग गए, ६० ॥ तत्पट्टे ६१ ॥ मा चतुर्थ दादा साहेब श्रीजिनचन्द्र सूरिजी महाराज हुए तिकेवडली गामवासी रीहड गोत्रीय, साह श्रीवंत पिता सिरियादेवी माता, संवत १५९५ जन्म संवत १६०४ दीक्षा संवत १६१२ भादवा सुदि ९ नवमी के दिन जेशलमेर नगरमें राऊल माल देवकारित नंदी महोच्छव करके सूरिपद में प्राप्त भए, तिसहीज रात्रिके विषेश्रीजिनमाणिक्य सूरिजीनें प्रगटहोके सेवाकी पोथीमें रहा आम्नाय सहित सूरिमंत्र पत्र श्रीजिनचन्द्रसुरिजी कों दिया, फेर श्रीजिनचंद्र सूरिजी संवेग रंगमें वासित चित्त हुवे थके, गच्छके विषे शिथिल पणा देखके, सर्वपरिग्रहका त्याग करके वछावत मंत्री संग्रामसिंहका पुत्र श्रीकर्मचन्द मंत्रीश्वरनें वहुत आग्रह करके वीनती करी

तब श्रीगुरुमहाराज लाभ जाणकर क्रमसें विचरते श्री बीकानेर नगर पधारे, तिहां, प्राचीन उपासरे को शिथिलाचारि मुनियोंने रोका हुवा देखके, श्रीकर्मचन्द्र मंत्रीश्वरने अपणी अश्वशाला में महाराज को उतरने के लिये दिवी और भी बहुत श्री गुरु महाराज की भक्ति करी, और मंत्रीश्वरके आग्रहसें जेसलमेरमें विहार करते हुवे, अनुक्रमसें भव्यों को प्रतिबोध देते हुवे, जिस रोज श्रीबीकानेर के राजकी कांकड में अर्थात् सरहदमे पधारे तब दिन प्रति वधाई लानेंवाले पुरुषको मंत्रीश्वरनें १ अश्व १ गज वगेरा दिये और सवा क्रोड द्रव्यका दान दिया था, इस दान के आधारसें शेप प्रति दिनकी भक्ति, और नगर प्रवेश वगैरा सर्व मंत्रीश्वर की भक्ति जाणना और भी मंत्रीश्वरने प्रत्येक धर्म-कार्यमें गुरु भक्तिसें बहुतसा द्रव्य व्ययादि सुकृत किया बादमें श्रीगुरुमहाराज बीकानेरमें औरोंको भि क्रिया उद्धार कराके सुविहित साधुमार्ग अंगीकार कराया अपणे समान परिग्रहादिक के त्यागी १६ साधुवांकेसाथ विहार करके ठिकाणें २

प्रतिमा उत्थापक मतका खंडन करते थके अपणी समाचारी दृढ करते थके अर्थात् जैन सिद्धान्तानुसार श्री जैनसिद्धांत विधि संवादिनी समाचारीको दृढ करते थके अनुक्रमें गुर्जर देशमें गए तिहां अहमदाबाद नगरमें काकडी कालिंगडा खडबुजा वगैरा व्यापार करके आजीवका करता थका मिथ्यात्वी पोरवाल कुलोत्पन्न सिवा सोमजी नामें दोनु भाईकों प्रतिबोध देके सर्व कुटुम्ब सहित धनवंत श्रावक करा और जैनी होकर जिण दोनु भाईयों ने श्रीशेत्रुंजयका संघ निकालकर श्रीशेत्रुंजयकी यात्रा करके सर्व देशोंके जैन श्रावक मात्र लोकोंमें एकेक मोहर एकेक सोना चांदीके थाल की लहाणी दीनी और संघमें भी अनेक देशों के हजारां लाखां श्रावकोंकी थोक वंद संख्या एकठी हुई थी और सइकडां वा हजारां जैन आचार्य साधु यति वगैराकी संख्या एकठी हुई थी इत्यादि आडंबर विभूतिका विस्तार कर श्रीशत्रुंजयकी विधि पूर्वक यात्राकर उज्जवल संघवी पद श्रीगुरु महाराजकी सुकृपासें प्राप्त

किया था और जिणोंने श्रीशत्रुंजय तीर्थ ऊपर श्रीचौमुखजीकीमहान वसही वंधाईहै और भी अहमदावाद वगैरा स्थलोंमें वहुतसे जिन-मंदिर वंधायेहैं इणोंके प्रतिवोधका स्वरूप संप्रदायिक गुरु मुखसें जाणना तथा एकदा तपगच्छीय श्रीविजयदानसूरीजीका शिष्य वो पहले जीवराज ऋषि का शिष्य था वाद तप-गच्छमें आया वह धर्म सागर गणिः व्याख्यान सभामें या जाहिर सभामें लोकोंके अगाडी श्री अभयदेवसूरि खरतरगच्छ में नहींभए, इत्यादि अनेक उत्सूत्र वचन कहे, तव श्री गुरुमहाराज पाटण पधारकर चोमासा करके शास्त्र सम्मतिसें वाद करके [८४] चौरासी गच्छीय आचार्य उपाध्याय सुविहित मुनि वगैरा के समक्ष धर्म-सागरको पराजय करा, तव सर्व कहने लगे, कि नवांगी टीका रचना करने वाले श्रीअभयदेव सूरिजी खरतरगच्छ मेंभए, ऐसा सर्वने अंगी-कारकरा, इत्यादि अनेक उत्सूत्र वचनोंका वाद सभामें जन समक्ष शास्त्र सम्मतिसें निर्णय करा; और श्री फलोधी पार्श्वनाथजी के मंदिर में तप-

गच्छवालोंने तीर्थ विषयि स्वसत्ताभिमानसें दर्श-
नादि निषेध करने के लिये ताला लगायाभया,
हाथसें फरसके उघाड दिया, सर्वलोक आश्चर्य
मानभए, और तपाधर्मसागरगणिःका बनाया
भया कुमतिकंदकुद्दाल अथवा उत्सूत्रकंदकुद्दाल
नामक ग्रन्थकूं श्रीहीरविजयसूरिसें जल सरण
कराया, और धर्मसागर गणिः को झूठा कदाग्रह
करनेंवाला जाणकर श्रीहीरविजयसूरिवगेरेंने
तीन पीढी पर्यंत गच्छ बाहिर किया, और कुपक्ष
कौशिकादित्य अवर नाम प्रवचन परिक्षा नामे
ग्रन्थ और सर्वज्ञसिद्धिशतक अपरनाम सर्वज्ञ
शतक नामे ग्रन्थ अप्रमाण ठहराया, और कल्प-
किरणावल्यादि ग्रन्थार्थ अप्रमाण करने के लिये,
अपने गच्छमें उत्सूत्रार्थ की प्रवृत्ति नहीं होनेके
लिये, श्रीतपगच्छाचार्योंने ६-७-६-१२-१२ बोल
वगैरा प्रसाद करके अपणें गच्छका प्रबन्ध किया
यह प्रबन्ध किया हुआ श्रीविजयदानसूरिजी,
श्रीविजयहीरसूरिजी, श्रीविजयसेनसूरिजी श्री
विजयतिलकसूरिजी पर्यंत यथार्थ दुरस्तपणें
गच्छका प्रबन्धरहा, बादमें शिथिलपणाहुवा

और पूर्वोक्त उत्सूत्र प्ररूपणाको अवसर मिला, इत्यादि वृत्तान्त गुरुसंप्रदायसें अथवा ऐतिहासिक रास चरित्रादिकसें स्वयं जाणलेना, पीछे फेर एकदा मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र प्रमुखके मुंहसें श्री गुरुमहाराजका अतिमहत्व सुणके, वादशाहनें दर्शन के वास्ते बुलवाया, श्रीगुरुमहाराज लाहोर नगर जाके, अकब्बर को प्रतिबोध दिया, तब अकब्बर वादशाह गुरुका शुद्ध आचार व्यवहार देखके अमृत के समान अत्यंत मिष्टवाणी सुनकर के, गुरुके वचनसें पर्युषणादिक सब पर्व तिथियों में कोई शहरमें जीवहिंसा न करसके ऐसी उद्घोषणा अपणें राज्य में लिखाई, फेर एक वर्ष तक स्तंभनक [खंभात] नगर के पास समुद्र नदीमें मच्छादिक नहीं मारसके ऐसा हुकम करवाया, इसतरे जीवदया धर्मको बहुत विस्तार युक्त किया, श्रीगुरुमहाराज का महाअतिशय देखके, वादशाहनें युग प्रधान पद और राजगच्छ विरुद दिया, पहले परवानोंकी नकल देखके उसी मुजब ६ नवमोहरा परवाना लिखके दिया, जिसमें सारांस इतना है कि, हमारे राज्य में जहां



अकब्बर सलेम प्रतिबोधक श्रीमज्जिनचंद्रसूरीश्वरजी महाराज (चोथा).

श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज पधारे उहां राजादिक सर्व लोक भक्ति साचवेंगे और सिद्धाचलजी, गिरनारजी, शिखरजी प्रमुख सर्व तीर्थों में, तथा इनोंका ठिकाणों ठिकाणों धर्मस्थानको में कोई जीवहिंसादिकार्य नकरे, श्रीगुरुमहाराज की आज्ञामुजब कार्य करे, इत्यादि परवाना श्री खरतरगच्छके भंडारोंमेंहै, और शास्त्रार्थ विषयि पट्टक तथा सहीपत्र वगैरा हाल भंडारोंमें मौजूदहै, तथा अकब्बर बादशाहके आग्रहसें तिस अवसरमें श्रीगुरुमहाराजनें श्रीजिनसिंहसूरिजीको वहांपर अपने हाथसेंहि आचार्य पदमें स्थापन किये, तब अति प्रसन्न हुवे थके बादशाह और श्रीकर्मचंद्रमुख्य मंत्रीश्वरनें महा महोत्सवकरा, और तिस समय तदनुयायि राजा वगैराओंनेभी अपनी शक्ति अनुसार भक्ति विनय बहुमानादिक के द्वारा दर्शायिथी, और तिस शोभन अवसर में नवग्राम ९, नव हस्ति ९, पांचसो ५०० घोडा श्री जैन याचकादिक को दानमें दिया, इस तरहसें पाट महोत्सवकरा, और सवाक्रोड द्रव्य खरचकरा, फेर बादशाहनें

विशेष दिलकी खुशालीसें जगद्गुरु भट्टारक, विरुद दिया, फेर मंत्रीश्वरनें अनेक प्रकारसें श्री खरतरगच्छ का महिमा करा, तथा फेर संवत १६५२ श्री गुरुमहाराज ने पंचनदी साधन करी, और तिहां पंचनदी अधिष्ठायक पांचपीर और माणिभद्र खोडीया क्षेत्रपाल वगेरा देवादिकों को वसमें किये, और तिससमय आकर्षणाकर अपने पगका शून्यतादोष मिटाया, और सूरिमंत्र संबन्धी ६० देवताओं का आराधन करा, ६४ योगिनी ५२ वीरोंका भी आराधन किया, सर्व आज्ञाकारी भये, फेर श्रीगुरुमहाराज विहार करते हुवे किसी एक नगर में पधारे, तब वहांपर रात्रिके समय निष्प्रयोजन धर्म द्वेषी मिथ्यात्वी कापालिकनें समुदाय को डराने के लिये और श्रीगुरुमहारज को छलने के लिये एक महान कृष्ण स्थूल पुष्ट काय इत्यादि सूत्रोक्त वर्णन युक्त सर्पका रूप विकुर्वणा करके, महान वेगसें चलता हुवा स्वासो स्वासके वेगसें धमणको पूर्ण करता होवे, वैसा स्वासो स्वासको निकालता हूवा, मुखसें महान भयंकर शब्द करता हूवा,

सर्व प्राणियोंको त्रास देता हुआ उपासरेमें आया और बोला कि आज मैं तुम सबको खाजावुंगा किसीको नहिं छोडुंगा यह सुनकर सर्व समुदाय भय भ्रान्त हुवा, और कोलाहल भया, तब सर्व समुदाय ने उंचे स्वरसें पूकार करी हे गच्छाधिप हे स्वामिन् हमारी इस कृष्णा हिसें रक्षा करो रक्षा करो यह पुकार सुनकर श्री गुरु महाराजनें सर्प भय उत्पन्न हुवा जानकर तिसी समय शेष नागका आकर्षण किया तब हज्जार फणालंकृत शेषनाग आया बादमें वह मायावी कृष्ण सर्प श्रीगुरुमहाराजको श्रीशेषनागसेवित देखके भयको प्राप्त हुवा सर्व सर्पका मदाभिमान गल गया तेज नष्टहोगया बादमें मरे जैसा भया बादमें वह कापालिक अपणी मायाकों संहरण कर अपणें ठिकाणें चलागया पीछे शेषनाग श्रीगुरुमहाराजको कितनीक अवश्य उपयोगी जडीयोंका प्रयोग दिखाकर श्रीजिनशासनोंतिकारक विद्या देके नमस्कार करके अपणें स्थान गया फेर कितनेक दिनोंके बाद विद्याओंके मदाभिमानसें और पूर्वोक्त चेष्टा सफल न होनेसें

विशेषपणों उत्पन्न भई है ईर्षा जिसको ऐसा वह पूर्वोक्त योगी नवीन छल प्रपंच रचके आया वह स्वरूप ऐसा है कि प्रथम वारतो आठ २ वरसके बालक उठाकर चलते हैं इस तरह पालखीमें बैठके आया तब श्रीगुरुमहाराजनें ज्ञानोपयोगसें जाणके उसको बतलाया कि अरे तें फिर वापिस आगया हां बाबा आगया तब योगी बोला कि अब आप अपनी करामात प्रगट करो तब श्रीगुरुमहाराज योगीसें बोले कि अहोयोगी इस प्रपंचको छोड परमात्माका भजनकरो जिस्सें कल्याण पावो इस मिथ्या प्रपंचमें क्या रखा है ऐसा वचन श्रीगुरुमहाराजका सुणके द्वेषके वससें योगी इस तरह बोला कि अरे जैन सेवडा तें नामी है हुसियार होजा मैं तेरे मीठे वचनोंके आडंबरसें अब प्रसन्न नहिं होउं पहिले तेंने मेरेको छला है परन्तु अब मैं मेरा प्रभाव देखाउंगा इसमें कुछ भी फरक नहीं है और अपना बचाव कर सावधान होजावो यह सुनकर श्रीगुरुमहाराज कुछ मुख विकासकर बोले कि श्रीदेव गुरु धर्म की कृपासें हमतो सदाही सावधान हैं तें अपना

बल करना होवेसो करले यह वचन सुणकर योगीने अपनी विद्याओंका स्मरण कर उपयोग पूर्वक अपना पराक्रम फोरणा सरु किया प्रत्येक विद्याओंके प्रयोगसें श्रीगुरुमहाराज श्रीसंघादिक का और अपना बचाव मात्र करते रहे और पहिले सामने आया तब पालखी सहित उसको स्तंभित करा बाद वह जोगी बडे कष्टसें मुक्त होकर अदृश्य होगया सर्व लोक आश्चर्यको प्राप्त हुवे उतने थोडी देरसें डोकोंकी गाडीमें बैठा हुवा और बकरे जुते हैं इस तरह फिर वापिस आया देखके वचन सहित स्तंभित करा बाद बडे कष्ट के साथ मुक्त हुवा थोडीक देरसे फिर वापिस आया और बहुतसे मारणेके उपाय किये परन्तु एक भी सफल न हुवा तब भय देखाणेके लिये और छलनेके लिये बहुतसा मिथ्या प्रपंच रचना सरु किया. जिसमें हाथी सरभ शार्दूल वृक रींछ चीता नाहर बिल्ली सर्प वृश्चिक गौ अजगर वगैरा अनेक जानवर भयंकर भूत प्रेत पिशाच वैताल राक्षस जिंद शाकिनी डाकिनी विंतरी वगैरा दुष्ट देव देवियोंका आकर्षण कर उपद्रव करा परन्तु

श्रीगुरुमहाराजनें सब उपद्रवको शांत करा बाद फेर इन्द्रजालिक विद्यासें लोकोंको मोहणा और गुरु महाराजको छलनेके लिये इस तरहका स्वरूप दिखलाणा सरु किया जिसमें साधु साध्वी श्रावक श्राविका वगैरा कों ५१ परपीढियां ब्रह्मोपासक विष्णोपासक महेशोपासक दर्शाइ याने ब्रह्मा विष्णु महेशोंकी साक्षात हाथ जोडे हुवे सेवा करती हुइ देखाइ तब छल बल प्रपंचको देखकर सर्व अकस्मात् संभ्रमको प्राप्त हुवे तब श्रीगुरुमहाराज तिस योगीको मोहिनी इन्द्रजालिक विद्याका नाश करनेवाली सत्यभास्करी का स्मरण करा तब योगीके मनमें बडा भारी क्षोभ उत्पन्न हुवा उसका आत्मिक पौरुषसत्वादिक नष्ट होगये तथापि वह योगी अपनी माया को साहस करके थिर करता हूवारहा, खानगी क्षेत्रपालवीरने आकर कहा कि हे स्वामिन्! यह योगी वडाही धृष्ट दुष्ट पापिष्ट छली है और अचलेश्वर गुफावासी यह अचलेश्वर नामका योगी है अत्यंत जैनधर्मका द्वेषी गाढ मिथ्यादृष्टि है अर्बुद पाहड उपर रहनेवाला अचलेश्व-

रनामा देव पाहडका अधिष्टायक और सतचंडी इसके इष्ट देव हैं इसीके जरिये यह ऊलफेल कर रहा है इसलिये आप श्री उनोकाही आकर्षण करिये जिससें सर्व शांति होवेगा एसा कहेकर अदृश्यपणे आचार्य श्रीके पृष्ट भागमें शरीररक्षा करता रहा पूर्व प्रयोग करी हुई विद्याके प्रभावसें इन्द्रजाल छलवल प्रपंच वगैरा सर्व शांत होगये तथापि लज्जित करनेके लिये श्रीगुरुमहाराजनें अचलेश्वर सतचंडीका आकर्षण करा तब दोनुं आकर चरणोंमें गिरे हाथ जोड खडे रहे तब योगीका मद गलगया और आश्चर्यको प्राप्तहुवा मनमें विचारने लगा कि यह जैन सेवडोंका महंत सामान्य पुरुष नहिं है सर्वोत्तम महान प्रभाविक पुरुष है इसके साथ व्यर्थही विवाद करके कालक्षेप किया जिसनें मेरे इष्ट देवोंकाहि आकर्षण कर लिया तो फेर मैं इसके सामनें क्या चीज हूं इत्यादि विचार पूर्वक मदाभिमान विद्याओंका छोडकर श्रीगुरुके चरणोंमें आकर गिरा भक्ति सहित योगीके इष्ट देवोंने अपराध खामणा पूर्वक अभय मांगा तब आचार्य बोले

फेर एसा कबहि करना नहिं तहत्त कहकर गुरु-वचन अंगीकार किया बाद योगीके इष्टदेव स्व-स्थान गये क्षेत्रपालवीर अपने स्थान गया बाद योगी और सभा वगैराके समक्ष पूर्वोक्त योगीके माया विद्याओंका प्रत्युत्तररूप सर्व चमत्कार दिखाया जैसे कि अधर पालखीमें बैठकर गमन करना अधर आकासमें गमन करना अधर सभा में बैठकर व्याख्यान करना स्तंभित को खोलदेणा समवसरणादि ऋद्धिका प्रदर्शन ब्रह्मा विष्णु महेशादि देवोंका तथा गुर्वोंका तथा धर्मका त्याग कर जैन देवोंकी तथा गुरुकी तथा धर्मकी सेवाका प्रदर्शन इत्यादि प्रत्युत्तररूप सर्व चमत्कार दिखा-कर सर्व संघादिकका स्थैर्यकरण किया बाद योगी द्वेषभाव छोडकर शान्त हुवा और भद्रीक भाव धारण करा बाद मैत्री भाव पाया एकदा आचार्य बोले अहो योगी तुमारा हमारा नाम रहे एसा करो तब योगी बोला बहुतही ठीक है परन्तु क्या करना जिससें अपना नाम रहे तब आचार्य बोले कि कोइ एक मंदिर ले आवो तब योगी बोला ठीक है एसा कहकर चलागया

बाद आचार्य महाराज खुद गुजरातकी तरफ चले वीसनगरके पासका वडनगरसें जैन मंदिर को उडाकर चले और इस जैन मंदिरको मालव-देशमें सेमलीया नामक नगरमें स्थापन करा वह जैन मंदिर क्रमसें तीर्थ तरीके प्रसिद्ध हुवा और वह जैन मंदिर जिसमें आचार्य महाराजनें उडाया उस वखतमें विरोधि मांत्रिकनें उस मंदिरको विखरणेंके लिये भुसंडिका छुरेका मुंट वगैराके प्रहार किया था उस उपद्रवसें रक्षा कर ले आये उपरोक्त स्थानमें स्थिर कर सप्रभाव अधिष्ठायकसें उस जैन मंदिरको रक्षित कर अपणें नामको अमरकर कृत्य २ होकर श्रीवीरशासनकी प्रभावना करते हुवे और चतुर्विध श्रीसंघकी रक्षा पूर्वक मनोरथ पूर्ण करते हुवे श्रीआचार्य महाराज चिरकाल पर्यन्त विचरते भये और यह जैन मंदिर श्रीशान्तिनाथ स्वामिका है मालवदेशमें हालमें मौजूद है और तीर्थ करके प्रसिद्ध भी है और इस मंदिरमें आचार्य महाराज की चरण पादुका भी है और उपरोक्त चिन्ह भी मंदिरके स्तंभोसें देखा जावे है हालमें यह मंदिर

ममलिया तीर्थ करके रतलामसें ५ कोश मालव-
देसमें प्रसिद्ध है और भादवा सुदी २ को मंदिर
के अन्दरसें वर्षा वर्षे है ऐसा सुणा जावे है यह
उस मंदिरसें दृश्य चमत्कार है वह योगी भी
एक महादेवका मंदिर लाया था सो अरणोदके
पास है प्राये ऐसा सुणा जावे है और कास्मीर
पांचाल बुंदेलखंड कन्नोज काशी नदियाशान्त
आसाम वंग अंगकलिंग विदेहादि देशोंमें विहार
करतां मुख्य २ षट् दर्शनके तत्ववेत्ता भट्टाचार्या-
दिकसें तथा मुख्य २ मांत्रिकाचार्यादिकसें तथा
षडांग वेद पाठीयांसें तथा ज्योतिष्काचार्या-
दिकसें तथा तीन सरस्वती विद्यापीठोंमें शास्त्रा-
र्थादिक करके विजय लक्ष्मीको प्राप्त होनेसें
भट्टारक पुरंदर विद्याधर चक्रवर्ति सरस्वती कंठा-
भरण सर्वशास्त्रविशारद कविचक्रवर्ति जगद्गुरु
भट्टारक षडदर्शन प्रतिपालक नरदेव धर्मदेव
आदि अनेक विरुद वृन्दोसें सुशोभित होते भये
और पूर्वादि देशोंसे क्रमसें विहार करते हुए
मेदपाटमें होकर जब गौडदेश याने गौडवालमें
पधारे तब गौडदेशके जैन जातिवाले मनुष्योंकी

दशा बहुत गिरिहुइ देखकर अपने उपदेशके द्वारा आचार विवेकादि सिखाया जो कि पशु प्राय थे उन्होंको आचार विचारादि सिखाकर निपुण किये धर्म शिखाकर दृढ किया जोकि यथार्थ दृढ धर्मी मनुष्य बन गये बाद बहुतसा धर्मकृत्य करनेवाले भये हालमें भी विद्यमान है परन्तु पूर्व कालमें यह स्थिति थी जिस्का एक मसला है, जिणचन्दसूरि बाबो भलेज आवियो साठे वर्षे हाथमें पाणी लरायो इत्यादि मसला प्रसिद्ध है एसे महान-प्रभावक श्रीजिनचन्द्रसूरीजी श्रीगौडदेशके उद्धार कर्त्ता भये फेर एकदा गुरु महाराज मरु देशमें विहार करते हुवे सेत्रावा नगरमें पधारे तब महामहोत्सव पूर्वक नगरमें प्रवेश हुवा बाद निरन्तर भाव वृद्धि पूर्वक श्री-संघ विशेष करके धर्माराधन करे है तिस नगरमें एक महर्द्धिक चोपडा गोत्रीय धन्नासाह नामें सेठ रहे है सो सारी बातांसु सुखी है परन्तु तिस सेठको संतान नहिं है तिस कारणसें उदासीन रहे है एक दिनके समय धन्नासाहकों उदासीन देख श्रीगुरुमहाराज तिस सेठसें अवसरमें बोले

कि अहो शेठ तुम उदासीन कैसे क्या कारण है तब धन्नासाहनें श्रीगुरुमहाराजको अपनी सारी हालत कही सुणके श्रीगुरुमहाराज बोले कि निशंक होकर धर्माराधन करो सब अच्छा होगा बादमें चितासें मुक्त होकर विशेषधर्माराधन करने लगा और विशेष करके गुरु भक्ति करता हुवा रहे एक दिनके समे श्रीगुरुमहाराजका विहारका समय देखके धन्नासाह श्रीगुरुमहाराजसें प्रार्थनाकी कि हे गुरो मेरा वंश रहे एसी मेरेपर कृपा करके सुदृष्टि करो मैं आपका यह उपगार नहिं भूलूंगा तब श्रीगुरुमहाराज धन्नासाहसें बोले कि संतान होगा परन्तु एकसें जादा होवेतो एक हमकों देना एसा कहेकर विहार कर गये बाद धन्नासाहके सात पुत्र हुवे बादमें फेर विहार करते हुवे वहां पर पधारे परन्तु शेठतो लोभके वससें गुरुमहाराजको अपना मुख भी नहिं बतावे तब गुरुमहाराजनें धन्नासाहका हाल और लोकों सें पूछकर वाकब हुवे कितनेक दिन बाद गुरु-महाराज सेत्रावासें विहार किया तब धन्नासाहके सातों लडके घर छोडकर श्रीगुरुमहाराजके

पिछाडी भगे यह स्वरूप धन्नासाहको मालूम हुवा तब धन्नासाहजी उन सातों पुत्रोंको पीछे वापिस लानेके लिये उनके पिछाडी भगा और उन लडकोंको वहुत समझाकर पिछा लानेका उपाय किया परन्तु लडके किसी उपायसें पिछा आनेके लिये मंजूर नहीं हुवे और बोले कि पिताजी हमतो महाराजके हैं सो महाराजके संगही जावेंगे हम घरमे नहिं आवें तब धन्नासाह उदासीन होकर श्रीगुरुमहाराजके चरण कमलमें जापडा हे गुरो मैं दीन हूं मेरे ऊपर कृपा करो तब गुरुमहाराज बोले कि शेठ पहिले हमने एकका कहा था परन्तु अब दो देवो तब शेठ गुरुका वचन सुण-कर प्रमाण करा बादमें पहिले वडे २ लडके रखकर बाकीके ५ को धन्नासाहके साथ पिछे लौटा दिये बादमें दोनों भाइयोंने दीक्षा लिवी पढ लिखकर गीतार्थ भये समभाव समर्थ पुरुष भये बादमें चौमासेकी गुरु आज्ञा प्राप्त होकर सत्राचा नगर पधारे सुख समाधिसें चौमासे रहे सर्व श्रीसंघकें धर्मध्यानादिकृत्य अच्छी तरह संतोषकारक भया महा मुनिराज श्रीचोलाजी

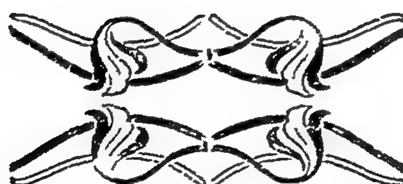
भोलाजी सुखसें धर्मध्यान करते हुवे रहे हैं तिस अवसरमें सेत्रावा नगरमें मरीका आगमन अकस्मात भया तब सर्व लोक मरी करके पीडित्त भये मरणें लगे जब गुरुसें प्रार्थना करीके हे गुरो ! हमको मरीसें बचाओ तब मुनि बोले कि अहो श्रावको हम तुमारे गामकी मरीका बंदोबस्त करें परन्तु ३ दिन तक हमको किसीने बतलाना नहिं ऐसा कहके उपाश्रयके अंदरहि निर्विघ्नता पूर्वक एकान्त प्रदेशमें दोनों महामुनि ध्यानस्थ हुवे बादमें म्याद पूर्ण हुवांके अर्वाक् श्रीसंघके अंदरसें भवितव्यताके वससें किसी अणवाकब बुढिया श्राविकाने आकर अवाज दीके हे महाराज मेरा घर डुबे है इतना सुणतेहि जबाब दिया जा तेरा घर नहिं डुबे बादमें सर्व हाल कहेकर अपना अंत समय जानकर वहांहि अणसण करके आराधनाको प्राप्त होकर समाधिसें काल करके स्वर्ग गए बाद श्रीसंघनें महोत्सवपूर्वक अग्नि संस्कार करा और उस ठिकाणे थुंभ बणाये उणों में हाल में चमत्कार मोजूद है औरबिसेत्रावा नगरमें बहुतसा चमत्कारिक

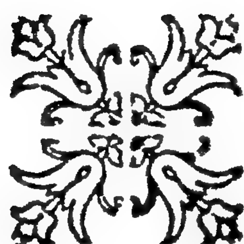
दृश्य प्राचीन इतिहास हाल में भी मौजूद है जादा कहांतक लिखा जावे सेत्रावा प्राचीन योगिनी खेडा कहाजावे है विशेष हाल गुरु मुख सें जाणना ऐसे समर्थ पुरुषों के प्रतिबोधक श्री मज्जिनचन्द्रसूरीश्वरजी भये और अधर पालखी के द्वारा सभास्थित अकब्बरादि वादसाहओं के मन चिंतित मनोर्थको पूरण करते भये और वि अनेक प्रकारमें अनेक प्रकारके मानासिक वाचिक मनोरथोंको पूरण करते भयेइत्यादि चमत्कार अने-कहें कहांतक लिखें और अनेक वार राजा वादसाहों सें शत्रुंजयादि तीर्थोंका दर्शन संघ यात्रादि धर्म कृत्य करवाते भये, और पर्वरक्षा धर्मरक्षा जीवरक्षा तीर्थरक्षा करवाते भये, और पूर्वोक्त विषयमें साधन भूत तांम्रपत्रादिक अनेक करवाते भये इस तरहसें आर्यधर्म षडदर्शन ऊपर आइहुई आपत्तियांको दूरकरके अकब्बरसाह जहांगीर याने साहश्लेम नामक वादशाहाओंके पूजनीक होते भये और अनेक गोत्रोंको प्रतिबोध देकर श्रावक नवीन बणाते भये इस माफक वहोत जिन शासनकी उन्नति करणे वाले भये फेर

गुरुमहाराजके समयराज १ महिमाराज २ धर्मनिधान ३ रत्ननिधान ४ ज्ञानविमल ५ सकलचंद ६ इत्यादि ६५ पचाणुवे शिष्य भये ऐसे श्रीजिनचंद्रसूरिजी महाराज सर्व आयु ७५ पचत्तर वरसको पाल करके संवत १६७० आ- वदि २ दूजके रोज वेनातटमें स्वर्ग प्राप्त भये तिस वखतमें वाण गंगाके मार्ग पर महज्जीतके नजदीकमें थुंभ अग्निसंस्कार संबंधि छतरी भी बिलाडाके श्रीसंघके तरफसें बणाई गई है वह खास मूलस्थान होनेसें चरण भि विराजमान किये तिसकी नकल यह है संवत १६७० मग- सर सुदी १० गुरुवासरे सवाई युगप्रधान श्री- जिनचन्द्रसूरिजी चरण पादुके कारापितम् श्री- बिलाडा श्रीसंघेन प्र। श्रीजिनसिंहसूरिभिः इस तरे का लेख चरण ऊपर हालमें मोजूद है यह स्थान जिर्णोद्धारकरावे वैसाहै श्रीजिनचन्द्रसूरिजी स्वर्ग प्राप्त भये तिस वखतमें संवत १६२१ भावहर्ष उपाध्यायसें भावहर्षीय खरतर शाखा निकली यह सातमा गच्छ भेद भया ॥ ६१ ॥

यह श्रीजिनचन्द्रसूरिजीका संक्षिप्त किंचित चरित्र कहा विशेष देखना होतो श्री नंदवंशावली चरित्र श्रीकर्मचंद्रमंत्रीचरित्र श्री कर्मचंद्रवंशावली वृत्तिः श्री कर्मचंद्रमंत्रोरास श्रीजिनचन्द्रसूरिजीका निर्वाण अष्टक कोटिगच्छपट्टावली उ। क्षमा-कल्याणजी कृत संस्कृत पट्टावल्यादिकसें जाणना

इति श्रीचारित्रसिंहगणी उधृत गणधराख्य प्रकरणस्य गुर्ज्जर हिन्दी भाषया परिपूर्तिभावम-गमत् भद्रं भूयात् ले. पा. यों





श्रीगणधर सार्द्धशतकनी मूळगाथाओ भाषान्तर सहित.



गुणमणि रोहणगिरिणो, रिसहजिणिंदस्स पढमसुणिवइणो। सिरिउसभसेनगणहारिणोणहे पणिवयामि पओ ॥ १ ॥

गुणमणिरोहणगिरेश्च ऋषभजिनेन्द्रस्य प्रथम मुनिपतेः। श्रीमदृभषसेनगणधरस्याऽनघौ प्रणिपतामि पादौ ॥ १ ॥

अर्थ—गुणरूपी रत्नोने उत्पन्नथवामां रोहणाचळ पर्वत समान अने प्रथम मुनिपति श्री ऋषभजिनेन्द्रनां अने तेमना प्रथमगणधर श्री ऋषभसेनना पवित्र चरणकमलने नमस्कार करूं छुं ॥ १ ॥

अजियाइ जिणिंदाणं, जणियाणंदाणं पणयपाणीणं। थुणिमो दीणमणोहं गणहारीणं गुणगणोहं ॥ २ ॥

अजितादिजिनेन्द्राणां जनितानन्दानां प्रणतप्राणिनाम्। स्तौम्यदीनमनसोऽहम् गणधराणां च गुणगणौघम् ॥ २ ॥

अर्थ—उत्पन्नकरेलछे आनंद जेमणे एवा, अने नमेला छे जगतना जीवो जेमने एवा श्री अजितनाथ विगेरे तीर्थंकरोंने अने तेमना गणधरोंना गुणसमूहने हूं अदीनमनथी [चितना उल्लास थी] स्तवुं छुं ॥ २ ॥

सिरिवद्धमाणवरनाण, चरणदंसण मणीणंजलनिहिणो। तिहुयणपहुणो पडि-हणिय सत्तुणो सत्तमो सीसो ॥ ३ ॥

श्रीवर्द्धमान वरज्ञानचारित्रदर्शन-मणीनां जलनिधे। "त्रिभुवनप्रभोः प्रति-हतशत्रोः सत्तमं शिष्यंश्च" ॥३॥

अर्थ—श्रीवृद्धिपामता उत्तम ज्ञान चारित्रने दर्शनरूप रत्नोंनां समुद्र सरखा अने हणेल छे राग द्वेषादि शत्रुओ जेणे एवा त्रण भुवनना स्वामी (श्री महावीर स्वामी ना श्रेष्ट शिष्य [संबंध अगळनीगाथासाथे] ॥ ३ ॥

संखाईए वि भवे साहिंतो जो समत्त सुयनाणी। छउमत्थेण न नज्जइ, एसो न हु केवली होइ ॥ ४ ॥

असङ्ख्यातीतानपि भवान् साधयन् यः समस्तश्रुतज्ञानी । छद्मस्थेन न ज्ञायतेऽसौ नैव केवली भवति ॥ ४ ॥

अर्थ—असंख्य भवोने जाणता एवा जे संपूर्ण श्रुतज्ञानना धणी के जेने छद्मस्थ जीवो "आ छद्मस्थ छे के केवली छे!" एम जाणीशकता नथी, परंतु जे केवली नथी [संबन्ध आगळनी गाथा साथे] ॥ ४ ३

तं तिरियमणुयदाणवदेविंद नमंसियं महासत्तं । सिरिनाणसिरिनिहाणं गोयमगणहारिणं वंदे ॥ ५ ॥

तं तिर्यङ्मनुज दानव देवेंद्र नमस्कृतं महासत्वम् । श्री ज्ञानश्रीनिधानं गौतम गणधारिणं वन्दे ॥ ५ ॥

अर्थ—ते तिर्यंच-मनुष्य-असुर-अने देवेन्द्रो ए नमस्कार करेला, महासत्ववाला, तथा श्री ज्ञानरूपी लक्ष्मीना निधान एवा श्रीगोतम गणधरने वंदना करूं छुं ॥ ५ ॥

जिणवद्धमानमुनिवइ-समप्पिया सेस-
त्तित्थभारधरणेहिं । पडिहयपडि-वक्खेणं,
जयम्मि धवलाइयं जेण ॥ ६ ॥

जिनवर्द्धमानमुनिपति-समर्पिता
शेषतीर्थभारधरणेन । प्रतिहतप्रति पक्षेण
जगति धवलायितं येनैव ॥ ६ ॥

अर्थ—मुनिपति एवा श्रीवर्धमान जिनेश्वरे
अर्पण करेला [सौंपेला] सर्व शासनना भारने
धारण करवा थी अने प्रतिपक्षीओंने [राग द्वेषने]
हणावाथी जेणे जगतमां प्रकाश कर्योछे
(संबन्ध आगळनी गाथासाथे) ॥६॥

तं तिहुयणाप्पणयपयारविंदमुद्दाम
काम करिसरहं । अनहं सुहम्मसामिं
पंचमट्ठाणाट्ठियं वंदे ॥ ७ ॥

तं त्रिभुवन प्रणत पदारविंद मुद्दाम
कामकरिशरभम् । अनघं सुधर्मस्वामिनं
पञ्चम स्थानास्थितं वंदे ॥ ७ ॥

अर्थ—तथा त्रणभुवनना प्राणियोंए
जेना चरण कमलने नमस्कार कर्यो छे. एवा,

तथा कामदेवरूपी हस्तीने जीतवामां अष्टापद समान अने पंचमे स्थाने (पांचमे नंबरे) रहेला एवा पवित्र श्री सुधर्मास्वामी नामना [पांचमां गणधरने] नमस्कार करूं छुं ॥ ७ ॥

नारुन्नेवि हु नो तरलतार अत्थिपि-च्छरीहिं मणो । मणयं वि मुणियपवय-णसम्भावं भामियं जस्स ॥८ ॥

मणपरमोहि पमुहाणि परमपुरपट्ठि-एण जेण समं । समइक्कंताणि समत्त-भव्वजणजणिय सुक्खाणि ॥ ९ ॥

तं जंबुनामनामंसुहम्मगणहारिणो गुणसमिद्धं । सीसंसुसिस निलयं गणहर-पयपालयं वंदे ॥ १० ॥

तारुण्येऽपि हु नो तरलताराक्षि प्रेक्षि-णीभिर्मनः । मनागपि ज्ञातप्रवचन सद्भावं भ्रामितं यस्य ॥ ८ ॥

मनःपरमावधि प्रमुखानि परमपुर प्रस्थितेन येन समम् । समतिक्रान्तानि समस्त भव्यजनजनितसौख्यानि ॥ ९ ॥

नं जंबूनामनामानं सुधर्मगणधारिणो गुणसमृद्धं । शिष्यं सुशिष्यनिलयं, गणधरपद पालकं वंदे ॥ १० ॥

अर्थ—चपलकीकीयोवाली आखोंवडे (कटाक्ष वडे) देखनारी एवी स्त्रीयों वडे युवावस्थामां पण निश्चय करेल जैनसिद्धांतनां सत पदार्थों वाळुं जेनुं, मन जरा पण चलायमान न थयुं अने मोक्ष नगरमां प्रयाण करता एवा जेनी साथे सर्वभव्यप्राणियोने सुख उत्पन्न करनार एवां मनःपर्यवज्ञान अने परमावधि प्रमुखश्रेष्ठवस्तुओं विच्छेदपामी, ते गुणनी ऋद्धिवाला गणधर पदने धारण करणार अने श्रेष्ठ शिष्योंमां अग्रेसरी एवा जंबूस्वामी नाम वाला श्रीसुधर्मगणधरनां शिष्यने नमस्कार करूं छुं ॥ ८, ९, १० ॥

संपत्तवराविवेयं वयत्थिगिहि जंबू नाम वयणाओ । पालिययुगपवरपयं पभवायरियं सया वन्दे ॥ ११ ॥

सम्प्राप्तवरविवेकं व्रतार्थि गृहि जंबू नाम वचनात् तं । पालित युगप्रवरपदं प्रभवाचार्यं सदा वंदे ॥ ११ ॥

अर्थ—दीक्षा अंगीकारकरवानी इच्छा-वाला श्रीजंबूस्वामीना वचनथी (उपदेशथी) प्राप्त थयेल छे. उत्तमविवेक जे ने एवा अने जमणे युग प्रधाननी पदवीनु पालन कर्युछे. एवा ते प्रभवसुरीने हूं सदा नमस्कार करूं छुं ॥ ११ ॥

कट्ठमहो परमो यं, तत्तं न मुणिज्जइति सोऊणं । सज्जंभवं भवाओ, विरत्तचित्तं नमंसामि ॥ १२ ॥

कष्टमहो परमोऽयं तत्वं न ज्ञायत इति श्रुत्वाऽपि । शय्यंभवं भवतो विरक्तचित्तं नमामि ॥ १२ ॥

अर्थ—" अहो आ परमकष्ट छे, तत्व कोई जाण तुं नथी " एम उपदेश सांभळवा थी जेमनु चित्त संसार थी विरक्त थयुं ते श्री शय्यं भवसूरिने हूं नमस्कार करूं छुं. ॥ १२ ॥

संजणियपणयभद्दं जसभद्दं मुणि
गणाहिवं सगुणं । संभूयं सुहसंभूई
भायणं सूरि मणुस्सरिमो ॥ १३ ॥

सञ्जनित प्रणतभद्रं यशोभद्रं मुनि
गणाधिपं सगुणं । संभूतं सुखसंभूति-
भाजनं सूरि मनुस्मरामः ॥ १३ ॥

अर्थ—नमस्कारकरनाराओनुंजेणे कल्याण
करेलछे एवा गुणवंत श्रीयशोभद्रसूरिने अने सुख
संपत्तिनु पात्र एवा श्रीसंभूतिसूरिनुं वारंवार
स्मरण करूं छुं ॥ १३ ॥

सुगुरुतरणीर जिणसमयसिंधुणो
पारगामिणो सम्मं । सिरिभद्दबाहु
गुरुणो हियए नामक्खराणि धारिमो १४

सुगुरुतरणीनि जिन सिद्धान्तसिन्धो
पारगामिनः सम्यक् । श्रीभद्रबाहु गुरो-
र्हृदये नामाक्षराणि धरामहे ॥ १४ ॥

अर्थ—सद्गुरुमां सूर्यसमानछे, माटे जैन
सिद्धान्तरूपसमुद्रनो सारीरीते पारपामेला
श्रीभद्रबाहु गुरुना नामाक्षरोने हूं हृदयमां
धारण करूं छुं ॥ १४ ॥

सो कहं न थूलभद्दो, लहइ सलाहं मुणीणं मज्झंमि । लीलाइ जेण हणिओ, सरहेण व मयणमयराओ ॥ १५ ॥

स कथं न स्थूलभद्रो, लभते श्लाघां मुनीनां मध्येऽपि । लीलया येन हतः, शरभेणेव मदन मृगराजः ॥ १५ ॥

अर्थ—अष्टापद सरखा जेणे कामदेवरूपी सिंहने लीला मात्रमां हण्यो ते श्रीस्थूलिभद्र मुनि सर्व मुनियोमां प्रशंसा केम न पामे ॥१५॥

कामपईवसिहाए, कोसाए बहुसिणेह भरिआए । घणदड्ढ जणपयंगाए, वि जीए जो झामिओ नेवा ॥ १६ ॥

काम प्रदीप शिखया कोशाया बहु स्नेह भृतया । घनदग्ध जनपतङ्गयाऽपि यया यो ध्मापितो नैव ॥ १६ ॥

अर्थ—अत्यंत स्नेहवाली कामरूपी दीवानी जोति सरखी अने घणा मनुष्यरूपी पतंगियाने जेणे (कामाग्निमां) बाली दीधेल छे, एवी जे कोशा वेश्यावडे पण जेनी कामाग्नि न सलग्यो (संबंध श्री स्थूलिभद्र साथे) ॥ १६ ॥

जेण रविणोव विहिए, इह जणगिहे सप्पहं पयासंती। सययं सकज्ज लग्गा पहयपहा सा सणिद्धावि ॥ १७ ॥

येन रविणेव विहितेह जनगृहे स्वप्रभां प्रकाशयन्ती। सततं स्वकार्ये लग्ना प्रहतप्रभा सा स्निग्धाऽपि ॥ १७ ॥

अर्थ—जे सूर्य आ कोश्याना घरमां पोतानी प्रभा प्रगट करी जेथी (कामदेवरूपी दीवानी जोतीरूप वेश्या जे पोतानी प्रभाने प्रगट करती हती ते स्नेहवाली (पक्षे तैलवाली) छतां (पण हणायली कांतिवाली ते वेश्यारूपजोति निरंतर पोताना कार्यमां लागी गई (अर्थात दीवानी जोतिनी प्रभा जेम सूर्यना प्रकाश वडे हणाय छे तेम स्थूलभद्ररूप सूर्य वैश्यानी कामरूप जोति हणी नाखी) ॥ १७ ॥

जेणासु सावियासाविया चरण करण सहिएण। सपरेसिं हियकए सुकय जोगउ जोग्गयं दट्ठुं ॥ १८ ॥

येनाशु श्राविनाः श्राविकाः चरण करण सहितेन। स्वपरयोर्हितकृते सुकृत

योगतो योग्यत्वं दृष्ट्वा ॥ १८ ॥

अर्थ—वली चारित्रसित्तरी अने करण-सितरी युक्त जे मुनिये पुण्यना योग थी पोताना अने परना कल्याण माटे योग्यपणुं जोइने [वेश्याने] शीघ्र श्राविका करी ॥ १८ ॥

तमपच्छिमं चउद्दसपुव्वीणं चरण-नाणसिरिसरणं । सिरिथूलभद्दसमणं वंदे हं मत्तगयगमणं ॥ १९ ॥

तमपश्चिमं चतुर्दशपूर्विणां चरण-ज्ञानश्रीशरणं । श्रीस्थूलभद्रश्रमणं वंदेऽ-हं मत्तगजगमनम् ॥ १९ ॥

अर्थ—ते चउदपूर्वीयोमां छेल्ला चउद्-पूर्वी अने चारित्र तथा ज्ञानलक्ष्मी ने शरणभूत तथा मदोन्मत्तहस्तीसरखीगतिवाला श्री स्थूलिभद्र मुनिने हूं नमस्कार करूं छुं ॥ १९ ॥

विहिया अणगूहिय विरियसत्तिणा सत्तमेण संतुलणा । जेणाज्जमहागिरिणा समइक्कंते वि जिणकप्पे ॥ २० ॥

विहिताऽनवगूढ वीर्य शक्तिना सत्त-मेन सन्तुलना च । येनार्यमहागिरिणा समतिक्रान्तेऽपि जिनकल्पे ॥ २० ॥

अर्थ—नहीं गोपवेली वीर्यशक्तिवाला जे श्रेष्ठ आर्य महागिरीये जिनकल्प विच्छेद थये छते पण जिनकल्पनी तुलना करी संबन्ध अगलनी गाथा साथे] ॥ २० ॥

तस्स कणिट्ठं लट्ठं अज्जसुहत्थिं सुहत्थि जणणयं । अवहत्थियसंसारं सारं सूरिं समणुस्सरिमो ॥ २१ ॥

तस्य कनिष्ठं लष्ट मार्यसुहस्ति सुखार्थिजनप्रणतम् । अपहस्तितसंसारं सारं सूरिं समनुस्मरामः ॥ २१ ॥

अर्थ—तेमना नानाभाई के जेणे सुखार्थी जनोए नमस्कार करेल छे, अने जमणे संसारनो त्याग कर्यो छे एवा ज्ञानादिक वडे पुष्ट अने उत्तम श्री आर्य सुहस्तीसूरिने वारंवार स्मरण करूं छूं ॥ २१ ॥

अज्जसमुद्दं जणयं सिरीइ वंदे समुद्द गंभीरं । तह अज्जमंगुसूरिं अज्जसुधम्मं य धम्मरयं ॥ २२ ॥

आर्यसमुद्रं जनकं श्रिया वन्दे समुद्र गम्भीरं च । तथैवार्य्यमङ्गुसूरि-मार्यसुधर्म

च धर्मरतम् ॥ २२ ॥

अर्थ—ज्ञानादिलक्ष्मीने जन्म आपनार अने समुद्र सरखा गंभीर एवा श्री आर्यसमुद्रने नमस्कार करूं छुं तथा धर्ममांरक्त एवा श्री आर्यमंगुसूरि अने श्री आर्य सुधर्मने हूं नमस्कार करूं छुं ॥ २२ ॥

मणवयणकायगुत्तं तं वंदे भद्दगुत्त गणनाहं । जइ जिमइ जई जस्मंडलीए पत्तो मरइ तेहिं समं ॥ २३ ॥

मनोवचनकायगुप्तं तं वन्दे भद्रगुप्त गणनाथम् । यद्यत्तियातिर्यन्मण्डल्यां प्राप्तो म्रियते तैः समम् ॥ २३ ॥

अर्थ—मन वचन कायाना अशुभ योगने गोपनार एवा ते भद्रगुप्तसूरिने नमस्कार करूं छुं, के जेनी मंडलीमां प्राप्त थयेलो जे यति जो भोजन करे तो ते सर्व सहित मरणपामे ॥ २३ ॥

छमासिएण सुकयाणुभावओ जाय जाइसरणेणं । परिणामओणवज्जा पव्व-ज्जा जेण पडिवन्ना ॥ २४ ॥

षण्मासिकेन सुकृतानुभावतो जात-

जातिस्मरणेन । परिणामतोऽनवद्या प्रव्रज्या येन प्रतिपन्ना ॥ २४ ॥

अर्थ—छ मासे पुण्यनां प्रभाव थी जातिस्मरणज्ञानवडे जेणे शुभपरिणाम थी निर्मल चारित्र अंगिकार कर्युं एवा [सम्बन्ध आगल]॥२४॥

तुंबवणसंनिवेसे जाएणं नंदणेणं नंदाए । धणागिरिणो तणएणं तिहुयणपभुपणयचरणेणं ॥ २५ ॥

तुम्बवनसन्निवेशे सुजातेन नन्दनेन नन्दायाः । धनगिरेस्तनयेन त्रिभुवन प्रभुप्रणत चरणेन ॥ २५ ॥

अर्थ—अने तुंबवन नामना गाममां जन्मेला एवा नंदा माताना अने धनगिरि पिताना पुत्र तथा त्रण भुवनना प्रभु आ नमेला छे चरण जेमना एवा ॥ २५ ॥

१-अर्थात एक मंडलीमां जेटला साधु भोजन करे ते सर्व श्री भद्रगुप्तसूरिना काल धर्म वक्ते मरण पामे पण बधु जीवे नहीं.

२-अहिं त्रण भुवननां प्रभु ए शब्द विचारवा योग्य छे. कारण के श्री वज्रस्वामी पोते ३ भुवनना

प्रभु कदाच अपेक्षाए मानिए तो अमने कया त्रण भुवननां प्रभु नमस्कार करे? एना उत्तरमां देवोये परिक्षा कर नमस्कार कर्यो छे इंद्रादिक देव पण पंच परमेष्ठी ने नमस्कार करेछे वास्ते विशेषण सार्थक छे.

इग्गारसंग पाढो, कओ दढं जेण साहुणीहिंतो। तस्स ज्झायज्झयणु ज्जएण, वयसा छवरिसेणं ॥ २६ ॥

एकादशाङ्गपाठः कृतो दढं येन साध्वीभ्यः। तस्य स्वाध्यायाध्ययनोद्यतेन वयसा षड्वार्षिकेन ॥ २६ ॥

अर्थ—तथा जेणे साध्वीओनी पासे थी अगियार अंगनो पाठ दढ कर्यो छे, अने ते ग्यारा अंगनी स्वाध्याय अध्ययनमां तत्पर एवा ६ वर्षनी वये ११ अंगना ज्ञाता थया ॥ २६ ॥

सिरिअज्जसींहगिरिणा गुरुणा विहिओ गुणाणुरागेणं। लहुओ वि जो गुरुकओ, नाणदाणओ सेससाहूणं ॥ २७ ॥

श्रीमदार्य्यसिंहगिरिणा गुरुणा विहित गुणानुरागेण। लघुरपि योगुरुकृतो ज्ञानादानादशेषसाधूनाम् ॥ २७ ॥

अर्थ—सर्व साधुओने ज्ञान दान आपवा थी जे श्रीवज्रस्वामी नाना बालक हता तोपण गुणानुरागवडे श्रीआर्यसिंहगिरीगुरुए जेमने विधि थी मोटा स्थाप्या ॥ २७ ॥

उज्जेणीए गहियव्वीओ, लहुगुज्झ-गेहिं वरिसंते। जो सुजइत्ति निमिंतिय, परिक्खिओ पत्तनविज्जो ॥ २८ ॥

उज्जयिन्यां ग्रहीतव्रतोऽसौ लघु गुह्य कैर्वर्षत्सु। यः सुयतिरिति निमन्त्रय परीक्षितः प्राप्तविद्यः ॥ २८ ॥

अर्थ—अंगीकार करेल छे दीक्षा जेमणे एवा श्री वज्रस्वामीने उज्जयनी जतां वर्षाद वरसते अप्पकायनी विराधना न थाय एवा हेतु थी एक मंडपमां निवास करता, अने गोचरीनी निमंत्रणा करी परीक्षा करता जे उत्तम मुनि कहेवाया, तेथी कुबेरना सामानिक देवो पास थी प्राप्त करेल छे विद्या जेमणे एवा ॥ २८ ॥

उद्धरिया जेण पयाणुसारिणा गयण गामिणी विज्जा। सुमहावईन्नपुव्वाओ सव्वहा पसमरसिएण ॥ २९ ॥

उधृता येन पदानुसारिणा गगनगामिनीविद्या । सुमहापरिज्ञाप्रकीर्णपूर्वेन: सर्वथा प्रशमरसिकेन ॥ २९ ॥

अर्थ—तथा सर्वांशे उपशान्तरसमां रसिक एवा जेमणे महापरिज्ञा अध्ययनवाला पूर्वमांथी पदानुसारी लब्धीवडे गगनगामिनी विद्यानो उद्धार कर्यो एवा ॥ २९ ॥

दुक्कालंमि दुवालस वरसियम्मि सीयमाणे संघेय। विज्जाबलेण माणियमन्नं जेणन्नक्खिनाओ ॥ ३० ॥

दुष्कालेषु द्वादशवार्षिकेषु च सीदत्सु संघेषुच । विद्याबलेनानीत-मन्नं येनान्य क्षेत्रतः ॥ ३० ॥

अर्थ—तथा १२ वर्षना दुकालमां संघ पीडा पामता, जेमणे विद्याना बलथी बीजा देशोंमांथी अनाज आण्युं एवा ॥ ३० ॥

सुररायचायविब्भम-मसुहा धणुसु कनयणचाणाए । कामग्गिसमीरण विहिय-पत्थणावयण घट्टणाए ॥ ३१ ॥

सुरराज चापविभ्रमभ्रकुटी-धनुर्मुक्त नयन बाणयाऽपि। कामाग्निसमीरणविहित प्रार्थना वचन घट्टनया ॥ ३१

अर्थ—तथा मेघ धनुष्यना विलासवालां भ्रूरूपी धनुष्यमां थी मुकेल छे, कटाक्षबाण जेनए. एवी अने कामाग्निने प्रदीप्त करवामां पवन सरखी, करेली प्रार्थनानां वचनोनी घटना-वाली एवी ॥ ३१ ॥

लट्ठंगपइट्ठाए सिट्ठिसुयाए विसिट्ठचि-ट्ठाए। गुणगणसवणाओ जस्स दंसणुकं ठियमणाए ॥ ३२ ॥

लष्टाङ्ग प्रतिष्ठया श्रेष्ठिसुतया विशि-ष्टचेष्टिकया। गुणगणश्रवणाद्यस्य दर्शनो-त्कण्ठितमानसया ॥ ३२ ॥

निजजणय दिन्नधणकणयरयणरासी ए जो ण कन्नाए। तुच्छमवि मुच्छिओ जुव्वणे वि धनियं धणड्ढाए ॥ ३३ ॥

निज जनक दत्त धन कनक रत्नराश्या यो न कन्यया। तुच्छमपि मूर्च्छितो यौवनेऽपि धनितं धनाढ्यया ॥ ३३ ॥

अर्थ–तथा पुष्ट अंगनी प्रतिष्ठा [सुंदरता] वाली, श्रेष्ठ चेष्टाओवाली, गुण सांभलवाथी जेने मलवाने उत्कंठित मनवाली अने पोताना पिताए आपेल धन-सुवर्णने रत्नना समूहवाली एवी धनाढ्य कन्यावडे यौवनावस्थामां पण जे वज्र-स्वामी अल्प पण मोह न पाम्या ॥ ३२,३३ ॥

जलणगिहाओ माहेसरीओ कुसुमाणि जेण समाणित्ता । तिवन्नियाणं माणो मलिओ संघुन्नई विहिया ॥ ३४ ॥

ज्वलनगृहाद् माहेश्वर्या कुसुमानि येन समानीय । त्रैवर्णिकानां मानो मलितः सङ्घोन्नतिर्विहिता ॥ ३४ ॥

अर्थः—माहेश्वरी नगरीने विषे आवेला हुताशन नामना वनमांथी पुष्पो लावीनें जेमणे त्रणे वर्णना लोकोनुं बोद्धोनुं मान म्लानकरयुं अने संघनी उन्नति करी अेवा ॥ ३४ ॥

दूरे सारिय वइरो वयरसेन नामेण जस्स बहुसीसो । सो सो जाओ जाओ जयम्मि जायाणु सारिगुणो ॥ ३५ ॥

दूरोत्सारितवैरो वज्रसेन नाम्ना यस्य बहुशिष्यः । सोऽसौ जातो जातो जगति जातानुसारिगुणश्च ॥ ३५ ॥

अर्थः—दूर करेल छे वैर जेणे एवो अने घणा शिष्यवालो वज्रसेन नामे जेने शिष्य थयो, अने ते वज्रसेन पण आ जगतमां नामने अनुसारे गुणवाळा थया ॥ ३५ ॥

कुंकुणविसए सौपारयम्मि सुगुरुवएसओ जेण । कहिय सुभिक्ख मविग्घ विहिओ संघो गुणमहग्घो ॥ ३६ ॥

कुंकुणाविषयेषु सौपारके सुगुरूपदेशतो येन । कथयित्वा सुभिक्षमविघ्नं विहितः सङ्घो गुणमहार्घ्यः ॥ ३६ ॥

अर्थः—के जेणे सुगुरुना उपदेशथी कोंकण देशनेविषे सोपारकनगरमां जणे निर्विघ्नपणे सुकाळ थशे एम कहीने गुणवडे अति श्रेष्ठ एवा संघने निर्विघ्न कर्यो ॥ ३६ ॥

तमहं दसपुव्वधरं धम्मधुराधरण सेससमायरियं । सिरिवइरसामिसूरिं वंदे थिरियाइ मेरुगिरिं ॥ ३७ ॥

नमहं दशपूर्वधरं धर्मधुराधरणशेष-समवीर्यम् । श्रीवज्रस्वामिसूरिं, वन्दे स्थैर्येण मेरुगिरिम् ॥ ३७ ॥

अर्थः—तथा दशपूर्व विद्याना धरनार, तथा धर्मधुरानेधारणकरवामां शेषनाग समान परक्रम वाळा, अने स्थिरतामां मेरुपर्वत सरखा एवा ते श्री वज्रस्वामि सूरिने नमस्कार करुं छुं. ॥३७॥

निअजणणिवयणकरणंमि उज्जुओ दिट्ठिवायपढणत्थं । तोसलिपुत्तंतगओ ढड्ढरसड्ढाणुमग्गेण ॥ ३८ ॥

निजजननी वचन करण उद्यतो दृष्टि-वाद पठनार्थम् । तौशलिपुत्रान्ते गतो ढड्ढरश्राद्धानुमार्गेण ॥ ३८ ॥

अर्थः—पोतानी मातानुं वचन पाळवाने तैयार थयेल एवा जे (आर्यरक्षित) द्रष्टिवाद सूत्र भणवा माटे तोशलिपुत्र नामना आचार्य पासे ढड्ढर नामना श्रावक साथे गया. ॥ ३८ ॥

सड्ढाणुसारओ विहियसयलमुणिवं-दणो य जो गुरुणा । अकयाणुवंदणो सावगस्स जो एवामिह भणिओ ॥ ३९ ॥

श्राद्धानुसारतो विहित सकलमुनि-वन्दनश्च यो गुरुणा। अकृतानुवन्दनः श्रावकस्य च एवमिह भणितश्च ॥ ३९ ॥

अर्थः—अने ढड्ढर श्रावकने अनुसारे जेणे मुनि वंदनादि सर्व क्रियाकरी पण त्यार बाद श्रावक ने वंदणा नहिं करेल अेवा जेने गुरुअे त्यां अे प्रमाणे पूछयुं के ॥ ३९ ॥

को धम्म गुरु तुम्हाणमित्थ य तेण वि विणय पणएणं। गुरुणो निदंसिओ स ढड्ढरसड्ढो वियड्ढेण ॥ ४० ॥

को धर्मगुरु युष्माकमत्र च तेनापि विनयप्रणतेन। गुरोर्निर्दर्शितः स ढड्ढर श्राद्धो विदग्धेन ॥ ४० ॥

अर्थः—अहिं तमारा धर्मगुरु कोण छे? त्यारे चतुर अेवा आर्यरक्षिते पण विनय पूर्वक नमस्कार करीने गुरुने ते ढड्ढर श्रावक बतलाव्यो के आ मारा गुरु छे ॥ ४० ॥

अकयगुरुणिण्हवेणं सूरिसयासम्मि जिणमयं सोउं। परिवज्जिय सावज्जं पवज्जागिरिं समारूढो ॥ ४१ ॥

अकृतगुरुनिह्नवेन सूरेः सकाशाज्जिनमतं श्रुत्वा । परिवर्जितसावद्यं प्रव्रज्यागिरिं समारूढः ॥ ४१ ॥

अर्थः—ए प्रमाणे गुरुने नहिं गोपवनारा तेणे सूरिनी पासेथी जैनमत सांभळीने सावद्य व्यापारनो त्याग करी प्रव्रज्या पर्वत पर आरूढ थयेल तथा ॥ ४१ ॥

सीहत्ता निक्खंतो सीहत्ताए य विहरिओ जोउ । साहिय नव पुव्वसुओ संपत्तमहत्तसूरिपओ ॥ ४२ ॥

सिंहत्वेन निष्क्रान्तः सिंहतया च प्रविचरितो यस्तु । साधिकनवपूर्वश्रुतः सम्प्राप्तो महासूरिपदम् ॥ ४२ ॥

अर्थः—सिंहवत् संसारमांथी निकळीने सिंहवत् चारित्र पाळता अेवा जेणे साधिक नव पूर्वनुं श्रुतज्ञान प्राप्त कर्युं अने सूरिपद पाम्या॥४२॥

सुरवरपहुपुट्ठेणं महाविदेहम्मि तित्थनाहेणं। कहिउ निगोयभूयाणं भासओ भारहे जोउ ॥ ४३ ॥

सुरवर प्रभुपृष्टेन महाविदेहेषु तीर्थ नाथेन। कथितो निगोद भूतानां भाषको भारते यस्तु ॥ ४३ ॥

अर्थः—तथा महाविदेहमां इन्द्रे पूछेला श्री तीर्थकर भगवाने भरतक्षेत्रमां जेने निगोद जीवोनुं स्वरुप कहेनार कह्या ॥ ४३ ॥

जस्स सयासे सक्को माहणरूवेण पुच्छए एवं। भयवं फुडमन्नेसि अ मह कित्तिय माउयं कहसु ॥ ४४ ॥

यस्य सकाशे शक्रो ब्राह्मणरूपेण पृच्छति चैवम्। भगवन् स्फुटं मन्यसे च मम कियद् मितमायुः कथय ॥ ४४ ॥

अर्थः—अने तेथी इंद्रे ब्राह्मणना रूपमां आवी जेनी पासे अ प्रमाणे पूछयुं के हे भगवन् आप प्रगट जाणो छो तेथी मारुं आयुष्य केटलुं छे? ते कहो. ॥ ४४ ॥

सक्को भवन्ति भणिओ मुणिओ जेणाउयप्पमाणेण। पुट्टेण निगोयाणं वि वण्णणा जेणा निद्दिट्ठा ॥ ४५ ॥

शक्रो भवान् भणितो मत्वा येनायुः प्रमाणेन । पृष्टेन निगोदानामपि वर्णना येन निर्दिष्टा ॥ ४५ ॥

अर्थः—त्यार बाद आयुष्यना प्रमाण वडे जाणीने जेणे एम कह्युं के तमो इन्द्र छो, त्यार बाद इन्द्रे पूछेला एवा जेणे निगोद जीवोनुं पण वर्णन कर्युं ॥ ४५ ॥

हरिसभरनिब्भरेणं, हरिणा जो संथुओ महासत्तो । जेण सपयम्मि सूरी वि, ठाविओ गुणिसु बहुमाणो ॥ ४६ ॥

हर्षभर निर्भरेण हरिणा यः संस्तुतो महासत्त्वः । येन स्वपदे सूरिरपि स्थापितो गुणिषु बहुमानः ॥ ४६ ॥

अर्थः—तेथी अत्यंत हर्षना समूहवाला इन्द्रे जे महापराक्रमीनी स्तुति करी , अने जेणे पोताने पदे आचार्य पण स्थाप्या.गुणीप्रत्ये बहुमान करवुं तेमां शुं आश्चर्य ! ॥४६ ॥

रक्खिय चरित्तरयणं पयडिय जिणपवयणं पसंनमणं । वंदामि अज्जरक्खिय-मलक्खियंतं खमासमणं ॥ ४७ ॥

रक्षितचरित्ररत्नं प्रकटितजिन-प्रवचनं प्रशान्तमनसम् । वन्दे चार्यरक्षित मलक्षितान्तं क्षमाश्रमणम् ॥ ४७ ॥

अर्थः—तथा चारित्ररूपिरत्नने रक्षणकरनार जैन सिद्धान्तने प्रगट करनार , प्रशान्तमनवाला , जेनो अन्तनजणाय अेवा श्री आर्यरक्षित क्षमा श्रमण नेहुं नमस्कार करूं छुं ॥ ४७ ॥

तयणु जुगपवर गुणिणो जाया जायाणं जे सिरोमणिणो । सन्नाणचरणगुण रयण जलहिणो पत्तसुयनिहिणो ॥ ४८ ॥

तदनु युगप्रवर गुणिनोजाता जातानां ये शिरोमणयः । सज्ज्ञान-चरणगुणरत्न-जलधयः प्राप्तश्रुतनिधयः ॥४८॥

अर्थ—त्यारबाद युगप्रधान गुणवालाएवा जे मुनियोमां श्रेष्ट थया अने उत्तम ज्ञान चारित्र गुणरूपीरत्नना समुद्र तथा श्रुतनिधान ने प्राप्तथयेला एवा ॥४८॥

परवादिवारवारणवियारणे जे मिगारिणो गुरुणो । ते सुगहियनामाणो सरणं मह हुंतु जइपहुणो ॥ ४९ ॥

परवादिवारवारणविदारणे ये मृगारयो गुरवः। ते सुगृहीतनामानः शरणं मम भवन्तु यतिप्रभवः

अर्थः—जे मुनियो परवादीरूप हस्तियो ने विदारवामां सिंहसरखाथया ते आचार्यो नामग्रहणपूर्वक मारे शरणभूतहो ॥४९॥

पसमरइपमुहपयरण पंचसया संकया कया जेहिं। पुव्वगयवायगाणं तेसिमुमासाइ नामाणं॥५०॥ प्रशमरतिप्रमुख प्रकरण-पञ्चशतः संस्कृताः कृता यैः। पूर्वगतवाचकानां तेषामुमास्वातिनाम्नां च ॥५०॥

अर्थः—जेमणे प्रशमरति विगेरे पांच सें (५००) संस्कृत प्रकरणोरच्यां ते पूर्वना ज्ञानी उमास्वाति नामना वाचकने ॥ ५० ॥

पडिहयपडिवक्खाणं पयडीकय-पणयपाणि सुक्खाणं। पणमामि पायव-उमं विहिणा विणएण निच्छउमं ॥ ५१ ॥

प्रतिहतप्रतिपक्षानां प्रगटीकृतप्रणत प्राणिसौख्यानां । प्रणमामि पादपद्मं विधिना विनयेण निश्छद्मम् ॥ ५१ ॥

अर्थः—के जमणे प्रतिपक्षीओने पराहत कर्या छे. अने नमस्कार करनार प्राणीयोने सुख प्रगट कर्युंछे, एवा श्री उमास्वाति वाचकना चरण कमलने विधि अने विनय पूर्वक कपट रहित पणे नमस्कार करूं छुं ॥ ५१ ॥

जाइणिमहयरिया—वयणमसवणओ पत्तपरमनिव्वेओ । भवकारागाराओ साहंकाराओ नीहरिओ ॥ ५२ ॥

याकिनी महत्तरा वचनश्रवणतः प्राप्तपरमनिर्वेदः । भवकारागारतः स्वाहंकारात् निस्सरितश्च ॥ ५२ ॥

अर्थ—याकिनि महत्तरा नामनी साध्वीनुं वचन सांभलवाथी उत्कृष्ट वैराग्यने प्राप्तथयेला अने पोतानी विद्याना अभिमानथी संसाररूपी केदखानामांथी निकलेला ॥ ५२ ॥

सुगुरुसमीवोवगओ तदुत्तसुत्तोवएसओ जो उ । पडिवन्नसव्वविरई तत्तरुई तत्थ विहियरई ॥ ५३ ॥

सुगुरुसमीपोपगत—स्तदुक्तसूत्रोपदेशतो यस्तु । प्रतिपन्नसर्वविरति-स्तत्त्वरुचि स्तत्र विहितरतिः ॥ ५३ ॥

अर्थः—सद्गुरुनी पासे गयेला, अने तेमना कहेला सिद्धान्तना उपदेशथी सर्वविरति अंगीकार करेल, तथा तत्व उपर रुचीवाळा, अनेते तत्वमांज रति करेल छे जेणे एवा. ॥५३॥

गुरुपारतंते उवगयगणिपओ वि मुणिय जिणमयं सम्मं । मयरहिओ सपरहियं काउंमणो पयरणे कुणइ ॥ ५४ ॥

गुरुपार—तंत्र्यादुपगतगणिपदोऽपि मत्वा जिनमतं सम्यग् ।

मदरहितः स्वपरहितं कर्तुमनाः प्रकरणान् करोति ॥ ५४ ॥

अर्थः—गुरुनी परतंत्रताथी गणिपद प्राप्त करेल, जैनमतने सम्यक् प्रकारे जाणीने मद रहित थयेल तथा पोताना अने परना हितमाटे जेओए अनेक प्रकरणो रच्यां एवा.॥ ५४ ॥

चउदस सयपयरणगो निरुद्धदोसो सया हयप्पओसो । हरिभद्दो हयियतमो हरिव्व जाओ जुगप्पवरो ॥ ५५ ॥

चतुर्दशशतप्रकरणगो निरुद्धदोषः सदा हतप्रद्वेषः। हरिभद्रो हततमा हरि

रिव जातो युगप्रवरः ॥ ५५ ॥

अर्थः—१४००प्रकरणोने रचनार, दोष ने निवारनार, हमेशां द्वेष ने हणनार, अनेअज्ञानरूप अंधकारने विनाश करनार अेवा सूर्य सरखा श्री हरिभद्रसूरि युगप्रधान थया ॥५५॥

उइयंमि मिहिरिभद्दं सुदिट्टिणो होइ मग्गदंसणओ। तह हरि भद्दायरिए भद्दायरियंमि उदयमिए ॥ ५६ ॥

उदिते मिहिरे भद्रं सुदृष्टयो भवंति मार्गदर्शनतः। तथा हरिभद्राचार्ये भद्रा चरणे उदयमिते ॥ ५६ ॥

अर्थ;—सूर्य उदय पामतां निपुण चक्षुवाला जीवोने मार्ग देखवाथी जेम सुख उपजे तेम कल्याणकारी चरित्रवाला अेवा श्री हरिभद्र सूरि सूर्य उदय पामतां सम्यग् द्रष्टी जीवोने धर्म मार्ग मालूम पडवाथी अत्यन्त सुख उत्पन्न थयुं ॥ ५६ ॥

जं पइ केई समनामा भोलिया भोलियाइं जंपंति। चीयावासिदिक्खिओ सिक्खिओ य गीयाण तं नमयं ॥ ५७ ॥

यं प्रति केऽपि समनाम्ना भ्रान्त्या भो अलीकानि जल्पन्ति। चैत्यवासिदीक्षितः शिक्षितश्च गीतानां तं नमत ॥ ५७ ॥

अर्थः—हेसुज्ञो ! सरखा नामवाला बीजा हरिभद्रनी भ्रान्ति वडे केटला अेक अेज हरिभद्र ने माटे अेम झूठ बोलेछे के— हरिभद्रसूरितो चैत्यवासीना शिष्य छे, अने चैत्यवासी पासेथी शास्त्रो शीख्या छे. अेवा ते सत्य हरिभद्रसूरिने नमस्कार थाओ ॥ ५७ ॥

हयकुसमयभडजिणभड—सीसो सेसुव्व धरिय तित्थभरो। जुगपवर जिणदत्तपहुत्त-सुत्तनत्तत्थरयण सिरो ॥ ५८ ॥

हतकुसमयभटजिनभटशिष्यः शेष इव धृततीर्थभरः। युगप्रवर जिनदत्त प्रभूक्तसूत्रतत्त्वार्थरत्नशिराः ॥ ५८ ॥

अर्थः—कुसिद्धान्त रूपी सुभटोने हणनार अेवा श्री जिनभटना शिष्य, तथा शेषनागनी माफक धारण करेली छे शासन रूपी पृथ्वि जेणे अेवा, तथा युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरियें कहे

ला सूत्र तत्वार्थ रूप रत्नने मस्तके धारण करनार, ॥ ५८ ॥

तं संकोइयकुसमयकोसिअकुलममल मुत्तमं वंदे । पणयजणादिन्न भद्दं हरिभद्दपहुं पहासंतं ॥ ५९ ॥

तं संकोचितकुसमयकौशिक कुल-ममलमुत्तमं वंदे । प्रणतजनदत्तभद्रं हरि-भद्रप्रभुं प्रभासमानम् ॥ ५९ ॥

अर्थः— तथा संकोच पमाडेल छे कुसिद्धान्तरूपी घूवडो ना समूहने जेणे अवा, तथा नमस्कार करनार जनोने कल्याण करवावाळा, तथा निर्मल— उत्तम—अने ज्ञानवडे प्रकाश करता अवा श्री हरिभद्रसूरिने नमस्कार करुंछुं ॥ ५९ ॥

आयारवियारणवयण-चंदियादलिय सयल संतावो। सीलंको हरिणंकुव्व सोहइ कुमुयं वियासंतो ॥ ६० ॥

आचारविचारणवचन-चन्द्रिका दलित सकल सन्तापः । शीलाङ्को हरि--णाङ्क इव शोभते कुमुदं विकाशयन् ॥ ६० ॥

अर्थ— आचार विचार अने वचन रूप चंद्रिकावडे सर्व संताप नो विनाश करनार अने शील वडे युक्त अवा जे मुनिपति चंद्रनी माफक कुमुदने (कमळने--अथवा पृथ्विना हर्षने) विकस्वर करता शोभे छे ॥ ६० ॥

तयणंतरं दुत्तरभवसमुद्दमज्जंत--भव्व सत्ताणं। पोयाणुव्व सूरीणं जुगपवराणं पणिवयामि ॥ ६१ ॥

तदनन्तरं दुस्तरभवसमुद्र मज्जद् भव्यसत्त्वानाम्। पोतानामिव सूरीणां युगप्रवराणां प्रणिपतामि ॥ ६१ ॥

अर्थः—त्यारबाद दुःखे करीने तरी शकाय अवा भव समुद्र मां डूबता भव्यप्राणीयोने वहाण सरखा युगप्रधान आचार्योने हुं नमस्कार करूंछुं ॥ ६१ ॥

गयरागरोसदेवो देवायरिओ य नेमि-चन्दगुरुः। उज्जोयणसूरिगुरू गुणोह गुरुपारतंतगओ ॥ ६२ ॥

गतरागरोषदेवो देवाचार्यश्च नेमिचन्द्रगुरुः । उद्योतनसूरिगुरु- गुणौघो गुरुपारतंत्र्यगतः ॥ ६२ ॥

अर्थ—राग अने द्वेष रहित अवा देवाचार्य तथा नेमिचन्द्र गुरु तथा महागुणना समूहवाला अने गुरुनी परतन्त्रतावाला श्रीउद्योतनसूरि गुरु ॥ ६२ ॥

सिरिवद्धमाणसूरी पवद्धमाणाइरित्त-गुणनिलओ । चियवासमसंगय—मवगमित्तु वसहिहिं जो वासिओ ॥ ६३ ॥

श्रीवर्द्धमानसूरिः प्रवर्द्धमानातिरिक्त गुणानिलयः । चैत्यवासमसंगत मवगम्य वसतौ यस्तूषितश्च ॥ ६३ ॥

अर्थः—तथा वृद्धिपामता अनेक गुणोना स्थान रूप अने चैत्यवास अयोग्य जाणीने वसातिवासमां रहेला अवा जे श्रीवर्द्धमानसूरि ॥ ६३ ॥

तेसिं य पयपउमसेवारसिओ भमरुव्व सव्वभमरहिओ । ससमयपरसमय पयत्थसत्थवित्थारणसमत्थो ॥ ६४ ॥

तेषांच पादपद्मसेवारसिको भ्रमरवत् सर्वभ्रमरहितः। स्वसमयपरसमय- पदार्थसार्थविस्तारणसमर्थः ॥ ६४ ॥

अर्थः—अने तेमना चरण कमल नी सेवा मां भ्रमर वत् रसिक, सर्व भ्रान्ति रहित तथा पोताना सिध्धान्तमां अने परना सिध्धान्तमां कहेला पदार्थ समूहने विस्तार पूर्वक समजाववा-मां समर्थ ॥ ६४ ॥

अणहिल्लवाडए नाडइव्व दंसिय सु-पत्त संदोहे। पउरपए बहुकविदूसगेय सन्नायगाणुगए ॥ ६५ ॥

अणहिल्लपाटके नाटक इव दर्शित-सुपात्रसन्दोहे। प्रचुरपदे (ये) बहुकवि-दूसगे य सन्नायकाणुगते ॥ ६५ ॥

अर्थः—नाटकनी पेठे देखाडेल सुपात्रना समूहवाला घणा जल (पक्षे पद) वाला घणा कवि अने वस्त्र वालाना (विदूषक वाला) अने श्रेष्ट नायको वडे व्याप्त अेवा अणहिलपुर नगर मां ॥ ६५ ॥

---

१ अहिं थी आगलनां १० विशेषणो अणहिलपुर अने नाटक मां उनारलेंछे तेनो विस्तार लघुवृत्तिथी जाणवो.

सड्ढियदुल्लहराए सरसइ अंकोवसोहिए सुहए। मज्झे रायसहं पविसिऊण लोयागमणुमयं ॥ ६६ ॥

सर्द्धिकदुर्लभराजे सरस्वत्यङ्कोपशोभित सुहये। मध्ये राजसभायाम् प्रविश्य लोकागमानुमयम् ॥ ६६ ॥

अर्थः—सरस्वति विरुद वडे शोभित महा ऋद्धिवाला दुर्लभ राजा युक्त श्रेष्ट राजसभामां प्रवेश करी ने लौकिक (=लोकव्यवहारने) अने सिद्धान्तने अनुसारे (विवाद कर्यो जेथी–इति शेष)

नामायरिएहिं समं करिय वियारं वियाररहिएहिं। वसइहिं निवासो साहूणं ठाविओ ठाविओ अप्पा ॥ ६७ ॥

नामाचार्यैः समं कृत्वा विचारं विचाररहितैश्च। वसतौ निवासो साधूनां स्थापितः स्थापित आत्मा ॥ ६७ ॥

अर्थः—विचार शून्य अेवा चैत्यवासी आचार्यो साथे विवाद करीने साधूओने वसति मां निवास करवा रूप धर्म स्थाप्यो, अने पोता ना आत्माने पण (पुण्यमां) स्थाप्यो ॥ ६७॥

परिहरिय गुरुक्कमागय वरवत्ताए य गुज्जरत्ताए । वसाहिनिवासो जेहिं फुडी-कओ गुज्जरत्ताए ॥ ६८ ॥

परिहृत्य गुरुक्रमागत-वरवार्त्तायांच्च गुर्ज्जरितायाम् । वसति निवासो यैश्च स्फुटीकृतो गुर्ज्जर धारिण्याम् ॥ ६८ ॥

अर्थः—गुरु परंपराथी चाल्या आवता उत्तम आचारना त्यागवाळा गुजरात देशमां विहार करीने गुजरात देशमां जमणे वसति निवासनो मार्ग प्रगट कर्यो ॥ ६८ ॥

तिजगय गयजीवबंधूणं यो बंधु बुद्धि सागरसूरि। कयवायरणो वि न जो विवा-यरणकारओ जाओ ॥ ६९ ॥

त्रिजगद्गतजीवबन्धूनां यो बन्धुर्बुद्धि सागरसूरिः । कृतवादरणोऽपि न यो विवादरणकारको जातः ॥ ६९ ॥

अर्थः—त्रण जगतमां वसता जीव बंधु समान, अने जे सूरिश्वरना बन्धु-भाई अेवा जे बुद्धि

सागरसूरि वाद रूपी वचन कलह कर्या छता पण जे विवाद रूप रण ना करनार न थया ६९

सुगुणजणजणियभद्दो सूरि जस्स विणेयगणपढमो । सपरेसिं हिया सुर-सुन्दरी- कहा जेण परिकहिया ॥ ७० ॥

सुगुणजनजनितभद्रः सूरिर्यस्य विनय गणप्रथमः । स्वपरयोर्हिता सुरसुन्दरी कथा येन परिकथिता ॥ ७० ॥

अर्थः—सद्गुणी मनुष्योने सुख उत्पन्न करनार अेवा सूरि जेना शिष्यगणमां अग्रेसरी प्रथम हता, अने जेणे पोताना अने परना कल्याण वाली सुरसुन्दरीनी कथा रची. ७०

कुमुयं वियासमाणो विहडावियकु-मय चक्कवाय गणो । उदयमिओ जस्सीसो जयंमि चंदुव्व जिणचंदो ॥ ७१ ॥

---

१ अहि वचन कलह कर्या छतां पण विवाद रण कारक न थया अे विरोधालंकार छे तेनुं समाधान अेके कयवायरलो= करेल व्याकरण विरोध परिहार जेणे अेवा श्री बुद्धिसागरसूरी विवाद रण करनार न थया.

कुमुदं विकाशमानो विघटित कुमत चक्र चाकगणः। उदयमिनो यच्छिष्यो जगति चन्द्र इव जिनचन्द्रः ॥ ७१ ॥

अर्थः—विनाश पमाड्यो छे कुमतियोना समूहनो वाद समूहजेणे एवा तथा कमळ ने प्रफुल्लित करता (अथवा पृथ्विना हर्षने विस्तारता) चन्द्रसरखा जगतमां उदय पामेला जेना जिनचन्द्र नामना शिष्य ॥७१॥

संवेगरंगसाला विसालसालोवमा कया जेण। रागाइवेरि भयभीय- भव्व-जण रक्खण निमित्तं ॥ ७२ ॥

संवेगरङ्गशाला विशालशालोपमा कृता येन रागादिवैरि भयभीत- भव्यजनरक्षण निमित्तम् ॥ ७२ ॥

अर्थः—तथा विशाल कोट-गढ सरखी जेणे संवेग रंगशाला नामनी ग्रंथरचना रागादि शत्रुओ वडे भयभीत थयेल भव्य प्राणीयोना रक्षण माटे करी ॥ ७२ ॥

कइ सिवसुहत्थिसेवो अभयदेवो नग-यसमय पयकवेवो। जस्सीसो विहियनवंग- वित्तिजल—धोयजललवो ॥ ७३ ॥

कृत शिवसुखार्थिसेवो- ऽभयदेवोऽवगतसमयपदक्षेपः । यच्छिष्यो विहितनवाङ्ग- वृत्तिजलधौतजडलेपः ॥७३ ॥

अर्थः—तथा मोक्षसुखनी इच्छावाळा जीवोए जेनी सेवा करी छे एवा तथा जाणेल छे सिद्धान्त पदना क्षेप (=पदन्यास) जेणे तथा रचेली नव अंगनी वृत्ति रूप जळ वडे धोई नाखेल छे, जडता अज्ञान रूप लेप जेणे एवा श्रीअभयदेवसूरिजे श्रीजिनेश्वरसूरिना शिष्य हता ७३

जेण नवंगविवरणं विहियं विहिणा समं सिवसिरिए । काउं नवंगविचरणं विहिय मुज्झिय भवजुवइ संजोगं ॥७४॥

येन नवाङ्गविवरणं विहितं विधिना समं शिवश्रियै च । कृत्वा नवाङ्ग विवरणं विहित मुज्झित्वा भवयुवतिसंयोगम् ॥ ७४ ॥

अर्थः—मोक्ष लक्ष्मि रूप स्त्रीना नव अंग मां विचरवाने माटे जेणे आखा भव सुधी स्त्री नो संग त्यागीने विधि सहित नव अंगनुं विवरण (=वृत्ति) कर्युं ॥ ७४ ॥

जेहिं बहुसीसेहिं सिवपुरपहपत्थियाणं भव्वाणं । सरलो सरणिसमग्गं कहिओ ते जेण जन्ति तयं ॥ ७५ ॥

यैर्बहुशिष्यैः शिवपुरपथप्रस्थितानां भव्यानाम् । सरलः सरणिसमगः कथितस्ते येन यान्ति तकम् ॥ ७५ ॥

घणा शिष्यो ए मोक्ष नगर ना मार्गमां चालताभव्योने माटे एक सरळ मार्ग कह्यो ते शिष्यो जेना वडे ते (मोक्ष मार्ग) प्राप्त करे छे ॥ ७५ ॥

गुणकणमवि परिकहिउं न सक्कई सक्कई वि जेसिं फुडं । तेसिं जिणेसर सूरीणं चरणं सरणं पवज्जामि ॥ ७६ ॥

गुणकणमपि परिकथितुं न शक्नोति सत्कविरपि येषां स्फुटम् । तेषां जिनेश्वरसूरीणां चरणं शरणं प्रपद्ये ॥ ७६ ॥

अर्थः—तथा जेमना गुणनो अेक लेश मात्र पण कहेवाने कोई पण श्रेष्ट कवि समर्थ नथी ते श्री जिनेश्वरसूरि ना चरणनुं शरण अंगीकार करुं छुं ॥ ७६ ॥

युगपवरागमजिणचंदसूरी विहि कहियसूरिमंतपयो । सूरी असोगचंदो मह मणकुमुयं विकासेउ ॥ ७७ ॥

युगप्रवरागमजिनचन्द्रसूरिविधि कथितसूरिमंत्रपदः। सूरि—रशोकचंद्रो मम मनः कुमुदं विकाशयतु ॥ ७७ ॥

अर्थः—युगप्रधान अने आगमने धारण करनार श्री जिनचंद्रसूरि के जेमणे विधिपूर्वक सूरिमंत्रनुं पद कहेलुं छे, ते तथा श्री अशोक चन्द्रसूरि मारा मनरूपी कमळने प्रफुल्लित करो.

कहियगुरुधम्मदेवो धम्मदेवो गुरू उवज्झाओ अ। मज्झावि तेसिंय दुरंत दुहहरो सो लहु होऊ ॥ ७८ ॥

कथितगुरुधर्मदेवो धर्मदेवो गुरुरुपाध्यायश्च। ममापि तेषां च दुरन्तदुःखहरः स लघु भवतु ॥ ७८ ॥

अर्थः—जेमणे देव गुरु धर्मनुं स्वरूप कहयुंछे, एवा गुरु श्री धर्मदेव अने उपाध्याय ते मारा अने तेओना दुःखे अन्त लावी शकाय एवा दुःखनुं शिघ्र हरणकरनार थाओ. ॥ ७८ ॥

तस्स विणेओ निद्दलिअगुरुगओ जो हरिव्व हरिसीहो । मज्झ गुरू गणि-पवरो सो मह मणवंछियं कुणउ ॥७९॥

तस्य विनेयो निर्दलितगुरुगजो यो हरिरिव हरिसिंहः । मम गुरुर्गणिप्रवरः स मम मनोवाञ्छितं करोतु ॥ ७९ ॥

अर्थः—तेना शिष्य के जमणे सिंहनी माफक मदरूप हस्तिनो नाश कर्यो छे एवा मारा गुरु श्री हरिसिंह गणि ते मारा मननुं वांच्छित करो ॥ ७९ ॥

तेसिं जिट्ठो भाया भायाणं कारणं सुसीसाणं । गणिसव्वदेवनामो न नामिओ केणइ हट्ठेण ॥ ८० ॥

तेषां ज्येष्ठो भ्राता भाग्यानां कारणं सुशिष्याणाम् । गणिसर्वदेवनामा न नामितः केनापि हठेन ॥ ८० ॥

अर्थ—तेमना मोटा भाई के जे सुशिष्यो ना भाग्योना कारण रूप छे ते सर्वदेवगणि नामना गणिके जेमने बलात्कारवडे कोई पण प्रतिपक्षीए नमाव्या नथी ॥ ८० ॥

सूरससिणो वि न समा जेसिं जं ते कुणंति अत्थमणं । नक्खत्तगया मेसं मीणं मयरं वि भुंजंते ॥ ८१ ॥

सूर्यशशिनावपि न समौ येषां यत् तौ कुरुतोऽस्तमितम् । नक्षत्रगतौ मेषं मीनं मकरमपि भुंजाते ॥ ८१ ॥

अर्थ—वळी जेनी तुलनामां सूर्य अने चन्द्र पण आवता नथी कारण के ते बन्ने अस्त पामेछे, अने नक्षत्र (= असदाचार) ने प्राप्त थयेला मेष मीन अने मकरने पण भोगवे छे, अने सदाचारने प्राप्त थयेला आचार्य ते मेषादि भोगवता नथी.

जेसिं पसाएण मए मएण परिवज्जियं पयं परमं । निम्मलपत्तं पत्तं सुहसत्तसमुन्न-इनिमित्तं ॥ ८२ ॥

येषां प्रसादेन मया मदेन परिवर्जितं पदं परमम् । निर्मलपात्रं प्राप्तं शुभसत्त्व समुन्नतिनिमित्तम् ॥ ८२ ॥

अर्थः—जेना प्रसाद वडे में मद रहित अने पुन्यवान प्राणीयोनी उन्नति करवा माटे निर्मल पात्र समान सूरिपद प्राप्त कर्यु ॥ ८२ ॥

तेसिं नमो पायाणं पायाणं जेहिं रक्खिया अम्हे । सिरिसूरिदेवभद्दाणं सायरं दिन्नभद्दाणं ॥ ८३ ॥

तेषां नमः पादेभ्यः पातकेभ्यो यै रक्षिता वयम् । श्रीसूरिदेवभद्राणां सादरं दत्तभद्राणाम् ॥ ८३ ॥

अर्थः—वळी जेओए अमने पापमांथी बचाव्या ते सुखआपनार श्री देवभद्रसूरिना चरण कमळने आदर सहित नमस्कार करुं छुं

सूरिपदं दिन्नमसोगचंदसूरीहिं चत्त भूरीहिं । तेसिं पयं मह पहुणो दिन्नं जिणवल्लहस्स पुणो ॥ ८४ ॥

सूरिपदं च दत्तमशोकचन्द्रसूरिभिस्त्यक्तभूरिभिः । तैः पदं मम प्रभोर्दत्तं जिनवल्लभस्य पुनः ॥ ८४ ॥

अर्थः—घणा पदार्थोने त्याग करेल अशोकचंद्रसूरिए (श्रीदेवभद्रसूरिने) सूरिपद आप्युं अने तेओए पुनः ते पद मारा गुरु श्री जिन-वल्लभसूरिने आप्युं ॥ ८४ ॥

अत्थगिरिमुवगएसुं जिणजुगपवरागमेसु कालवसा । सूरमिव दिट्ठिहरेण विलसियं मोहसंतमया ॥ ८५ ॥

अस्तगिरिमुपगतेषु जिनयुगप्रवरागमेषु कालवशात् । सूर्य मिव दृष्टिहरेण विलसितं मोहसंतमसेन ॥ ८५ ॥

अर्थः—काळना वशथी तिर्थकर-युग प्रधान ने आगम सूर्यनी माफक अस्त पाम्ये छते द्रष्टि हरण करनार मोहरूपी अंधकारे विलास करवा मांड्यो. ॥ ८५ ॥

संसारचारगाओ निव्वण्णोहिं पि भव्वजीवेहिं । इच्छंतेहिमवि मुक्खं दीसइ मुक्खारिहो न पहो ॥ ८६ ॥

संसारचारकेभ्य निर्विण्णैरपि भव्य जीवैः । इच्छद्भिरपि च मोक्षं दृश्यते मोक्षार्हो न पन्था ॥ ८६ ॥

अर्थः—संसार रूपी वंदीखानाथी खेद पामेला अने मोक्ष इच्छता एवा भव्य जीवो वडे मोक्ष मार्ग देखातो नथी ॥ ८६ ॥

फुरियं नक्खत्तेर्हिं महाग्गहेहिं तओ समुल्लसियं। वुड्ढिरयणियरेण वि पाविआ पत्तवसरेण ॥ ८७ ॥

स्फुरितं नक्षत्रकैर्महाग्रहै--स्ततः समुल्लसितम्। वृद्धीरजनिकरेणापि प्राप्ता-प्राप्तावसरेण ॥ ८७ ॥

अर्थः—तेथी नक्षत्रो (=असदाचारीओ) तगतगवा लाग्यां, महाग्रहो (कदाग्रहीओ) उल्लास पाम्या, तथा प्रसरतो चन्द्र (रजनिकर=कर्मसमूह) पण वृध्धि पाम्यो. ॥ ८७ ॥

पासत्थकोसिअकुलं पयडीहोऊण हंतुमारद्धं। काए काए य विघाए भावि--भयं जं ण तं गणइ ॥ ८८ ॥

पार्श्वस्थकौशिककुलं प्रकटीभूय हन्तु-मारब्धः। काके काये च विघाते भावि-भयं यत्र तद् गणयति ॥ ८८ ॥

अर्थः—वळी प्रत्यक्षथईने पासथ्था रूप घुवडोनो समूह छजीवनिकाय रूप कागने हणवानो प्रारंभ कर्यो, पण छ कायना विघात थी भविष्यनो भय जओओ गण्यो नहिं ॥ ८८

जाग्गंति जणा थोवा सपरेसिं निव्वुइं समिच्छन्ता । परमत्थरक्खणत्थं सद्दं सद्दस्स मेलंता ॥ ८९ ॥

जाग्रति जनाः स्तोकाः स्वपरयोर्निर्वृत्तिं समिच्छन्तः । परमार्थरक्षणार्थं शब्दं शब्दस्य मेलयन्तः ॥ ८९ ॥

अर्थः—पोतानो अनेपरनो मोक्ष इच्छनारा अेवा तथा परमार्थनुं (=तत्वनुं) रक्षण करवा माटे शब्दे शब्दने मेळवता (परम स्वाध्याय करता) अेवा थोडाज पुरुषो छे. ॥ ८९ ॥

नाणासत्थाणि धरंति ते उ जेहिं वियारिऊण परं । मुसणत्थमागयं परिहरंति निज्जीवमिह काउं ॥ ९० ॥

नानाशास्त्राणि धारयन्ति ते तु यैश्च विचार्य(विजानितं)परम् । मोषणार्थमागतं परिहरन्ति निर्जीवमिह कृत्वा ॥ ९० ॥

अर्थः—तेओ अनेक प्रकारनां शस्त्र-शास्त्र धारण करे छे वळी जेओ विचार करी अहिं लुंटवा माटे आवेला परने निर्जीव करी त्याग करे छे. ॥ ९० ॥

अविणासियजीवं ते, धरंति धम्मं सुवंसनिप्पण्णं । सुक्खस्स कारणं भय-- निवारणं पत्तनिव्वाणं ॥ ९१ ॥

अविनाशितजीवं ते धरन्ति धर्मं सुवंशनिष्पन्नम् । सुखस्य कारणं भय-- निवारणं प्राप्तनिर्वाणम् ॥ ९१ ॥

अर्थः—ते जीव विनाश नहिं करवा वाळा (=दयावाळा) उत्तम वंशमां निपजेला, सुखना कारणरूप भयना निवारणरूप अने मोक्ष प्राप्त करावनार धर्मने तेओ धारण करे छे ॥ ९१ ॥

धरियकिवाणा केई, सपरे रक्खंति सुगुरुफरयजुआ । पासत्थचोरविसरो, वियारभीओ न ते मुसइ ॥ ९२ ॥

धारितकृपाज्ञाः केचित् स्वपरान् रक्षन्ति सुगुरुफलकयुताः । पार्श्वस्थचौर विसरो विचारभीतो न ते मुषति ॥ ९२ ॥

अर्थः—दया धर्म ने धारण करेला अने सद्गुरु रूप फलक--ढाल युक्त एवा केटलाएक जनो पोतानुं अने परनुं रक्षण करे छे, तेथी

पासे रहेला अथवा पासथ्था रूप चोरनो समूह विचार वडे भय पाम्यो छतो तेओने लूंटतो नथी. ॥ ९२ ॥

मग्गुमग्गा भज्जंति नेय, विरलो जणो त्थि मग्गण्णू । थोवा तदुत्तमग्गे, लग्गंति न वीससंति घणा ॥ ९३ ॥

मार्गोन्मार्गान् जानन्ति नैव विरलो जनोऽस्ति मार्गज्ञः । स्तोकास्तदुक्तमार्गे लगन्ति न विश्वसन्ति घनाः ॥ ९३ ॥

अर्थः—घणाजनो मार्ग के उन्मार्ग ने जाणता नथी. मार्ग ने जाणनार कोई विरला जन छे, थोडाज जनो तेना कहेला मार्गे चाले छे, ने बीजा घणा लोकतो विश्वासज राखता नथी.

अन्ने अण्णत्थीहिं समं, सिवपह मपिच्छरेहिंपि । सत्था सिवत्थिणो चालिया वि पडिपडिया भवारण्णे ॥ ९४ ॥

अन्येऽन्यार्थिभिः समकं शिवपथमप्रेक्ष्यमाणैरपि । सार्थाः शिवार्थिनश्चालिता अपि प्रतिपतिता भवारण्ये ॥ ९४ ॥

अर्थः—मोक्षना अर्थी अेवा वीजा केटलाक जन समुदायो तो मोक्षमार्ग नाहिं देखनारा लोको नी साथे कुमार्गे चाल्या छता भवरूपी अटवीमा पड्या. ॥ ९४ ॥

परमत्थसत्थरहिएसु, भव्वसत्थेसु मोहनिद्दाए। सुत्तेसु मुसिज्जंतेसु, पोढपासत्थचोरेहिं ॥ ९५ ॥

परमार्थशस्त्ररहितेषु भव्यसार्थेषु मोहनिद्रायां । स्वपेषु मुष्यमाणेषु प्रौढ पार्श्वस्थचोरकैः ॥ ९५ ॥

अर्थः—परमार्थ–तत्वज्ञान रूप शस्त्र रहित केटलाअेक भव्य जीवो नो समुदाय मोह निंद्रा वडे सूई जतां पासत्था रूप मोटा चोरो अे लूंटचे छते ॥ ९५ ॥

असमंजसमेआरिस मवलोइअ जेण जायकरुणेण । एसा जिणाणमाणा, सुमरिया सायरं तइआ ॥ ९६ ॥

असमञ्जसमेतादृशमवलोक्य येन जातकरुणेन । एषा जिनानामाज्ञा स्मारिता सादरं तदानीं ॥ ९६ ॥

अर्थः—अेवुं अनुचित पणु जोइने उत्पन्न थयेल करुणावाळा जेणे ते वखते आदर सहित आ जिनेश्वरनी आज्ञा संभारी ॥ ९६ ॥

सुहसीलतेणगहिए, भवपल्लिं तेण जगडिअमणाहे । जो कुणइ कूजियत्तं सोवण्णं कुणइ संघस्स ॥ ९७ ॥

सुखशीलस्तेनगृहीते भवपल्ल्यां तेन जगडितानाथे । यः करोति कूजितत्वं सवर्णं करोति संघस्य ॥ ९७ ॥

अर्थः—सुखशिलपणा रूप चोरे संसार रूप पल्लिमां ग्रहण करी अनाथने बांध्ये छते जे कोइ संघने पोकार करे ते पुण्यात्मा छे. ॥ ९७ ॥

तित्थयररायाणो आयरिआ रक्खिअ व्व तेहिं कया । पासत्थपमुहचोरोवरुद्ध घण भव्वसत्थाणं ॥ ९८ ॥

तीर्थंकरराजा आचार्या आरक्षका इव तैः कृताः । पार्श्वस्थप्रमुख चौरोपरुद्धघन-भव्वसार्थानाम् ॥ ९८ ॥

अर्थः—तेओओे पासथ्था प्रमुख चोरो वडे रोकायला घणा भव्य जीवोना समुदायना

तीर्थंकर भगवानने राजा, अने आचार्योने आरक्षक वत् कर्या छे. ॥ ९८ ॥

सिद्धपुरपत्थियाणं रक्खट्ठायारियवयणओ सेसा । अहिसेअवायणायरिअ साहुणो रक्खगा तेसिं ॥ ९९ ॥

सिद्धिपुरप्रस्थितानां रक्षार्थमाचार्यवचनतः शेषाः । अभिषेकवाचनाचार्यसाधवो रक्षकास्तेषाम् ॥ ९९ ॥

अर्थः—मोक्षनगरमां प्रयाण करता जिवोना रक्षण माटे आचार्यना वचनथी शेष रहेला अभिषेक करायला वाचनाचार्य मुनिओ तेओना रक्षक छे ९९

तातित्थयराणाए, मये वि मे हुंति रक्खणिज्जाओ । इय मुणिय वीरवित्तिं पडिवज्जिय सुगुरुसंनाहं ॥ १०० ॥

तत्तीर्थकराज्ञया मयाप्यमी भवन्ति रक्षणीयाः । इति मत्वा वीरवृत्तिं प्रतिपद्य सुगुरुसंनाहम् ॥ १०० ॥

अर्थः—तेथी तीर्थकरोनी आज्ञावडे मारे पण ते भव्यो नुं रक्षण करवुं योग्य छे एम

विचारी श्रीवीरभगवाननी वृत्ति अथवा पराक्रम तथा सुगुरु रूप बख्तर अंगीकार करीने १००

कारिय खमाफलिअं, धरिअ मक्खयं कयदुरुत्तसररक्खं । तिहुअणसिद्धं तं जं, सिद्धंतमासिं समुक्खविय ॥ १०१ ॥

कृत्वा क्षमाफलकं धृत्वा चाक्षतं कृत दुरुक्त शररक्षम् । त्रिभुवनसिद्धं तं यं सिद्धान्तमसिं समुत्क्षिप्य ॥ १०१ ॥

अर्थः—क्षमा रूपी ढाल धारण करीने, करेल छे दुर्वचनो रूपी बाणोनुं रक्षण जेणे त्रण भुवन प्रसिद्ध जे अखंडित सिध्धान्त ते रूपी खड्ग उपाडी ने १०१

निव्वाणबाणमणहं, सगुणं सद्धम्मम-विसमं विहिणा । परलोगसाहगं मुक्ख-कारगं धरिय विप्फुरियं ॥ १०२ ॥

निर्वाणबाणमनघं सगुणं सद्धर्मम--विषमं विधिना । परलोकसाधकं मोक्ष-कारकं धृत्वा विस्फुरितम् ॥ १०२ ॥

अर्थः—निर्मल-गुण सहित-अविषम-परलोक साधक-अने-मोक्षकारक अेवा निर्वाणना तीर रूप श्रेष्ट धर्म विधि पूर्वक अंगीकार करीने॥१०२॥

जेण तेओ पासत्थाइतेणसेणा विहक्किया सम्मं । सत्थेहिं महत्थेहिं, विआरिऊणं च परिचत्ता ॥ १०३ ॥

येन ततः पार्श्वस्थादिस्तेनसेनाऽपिह्क्किता सम्यग् । शास्त्रैर्महार्थिभिर्विचार्य च परित्यक्ता ॥ १०३ ॥

अर्थः—तेस्थानेथी जेणे पासत्थादिनी चोरसेनाने सम्यक्प्रकारे हाकोटी काढी, अने महा अर्थवाळां शास्त्रो शस्त्रो वडे चार वा विदारण करीने जे पासत्थादिना सेनानो त्याग कर्यो ॥ १०३ ॥

आसन्नसिद्धिया भव्वसत्थिया सिवपहंमि संठाविआ। निव्वुइमुवयंति जह ते पडंति न भीमभवारण्णे ॥ १०४ ॥

आसन्नसिद्धिका भव्यसार्थिकाः शिवपथे संस्थापिताः । निर्वृतिमुपयान्ति यथा ते पतन्ति न भीमभवारण्ये १०४

अर्थः—अने अल्पकाळमां मोक्षे जवावाळा भव्यजीवना समूहने मोक्षमार्गमां स्थापन कर्यो के जेथी तेओ मोक्ष पामे छे पण भयंकर भवरूपी अटवीमां पडता नथी. ॥ १०४ ॥

मुद्धाणाययणगया चुक्का मग्गाओ जायसंदेहा । बहुजणपिट्ठिविलग्गा दुहिणो हूया समाहूआ ॥ १०५ ॥

मुग्धा अनायतनगताः च्युता मार्गतो जातसन्देहाः । बहुजनपृष्ठविलग्ना दुःखिनो भूताः समाहूताः ॥ १०५ ॥

अर्थः—अनायतन (असम्यक् स्थानने) प्राप्त थयेला, मार्ग थी भ्रष्ट थयेला अने संदेहवाळा थयेला, अने घणा लोकोनी पाछळ वळगेला अवा केटलाक मुग्ध लोको तो बोलाव्या छतां पण दुःखी थाय छे ॥ १०५ ॥

दंसिय माययणं तेसिं जत्थ विहिणा समं हवइ मेलो । गुरुपारतंतओ समय सुत्ताउ जस्स निप्पत्ती ॥ १०६ ॥

दर्शितमायतनं तेषां यत्र विधिना सम्यग् भवति मेलः। गुरुपारतन्त्र्यतः समय-सूत्रतो यस्य निष्पत्तिः १०६

अर्थः—जे स्थाने विधि सहित संबंध दर्शाव्यो छे, तथा गुरुनी परंपराथी अने सिध्धान्तना सूत्रथी जेनी निष्पत्ति छे, उत्पत्ति छे तेवां चैत्योने आयतन कह्युं छे. १०६

दीसइ य वीयराओ तिलोयनाहो विरायसहिएहिं । सेविज्जंतो संतो हरई तु संसारसंतावं ॥ १०७ ॥

दृश्यते च वीतराग—स्त्रिलोकनाथो वैराग्यसहितैः । सेव्यमानः सन् हरति तु संसारसंतापम् ॥ १०७ ॥

अर्थः—जे चैत्यमां वैराग्यवाला पुरुषो त्रणलोकना नाथ श्री वीतरागभगवानने देखे छे, अने सेवा कराता जे सन्त (भगवंत) संसारनो ताप दूर करे छे. ॥ १०७ ॥

वाइयसुवगीयं नट्टमपि सुयं दिट्ठं च्चिट्ठमुत्तिकरं। कीरइ सुसावएहिं सपरहियं समुचियं जुत्तं ॥ १०८ ॥

वादितमुपगीतं नाटितमपि श्रुतं दृष्टं चेष्टं मुक्तिकरम् । क्रियते च सुश्रावकैः स्वपरहितं समुचितं युक्तम् ॥ १०८ ॥

अर्थः—ते चैत्यमां (रात्रे) गीत सहित वाजित्र वगाडवुं, नृत्य करवुं, सांभळवुं, देखवुं ते इष्ट मुक्ति करनार छे. ए हेतुथी श्रावको ज करेछे, ते स्वपराहितकारक-उचित-अने युक्त छे। (लघुवृत्तिमां ओ कार्यो विचारवा योग्य अने उपहास्य जनक कह्यां छे.) ॥ १०८ ॥

रागोरगो वि नासइ सोउं सुगुरुव देसमंतपए । भव्वमणो सालुरं नासइ दोसो वि जत्थाहि ॥ १०९ ॥

रागोरगोऽपि नश्यति श्रुत्वा सुगुरूपदेशमन्त्रपदानि । भव्यमनःशालूरं नाश्नाति दोषोऽपि यत्राहिः ॥ १०९ ॥

अर्थः—सद्गुरुना उपदेशरूपी मंत्रनां पदो सांभळी ने राग रूपी सर्प पण नाश पामे छे, अने जे स्थाने दोष रूपी सर्प पण भव्य जनना मनरूपी देडकानुं भक्षण करतो नथी. १०६

नो जत्थुस्सुत्तजणक्कमो त्थि ण्हाणं
बलिपइट्ठा य। जइजुवइपवेसो वि अ न
विज्जए विज्जइविमुक्को ॥ ११० ॥

नो यत्रोत्सूत्रजनक्रमोऽस्ति स्नात्रं
बलिप्रतिष्ठा च। यतियुवतिप्रवेशोऽपि च
न विद्यते विद्यालिविमुक्तः ॥ ११० ॥

अर्थः—ज्यां उत्सूत्र भाषक जननी परं-
परा नथी, तथा (उत्सूत्र पूर्वक) स्नात्र-बलीपूजा-
अने प्रतिष्ठा नथी, तेमज ज्यां ज्ञानी मुनिए
निषेधेलो यतिनो अने स्त्रीनो प्रवेश पण नथी.

जिणजत्ताण्हाणाई दोसाणं य क्खय-
याय कीरिंति। दोसोदयम्मि कह तेसिं
संभवो भवहरो होज्जा ॥ १११ ॥

जिनयात्रास्नानादयो दोषाणां च
क्षयाय क्रियन्ते। दोषोदये कथं तेषां
सम्भवो भवहरो भूयात् ॥ १११ ॥

१ उपरनुं कथन अने आ कथन रात्रीना वखतमां
थती पूजादि माटे छे पण तेथी दिवसमां स्नात्रादिनो
निषेध थतो नथी.

अर्थः—जिनयात्रा अने स्नानादि जे दोषोना विनाश माटे कराय छे, तेमांज दोषो प्रगट थतां ते जिनयात्रादि कार्यो भवनां विनाश करनार केम थाय ? ॥ १११ ॥

जा रत्ति जारत्थीणमिह रइं जणइ जिणवरगिहे वि। सा रयणी रयणिअरस्स हेउ कह नीरयाणं मया ॥ ११२ ॥

या रात्रिर्जारस्त्रीणामिह रतिं जनयति जिनवरगृहेऽपि। सा रजनी रजनिकरस्य हेतुः कथं नीरजसां मता ॥११२॥

अर्थः—अहिं जे रात्रि जिनेश्वरना मन्दिरमां पण जार स्त्रीयोने रति उत्पन्न करे छे, ते पापनां कारण रूप रात्रिने निष्पापनुं कारण केवी रीते मानी छे ? ॥११२॥

साहू सयणासणभोअणाइं आसायणं च कुणमाणो। देवस्स रएण लिप्पइ देवहरे जमिह निवसंतो ॥ ११३ ॥

साधुः शयनासनभोजनादिमाशातनां च कुर्वाणः। देवस्य रजसा लिप्यते देवगृहे यदिह निवसन् ॥ ११३ ॥

अर्थः--अहिं देवमन्दिरमां मुनि जो रहे तो शयन आसन अने भोजनादि आशातना करतां देव द्रव्यना उपभोग रूप पाप वडे लेपाय छे.॥१३॥

तंबोलो तं बोलइ जिणवसहिट्ठिएण जेण खद्धो । खद्धे भवदुक्खजले तरइ विणा नेअ सुगुरुतरिं ॥ ११४ ॥

ताम्बूलस्तं ब्रोडयति जिनवसति-स्थितेन येन खादितम् । खादिते भवदुःखजले तरति विना नैव सुगुरुतरीम्॥११४॥

अर्थः—जिन चैत्यमां रहेला जे मुनिए तांबूल खाधुं छे ते मुनिने तांबूल संसारना दुःख रूप जळमां डूबावे छे, अने ते तांबूल खाधे छते सद्गुरु रूपी जहाज विना भवदुःख रूप जळमां थी तरी शकतो नथी. ॥ ११४ ॥

तेसिं सुविहिअजइणो य दंसिया जे उ हुंति आययणं । सुगुरुजणपारतंतेण पाविया जेहिं णाणसिरी ॥ ११५ ॥

तेषां सुविहितयतयश्च दर्शिता ये तु भवन्त्यायतनम् । सुगुरुजनपारतन्त्र्येण प्राप्ता यैश्च ज्ञानश्रीः ॥११५॥

अर्थः—तेओने (श्रावकोने) सुविहित मुनिओ दर्शाव्या छे के जेओ सद्गुरुने आधीन रही ज्ञान लक्ष्मी प्राप्त करी छे, अने जे आयतन एटले ज्ञानादि लाभनुं स्थान छे. ॥ ११५ ॥

संदेहकारितिमिरेण तरलिअं जेसिं दंसणं नेय । निव्वुइपहं पलोएंति गुरुवि-ज्जुवएसओसहओ ॥ ११६ ॥

संदेहकारितिमिरेण तरलितं येषां दर्शनं नैव । निर्वृत्तिपथं प्रलोकयन्ति गुरुवैद्योपदेशौषधतः ॥ ११६ ॥

अर्थः—शंका रूपी अंधकार वडे जेओनी द्रष्टि व्याकुल थयेली छे. तेओने मोक्षमार्ग देखातो नथी पण सद्गुरु रूप वैद्यना उपदेश औषधवडे मोक्षमार्ग देखी शके छे ॥ ११६ ॥

निप्पच्चवायचरणा कज्जं साहं-तिति जे उ मुत्तिकरं । मण्णंति कयं तं यं कयंतासिद्धं उ सपराहिअं ॥ ११७ ॥

निष्प्रत्यवायचरणाः कार्यं साधय-न्तीति ये तु मुक्तिकरम् । मन्यन्ते कृतं यत्तत् कृतान्तसिद्धं तु स्वपराहितं च॥११७॥

अर्थः—निर्दूषण चारित्र वाळा जे मुनिओ मोक्षकारी अेवुं कार्य साधे छे तेओ सिध्धान्त मान्य, अने स्वपर ने कल्याणकारी अेवा कार्य ने करेलुं कार्य माने छे ॥ ११७ ॥

पडिसोएण जे पवट्टा चत्ता अणुसो-अगामिनीवट्टा । जणजत्ताए मुक्का मय-मच्छर मोहओ चुक्का ॥ ११८ ॥

प्रतिस्रोतसा ये प्रवृत्ता-स्त्यक्त्वा अनुस्रोतो गामिवर्त्म । जनयात्रया च मुक्ता मदमत्सरमोहेभ्यश्च्युताः ॥ ११८ ॥

अर्थः—वळी जे मुनिओ (लोकथी उलटा प्रवाहे अटले संसार निस्तारक मार्ग प्रत्ये चालनारा, प्रवाहानुसारे चालता मार्ग नें त्याग करनारा, लोक यात्रा (लौकिक व्यवहार) थी रहित, अने मद ईर्ष्या तथा मोहथी अलग थयेला छे. ॥ ११८ ॥

सुद्धं सिद्धंतकहं कहंति बीहंति नो परोहिंतो । वयणं वयंति जत्तो निव्वुइ वयणं धुवं होइ ॥ ११९ ॥

शुद्धां सिद्धान्तकथां कथयन्ति बिभ्यति नो परेभ्यश्चैव । वचनं वदन्ति यस्माद् निवृत्तिवचनं ध्रुवं भवति ॥ ११९ ॥

अर्थः—वळी सिध्धान्तनी सत्य वात कहे छे, पण बीजाओथी डरता नथी, एवा मुनिओ जे वचन बोले छे, ते वचन निश्चय मोक्ष वचन छे. ॥ ११९ ॥

तव्विवरीआ अवरे जइवेसधरा वि हुंति नहु पुज्जा । तद्दंसणमवि मित्थत्त-मणुक्खणं जणइ जीवाणं ॥ १२० ॥

तद्विपरीता अपरे यतिवेषधरा अपि भवन्ति न हि पूज्याः । तद्दर्शनमपि मिथ्यात्व-मनुक्षणं जनयति जीवानाम् १२०

अर्थः—ते मार्गथी विपरीत वर्तनारा मुनिवेष धारण करनारा पूजनीक नथी, तेवाओनुं दर्शन पण जीवोने प्रतिसमय मिथ्यात्व उत्पन्न करे छे. ॥ १२० ॥

धम्मत्थीणं जेण विवेयरयणं विसेसओ ठाविअं चित्तउडे चित्तउडे ठिआणं जं जणइ निव्वाणं ॥ १२१ ॥

धर्मार्थिनां येन विवेकरत्नं विशेषतः स्थापितम् । चित्तपुटे चित्रकूटे स्थितानां यज्जनयति निर्वाणम् ॥ १२१ ॥

अर्थः—जेणे धर्मार्थी प्राणीयोना चित्त चित्तसंपुटमां विशेष करी विवेक रत्न स्थाप्युं छे, अने चित्तोडमां रहेनारा जनोने जे मुनि निर्वाण पद आपे छे. १२१

असहाएणावि विही य साहिओ जो न सेससूरीणं । लोअणपहे वि वच्चइ वुच्चइ पुण जिणमयण्णूहिं ॥ १२२ ॥

असहायेनापि विधिश्च साधितो यो न शेषसूरीणाम् । लोचनपथेऽपि वर्त्तते उच्यते पुनर्जिनमतज्ञैः ॥ १२२ ॥

अर्थः—वळी जेणे बीजानी सहाय विना पण विधि मार्ग साध्यो छे, के जे विधिमार्ग बीजा आचार्योने द्रष्टि गोचर पण थतो नथी, परन्तु जैनमतना जाणकारो कहे छे ॥ १२२ ॥

घणजणपवाहसरिअणुसोअपरिव—त्तसंकट पडिओ । पडिसोएणाणीओ, धवलेण व सुद्धधम्मभरो ॥ १२३ ॥

घनजनप्रवाहसरिदनुस्रोतः परिवर्त्त शंकटे पतितः । प्रतिस्रोतसाऽऽनीतो धवलेनेव शुद्धधर्मभारः ॥ १२३ ॥

अर्थः—वळी घणा जन प्रवाह रूप नदीना प्रवाहना परिवर्तन (भ्रमर) संकटमां पडेला विशुद्ध धर्म भारने जे लौकिक प्रवाहे नहिं चालनार मुनिश्रे वळदनी माफक आणेलो छे, (बहार काढयो छे) ॥१२३॥

कयबहुविज्जुज्जोओ विसुद्धलद्धोदओ सुमेघइव । सुगुरुच्छाइयदोसायरप्पहो प्पहयसंतावो ॥ १२४ ॥

कृतबहुविद्योद्द्योतो विशुद्धलब्धोदयः सुमेघइव । सुगुरुच्छादितदोषाकरप्रभः प्रहतसंतापः ॥ १२४ ॥

अर्थः—वळी मेघनी माफक घणा प्रकारनी विद्या रूप विजळीओ वडे मार्गनो जेणे उद्योत कर्यो छे, तथा जेनाथी श्रावकोअे विशुद्ध उदय प्राप्त करेल छे, तथा ढांकेली छे, अति मोटी प्रत्यनीक रूप चंद्रनी प्रभा जेणे अेवा अने हणेल छे संताप जेणे अेवा. ॥ १२४ ॥

सव्वत्थवि वित्थरिअवुट्ठो कयस-स्ससंपओ सम्मं । नेव वायहओ न चलो न गज्जिओ जो जए पयडो ॥ १२५ ॥

सर्वत्रापि विस्तृत्य वृष्टः कृतशस्यसम्पत् सम्यग्। नैव वातहतो न चलो न गर्जितो यो जगति प्रकटः ॥ १२५ ॥

अर्थः—वळी सद्गुरु रूप जे मेघ सर्वत्र फेलाइ ने-विहारकरी ने सम्यक् प्रकारे करी छे प्रशंसनीय मुनि धर्म रूप धान्यनी उत्पत्ति जेणे एवा, वळी वाय एटले वाद रूप वायु वडे नहिं हणायला, नहीं चलायमान थयेला, अने अभिमान रूप गर्जना रहित एवा जे सूरि जगतमां प्रसिद्ध छे ॥ १२५ ॥

कहमुवमिज्जइ जलही तेणसमं जो जडाणं कयवुड्ढ । तियसेहिं पि परेसिं मुअइ सिरिंपि हु महिज्जंतो ॥ १२६ ॥

कथमुपमीयते जलधिस्तेन समं यो जडानां कृतवृद्धिः । त्रिदशैरपि परेषां मुञ्चति श्रियमपि हि मन्थमानः ॥१२६॥

अर्थः—जेणे जडनी जलनी वृद्धि करी छे, अने देवो वडे मंथन करायो छतो जे बीजाओने लक्ष्मी पण आपी दे छे, अेवा समुद्रनी उपमां ते मुनिने केम अपाय ? ॥ १२६ ॥

सूरेण व जेणसमुग्गयेण संहरिय-मोहतिमिरेण । सद्दिट्ठीणं सम्मं पयडो निव्वुइपहो हूओ ॥ १२७ ॥

सूर्येणेव येन समुद्गतेन संहृतमोह-तिमिरेण । सद्दृष्टीनां सम्यक् प्रकटो निर्वृतिपंथो भूयः ॥ १२७ ॥

अर्थः—हरण करेल छे मोह रूप अंधकार जेणे अेवा उदय पामेला सूर्य सरखा जेमणे सम्यग् द्रष्टि वाळा जीवोने प्रगट देखाता मोक्ष मार्ग रूप छे. ॥ १२७ ॥

वित्थरियममलपत्तं कमलं बहु कुमय कोसिया दुसिया । तेयस्सीणमपि तेओ विगओ विलयं गया दोसा ॥ १२८ ॥

१—कारण के आमुनीश्वर जडनी-अज्ञाननी वृद्धि करता नथी, अने देवो वडे उपसर्ग कराया छता पण चारित्र लक्ष्मी ने मूकी देता नथी, माटे आ मुनिने समुद्रनी उपमा न अपाय.

विस्तृतममलपत्रं कमलं बहुकुमत कौशिका दूषिताः । तेजस्विनामपि तेजो विगतं विलयं गता दोषाः ॥ १२८ ॥

अर्थः—तथा निर्मळ पत्र वाळा कमळने [पक्षे-निर्मळ पात्रोने अटले जनोने] जेणे विकश्वर करेल छे, घणा कुमती रूप घुवडोने दूषित कर्या छे, जेनाथी तेजस्वीओनुं तेज पण नाश पाम्युं छे, अने जेनाथी दोषो (पक्षे रात्री) पण नाश पाम्या छे. ॥ १२८ ॥

विमलगुणचक्कवाया वि सव्वहा विहाडिया वि संघडिया । भमरेहिं पि भमरेहिं पि पावओ सुमणसंजोगो १२९.

विमलगुणचक्रवाका अपि सर्वथा विघटिता अपि संघटिताः । भ्रमणैरपि भ्रमणैरपि प्राप्तःसुमनः संयोगः ॥ १२९ ॥

अर्थः—तथा निर्मळ गुण रूपी चक्रवाक पंक्षीओ जेण जूदा हता पण सर्वथा अेकत्र कर्या, तथा परिभ्रमण करनारा मुनिरूप भमराओअे सुमननो–पुष्पनो संयोग प्राप्त कर्यो ॥ १२९ ॥

भव्वजणेण जग्गिय मवग्गियं दुट्ठ-सावयगणेण । जड्डमवि खंडियं मंडियं य महिमंडलं सयलं ॥ १३० ॥

भव्यजनेन जागरित मवल्गितं दुष्ट श्वापद्गणेन । जाड्यमपि खण्डितं मण्डितं च महीमण्डलं सकलम् ॥ १३० ॥

अर्थः—जेणे भव्यजनोने जागृत कर्या, अने दुष्ट श्रावकसमुदायने अवग्रहीत उपेक्षीत कर्या, जाड्य (मूर्खता-शीत) नो विनाश कर्यो, अने सघला पृथ्विमंडलने शोभाव्युं, अेवा अे आचार्य सूर्य सरखा छे, पण चंद्र सरखा नथी, तेनु कारण दर्शावे छे, ॥ १३० ॥

अत्थमई सकलंको सया ससंको वि दंसिअपओसो । दोसोदये पत्तपहो तेण-समं सो कहं हुज्जा ॥ १३१ ॥

अस्तमितः सकलङ्कः सदा शशाङ्कोऽपि दर्शितप्रदोषः । दोषोदये प्राप्तप्रभ--स्तेन समः स कथं भवेत् ॥ १३१ ॥

अर्थः—अस्त पामनार तथा सदा कलंक सहित अने देखाडेल छे प्रदोप-रात्रिभाग जेणे

अेवो तथा दोषाना-रात्रिना उदय थतां प्रभाने पामनारो अने जे मृगना लंछन वाळो चंद्र तेनी साथे तेमनी सरखामणी केवी रीते थाय ? अर्थात् ते मुनिने चंद्रनी उपमा केम अपाय ? ॥ १३१ ॥

संजणियविही संपत्तगुरुसिरी जो सया विसेसपयं । विण्हुव्व किवाणकरो सुरपणओ धम्मचक्कधरो ॥ १३२ ॥

सञ्जनितविधिः सम्प्राप्तगुरुश्रीर्यः सदा विशेषपदः । विष्णुरिव कृपाणकरः सुरप्रणतो धर्मचक्रधरः ॥ १३२ ॥

अर्थः—वळी आ मुनि विष्णु सरखा छे ते आ प्रमाणे-विष्णुअे विधि=ब्रह्मानी उत्पत्ति करी तो आमुनिअे विधि=चारित्र मार्ग उत्पन्न कर्यो, विष्णुअे उत्तम लक्ष्मी देवी प्राप्त करी त्यारे आ

---

१ कारण के आ मुनि अत्थमइ=अर्थमां मति वाळा छे, तेथी चारित्र पतित थनार नथी, तेमज कलंक वाळा नथी, दोष दर्शी नथी, अने द्वेषीयोनो उदय थतां पण पोतानी प्रभा दर्शावनारा छे माटे आ मुनिने चंद्रनी उपमा केम अपाय ?

मुनिए चारित्र लक्ष्मी प्राप्त करी, विष्णुए सदा-काळ पोतानुं पद=स्थान शेषनाग राख्युं छे त्यारे आमुनि सया अटले हमेशां विशेष अटले अति-शयोनुं पयं=स्थान छे, विष्णु किवाणकर=खड्ग-युक्त हस्तयुक्त छे त्यारे मुनि किपा आणकर=दया अने जिनाज्ञा पाळनार छे. विष्णु देववडे पूजित छे त्यारे मुनिपण चामुंडादि देवो वडे पूजित छे, विष्णु चक्र धारण करे छे, त्यारे मुनि धर्म मार्गना चक्र अटले समूहने धारण करे छे. ॥ १३२ ॥

दंसियवयणविसेसो परमप्पाणं य मुणइ जो सम्मं । पयडिविवेओ छच्चरण-सम्मओ चउमुहुव्व जए ॥ १३३ ॥

दर्शितवचनविशेषः परमात्मानं च जानाति यः सम्यग् । प्रकटितविवेकः षट्चरण सम्मतश्चतुर्मुख इव जगति॥१३३॥

अर्थः—देखाडेल छे वचन (पक्षे मुख) नो विशेष जेणे, तथा जे उत्कृष्ट आत्मा ने सम्यक् प्रकारे जाणे छे, अने प्रगट करे छे विवेक [पक्षे विशिष्ट वेद] जेणे; तथा सामायिकादि

६ चारित्रने (पक्षे भ्रमरने) संमत एवा आ मुनि जगतमां ब्रह्मा सरखा छे. ॥ १३३ ॥

धरइ न कवड्डयं पि कुणइ न बंधं जडाणमवि कयाइ । दोसायरं य चक्कं सिरंमि न चडावए कयापि ॥ १३४ ॥

धरते न कपर्दकमपि करोति न बन्ध जडानामपि कदाचित् । दोषाकरञ्च चक्रं शिरसि नो चारयति कदापि ॥ १३४ ॥

अर्थः—जेओ (कोडीने-) जटाने धारण करता नथी, मुर्खने जडने पण कदी संग्रह-बंधन करता नथी, वळी दोषाकर ने दोष समूहने (पक्षे चंद्रने) अने चक्रने मस्तक पर कदीपण चढावता नथी. ॥ १३४ ॥

संहरइ न जो सत्ते गोरीए अप्पए नो नियमंगं । सो कह तव्विवरीएण संभुणा सह लहिज्ज पमं ॥ १३५ ॥

संहरति यो न सत्त्वान् गौर्या अर्पयति नो निजमङ्गमपि । स कथं तद्विपरीतेन शम्भुना सह लभेतोपमाम् १३५

अर्थः—जेओ प्राणीयोनो संहार करता नथी, तथा जे मुनि गौरीने-स्त्रीने (पक्षे पार्वतीने) पोतानु अंग समर्पण करता नथी तो ए सर्व आचरणोथी विपरित आचरण वाळा शंभु महादेवनी उपमा ते मुनि ने केम अपाय? ॥१३५॥

साइसएसु सग्गं गयेसु जुगप्पवर--सूरिनिअरेसु । सव्वाओ विज्जंगणाओ भुवणं भमिऊण संताउ ॥ १३६ ॥

सातिशयेषु स्वर्गं गतेषु युगप्रवर-सूरिनिकरेषु । सर्वा विद्याङ्गना हि भुवनं भ्रमयित्वा श्रान्तास्तु ॥ १३६ ॥

अर्थः—अतिशय वाळा युगप्रधान आचार्योना समूह स्वर्गमां जतां सर्व विद्या रूपी स्त्रीयो पृथ्वीपर भ्रमण करी करीने थाकी ॥१३६॥

तहवि न पत्तं पत्तं जुगवं जव्वयण-पंकए वासं । करिय परूपरमच्चंतपणय ओ हुंति सुहिआओ ॥ १३७ ॥

तथापि न प्राप्तं पात्रं युगपद् यद्वदन पंकजे वासम् । कृत्वा परस्परमत्यन्त प्रणयात् भवान्ति सुखिन्यः ॥ १३७ ॥

अर्थः—तो पण अेवुं कोई सुपात्र प्राप्त न थयुं के जेना मुख कमळमां सर्व विद्याओ अेक साथे निवासकरी परस्पर अत्यन्त प्रीतिवाळी थवाथी सुखी थाय. ॥१३७॥

अण्णुण्णविरह–विहुरोहतत्तगत्ताओ ताओ तणाइओ । जायाओ पुण्णवसा सावासपयं पि जा पत्ता ॥ १३८ ॥

अन्योन्यविरहविधुरौघतप्तगात्रास्ता-स्तन्व्यश्चैव । जाताः पुण्यवशात् स्वावा-सपदमपि याः प्राप्ताः ॥ १३८ ॥

अर्थः—परस्पर विरहनी व्याकुलताना समूहथी तपी गयेला शरीरवाळी थवाथी ते देवीयो कृश–पातळा शरीरवाळी थइ, त्यार बाद पुन्यना वशथी पोताने स्थाने चाली गयेली पण जे देवीयो (संबंध आगलना श्लोक साथे)

तं लहिअ विअसिआओ ताओ तव्वयणसररुहगयाओ । तुट्ठाओ पुट्ठाओ समगं जायाओ जिट्ठाओ ॥ १३९ ॥

तं लब्ध्वा विकासितास्तास्तद्वदन सरोरुहगताः । तुष्टाश्चैव पुष्टाश्च समकं जाता ज्येष्ठा अपि ॥ १३९ ॥

अर्थः—ते मुनिने पामी तेमना मुख कमळमां निवास करीने विकस्वर-प्रफुल्लित थयेली ते देवीयो अेक साथे तुष्ट थइ पुष्ट थइ अने महोटाईवाळी पण थइ ॥ १३९ ॥

जाया कइणो के के न सुमइणो पर मिहोवमं ते वि । पावंति न जेण समं समंतओ सव्वकव्वेण णिउं ॥ १४० ॥

जाता कवयः के के न सुमतयः पर मिहोपमां तेऽपि । प्राप्नुवान्ति न येन समं समन्ततः सर्वकाव्येन नेतुम् ॥ १४० ॥

अर्थः—जगतमां श्रेष्ट बुद्धिवाळा कवियो कोण नथी थया ? अर्थात् अनेक कवीओ थया छे,छतां ते कविओ ने पण अेवी कोई उपमा मलती नथी के जे उपमा जे मुनिने सर्व काव्यो वडे सरखावी शके ! ॥ १४० ॥

उवमिज्जंते संता संतोसमुवविंति जंमि नो सम्मं। असमाणगुणो जो होई कहणु सो पावए उवमं ॥ १४१ ॥
उपमीयमाने सन्तः सन्तोष मुपयान्ति यस्मिन्नो सम्यग् । असमानगुणो यो भवति कथं नु 'स' प्राप्नोत्युपमाम् ॥१४१॥

अर्थः—वळी जे मुनिने उपमा आप्ये छते पण सज्जन पुरुषो संतोष पामता नथी, कारण के जे असमान गुणवाळा महात्मा छे तेमने उपमा केवी रीते (कोनी) अपाय ? ॥ १४१ ॥

जलहिजलमंजलीहिं जो मिणइ नहंगणंपि हु पएहिं। परिसक्कइ सो वि न सक्कइत्ति जा गुणगणं भणिउं ॥ १४२ ॥
जलधिजलमञ्जलिभिर्यो मिनोति नभोङ्गनमपि हु पादैः। परिष्वष्कते सोऽपि न शक्नोतीति यद्गुणगणं भणितुं ॥ १४२ ॥

अर्थः—जे कोई पुरुष अंजलीवडे समुद्रना जळनुं माप करे, अने पगवडे आकाशने पण उल्लंघन करे ते वो समर्थ पुरुष पण जेना गुणनो समूह गणवाने समर्थ नथी. ॥ १४२ ॥

जुगपवरगुरुजिणेसरसीसाणं अभयदेवसूरीणं । तित्थभर-धरणधवलाणमंतिए जिणमयं विमयं ॥ १४३ ॥

युगप्रवरगुरुजिनेश्वरशिष्याणामभयदेवसूरीणाम् । तीर्थभारधरणधौरेयाणामन्तिके जिनमतं विमतम् ॥ १४३ ॥

अर्थः—शासनना भारने वहन करवामां वृषभ समान श्रीयुगप्रधान गुरु श्री जिनेश्वरसूरिना शिष्य श्री अभयदेवसूरिना विशेष प्रकारे मनायला जैनमतने ॥ १४३ ॥

सविणयमिह जेण सुअं सप्पणयं तेहिं जस्स परिकहियं । कहियाणुसारओ सव्व-मुवगयं सुमइणा सम्मं ॥ १४४ ॥

सविनयमिह येन श्रुतं सप्रणयं तैर्यस्य परिकथितम् । कथितानुसारतः सर्वमुपगतं सुमतिना सम्यक् ॥ १४४ ॥

अर्थः—जेणे अहिं विनय पूर्वक सांभल्यो, अने तेओए जेने प्रीति पूर्वक कह्यो, अने जे सद्बुद्धिवालाए तेधर्म कह्या प्रमाणे सम्यग् रीते प्राप्त कर्यो, तथा ॥ १४४ ॥

निच्छउमं भव्वाणं तं पुरओ पय-
डियं पयत्तेण । अकयसुकयंगिदुल्लह-
जिणवल्लहसूरिणा जेग ॥ १४५ ॥

निश्छद्मं भव्यानां पुरस्तात् प्रक-
टितं प्रयत्नेन । अकृतसुकृताङ्गिदुर्लभ
जिनवल्लभसूरिणा येन ॥ १४५ ॥

अर्थः—जे जीवोए पुन्य नथी कर्युं तेवा
जीवोने दुर्लभ्य दर्शनवाळा एवा जे श्रीजिने-
श्वरसूरि ए घणा परिश्रम पूर्वक ते धर्म भव्य-
जीवोनी आगळ निष्कपटपणे प्रगट कर्यो १४५

सो मह सुहविहिसद्धम्मदायगो
तित्थनायगो अ गुरू तप्पयपउमं पाविअ
जाओ जायाणुजाओ हं ॥ १४६ ॥

स मम शुभविधिसद्धर्मदायकस्तीर्थ-
नायकश्च गुरुः । तत्पादपद्मं प्राप्य जातो
जातानुजातोऽहम् ॥ १४६ ॥

अर्थः—ते शुभविधि वाला शुद्ध धर्मने आप
नार, तीर्थना नायक (एवा श्रीजिनवल्लभसूरि)
मारा गुरु छे, तेमना चरणकमलनो आश्रय करीने
जातानुजात (गीतार्थ सरखो) थयो छुं ॥१४६॥

तमणुदिणं दिण्णगुणं वंदे जिणवल्लहं पहुं पयओ। सूरिजिणेसरसीसो अ वायगो धम्मदेवो जो ॥ १४७ ॥

तमनुदिनं दत्तगुणं वन्दे जिनवल्लभं प्रभुं प्रयतः। सूरिजिनेश्वरशिष्यश्च वाचको धर्मदेवो यः ॥ १४७ ॥

अर्थः—जेमणे मने सद्गुण अर्पण कर्यो छे ते श्रीजिनवल्लभसूरिने प्रतिदिन प्रयत्नपूर्वक नमस्कार करुं छुं तथा श्री जिनेश्वरसूरिना शिष्य जे धर्मदेव उपाध्याय ॥ १४७ ॥

सूरी असोगचंदो हरिसीहो सव्वदेवगणिप्पवरो। सव्वेवि तव्विणेया तेसिं सव्वेसिं सीसो हं ॥ १४८ ॥

सूरिरशोकचन्द्रो हरिसिंहः सर्वदेवगणिप्रवरः। सर्वेऽपि तद्विनेयास्तेषां सर्वेषां शिष्योऽहम् ॥ १४८ ॥

अर्थः—श्रीअशोकचन्द्रसूरि श्रीहरिसिंहमुनि श्री सर्वदेवगणि ए सर्वपण तेमना (श्रीधर्मदेव वाचकना) शिष्य छे, अने ए सर्वनो हूं शिष्य छुं. ॥ १४८ ॥

ते मह सव्वे परमोवयारिणो वंदणा-
रिहा गुरुणो । कयसिवसुहसंपाला तेसिं
पाए सया वंदे ॥ १४९ ॥

ते मम सर्वे परमोपकारिणो वन्द-
नार्हा गुरवः । कृतशिवसुखसंपातास्तेषां
पादान् सदा वन्दे ॥ १४९ ॥

अर्थः—ए सर्व परमोपकारी मुनीश्वरो
मारे वंदना करवा योग्य गुरुओ छे, माटे करेल
छे उपद्रव रहित कल्याणनी प्राप्ति जेणे एवा ते
मुनीश्वरोना चरणकमलने हुं प्रतिदिन नमस्कार
करुं छुं. ॥ १४९ ॥

जिणदत्तगणिगुणसयं सपण्णयं सो-
मचंदबिंबं व । भव्वेहिं भणिज्जंतं भवरवि
संतावमवहरउ ॥ १५० ॥

जिनदत्तगणिगुणशतं सपश्चाशतं
सोमचन्द्रबिम्बमिव व । भव्यैर्भण्यमानं
हि भवर विसन्तापमपहरतु ॥ १५० ॥

अर्थः—श्रीजिनदत्तसूरिए रचेल आ १५०
गाथानो सोमचन्द्रना सरखो (सोमचन्द्र ए श्री
जिनदत्तसूरिनुं बीजुं नाम छे, अने बीजा अर्थमां

शीतलचंद्र सरखो) आ गणधरोना गुणगावा-रूप गणधर सार्धशतक नामनो ग्रंथ तेने भणता एवा भव्य जीवोना संसाररुपी सूर्यना संतापनुं निवारण करो. ॥ १५० ॥

॥ ओम् ॥

ताडपत्रीय ११७१ की लिखी खरतर पट्टावली.

जिणं दिट्ठई आनंदु चडइ अहरहसु चउग्गुणु, जिण दिट्ठई झडहडइ पाउ तणु निम्मलु हुइ पुणु जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु पुव्वुकिउ नासइ, जिणदिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्द पनासइ। जिण-दिट्ठई हुइ सुह धम्ममइ असुहहु कांइं उड्खहहु ॥ पहु नवफणिमंडिउ पासजिणु अजयमेरि कि न पिखहहु ॥१॥ मयण मकरि धरि धणुहु बाण पुणि पंचमपयडाहि। रुचिण पिस्सपयाथि वंभहरिहरू

१ जिनदृष्ट आनन्दश्चटति (भवति) अहरहः सुचतुर्गुणः। जिनदृष्टे झटिति हटति (नश्यति पाप-स्तनुर्निर्मलो भवति पुनः। जिनदृष्टे सुखं भवति कष्टं पूर्वकृतो नश्यति, जिनदृष्टे भवति ऋद्धिर्दूरं दारिद्रं नश्यति, जिनदृष्टे भवति शुभ धर्मसति-रशुभधुक्रं रेति क्षयम् ॥ १ ॥

मनविनडहि । रूउ पिम्मु ना वाणमयण तादरिसहि धणुहरु ॥ नवफणिमंडिउ सीस जाव न हु पेक्खहि जिणवरु, जइ पडिहसि पास जिणिंदवसि नाणदंत निम्मलरयण । तसु धणुहरु वाण न भूव नहि न सुय पिमुहुइ हइमयण ॥२॥ नवफणिपासजिणिंदु गढिउ अच्छहि उज्जु दिट्ठउ । अजयमेरि संभरिनरिंदु ता नियमणि तुट्ठउ । कंचणामउ अह कलसु जसिहरिसाण उ रज्जविअउ । जणु सुतराणि तओ तवइ तिवु आयासिसन्नउ । जा वुज्जुमिसिण ढक्कागविण करुउ ज्झिवि फरहरइ धय—

जिणदत्तसूरि धरधवलि जासि ता पसिद्धि

२ जिनदत्तसूरि धरसि शिरसि ततः प्रसिद्धिः सुरभूयसी, देवसूरिः प्रभुः नेमिचन्द्रर्बहुगुणाभि प्रसिद्धः, उद्योतनस्तथा वर्धमानः खरतरवर लब्धकः सुगुरु जिनेश्वरसूरिः नियमी जिनचन्द्रः, सुसंयमी, अभयदेवः सर्वगो ज्ञानी जिनवल्लभ आगमी जिनदत्तसूरिः स्थितः पदे । तस्य येन उद्योतितं जिनवचनं, श्रावकैः परीक्ष्य परिचरितो मूल्यं महद् दत्वा यथा रत्नम् ॥ २ ॥

सुरभुवणिकाय ॥ ३ ॥ देवसूरि पहु नेमिचंदु बहु गुणिहिं पसिद्धउ, उज्जोयणु तह वद्धमाणु खरतर वरलद्धउ, सुगुरु जिणेसरसूरि नियमि जिण चंदु सुसंजमि, अभयदेवु सव्वंगु नाणि जिणवल्लहु आगमि, जिणदत्तसूरि ठिउ पट्टि तहि जिन उज्जोइउ, जिणवयणु, सावइहिं परिक्खिवि परिवरिउ मुल्लि महग्घउ जिम रयणु ॥४॥ थणुहर थयवउथडिय सारसिंगार सुसज्जिय, सोहग्गिण गुडगुडिय पंचवर पडिम निमज्जिय, तियउ अ ते अग्गालिय पिंम पडिकार निरुत्तिय । रइरणरह सुचालिय गरुय माणिण मइ अन्निय । करिकउ यउ मुणि महियइहिं रहिय रूवय संपुन्नभय । जिणदत्तसूरि सीहह मयण मयणकरडिवंड विहडिगय ॥५॥ तवतलफफ भीमणाह धम्म धीरिम सरिम सुविसालह । संजम सिर भासुरह दुस्सह दवदाढकरालह । नाणनयण दारुणह नियम निसहरसामिद्धहा कम्म कोह निट्ठुरह । विमलपह सुंछ पसिद्धह । उप समण-उवरधर दुव्विसह गुण गुंजारवजीहह जिणदत्तसूरि अनुसरह पयपावकरडि घडसीहह ॥ ६ ॥ जरजल वहलरउद लोहलहरिहिं गज्जं-

नउ मोहमच्छ उछालिउ । कोवकल्लोल वहतउ मयमयरिहिं परिचरिउ । दंभवहुवेलदुसंचरु, गंधगरु य गंभीरु, असुह आवत्तभयंकरु, संसार समुद्दु जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिवि सुदारियइ । जिणदत्तसूरि उवरासुसुणितपरतरंडइ सु तारियइ ॥ ७ ॥ सावय किवि कोयालिय केवि खरतरिय पसिद्धिय, ठाइ ठाइ पक्खियवहिं मूढनियचित्ति विरुद्धिय । दरहिं न किं पि परत्तवेवि सुपरु प्परु जुज्झहिं, सुगुरु कुगुरु मग्गि मग्गि वि न किं वि पइंतरु बुज्झहिं । जिणदत्तसूरि जिन न महि पय पउमसच्चुनियमणि वह हि । संसार उयहि दुत्तार पडिय नियहु तरंडइ चडि तरहि ॥ ८ ॥ तवसंयम सय नियम धम्म कम्मिमग्ग चावरियउ, लोहकोहमयमोह तह व साप्पियहि परिहरियउ, विसम छंद लक्खणिण सत्थ अत्थ त्थ विसालह, जिणवल्लभ गुरु भत्तिवंतु पयड उ कलिकालह, अन्निहि विगुणिहि संपुन्नतणु । दीसइ दुहिय उद्धरणधरु, जिणदत्त सूरि पर पव्ह भणु तत्तवंत सलाहियइ धर ॥ ९ ॥ वक्खाणि यइ त परमतत्तु जिणपाउ पगासइ । आराहि पइ

त वीरनाहु कइ पल्हपयासइ धम्मुनदय संजत्तु जण वरगइ पाविज्जइ। चाउत अण खंडिय उ जुवंदि णु सलहिज्जइ। जइ ठाउ तउ त्तिमु मुणि ग्रह वि ॥ पवरवसहिं हो चउरनर। तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर खरतर सिरि जिण दत्तवर ॥ १० ॥ इति श्री पट्टावली सम्वत् ११७१ वर्षे पत्तन महानगरे श्री जयसिंह देव विजयि राज्ये श्री खरतरगच्छे योगीन्द्र युगप्रधान वसति वासि श्री जिनदत्तसूरीणां शिष्येण ब्रह्मचन्द्र गणिना लिखिता शुभं भवतु, श्री मत्पार्श्वनाथाय नमः सिद्धिरस्तु ॥

